प्रकाशकीय निवेदन

छप्पय

धन्य धन्य ध्रुवदास धन्य ते यह रस गायौ।
रसिक अनन्य समाज रसासव पान करायौ॥
सब निकुंज के रहस बेल बेसन में छाये।
वृन्दावन सत सुनत सहज वृन्दावन आये॥
कहत सुनत जो गुनत मन परत रूप रस चहल में।
या बानी की बानि यह लै पहुँचावै महल में॥

(श्री हित वृन्दावन दास जी)

बयालीस लीला श्री राधा श्याम सुन्दर के नित्य प्रेम विहार का वर्णन करने वाला एक अनुपम ग्रन्थ है। श्री राधा वल्लभीय सम्प्रदाय से सम्बन्धित होते हुये भी निकुंज लीला के सभी प्रेमियों में इसका पूर्ण समादर है। इस ग्रन्थ के कर्ता श्री ध्रुवदास जी का चरित रसिक अनन्य माल में दिया हुआ है उसका सार क्रमानुसार नीचे दिया जाता है।

रसिक अनन्य महात्मा श्री हित ध्रुवदास जी श्री हित हरिवंश महाप्रभु के तृतीय पुत्र श्री हित गोपीनाथ के शिष्य थे। ये देव बन के रहने वाले थे और इनका जन्म कायस्थ कुल में हुआ था। (इनके बाबा श्री विट्ठलदास जी श्रीहित प्रभु के शिष्य थे और पिता श्री श्यामदास जी गोपीनाथ प्रभु के शिष्य थे)[1] इस तरह परंपरा से ये श्री राधा वल्लभलाल के उपासक थे।

श्री हित महाप्रभु की अधिक कृपा होने से इनकी श्री वृन्दावन वास करने की इच्छा हुई। तब ये वृन्दावन आये और श्री यमुना पुलिन सघन कुंजों को देखकर प्रेम में विभोर हो गये। रात-दिन श्री प्रियालाल की नित्य केलि का चिंतन करने से इनके हृदय में लीलाओं का स्फुरण होने लगा किन्तु उन्हें ठीक से व्यक्त न कर पाते थे। इस पर इन्होंने अत्यन्त व्याकुल होकर यह प्रण किया कि जिस-जिस लीला का दर्शन मुझ मूढ़ प्राप्त होता है वह मुख से सब वर्णन करूँगा तभी प्रसाद ग्रहण करूँगा। इस तरह हठ करके खान-पान छोड़कर ये श्री हित रास मंडल पर पड़ गये। दो दिन बीतने पर तीसरे दिन दासि-वत्सला श्री स्वामिनी जी का हृदय अकुलाया और उन्होंने प्रकट होकर आधी रात के समय अपना चरण इनके सिर पर रखा। नूपुर की ध्वनि सुनते ही ये चौंक पड़े। सामने श्री स्वामिनी जी के दर्शन कर चरणों में पड़ गये तब श्री प्रियाजी बोलीं 'उठ जो तू चाहता है वही वर मैं तुझे देती हूँ।' ऐसा कह कर वे अंतर्हित हो गईं।

इस तरह ध्रुवदास जी की वाणी का आरम्भ प्रकट हुई है। महारसिक अनन्य श्री प्रिया लाल की नित्य केलि इनको इन्हीं आँखों से दिखने लगी और ये कृपावश से उस केलि का सुन्दर रस पान करने लगे। इनकी कोमल प्रसादयुक्त वाणी सबके हृदय में घर करने लगी और थोड़े

---

१ श्री गोविन्द अलीजी कृत 'रसिक अनन्य माला' के आधार पर।

ही समय में इनकी वाणी का इतना प्रचार हुआ कि समुद्र पर्यन्त घर-घर में उसका साधु-संतों द्वारा पाठ-श्रवण होने लगा। रसिक अनन्यों ने तो इसे अपनी जीवन मूरि जानकर कंठ का हार ही बना लिया। इनकी वाणी अत्यन्त गम्भीर होते हुये भी इतनी सरल भाषा में कही गई है कि उसके समझने में कोई कठिनाई नहीं होती और पढ़ने के साथ ही अर्थ स्पष्ट हो जाता है। इस वाणी को सुनकर अनेक लोग श्री वृन्दावन रस के उपासक बन गये और कर्म ज्ञान को छोड़ कर श्री वृन्दावन वास करने लगे।

श्री ध्रुवदास जी की प्रीति रीति को देख कर गुरु एवं गुरुकुल (हितकुल) सब अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक सराहना करते थे। यदि कभी इनके गुरुजन कोई सिद्धांत चर्चा करते तो ये विवाद न करके जो वे कहते उसे मान लेते थे। इस तरह अति नम्रता से ये सबका मन मोह लेते थे।

जब श्री राधा बल्लभलाल वन विहार को जाते तब इनकी कुटी पर ठहरते थे। ये प्रभु के योग्य भोग धर कर आरती करके भेंट करते थे और यह सब हो जाने के बाद ही श्री जी मंदिर पधारते थे।

सामान्यतः अत्यन्त भावाविष्ट अवस्था रहने पर भी ये सावधानी पूर्वक प्रभु-सेवा के सब छोटे-बड़े कार्यों का निर्वाह करते थे और अपने हाथ से रसोई बनाकर अपने प्रभु को भोग रखते थे एवं संतों सहित प्रसाद ग्रहण करते थे। ये भी हिताचार्य की भाँति ही महाप्रसाद को सर्वस्व मानते थे और एकादशी के दिन भी प्रसाद ग्रहण करते थे।

भगवत् मुदित जी कहते हैं कि हित ध्रुवदास की वाणी को सुनकर युगल मुस्काते हैं, इन वाणी की कुछ ऐसी ही अद्भुत भावना-पद्धति है।

छप्पय

प्रथम सुमिर हित नाम धाम धामी जु बखानें।
रसिक अननि के हेत जुगल परिकर गुन गानें॥
बरनी लीला कबित रूप रस यति मति पागी।
सुनि धुनि गिरा गंभीर बहुत भये बन अनुरागी॥
महा गोप्य रस निगम जो गुरु प्रसाद बल बिस्तरयौ।
कलि आइ देह कुल धाम की जहँ ध्रुवदास सौ औतरयौ॥

(रसिक अनन्य परचा सा ॥११५॥)

छप्पय

परम पुरातन धर्म मर्म भारत हित गाए।
ताही मग रस हरे धाम वृन्दावन आए॥
हित मंडल अभिराम स्याम स्यामा जहाँ राजैं।
तिन मुख आयसु पाय भने बहु ग्रन्थ समाजैं॥
उमर वर्ष दस में हृदय बाढ्यौ प्रेम प्रकाश की।
कलि सुगम सेतु भव तरन कौं गाथ विमल ध्रुवदास की॥

(गोविन्द अलीजी कृत रसिक अनन्य गाथा)

———

श्री ध्रुवदासजी कृत—

बयालीस लीला की सूची

श्री ध्रुवदास जी कृत पदावली की सूची

॥ इति श्री बयालीस लीला व पदावली की सूचीपत्र समाप्त ॥

❁ श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति ❁

❁ श्री हित राधावल्लभो जयति ❁

अथ बयालीस लीला

[श्री ध्रुवदास जी कृत]

जीवदशा लीला की जैजै श्रीहित राधे

॥ चौपाई ॥

जीव दशा कछु इक सुनिभाई ❁ हरिजस अमृत तजिविष खाई ॥
छिन भगुर यह देह न जानी ❁ उलटी समुझि अमर ही मानी ॥
घर घरनी के रँग यों राच्यौ ❁ छिनछिनमें कपिनटलौंनाच्यौ ॥
करी न कबहूँ भजन सँभारी ❁ ऐसे मगन रह्यो ब्योहारी ॥
वय गई बीति जात नहिं जानी ❁ ज्यौं सावन सरिता को पानी ॥
द्वै स्वासा या घट में चलैं ❁ जो बिछुरै तौ फेरि न मिलैं ॥
माया सुख में यौं लपटानो ❁ विषै स्वाद सर्वस ही जानौं ॥
कृष्ण भक्ति सों कबहुँ न रॉच्यौ ❁ महा मूढ़ बड़े सुख ते बॉच्यौ ॥
काल समय जब आइ तुलानी ❁ तन मन की सुधि सबै भुलानी ॥
रसना थकी न बोल्यौ जाई ❁ बार बार मन में पछिताई ॥
जम किंकर जब दई दिखाई ❁ महा भयानक अति दुखदाई ॥
रच न श्याम भक्ति उर आई ❁ या दुख में अब कौन सहाई ॥
रोम रोम पीड़ा दुख पाई ❁ हरि केहरि बिनु कौन छुड़ाई ॥
ताको नाम न लियौ अभागे ❁ कबहूँ सोवत सुपन न जागे ॥
अबमुखनहिं निसरत हरिबानी ❁ पित्त वाय कफ घेरयौ आनी ॥
एक नाम त्रैलोकहि तारै ❁ जो न लेहि सो जनमहिं हारै ॥

दोहा—कैसें हूँ हरि नाम ले, खेलत हँसत अजान।
ऐसे हूँ को देत हैं, उत्तम गति भगवान॥
जो कोउ साँची प्रीति सों, हरि हरि कहत लड़ाइ।
तिनकों ध्रुव कह देहिंगे, यह जानी नहिं जाइ॥
सब धर्मनि पर जग मगे, कृष्ण नाम शिर ताज।
जैसे धन के मृगनि में, गाजत है मृगराज॥

पापी एक अजामिल भयौ ❀ अधम बीज तिन तरु निर्मयौ॥
सुत मिस नाम नरायन लयौ ❀ सो पापी वैकुण्ठहिं गयौ॥
ऐसे बहुत पातकी तरे ❀ हरि हरि कहत पाप सब जरे॥

दोहा—कृष्ण नाम लीन्हों न जिन, कीन्हों बड़ो अकाज।
धर्म मृगनि पाछे लग्यो, छाडि नाम मृगराज॥

दान पुन्य नृग नृप बड़ कियौ ❀ सो लइ अन्ध कूप में दियौ॥
धर्मनि में अरुझाइ भुलाने ❀ विधिप्रपच सबै जग जाने॥

दोहा—कोटि धर्म व्रत निगम रटि, विधि सों करें बनाइ।
एक नाम बिनु कृष्ण के, सबै अविधि ह्वै जाइ॥

कोटि धर्म जो कोउ करि आवै ❀ कृष्णनाम बिनु गति नहिंपावै॥
नामहि सौं जिन वांध्यो नातो ❀ जगके सुख तें सो भयो हातो॥

दोहा—मिथ्या लालच जगत सुख, सबहिं दु ख को धाम।
इक रस नित आनन्द मय, सत्य श्याम को नाम॥

कवित्त—हेम को सुमेर दान रतन अनेक दान, गज दान अन्नदान भूमि दान करहीं। मोतिन के तुला दान मकर प्रयाग न्हान, ग्रहन में काशी दान चित्त शुद्ध धरहीं॥ सेज दान कन्या दान कुरुक्षेत्र गऊ दान, इतने में पापनि को नेकहू न हरहीं।

कृष्ण केसरी को नाम एक बार लीन्हे ध्रुव, पापी तिहुँ लोकन के छिन माहिं तरहीं।

दोहा—भक्त छत्र जिहि शिर फिरै, ताको राज प्रमान।
कर्म धर्म किंकर भये, सेवत रहे सुजान॥
सुरपति पशुपति प्रजापति, वैभव रहे निहारि।
ऐसो तेज प्रताप तहँ, सक्त न कोऊ सँभारि॥

॥ सवैया ॥

व्रत तप निगम नेम यम सजम करहु क्लेश कोटि किन भारी।
इन में पहुँच नाहि काहु की परे रहत ज्यों द्वार भिखारी॥
जोग यज्ञ फल मेंड़ करत हैं तीरथ सब कर लीने झारी।
धर्म मोच्छ कोउ पूछत नाही इन मग सिद्धैं कौन विचारी॥

दोहा—सांख्य धर्म संन्यास जे, कहे पुरानन माहिं।
भये अधीन सब नाम के, भक्तिहि देखि लजाहिं॥

॥ सवैया ॥

भजन महल तें निकसत नाहिंन हरिपद प्रीति रही उर लागि।
कामरु क्रोध मोह मद मत्सर ये सब गये रसातल भागि॥
इक छत राज न भये काहू को नित आनंद रह्यो उर छाइ।
अर्थ कामना और वासना ये सब मन ते गये नसाइ॥

दोहा—सर्वोपरि श्री भागवत, परम धर्म स्वच्छंद।
जाके उर आवै नहीं, सोई अति मतिमंद॥
सब धर्मनि में भ्रमे जिन, युगल चरन चित लाइ।
जैसे दुख परदेश को, घर आये ते जाइ॥
जो चाहत है नित्य सुख, अरु मन को विश्राम।
हित ध्रुव हित सों भजत रहु, पल पल श्यामाश्याम॥

॥ इति श्री जीव दशा लीला श्री जै जै श्री हित हरिवंश॥

॥ अथ वैद्यक ज्ञान लीला ॥

॥ चौपाई ॥

वैद एक पंडित अति भारी ❀ ठाढ़ो मग सों कहत पुकारी ॥
जैसो रोग होइ है जाको ❀ तैसी औषधि देहौं ताको ॥
यह सुनि एक गयो तेहि नेरे ❀ ऐसो वल औषधि को तेरे ॥
मेरे विथा बढी अति भारी ❀ कहि मोसों कछु सोच विचारी॥
तेरे रोग कहा है भाई ❀ ताकी औषधि देउँ बताई ॥
पापहि कर्म अधिक मैं कीन्हे ❀ महा दुखी तेहि रोगके लीन्हे ॥
विषय विषम विषतन रह्योछाई ❀ भव भुवंग ते लेहु छुडाई ॥
धरि यह देह कछू नहिं कीन्हो ❀ कृष्णचरन चित कबहुँ न दीन्हो॥
विषै स्वाद में रह्यो लुभाई ❀ झूँठे सुख में आयु गमाई ॥
दुख पायो जहँजहँ चित दियो ❀ अवहौं पावत अपनो कियो ॥
ऐसे मोह जाल में परयो ❀ यह माया ने सर्वस हरयो ॥
जिनकों हों समुझत हो अपने ❀ तेतो भये रैनि के सपने ॥
गज तुरङ्ग सेवक सुत नाती ❀ जागि परे ते दिया न बाती ॥
दोहा—एते पर समुझो रह्यो, समुझत नहिं मन मोर ।
देखि देखि नाचत मुदित, विषै बादरनि ओर ॥
बूड़त मोह सिंधु की धारा ❀ काढि दया कर कर मोहिं पारा ॥
होंअति दीन महा दुख पावत ❀ लोगकुटुंब कोउ न मुँह लावत ॥
जे जे मुख जोवत हे मेरो ❀ तिनमें कोउ न आवत नेरो ॥
मेरी बात सुहात न काहू ❀ तातें उपजत है उर दाहू ॥
भयो वल हीन बुद्धि हूँ नाठी ❀ तहाँ सहाय भई कछु लाठी ॥
झूँठे कुटुम्बहि में रँग भीनो ❀ साँचे प्रभुसों चित नहिं दीनो ॥
कहँ लगि कहों मूढ़ता अपनी ❀ ढाँपि लियो माया की चपनी ॥

दोहा—नैंन गये अरु श्रवन हूँ, और गये मुख दंत।
बुद्धि घटी तन गति लटी, तृष्णा को नहि अंत॥

टूटी खाट न छाँड़ी भावै ❀ सुत के सुत नातीन खिलावै॥
यहे रुचे मुख नाम न आवै ❀ जैवो जम के घर ही भावै॥

दोहा—मन लाग्यो अति झूठ सों, तजि साँचहि सुख मूल।
छाड़ि सुधा के सुख फलहिं, जाइ गही विष थूल॥

ज्यों-ज्यों तन अति जीरन भयो ❀ त्यों त्यों लोभ रोग बढ़ि गयो॥
अब तुम जतन करो चित लाई ❀ ताते कछु इक हियो सिराई॥
तवहिं वैद तासों यों कही ❀ करो जतन दुख जे है सही॥
इंद्री निग्रह जो पथ करही ❀ तिय इमली ते मन पर हरही॥
लोभ खटाई मोह मिठाई ❀ दही क्रोध के निकट न जाई॥
इतनी कहि जु अनुग्रह कीन्हों ❀ ताको कर आपुन गहि लीन्हों॥
नारी देखत सीस डुलायो ❀ रह्यो अपथ्य कियो मन भायो॥
रङ्क मनोरथ करन विचारयो ❀ हरिसो मीत न कवहुँ सँभारयो॥

दोहा—विषै जूप खेलत रह्यो, कवहुँ न मानी हारि।
पियो जु मदिरा मोह की, सव सुधि दई विसारि॥

मत्त भयो अप वपु न सँभारत ❀ छिन छिन विषै धरि शिर ढारत॥
त्रिगुन मोहकी लगि तो हि वाता ❀ ताते उपज्यो है सनिपाता॥
तिनमें दोइ अधिक बढ़े तन में ❀ तम रज वसत निरंतर मनमें॥
तिनको और जतन नहिं कोई ❀ श्री शुकदेव कह्यो है सोई॥
करि विश्वास वचन सुनि मेरो ❀ रोग रहै तो गुनही तेरो॥
तन रोगी वोल्यो सुनि भाई ❀ तैं तो मेरी वेदन पाई॥
अन में शरन गही है तेरी ❀ तोहि लाज सब बात की मेरी॥
तुम अति गुनी दुनी सब जाने ❀ करि उपाइ जोई मन माने॥

दोहा—पंडित सोचि विचारि के, करन लग्यो उपचार ।
जैसे वेगहि जाइ तरि, भव दुस्तर ससार ॥

जड़ वैराग वृच्छ की लावहु ❀ सोंठ संतोषहि आनि मिलावहु ॥
मिरच तितिच्छिन करुना चीता ❀ निस्पृह पीपर मिलवहु मीता ॥
कोमलता सन सोंज गिलोई ❀ मधुवानी सों लेहु समोई ॥
हरर आमरे शुचि अरु दाया ❀ तातें निर्मल ह्वै है काया ॥
असगंध आसन दृढ़ के करो ❀ चिंतामनि चिंता परिहरो ॥
मुसलि सौंफ अजवाइन जीरा ❀ ज्ञान ध्यान जप जोग में धीरा ॥
सातमृ गांग विना सुख नाहीं ❀ सांच लौंग मिलवहु ता माहीं ॥
भगवत धर्म धातु सब लीजे ❀ नाम सुधा रस की पुट दीजे ॥
ये औषधि सब आनि मिलावौ ❀ ज्ञान ओम्वली माहिं कुटावो ॥
हिय हाडी में आनि चढावो ❀ चेतन वह्नी करि औटावो ॥
निर्मत्सर चपनी ढकि लेयै ❀ श्रद्धा करछी फेरत जैये ॥
हस्त क्रिया जवहीं वनि आवे ❀ जो कवहूँ सत्संगति पावे ॥
पुनि लै प्रेम चखक में करै ❀ भूमि गरीबी में लै धरै ॥
प्रात कृपा बल जल सों पीवे ❀ रोग जाइ अरु जुग जुग जीवे ॥

दोहा—नारदादि प्रहलाद ध्रुव, कीनो यहै विचार ।
या जुग में या रोग को, सिद्ध यहै उपचार ॥
धन्वतरिहिं केते तरे, याही औषधि खाइ ।
ताते विलँव न कीजिये, वेगहि करो उपाइ ॥
मन के समुझन को कह्यो, अद्भुत वैंधक ग्यान ।
जनमनि के मन रोग ध्रुव, सुनतहि करैं पयान ॥

॥ इति श्री वैद्यक ज्ञान लीला की पै प श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ मन शिक्षा लीला ॥

दोहा—रे मन श्री हरिवंश भजु, जो चाहत विश्राम।
जिहिं रस सब व्रज सुन्दरिन, छाड़ि दिये सुख धाम॥
निगम नीर मिलि यक भयौ, भजन दूध सम सेत।
हरिवंश हंस न्यारो कियौ, प्रगट जगत के हेत॥
एक सोच मन में रह्यौ, अरु आवत जिय लाज।
अद्भुत मानुष देह धरि, कियो न कछु वे काज॥
रे मन चंचल तजि विषै, ढरो भजन की ओर।
छांड़ि कुमति अव सुमति गहि, भजि लै नवल किशोर॥
अब लगि मन कीन्हो सोई, जो जो कह्यौ तैं मोहि।
अव तू मेरो कह्यौ करि, जुगल चरन छवि जोहि॥
मन गज तजि कै विषै मग, चलहु भजन रस माहिं।
(श्री) राधावल्लभ लाल विनु, तेरौ कोऊ नाहिं॥
रे मन अरु सब छाड़ि कै, जो अटकै इक ठौर।
वृन्दावन घन कुंज में, जहाँ रसिक सिर मौर॥
रे मन अलि तू छुवै जिन, विषै सुमन सठ मन्द।
जुगल चरन अरविंद को, करहि पान मकरन्द॥
मन पच्छी अव परै जिन, जगत मोह के जाल।
तव तोको ह्वै है कठिन, वदि है दुःख विशाल॥
विषै चुगा जिन चुगै मन, चुगत कछुक सुख होइ।
फिर फाँसी ऐसी परै, तेहि सम दुःख न कोइ॥
रे मन कवहूँ जाय जिन, भूलि विषै मन रंग।
मनमथ ठग मारत तहां, लिये वहुत ठग संग॥

जब लगि मन छाँड़त नहीं, सब बातनि को लोभ।
तब लगि हिय उपजत नहीं, जुगल प्रेम की गोभ॥
सब पापन को छत्र है, लोभ ते मनहिं घटाइ।
निस्प्रेही संतोष करि, रहै भजन चित लाइ॥
मन तो चंचल सबनि तें, कीजे कौन उपाइ।
साधन को हरि भजन है, कै सत्संग सहाइ॥
काम कामना वासना, मन ते करि सब दूरि।
(श्री)राधावल्लभलाल भजि, रसिकनि जीवनिमूरि॥
रस बल छुटै न जो विषै, सुख नहिं पावै कोइ।
तन छाँड़ै मन गहि रहै, दूनो दुख तहँ होइ॥
रस बल छूटै जो विषै, तबहिं लहै सुख मूल।
जैसे आतप कौ तप्यो, पावै सरिता कूल॥
विषय करत वय बीत गइ, तृप्त भयो तउ नाहिं।
नैन अछत है दीप करि, परत कूप तम माहिं॥
यद्यपि तन जीरन भयो, छुटी न मन की रीति।
विपरि परयो सिमटत नहीं, इन्द्रिन लीन्हों जीति॥
परनिंदा के किये तें, आवत नहिं कछु हाथ।
मूरख पर्वत पाप को, ले चल्यौ अपने साथ॥
भक्तनि निंदा अति बुरी, भूलि करौ जिनि कोइ।
किये सुकृत सत जनम के, छिन में डारत खोइ॥
मत्सर क्रोध भरयो रहै, अरु सहाइ अभिमान।
निज पावक जरियो करै, महा मूढ़ अज्ञान॥
अब सुनि भजन कि रीति कछु, होइ सदा दृढ धीर।
कोऊ थाह न पावही, जहाँ नीर गभीर॥

जाके जैसो भाव है, मन में धरि निश्वास।
कर्म धर्म अरु लोक कुल, तोरे सबकी आस॥
भक्त आहिं बहु भाति के, तिन में बहुतक भेद।
बिनु विवेक मिलिबो तहा, मन पावै अति खेद॥
सब ठौं मिलिबो एक सो, ज्ञानी की यह रीति।
भजनी सोई विवेक सों, करें समझि के प्रीति॥
खान पान तो कीजिये, रसिक मडली माहिं।
जिनके और उपासना, तहाँ उचित प्रुव नाहिं॥
रसिक रँगे जे जुगल रग, तिनकी जूठन खाइ।
जहाँ तहाँ के पावने, भजन तेज घटि जाइ॥
इष्ट मिले अरु मन मिलें, मिलै भजन रस रीति।
मिलिये तहाँ निसक ह्वै, कीजे तिन सों प्रीति॥
जुगल प्रेम रस मगन जे, तेई अपने जानि।
सब विधि अतर खोलिकै, तिनही सों रुचि मानि॥
यह रस परस्यो नाहिं जिन, तू जिन परसै ताहि।
तासों नातो नाहिं कछु, यह रस रुचै न जाहि॥
सग सोई जाके मिले, भूलै ग्रह व्योहार।
तिहि छिन आवै हिये में, अद्भुत जुगल विहार॥
जिन के देखे पुलक तन, रोमांचित ह्वै जाहि।
सुनत मधुर तिनके वचन, नैन भरे जल आहि॥
जिनको सहज सुभाव (परयो) ही जुगल रग की बात।
निसि दिन बीतैं भजन में, और कछू न सुहात॥
ऐसे भक्तन के मिले, हिय अरु नैन सिरात।
मन दै नीके समुझि कै, सुनिय तिन की बात॥

जिनके जुगल विहार की, बात चलें दिन रैन ।
तिनही को संग कीजिये, छाडि और सब गैन ॥
बहुत मिलें सो सग नहिं, न्यारी न्यारी भाँति ।
जुगल प्रेम रस मगन जे, तेई अपनी पाँति ॥
बहुत भाँति के मत जहाँ, तिनहि न समुझे सग ।
नव किशोरता माधुरी, बिना न अपनो रग ॥
सोरठा—देखो प्रेम बिलास, वृन्दावन, घन कुंज में ।
जिनके यहै उपास, ऐसो सग जु कीजिये ॥
दोहा—नवकिशोर सुकुमार तन, रँगे प्रेम के रग ।
जिनके हिय में बसत ध्रुव, तिनही सों करि सग ॥
कठिन है रसिक अनन्यता, रह तन मन इक ठौर ।
राई के सम चलत ही, होत और की और ॥
भजन न होई सग बिनु भजन बिना नहिं प्रेम ।
छिनहूँ भजन न छाँड़िये, धरिये ध्रुव यह नेम ॥
महा मधुर रस प्रेम को जिनके लाग्यो रग ।
ऐसे रसिक अनन्य जे, कीजे तिन सों सग ॥
और भाव जिनके नहीं, जुगल विहार उपास ।
सुनि ध्रुव मन वच कर्म के, ह्वै रहु तिनको दास ॥
धर्मी ऐसो चाहिये, जैसे सूर रन माहिं ।
खंड खंड ह्वै जाइ तन, फिरि के चितवत नाहिं ॥
कबहूँ तो थोरो भजन, कबहूँ होत बिसाल ।
मन को धीरज छुटै नहिं, गहै न दूजी चाल ॥
कह अचार अपरस कहा, कह संजम व्रत नेम ।
कहा भजन विधि सों किय्यौ, जो नहिं परस्यो प्रेम ॥

भजन न करै निमित्त लै, परै सहज रस ढार।
जैसे रोकी रुकत नहिं, प्रवल नदी की धार॥
भक्त न ऐसो चाहिये, मन धीरज छुटि जाइ।
सुख पाये फूलै अधिक, दुख पाये बिललाय॥
रहै धीर रस भजन में, व्यापै नहिं कछु और।
होत पवन झकझोर बहु, गिरि नहिं छाड़ै ठौर॥
सूर सोई रन भूमि कौं तजै न जब लगि प्रौंन।
भजनी ऐसो चाहिये, उर नहिं आनै औंन॥
महा मधुर रस प्रम निन, परसत नहिं कछु और।
ऐसे रसिक अनन्य जे, तेई मम सिर मौर॥
कह न होइ मतमग ते, देखौ तिल अरु तेल।
मोल तोल सब फिर गयौ, पायौ नाम फुलेल॥
और धर्म साधन भजन, फीके बिनु अनुराग।
जैसे वागौ वनत नहिं, जो न होइ सिर पाग॥
प्रेम बिना जो कछु करै, सो नहिं लागत नीक।
विविध भाँति व्यजन करौ, लौंन बिना सब फीक॥
नवल किशोरी कुँवरि की, महजहि ऐसी वान।
ताको संग न छाँड़ही, नेकु सरन गहै आन॥
प्रीतम हू के प्रण यहै, प्रीति के वस ह्वै जाहिं।
कोटि धर्म किन करौ कोउ, तिन तन चितवत नाहिं॥
एक प्रौंन मन दोइ तन, अँखियन की सी प्रीति।
यद्यपि न्यारी रहत हैं देखत एकहि रीति॥
बाँहा जोरी चलत दोउ, रसिक लाडिली लाल।
देखो ऐसी भाँति छवि, चितवनि नैन विशाल॥

औगुन करे समुद्र सम, गनत न अपनो जान।
राई के सम भजन को मानत मेरु समान॥
ऐसे प्रभु त्रैलोक्य मनि, जिन न भजे चितलाय।
पशु पच्ची ताको सबै मानत अपनो राय॥
तिय सुत नाती नातिनी, तिनही तन चित दीय।
(श्री)राधावल्लभ लाल जी, नेकु न आने हीय॥
परयो विषै के स्वाद में, ऐसो रह्यो लुभाइ।
तिहि रस में वय बीति गई, गह्यो काल ने आइ॥
अद्भुत जुगल विहार को, जिनके रहे विचार।
सुनि ध्रुव तिनकी चरन रज, लै लै सिर-पर धार॥
मन शिच्छा के कहे ध्रुव, दोहा साठ अरु चार।
जुगल चंद अरविंद पद, पल पल प्रतिहि सँभार॥
मन शिच्छा के सुनत ही, ढरयो न नैननि नीर।
पाठ भजन ऐसो भयो, जैसे पढत है कीर॥

॥ इति श्री मन शिक्षा लीला की ध्रुव जी श्री हित हरिवंश चन्द्रजी ॥

अथ श्री वृन्दावन सत लीला

दोहा–प्रथम नाम हरिवंश हित, रटि रसना दिन रैन।
प्रीति रीति तन पाइये, अरु वृंदावन ऐन॥
चरन मरन हरिवंश की, जब लगि आयो नाहिं॥
नव निकुंज निज माधुरी, क्यों परसे मन माहिं॥
वृन्दावन सत करन को, कीन्हों मन उत्साह।
नवल राधिका कृपा बिनु, कैसे होत निवाह॥
यह आसा धरि चित्त में, कहत यथा मति मोर।

वृन्दावन सुख रंग को, काहु न पायौ ओर ॥
दुर्लभ दुर्घट सबनि ते, वृन्दावन निज भौन ।
नवल राधिका कृपा विनु, कहिधौं पावै कौन ॥
सबै अग गुन हीन हौं, ताकौ जतन न कोइ ।
एक किसोरी कृपा तें, जो कछु होइ सो होइ ॥
सोउ कृपा अति सुगम नहिं, ताकौ कौन उपाव ।
चरन शरन हरिवंश की, सहजहि बन्यौ बनाव ॥
हरिवंश चरन उर धरनि धरि, मन वच कै विश्वास ।
कुँवरि कृपा ह्वै है तवहि, अरु वृन्दावन वास ॥
प्रिया चरन वल जानि कै, वाढ़यौ हिये हुलास ।
तेई उर में आनि है, वृन्दा विपिन प्रकास ॥
कुँवरि किसोरी लाड़िली, करुनानिधि सुकुमारि ।
वरनौं वृन्दा विपिन कौं, तिनके चरन सँभारि ॥
हेम मई अवनी सहज, रतन खचित वहु रग ।
चित्रित चित्र विचित्र गति, छवि की उठति तरग ॥
वृन्दावन झलकनि झमक, फूले नैंन निहारि ।
रवि शशि दुतिधर जहाँ लगि, ते सव डारे वारि ॥
वृन्दावन दुतिपत्र की, उपमा कौं कछु नाहिं ।
कोटि कोटि वैकुण्ठ हू, तेहि सम कहे न जाहिं ॥
लता लता सव कल्पतरु, पारिजात सव फूल ।
सहज एक रस रहत हैं, झलकत जमुना कूल ॥
कुंज कुंज अति प्रेम सौं, कोटि कोटि रति मैन ।
दिनहिं सँभारत रहत हैं, श्री वृन्दावन ऐन ॥

पाठान्तर हित पग मिश्र उर धरनि धर ।

विपिनराज राजत दिनहिं, वरषत आनंद पुंज।
लुब्ध सुगन्ध पराग रस, मधुप करत मधु गुंज॥
अरुन नील सित कमल कुल, रहे फूलि वहुरग।
वृन्दावन पहिरैं मनो, बहु विधि वसन सुरग॥
हित सौं त्रिविध समीर वहै, जैसी रुचि जिहि काल।
मधुर मधुर कल कोकिला, कूजत मोर मराल॥
मंडित जमुना वारि यौं, राजत परम रसाल।
अति सुदेस सोभित मनौं, नील मनिन की माल॥
विपिन धाम आनन्द को, चतुरइ चित्रित ताहि।
मदन केलि सम्पति सदा, तेहि करि पूरन आहि॥
देवी वृन्दा विपिन की, वृन्दा सखी सरूप।
जेहि विधि रुचि होइ दुहुनकी, तेहि विधि करत अनूप॥
छिन छिन वन की छवि नई, नवल जुगल के हेत।
समुझि बात सब जीय की, सखि वृन्दा सुख देत॥
गावत वृन्दा विपिन गुन, नवल लाडिली लाल।
सुखद लता फल फूल द्रुम, अद्भुत परम रसाल॥
उपमा वृन्दा विपिन की, कहि धौं दीजे काहि।
अति अभूत अद्भुत सरस, श्रीमुख वरनत ताहि॥
आदि अन्त जाको नहीं, नित्य सुखद वन आहि।
माया त्रिगुन प्रपच की, पवन न परसत ताहि॥
वृन्दा विपिन सुहावनौं, रहत एक रस नित्त।
प्रेम सुरंग रँग तहाँ, एक प्रौन द्वै मित्त॥
अति स्वरूप सुकुमार तन, नव किसोर सुखराम।
हरत प्रौन सब सखिन के, करत मंद मृदु हास॥

न्यारो है सब लोक तें, वृन्दावन निज गेह।
खेलत लाड़िली लाल जहँ, भीजे सरस सनेह॥
गौर श्याम तन मन रँगे, प्रेम स्वाद रस सार।
निकसत नहिं तिहि ऐन ते, अटके सरस विहार॥
वन है बाग सुहाग कौ, राख्यौ रस में पागि।
रूप रंग के फूल दोउ, प्रीति लता रहि लागि॥
मदन सुधा के रस भरे, फूलि रहे दिन रैन।
चहुँदिश भ्रमत न तजत छिन, भृङ्ग सखिनके नैन॥
कानन में रहे भलकि के, आनन विवि-विधु कौंति।
सहज चकोरी सखिन कीं, अखियाँ निरखि सिरौंति॥
एसे रस में दिन मगन, नहिं जानत निसि भोर।
वृन्दावन में प्रेम की, नदी बहै चहुँ ओर॥
महिमा वृन्दा विपिन की, कैसे कै कहि जाय।
ऐसे रसिक किसोर दोउ, जामें रहे लुभाय॥
विपिन अलौकिक लोक में, अति अभूत रसकंद।
नवकिसोर इक वैस द्रुम, फूले रहत सुछंद॥
पत्र फूल फल लता प्रति, रहत रसिक पिय चाहि।
नवल कुँवरि द्दग छटा जल, तिहि कर सींचे आहि॥
कुँवरि चरन अंकित धरनि, देखत जेहि जेहि ठौर।
प्रिया चरन रज जानि कें, लुठत रसिक सिरमौर॥
वृन्दावन प्यारो अधिक, यातें प्रेम अपार।
जामें खेलत लाड़िली, सर्वसु प्रौन अधार॥
सबें सखी सब मौज लें रँगी जुगल अ्रुव रंग।
समें समें की जानि रुचि, लिये रहत हैं संग॥

वृन्दावन वैभव जितौ, तितौ कह्यौ नहिं जात।
देखत सम्पति विपिन की, कमला हू ललचात॥
वृन्दावन की लता सम, कोटि कल्प तरु नाहिं।
रज की तुल वैकुंठ नहिं, और लोक किहि माहिं॥
श्रीपति श्रीमुख कमल कह्यौ, नारद सौं समुझाइ।
वृन्दावन रस सबन तें, राख्यौ दूरि दुराइ॥
अस कला औतार जे, ते सेवत हैं ताहि।
ऐसे वृन्दा विपिन को मन वच कै अव गाहि॥
शिव विधि उद्धव सबनि के, यह आसा है चित्त।
गुल्म लता ह्वै सिर धरैं, वृन्दावन रज नित्त॥
चतुरानन देख्यौ कछू वृन्दा विपिन प्रभाव।
द्रुम द्रुम प्रति अरु लता प्रति, औरै बन्यौ बनाव॥
आप सहित सब चतुर्भुज सब ठौं रह्यौ निहार।
प्रभुता अपनी भूलि गयौ, तन मन कै रह्यौ हार॥
लोक चतुर्दश ठकुरई, संपति सकल समेत।
सब तजि बसै वृन्दा विपिन, रसिकन को रस खेत॥
मकहि तौ वृन्दा विपिन बसि, छिन छिन आयु विहात।
ऐसो समौ न पाइये, भली बनी है घात॥
छाँड़ि स्वाद सुख देह के, और जगत की लाज।
मनहिं मारि तन हारि कै, वृन्दावन में गाज॥
वृन्दावन के बसत ही, अन्तर जो करै आन।
तिहि सम शत्रु न और कोउ, मन वच कै यह जानि॥
वृन्दावन के वास कौ जिनके नाहिं हुलास।
माता मित्र सुतादि तिय तजि ध्रुव तिनको पास॥

और देश के बसत ही, अधिक भजन जो होइ।
इहि सम नहिं पूजत तऊ, वृन्दावन रहे सोइ॥
वृन्दावन में जो कबहुँ, भजन कछू नहिं होय।
रज तो उड़ि लागे तनहिं, पीवें जमुना तोय॥
वृन्दा विपिन प्रभाव सुनि, अपनो ही गुन देत।
जैसे बालक मलिन कौं, मात गोद भरि लेत॥
और ठौर जो यतन करे, होत भजन तउ नाहिं।
या (इहा) फिरे स्वारथ आपने, भजन गहे फिरे वाहिं॥
और देश के बसत ही, घटत भजन की बात।
वृन्दावन में स्वारथौ, उलटि भजन ह्वै जात॥
यद्यपि सब औगुन भरयो, तदपि करत तुव ईठ।
हित मय वृन्दा विपिन कौं, कैसे दीजैं पीठ॥
वृन्दावन ते अनत ही, जेतिक द्यौस बिहात।
ते दिन लेखे जिन लिखौ, वृथा अकारथ जात॥
भजन रसमई विपिन धर, समुझि बसे जो कोइ।
प्रेम बीज तेहि खेत तें, तब ही अंकुर होइ॥
यद्यपि धावत विषै कौं, भजन गहत बिच पानि।
ऐसे वृन्दा विपिन की, सरन गही ध्रुव आनि॥
बसिबो वृन्दा विपिन को, जिहिं तिहिं विधि दृढ़ होइ।
नहिं चूके ऐसो समो, जतन कीजिये सोइ॥
कहँ तू कहँ वृन्दा विपिन, आनि बन्यो भल बान।
यहे बात जिय समुझि के, अपनो छांडि सयान॥
छिन भंगुर तन जात है, आटहि विषै अलोल।
कौडी बदले लेहि तू, अद्भुत रतन अमोल॥

कोटि कोटि हीरा रतन, अरु मनि विविध अनेक ।
मिथ्या लालच छांड़ि के, गहि वृन्दावन एक ॥
नहिं सो माता पिता नहिं, मित्र पुत्र कोउ नाहिं ।
इनमें जो अन्तर करे, वसत वृन्दावन माहिं ॥
नाते जेते जगत के, ते सब मिथ्या मानि ।
सत्य नित्य आनन्द मय, वृन्दावन पहिचानि ॥
बसि के वृन्दा विपिन में, ऐसी मन में राख ।
प्रान तजों बन ना तजों, कहो बात कोउ लाख ॥
चलत फिरत सुनियत यहे, (श्री) राधावल्लभलाल ।
ऐसे वृन्दा विपिन में, बसत रहो सब काल ॥
बसिबो वृन्दा विपिन को, यह मन में धरि लेहु ।
कीजे ऐसो नेम दृढ़, या रज में परे देह ॥
खण्ड खण्ड ह्वै जाइ तन, अग अग सत टूक ।
वृन्दावन नहिं छाड़िये, छाँड़िबो है बड़ि चूक ॥
पटतर वृन्दा विपिन की, कहिं धों दीजे काहि ।
जेहि वन की ध्रुव रेनु में, मरिबो मंगल आहि ॥
वृन्दावन के गुननि सुनि, हित सों रज में लोट ।
जेहि सुख कों पूजत नहीं, मुक्ति आदि सत कोट ॥
सुरपति पशुपति प्रजापति, रहे भूलि तेहि ठौर ।
वृन्दावन वैभव कहो, कौन जानि है और ॥
यद्यपि राजत अवनि पर, सब ते ऊँचो आहि ।
ताकी सम कहिये कहा, श्रीपति वंदत ताहि ॥
वृन्दावन वृन्दा विपिन, वृन्दा कानन ऐन ।
छिन छिन रसना रट्यो कर, वृन्दावन सुख देन ॥

वृन्दावन आनन्द घन, तो तन नश्वर आहि।
पशु ज्यों खोवत विषै रस, काहि न चिंतत ताहि॥
वृन्दावन वृन्दा कहत, दुरित वृन्द दुरि जाहिं।
नेह वेलि रस भजन की, तब उपजै मन माहिं॥
वृन्दावन श्रवननि सुनहि, वृन्दावन कौ गान।
मन वच कै अति हेत सौं, वृन्दावन उर आन॥
वृन्दावन कौ नाम रटि, वृन्दावन कौं देखि।
वृन्दावन सौं प्रीति करि, वृन्दावन उर लेखि॥
वृन्दा विपिन प्रनाम करि, वृन्दावन सुख खानि।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, वृन्दावन पहिंचानि॥
तजि कै वृन्दा विपिन कौं, और तीर्थ जे जात।
छांड़ि विमल चिंतामणी, कौडी कौं ललचात॥
पाइ रतन चीन्हौं नहीं, दीनौं कर तें डार।
यह माया श्रीकृष्ण की, मोह्यौ सब ससार॥
प्रगट जगत में जग मगै, वृन्दा विपिन अनूप।
नैंन अछत दीसत नहीं, यह माया कौ रूप॥
वृन्दावन कौ जस अमल, जिहि पुरान में नाहिं।
ताकी वानी परौ जिनि, क्बहूँ श्रवननि माहिं॥
वृन्दावन कौ जस सुनत, जिनके नाहिं हुलास।
तिनकौ परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनकौ पास॥
भुवन चतुर्दश आदि दै, ह्वै है सब कौ नास।
इक रस वृन्दा विपिन घन, सुख कौ सहज निवास॥
वृन्दावन इह विधि बसै, तजि कै सब अभिमान।
तृण ते नीचो आप कौ, जानैं सोई जान॥

कोमल चित सब सों मिलै, कबहुँ कठोर न होइ।
निस्प्रेही निर्वैरता, ताको शत्रु न कोइ॥
दूजे तीजे जो जुरे, साक पत्र कछु आय।
ताही सों संतोष करि, रहै अधिक सुख पाय॥
देह स्वाद छुट जाहि सब, कछु होइ छीन शरीर।
प्रेम रङ्ग उर में बढ़ै, विहरै जमुना तीर॥
जुगल रूप की झलक उर, नैन रहै झलकाइ।
ऐसे सुख के रंग में, राखै मनहिं रँगाइ॥
आवै छवि की झलक उर, झलकै नैननि बारि।
चितत साँवल गोर तन, सकहि न तनहिं सँभारि॥
जीरन पट अति दीन लट, हिये सरस अनुराग।
विवस सघन बन में फिरै, गावत जुगल सुहाग॥
रस में देखत फिरै वन, नैननि वन रहै आइ।
कहुँ कहुँ आनँद रंग भरि, परै धरनि थहराइ॥
ऐसी गति ह्वै है कबहुँ, मुख निसरत नहिं बैन।
देखि देखि वृन्दा विपिन, भरि भरि ढारै नैन॥
वृन्दावन तरु तरु तरे, ढरै नैन सुख नीर।
चितत फिरै आवेस बस, साँवल गोर सरीर॥
परम सच्चिदानंद घन, वृन्दा विपिन सुदेस।
जामें कबहूँ होत नहिं, माया काल प्रवेस॥
शारद जो शत कोटि मिलि, कल्पन करें विचार।
वृन्दावन सुख रंग को, कबहुँ न पावै पार॥
वृन्दावन आनन्द घन, सब तें उत्तम आहि।
मोतें नीच न और कोउ, कैसे पैहौं ताहि॥

इत-बौना आकाश फल, चाहत है मन माहिं।
ताको एक-कृपा बिना, और जतन कछु नाहिं॥
कुँवरि किसोरी नाम सों, उपज्यों दृढ़ विस्वास।
करुनानिधि मृदु चित्त अति ताते बढ़ी जिय आस॥
जिनको- वृन्दा विपिन है, -कृपा तिनहि की होइ।
वृन्दावन में तबहिं-तो, रहन पाइ है सोइ॥
वृन्दावन सत रतन की, माला-गुही बनाइ।
भाल भाग जाके लिखी,- सोई पहिरे आइ॥
वृन्दावन सुख रंग की, आसा -जो चित-होइ।
निशि, दिन कंठ धरे रहे, छिन नहिं टारे-सोइ॥
वृन्दावन सत जो कहे, सुनि है नीकी भाँति।
निसिदिन तेहि उर जगमगें, वृन्दावन की काँति॥
वृन्दावन को चिंतवन, यहै दीप उर वार।
कोटि जन्म के तम अघहि, काटि करै उजियार॥
वसिकें- वृन्दाविपिन में, इतनो -वडो- सयान।
जुगल चरण के भजन बिन, निमिष न-दीजे जान॥
सहज- विराजत एक रस, वृन्दावन निज-धाम।
ललितादिक सखियन-सहित, क्रीड़त स्यामास्याम॥
प्रेम सिंधु वृन्दा विपिन, जाको अंत न आदि।
जहाँ कलोलत रहत नित, जुगल-किसोर अनादि॥
न्यारो चौदह लोक तें, वृन्दावन-निज-भौन।
तहाँ न कबहूँ लगत है, महा प्रलय की-पौन॥
महिमा वृन्दा-विपिन की, कहि न सकत मम जीह।
जाके रसना द्वै सहस, तिनहूँ काढ़ी-लीह॥

एती मति मोपै कहाँ, सोभा निधि बनराज ।
ढीठो कै कछु कहत हौं, आवत नहिं जिय लाज ॥
मति प्रमान चाहत कह्यौ, सोऊ कहत लजात ।
सिन्धु अगम जेहि पार नहिं, कैसे सीप समात ॥
या मन के अवलंब हित, कीन्हौं आहि उपाय ।
वृन्दावन रस कहन में, मति कबहूँ उरझाय ॥
सोलह से ध्रुव छयासिया, पून्यौ अगहन मास ।
यह प्रबंध पूरन भयौ, सुनत होत अघ नास ॥
दोहा वृन्दा विपिन के, इकसत षोडश आहि ।
जो चाहत रस रीति फल, छिन छिन ध्रुव अवगाहि ॥

॥ इति श्रीवृन्दावन सत लीला को ग्रं पं श्रीहितहरिवंशचन्द्र की ॥

॥ अथ ख्याल हुल्लास लीला ॥

दोहा—दोहा ख्याल हुलास मन, कछु इक कीने आहि ।
प्रेम छटा जेहि उर चढ़ी, सो ध्रुव समुझै ताहि ॥
प्रीति समान न और सुख, दुखहू होत अपार ।
मिलिवौ सुख दुख बिछुरिवौ, यह कीनौ निरधार ॥
बिन देखे तलफत रहे, क्यों पावै चित चैन ।
वदन रूप जल पान कौं प्यासे हैं दोउ नैन ॥
अब सुन इक इक घरी तो, कलपन की सम होत ।
तिहिं दुख लिखिबे कौं कहूँ, नहिं कागद नहिं दोत ॥
कठिन पीर पिय विरह की, लगे प्रेम के बान ।
अब तौ चाहत हे चल्यौ, रहि न सकत इहि प्रान ॥

महा प्रेम निज मधुर अति, सब तें न्यारौ आहि ।
तहाँ न मिलिवौ बिछुरिवौ, जीवत रूपहि चाहि ॥
यह रस नित्य विहार बिनु, सुन्यौ न देख्यौ नैन ।
एक प्रीति वय रूप दोउ, विलसत इक रस मैन ॥
नैना तौ अटके जहां, तहां न बिछुरन होइ ।
इक रस अद्भुत प्रेम के, सुखहि लहैं दिन सोइ ॥
नवल विमल रस प्रेम कौ, जिनके सहजहि ढार ।
तिनके हिये चलत रहै, सुख प्रवाह की धार ॥
जुगल प्रेम रस माधुरी, तहां न अटके चित्त ।
चखत फिरैं माया फलनि, तहां रहैं दुख नित्त ॥
जहाँ जहाँ चित लागि है, तहाँ तहाँ दुख रासि ।
जब लगि मन परि है नहीं, जुगल प्रेम की पासि ॥
जुगल रूप तन विपिन जहँ, तहां न अटके जाइ ।
देखि विषै विष छिनक सुख, तिहिं ठां रह्यौ लुभाइ ॥
मूरख मन समुझत नहीं, नवल रूप निधि पाय ।
फीको छिल्लर विषै कौ, तहां धँसत है धाय ॥
सोऊ कर आवत नहीं, बनत न एकौ बात ।
बिच ही दुख पावत फिरत, दुहूँ ओर ते जात ॥
जहाँ जहाँ चित दीजिये, तहाँ तहाँ दुख मूल ।
तहाँ न अरुझै जाइ के, सदा रहै सुख फूल ॥
अनत अटक नाहिन भली, यह समुझै सब कोइ ।
लहै न मन कौ जो रुचै, फिर फिर दुख ही होइ ॥
और विषै रस पाइये, सोऊ दुख करि जानि ।
तहाँ न दीजे चित्त ध्रुव, यह कह्यौ मेरौ मानि ॥

अब तौ ऐसी चित्त धरि, जुगल चरन रँग राँचि।
महा माधुरी केलि गुन, छिन छिन गायऽरु नाँचि ॥
सुनि ध्रुव ऐसी चाहिये, छाँडि जगत की रीति।
जुगल चरन कोमल सुरँग, तिनही सों करि प्रीति ॥
अब तौ आहि यहै भली, सबतें मोह मिटाय।
रसिक अनन्यनि संग गहि, स्यामा स्याम लड़ाय ॥
अबतो करनी है यहै, वृन्दावन करि वास।
जुगल चरन छवि रंग रँगि, सब तें होइ उदास ॥
तन मन कैं बन सेइये, या पर नहिं मत और।
विहरत जहँ सुकुमार दोउ, अद्भुत स्यामल गौर ॥
सो०—सुनि लै मेरी बात, जुगल चरन चित लाइये।
जो चूक्यौ यह घात, फिर पाछैं पछिताइ है ॥
दोहा—अबतौ वय सब बीति गइ, अरु जु रही सोउ जात।
धोम न कछु (वे) करि सक्यौ, अब जिन खोवै रात ॥
पगु होइ सब ओर तें, अटकैं विवि छवि माँहि।
तबहीं तो पावै सुखहि, और विपै छुटि जाहिं ॥
अब के देही मनुज की, पाई है केहुँ भाग।
जुगल चंद पद कमल सौं, कीजैं ध्रुव अनुराग ॥
समुझत नहिं देखत सुनत घटत नाहिं ललचानि।
जैसे खोटे तुरँग की, मिटत न मन की बानि ॥
सुख तौ सोई जानिबो, इक रस रहै दिन साथ।
सो सुख दुख सम जानिये, होइ पराये हाथ ॥
नख सिख लौं भूपन जिते, अगनि छविहि निहार।
सुख सींवा माधुर्य रस, छिन छिन यहै विचारि ॥

जाके यह सम्पति सदा, सोइ धनी जग माहिं।
ताको माया काल की, पवनहु परसत नाहिं॥
कुंज भवन रचना रुचिर, सेज सुरग अनूप।
तापर बैठ देखि ध्रुव, अद्भुत सहज सरूप॥
जाके नैननि झलकि रहै, गौर स्याम अभिराम।
तिनही ध्रुव यह देह धरि, पायो है विश्राम॥
रूप सिंधु में पैठि ध्रुव, जो मन सकहि सँभारि।
प्रेम रतन तन कर परै, विपया विप दै डारि॥
ज्ञान भजन जो करहु वहु, कौन करै वकवाद।
विविध भाँति विंजन करो, लोंन बिना नहिं स्वाद॥
प्यार विना नहिं सोहही, करो भजन वहु ग्यान।
दीपक वहु इकठो रहै, होत न भानु समान॥
वहुत भांति लै चतुरई, करो भजन की वात।
रच प्रेम की छटा विनु, सन नीरम है जात॥
पानिप मोती की जैसी, ऐसो भजन सनेह।
जाके उर झलकत रहै, तिनहि धरी ध्रुव देह॥
करत भजन विधि सों विघ्यो, अरु अचार वहुतेर।
प्रम छटा की झलक विनु, होत है सव अंधेर॥
प्रेम छटा रचक नहीं, विधि को भजन अपार।
स्वादी स्वाद न पावही घृत विनु ज्यों ज्योंनार॥
प्रेम आँच के लगत ही, ढरकि चलत मन मैन।
हियो थकै तन पुलकि है, भरि भरि ढारै नैन॥
अपरस ग्यान समान यम, भजन धर्म आचार।
पाहन कवहुँ न होत मृदु, परयो रहै जलधार॥

वहु रँग माया विपिन घन, तहाँ फिरे सुख मानि।
ऐंचि खेंचि या मन मृगहि, गहि सतसगहि आनि॥
मनतें चंचल नाहिं कछु, नेकु न कहुँ ठहरात।
तवही तो ध्रुव होत वस, परे प्रेम की घात॥
बिचल्यो फिरे भलो नहीं, प्रेम गली छुटि जाइ।
रहे एकही ठौर लगि, जुगल चरन चितलाइ॥
प्रेम रग सों रँगे जे, नहिं आनत उर आन।
अद्भुत जुगल बिहार रस, तेई करिहैं पान॥
घाइल कबहूँ नहिं भयो, नवल नेह के तीर।
अटक बिना ध्रुव खटक नहिं, कह जाने पर पीर॥
चढ़िके मैन तुरंग पै, चलिवो पावक माहिं।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं॥
परयो न रूप प्रवाह में, परस्यो नहिं उर नेह।
सुनि ध्रुव तिन या जगत में, धरी वादही देह॥
प्रेम प्रकार अनेक विधि, तिनमें उत्तम भाँति।
अद्भुत चरित दुहूँनि के, जिनके उर झलकाँति॥
प्रेम भानु के उदय ते, मिटत है भ्रम सब फेर।
खड खंड ह्वै जाइ ध्रुव, माया मोह अँधेर॥
जहँ प्रीतम तेहिं देस की, प्यारी लागत पौन।
प्रेम छटा जाने बिना, यह सुख समुझै कौन॥
नव किसोरता माधुरी, दंपति रूप निहारि।
तेहि सुख के ध्रुव निमिष पर ज्ञान मुक्ति सब वारि॥
जाको हियो सरस नहिं, क्यों समुझै रस रीति।
बिनु अनुभव जाने कहा, कैसी होत है प्रीति॥

मन न मिल्यौ तन निकट है, तहाँ कहाँ सुख होइ।
बिनु गुन मन मनियाँ कहौ, कैसे लीजै पोइ॥
ज्ञान बिना पसु हू कछू, समुझत प्रीति को रंग।
मोह बँध्यो पाछे फिरत, तजै न कबहूँ संग॥
ज्ञान सहित नर देह वर, भरत खंड में होइ।
जो नहिं समुझै प्रेम रस, ताको रहिये रोइ॥
प्रेमी मलिन न होइ ध्रुव, जाको उज्जल हीय।
इक रस जाके उर वसै, रसिक लाड़िली पीय॥
अब ध्रुव ऐसी चाहिये, सबहीं तें मन फेरि।
कै रसिकन को संग गहि, जुगल चंद छवि हेरि॥
दोहा ख्याल हुलास के, तहँ प्रबन्ध कछु नाहिं।
आगे पाछे है भये, जो आये उर माहिं॥
उलटो पथ है प्रेम को, तहाँ रह्यो मन हारि।
जसहू सुनि लागत बुरो, मीठी लागत गारि॥

॥ इति श्री ख्याल हुलास लीला की जै जै श्री हित हरिवंश चन्द्र की ॥

॥ अथ भक्त नामावलि लीला ॥

दोहा—श्री हरिवंश नाम ध्रुव कहतही, बाढ़ै आनँद बेलि।
प्रेम रंग उर जगमगे, जुगल नवल रस केलि॥
निगम ब्रह्म परसत नहीं, जो रस सबतें दूरि।
कियो प्रगट [1]हरिवंश जू, रसिकनि जीवनि मूरि॥
(श्री)[2]वनचंद चरनअंबुज भजु, मन क्रम वचन प्रतीति।
वृन्दावन निज प्रेम की, तब पावै रस रीति॥
[3]कृष्णचन्द के कहत ही, मनको भ्रम मिटि जाइ।
विमल भजन सुख सिंधु में, रहै चित्त ठहराइ॥

१—श्री हरिमुख वंश्यावतार। २—श्री वृन्दावन की अौतार। ३—श्री गोलोकनाथ अौतार।

(श्री) [४]गोपीनाथ पद उर धरे, महा गोप्य रस सार ।
नितु विलव आवे हिये, अद्भुत जुगल विहार ॥
पति कुटुम्ब देखत सबे, घूघट पट दिये डारि ।
देह गेह विसरयो तिनहिं, [५]मोहन रूप निहारि ॥
धीर गँभीर समुद्र सम, सील सुभाव अनूप ।
सब अँग सुन्दर हँसत मुख, अद्भुत सुखद सरूप ॥
शुक नारद उद्धव जनक, प्रहलादिक सनकादि ।
ज्यों हरि आपुन नित्य हैं, त्यों ये भक्त अनादि ॥
प्रगट भयो जयदेव मुख, अद्भुत गीत गोविंद ।
कहयो महा सिंगार रस, सहित प्रेम मकरंद ॥
अरिल्ल–पद्मावति जयदेव प्रेम वस कीन्हें मोहन ।
अष्टपदी जो कहे सुनत फिरे ताके गोहन ॥
दोहा–श्रीधर स्वामी तौ मनौ, श्रीधर प्रगटे आनि ।
तिलक भागवत कियो रचि, सब तिलकनि परिवाँनि॥
रसिक अनन्य हरिदास जू, गायो नित्य विहार ।
सेवा हू में दूरि किये, विधि निषध जंजार ॥
सघन निकुंजनि रहत दिन, बाढयो अधिक सनेह ।
एक विहारी हेत लगि, छाँडि दिय सुख गेह ॥
रक छत्रपति काहु की, धरी न मन परवाह ।
रहे भीजि रस भजन में, लीने कर करवाह ॥
वल्लभ सुत विट्ठल भये, अति प्रसिद्ध समार ।
सेवा विधि जिहि समै की, कीनी तेहि ब्योहार ॥
राग भोग अद्भुत विविध, जो चहिये जिहि काल ।
तिनहिं लड़ाये हेत सो, गिरधर (श्री) गोपाल ॥

४–श्रीगोपीनाथ–श्रीमदनमोहन पोतार । ५–श्रीमोहनमन्त्री–श्रीराधावल्लभ नित्य विहारी

गौड देस सब उद्धरयौ, प्रगट कृष्ण चैतन्य।
तैसेहि नित्यानद हू, रस में भये अनन्य॥
पावत ही तिनको दरस, उपजै भजना नंद।
निनही श्रम छुटि जाइ सब, जे माया के फंद॥
रूप सनातन मन बढ्यौ, राधा कृष्ण अनुराग।
जानि विश्व नस्वर सबै, तब उपज्यौ वैराग॥
विप समान तजि विपै सुख, देश सहित परिवार।
वृन्दावन कौं चले यौं, ज्यौं सावन जलधार॥
तृन ते नीचौ आपकौं, जानि बसे बन माहिं।
मोह छाँड़ि ऐसें रहे, मनहु चिन्हारहुँ नाहिं॥
अरिल्ल–रघुनदन सारंग जीव, तिन पाछे आये।
कृष्ण कृपा करि सबै, आनि निज धाम बसाये॥
दोहा–भजन रसिक रघुनाथ जी, राधा कुंड स्थान।
लौंन तक ब्रज कौ लियो, परस्यौ नहिं कछु आन॥
वन्दन करिकै चितवनि, गौर स्याम अभिराम।
सोवतहू रसना रटै, राधा-कृष्ण सुनाम॥
श्रीविलास ब्रजनाथ अरु, श्रीचँद मुकुँद प्रवीन।
मदनमोहन पद कमल सौं, अधिक प्रीति तिन कीन॥
महा पुरुप नन्दन भये, धरि तन सकल सिंगार।
सखी रूप चितत फिरे, गौर स्याम सुकुँवार॥
नैन सजल तिहि रग में, चित पायौ विश्राम।
निनस वेगि ह्वै जात सुनि, लाल लाड़िली नाम॥
कृष्णदास हुते जगली, तेऊ तैसी भाति।
तिनके उर झलकत रहै, हेम नील मनि कांति॥

जुगल प्रेम रस अवधि में, परयो प्रवोध मन जाइ।
वृन्दावन रस माधुरी, गाई अधिक लड़ाइ॥
अति विरक्त ससार तें, वसे विपिन तजि मौंन।
प्रीति सहित गोपाल भट, सेये राधा रौंन॥
घमडी रस में घमड़ि रह्यो, वृन्दावन निज धाम।
वसीवट तट वास किये, गाये स्यामा स्याम॥
भट्ट नरायन अति सरस, व्रज मंडल सौं हेत।
ठौर ठौर रचना करी, प्रगट कियो संकेत॥
अरिल्ल–वर्द्धमान श्रीभट्ट अरु, गगल व्रज वृन्दावन गायो।
करि प्रतीति सर्वोपर जान्यो, ताते चित्त लगायो॥
दोहा–भट्ट गदाधर नाय भट, विद्या भजन प्रवीन।
सरस कथा वानी मधुर, सुनि रुचि होत नवीन॥
गोविंद स्वामी गंग अरु, विष्णु विचित्र वनाय।
पिय प्यारी को जस कह्यो, राग रंग सौं छाय॥
मनमोहन सेवा अधिक, कीनी हे रघुनाथ।
न्यारी ये रस भजन की, वात परी तेहि हाथ॥
गिरधर स्वामी पर कृपा, वहुत भई दई कुंज।
रसिक रसिकनी को सुजस, गायो तेहि सुख पुज॥
विट्ठल विपुल विनोद रस, गाई अद्भुत केलि।
निलमत लाड़िलीलाल सुख, असन पर भुज मेलि॥
विहारीदास निज एक रस, ज्यों स्वामी की रीति।
निर्वाही पाछे भली, तोरी सवसों प्रीति॥
मत्त भयो रस रंग में, करी न दूजी वात।
निन निहार निज एकरस, और न कछु सुहात॥

भर किसोर दोउ लाड़िले, नवल प्रिया नव पीय ।
प्रगट देखियत जगमगे, रसिक व्यास को हीय ॥
कहनी करनी करि गयो, एक व्यास इहिं काल ।
लोक वेद तजि कें भजे, (श्री) राधावल्लभ लाल ॥
प्रेम मगन नहिं गन्यो कछु, वरना धरन विचार ।
सवनि मध्य पायो प्रगट, ले प्रसाद रस सार ॥
सेवक की सर को करे, भजन सरोवर हंस ।
मन वच के धरि एक व्रत, गाये श्रीहरिवंश ॥
वंश विना हरिनाम हूँ, लियो न जाके टेक ।
पावे सोई वस्तु कों, जाके है व्रत एक ॥
कहा कहों नहिं कहि सकत, नरवाहन को भाग ।
श्रीमुख जाको नाम धर्यो, निज वानी अनुराग ॥
अति अनन्य निज धर्म में, नाइक रसिक मुकुन्द ।
वसे विपिन रस भजन के, छाँड़ि जगत दुख द्वंद ॥
परम भागवत अति भये, भजन माहिं दृढ़ धीर ।
चतुर्भुज वैष्णवदास की, वानी अति गंभीर ॥
सकल देस पावन कियो, भगवत जसहि बढ़ाइ ।
जहाँ तहाँ निज एक रस, गाई भक्ति लड़ाइ ॥
परमानंद किसोर दोउ, सन्त मनोहर खेम ।
निर्वाह्यो नीके सवनि, सुन्दर भजन को नेम ॥
छाँड़ि मोह अभिमान सव, भक्तन सों अति दीन ।
वृन्दावन वसिकें तिनहिं, फिर मन अनत न कीन ॥
लालदास स्वामी सरस, जाके भजन अनूप ।
वरन्यो अति दृढ़ अच्छरनि, लाल लाड़िली रूप ॥

अधिक प्यार है भजन सों, और न कछू सुहात।
कहत सुनतभगवत जसहि, निसि दिन जाहि विहात ॥
वाल कृष्ण गति कह कहौं, कैसेहु कहत वनैन।
रूप लाड़िली लाल को, झलमलात तेहि नैन ॥
अति प्रवीन पंडित अधिक, लेस गर्व को नाहिं।
कीनी सेवा मानसी, निसि दिन मन तेहि माहिं ॥
ग्यानू नाहर मल्ल की, देखी अद्भुत रीति।
हरिवंश चद पद कमल सों,बाढी दिन दिन प्रीति ॥
कह कहौं मोहनदास रति, ताकी गति भई आन।
व्यासनद अतर सुनत, तजे तही छिन प्रान ॥
विट्ठलदास मुरलीधरनि, (चरण) पद सेये सव काल।
तैसेहु दास गोपाल जी, गाये ललना लाल ॥
सुदर मदिर की टहल, कीनी अति रुचि मानि।
सफल करी सपति सकल, लगी ठिकाने आनि ॥
अगीकृत ताकों कियो, परम रसिक सिरमौर।
करुनानिधि वहु कृपा करि, दीनी सनमुख ठौर ॥
वडो उपासक गोंड़िया, नाम गुसाई दास।
एक चरन नन्दचद विनु, जाके और न आस ॥
नेही नागरिदास अति, जानत 'नेह की रीति।
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रँगीली प्रीति ॥
व्यासनंद पद कमल सों, जाके दृढ़ विस्वास।
जेहि प्रताप यह रस कह्यो, अरु वृन्दावन वास ॥
भली भाँति सेयो विपिन, तजि वधुन सों हेत।
सूर भजन में एक रस, छाँड़यो नाहिंन स्नेत ॥

विहारीदास दम्पति जुगल, माधो परमानद ।
वृन्दावन नीके रहे, काटि लोज को फद ॥
नीकी भांति मुकुन्द की, कैसेहु कहत बनेन ।
बात लाडिली लाल की, सुनि भरि आवर्त नैन ॥
मन बच करि विश्वास धरि, मारि हिये के काम ।
मात पिता तिय छाड़ि के, बस्यो वृन्दावन धाम ॥
अन्तकाल गति कह कहौं, कैसेहु कही न जाति ।
चतुरदास वृन्दा विपिन पायो आछी भाति ॥
चिंतामनि वार्तनि सरस, सेवा माहिं प्रवीन ।
कहत सुनत भगवत यशहि, छिन छिन उपज नवीन ॥
नागर अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास ।
वृन्दावन पायो दुहुन, पूजी मन की आस ॥
नवल कल्यानी सखिन की, मन हो अति अनुराग ।
लाल लडैती कुँवरि को, गायो भाग सुहाग ॥
भली भाति वृन्दाअली, अति कोमल सु सुभाव ।
कृपा लडैती कुँवरि की, उपज्यो अद्भुत चाव ॥
कीनें रास बिलास बहु, सुख बरषत संकेत ।
रचना रची कल्यान रचि, मँडनी दास समेत ॥
सेवा राधारमन की, भक्तनि को सनमान ।
सांते बसि जमुना कियो, तेहि सम नहिं कोउ आन ॥
हुते उपासक अधिक ही, या रस में हरिदास ।
निशि दिन बीते भजन में, राधा कुण्ड निवास ॥
बरसाने गिरिधर सुहृद, जाके ऐसो हेत ।
भोजन हूँ भगतन बिना, धर्यो रहत नहिं लेत ॥

नंददास जो कछु कह्यौ, राग रंग सों पागि।
अच्छर सरस सनेह मय, सुनत श्रवन उठे जागि॥
रमनदास अद्भुत हुते, करत कवित्त सुढार।
बात प्रेम की सुनत हा, छुटत नैन जल धार॥
बावरो सो रस में फिरै, खोजत नेह की बात।
आछे रस के वचन सुनि, वेगि विवस ह्वै जात॥
कह कहौं मृदुल सुभाव अति, सरस नागरी दास।
बिहारी बिहारिनि को सुयश, गायौ हरषि हुलास॥
परमानंद माधो मुदित, नवकिशोर कल केलि।
कही रसीली भाँति सों, तिहि रस में रह्यौ झेलि॥
सेयो नीकी भाँति सों, श्री संकेत स्थान।
कह्यौ बड़ाई छाँडिके, सूरज द्विज कल्यान॥
खरगसेन के प्रेम की, बात कही नहिं जात।
लिखत ललित लीला करत, गये प्रान तजि गात॥
तैसेहि राघोदास की, बात सुनी यह कान।
गावत करत धमार हरि, गये छूटि तन प्राँन॥
(यह) मरन भक्त अद्भुत भयो, और न कछू सुहात।
अंगन की छवि माधुरी, चिंतत जाहि बिहात॥
रोमांचित तन पुलकि ह्वै, नैंन रहे जल पूरि।
जाके आशा एक ही, [श्री] वृन्दावन की धूर॥
कह कहौं महिमा भाग की, भई कृपा सब अंग।
वृन्दावन दासी गह्यौ, जाइ सखिन के संग॥
लाज छाँड़ि गिरिधर भजे, करी न कछु कुल कान।
सोई मीरा जग विदित, प्रगट भक्ति की खान॥

ललितहु लाई बोलि के, तासों हो अति हेत।
आनँद सों निरखत फिरैं, वृन्दावन रस खेत॥
निर्त्तति नूपुर बाँधि के, गावति लै करताल।
विमल हियो भक्तनि मिली,त्रिन सम गनि ससार॥
बंधुनि विष ताको दियो, करि विचार चित आन।
सो विष फिर अमृत भयो, तब लागे पछितान॥
गगा यमुना तियनि में, परम भागवत जानि।
तिनकी बानी सुनत ही, बढ़े भक्ति उर आनि॥
(कुभन] कृष्णदास गिरिधरनि सों,कीनी साची प्रीति।
कर्म धर्म पथ छाँड़ि के, गाई निज रस रीति॥
पूरनमल जशवतजी, भूपति गोविंद दास।
हरीदास इन सबनि मिलि, सेये नित हरिदास॥
परमानंद अरु सूर मिलि, गाई सब ब्रज रीति।
भूलि जात विधि भजन की,सुनि गोपिन की प्रीति॥
(माधो) रामदास बरसानियाँ ,ब्रज विहार में खेल।
गाये नीकी भाँति सों, तेहि रस में रहे भेल॥
सूरदास अति प्रीति सों, कवित्त रीति भलि कीन।
मदनमोहन अपनाय के, अगीकृत करि लीन॥
जिन जिन भक्तन प्रीति किये, ताके वस भये आनि।
सेन हेत नृप टहल किये, नाम कि छाई छानि॥
जगत विदित पीपा धना, अरु रैदास कबीर।
महा धीर दृढ़ एक रस, भरे भक्ति गभीर॥
जगन्नाथ घत्मल भगत, कीनों यश विस्तार।
माधो भूखो जानि के, लाये भोजन थार॥

एक समै निसि सीत सों, काँपन लाग्यो गात।
आनि उढाई तेहि समय अपने कर सकलात॥
निलुमगल जब अंध भयो, आपुन कर गहे आइ।
भक्तनि पाछे यों फिरत, ज्यों बछरा संग गाइ॥
रामानँद अंगद सोभू, हरिव्यास अरु छीत।
एक एक के नाम सों, सब जग होत पुनीत॥
रङ्का बङ्का भक्त द्वै, महा भजन रस लीन।
इन्द्रासन के सुखनि को, मानत त्रिन सों हीन॥
नग्मी हू अति सरस हिय, कहा देउँ सम तूल।
कह्यो महा सिंगार रस, जानि सुखनि को मूल॥
दीनी ताको रीझि के, माला नंदकुमार।
राखि लियो अपनी शरन, बिमुखनि मुख दै छार॥
जहँ जहँ भक्तनि को कछू परत है संकट आनि।
तहँ तहँ अपुन बीच ह्वै, धरत अभै को पानि॥
भक्त नरायन भक्त सब, धरें हिये दृढ़ प्रीति।
बरनी आछी भाँति सों, जैसी जाकी रीति॥
रसिक भक्त भूतल घने लघु मति क्यों कहे जाहिं।
बुधि प्रमान गाये कछू, जो आये उर माहिं॥
हरि को निज यश ते अधिक, भक्तनि जश पर प्यार।
यातें यह माला रची, करि ध्रुव कंठ सिंगार॥
भक्तनि की नामावली, जो सुनिहै चित लाइ।
ताके भक्ति बढ़े घनी, अरु हरि होइ सहाइ॥
एक बार जिन नाम लिय, हित सों ह्वै अति दीन।
ताको संग न छाँड़ही, ध्रुव अपनो करि लीन॥

ऐसे प्रभु जिन नहिं भजे, सोई अति मति हीन।
देखि समुझि या जगत में, बुरो आपनो कौन ॥
अजहू सोच विचार कै, गहि भक्तनि पद ओट।
हरि कृपाल सन पाछिली, छमि हैं तेरी खोट ॥

॥ इति श्री भक्त नामावली लीला की दै कै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ बृहद वावनपुरान की भाषा लीला ॥

दो०—वावन वृहद पुरान की, कछु इक कथा वनाइ।
भक्तनि हित भाषा करी, जैसे समझी जाइ ॥ १ ॥
एक समै भृगु पिता सों, प्रश्न करी यह आनि।
करि प्रणाम ठाढ़ो भयो, आगे जोरे पानि ॥ २ ॥
एक अशंका उर वढ़ी, चित्त रह्यो विस्माइ।
सर्वोपरि सर्वज्ञ तुम, हमहिं देहु समझाइ ॥ ३ ॥
नारदादि शुक से जिते, किये भक्त सब गौन।
जाची रज ब्रज तियन की, यह धौं कारन कौन ॥ ४ ॥
सुनहु पुत्र समझी न तैं, रह्यो भूलि ब्रह्म ज्ञान।
सर्वोपरि ये हरि प्रिया, इनकी कौन समान ॥ ५ ॥
वहुत वरष हम तप कियौ, इनकी पद रज हेत।
सो रज दुर्लभ सवनि को, हमहू अजौं न लेत ॥ ६ ॥
और तियन में गनहुँ जन, ये श्रुति कन्या आदि।
कियौ अधीन पिय साँवरो, प्रेम चितवनी चाहि ॥ ७ ॥
अव लगि तैं समझ्यौ नहीं ब्रज को रंग रसाल।
जो दिन वीते रस विना, वादि गयौ सव काल ॥ ८ ॥
ब्रह्म ज्ञान में रहे भ्रम, और न कछू सुहात।
छाँड़ि रसमई अमृत फल, जाचत सूखे पात ॥ ९ ॥

ज्ञानी खोजत ज्ञान में, भजनी भजन अपार।
ते हरि ठाढ़े रहत हैं, व्रज देविन के द्वार ॥१०॥
एक भक्त बन्दन करत, नहिं चितवत तिन ओर।
व्रज बनितनि के पगनि सों,लावत मुकुट किसोर ॥११॥
निमगनि अस्तुति रुचति नहिं,करत हैं तत्व बिचारि।
जैसे भावत हेत सों, व्रज देविन की गारि ।१२।
अजहू खोजत लहत नहिं,ऋषि मुनि जनकी पाति।
द्वार द्वार व्रज सुन्दरिन, फिरत चक्र की भाँति ॥१३।
सब भक्तनि के सिरनि पर, हरि ईश्वर नंदलाल।
व्रज में सेवक ह्वै रहे, अद्भुत प्रेम की चाल ॥१४।
एक भजन बिधि सों करत, नीके मानत नाहिं।
जैसे व्रज जुवती तिन्हें, ठेलि पगनि सों जाहिं ॥१५॥
फिरत किशोर चकोर ज्यों, बरसाने की ओर।
घर घर प्यारो लगत है, परे प्रेम की डोर ॥१६॥
चित्र सारी चितवत रहत, जैसे घन तन मोर।
चहुँ ओर ग्रीवां फिरत, ज्यों प्रति चन्द्र चकोर ॥१७॥
जबहिं द्वार वृषभान के, आये नंदकुमार।
तेहि छिन गति औरै भई, रही न देह सम्हार ॥१८॥
हाइ हाइ सब कोउ करें, अद्भुत रूप निहारि।
कहा भयौ या कुँवर को, देत प्रान सब वारि ॥१६॥
तनक भनक श्रवननि परी, रहि न सकी अकुलाइ।
झाँकी सखियन सग तजि, कुँवरि झरोखा आइ ॥२०॥
लाज छाँड़ि अति प्यारसों, चितई कछु मुसक्याइ।
सैननि में अति चतुर पिय, रहे चरन शिर नाइ ॥ २१ ॥

अंग अंग प्रति फूल भई, आनद उर न समाइ ।
भाग मानि पहिचानि करि, चले लाल सिर नाइ ॥२२॥
सर्वोपरि राधा कुँवरि, पिय माननि के प्रान ।
ललितादिक सेवत तिनहिं, अति प्रवीन रस जानि ॥२३॥
पहिली पैरी प्रेम की, कीन्ही व्रज विस्तार ।
भक्तनि हित लीला धरी, करुना निधि सुकुमार ॥२४॥
रच्यो रास काउ वची नहिं, आइ मिली व्रजनारि ।
प्रेम फाग खेली तहाँ, सव संकोच निवारि ॥२५॥
ऋषि मुनि योगिन के लिये, कबहुँ न लसै व्रज चंद ।
गहि लीन्हें व्रज सुन्दरिन, डारि प्रेम को फंद ॥२६॥
जोइ जोइ व्रज वनिता कहैं, साइ सोइ लेतहैं मानि ।
नाचत ज्यों कठ पूतरी, तिनके आगे आनि ॥२७॥
वहुत भांति लीला चरित, तैसेई भक्त अपार ।
अपनी अपनी रुचि लिये, करत भक्ति विस्तार ॥२८॥
और चरित वहु भाति के, कीन्हें हैं जग केत ।
दूजो कारन नाहिं कछु, ते सव भक्तन हेत ॥२९॥
अर्जुन पूछ्यो कृष्ण सों, मेरे एक सन्देह ।
कौन भक्त प्यारो तुम्हें, यह मोसों कहि देह ॥३०॥
भक्त जगत में वहुत हैं, तिनको नाहिं प्रमान ।
हों गोपिन के हिय वसों, गोपी मेरे प्रान ॥३१॥
वैकुण्ठहु ते अधिक है, मथुरा मंडल जानि ।
तामें ताहू ते अधिक, व्रजमंडल सुख खानि ॥३२॥
अति सुदेश माया रहित, इक्कईस योजन भूमि ।
तहँ महाइ व्रजधाम की, रहत कृष्ण दिन झूमि ॥३३॥

मधि राजत ज्यों मुकुट मणि, वृन्दावन रस कंद ।
रस मय सुख मय तेज मय, झलकत कोटिन चंद ॥ ३४ ॥
एक रंग रुचि एक रस, अद्भुत नित्य विहार ।
जहाँ किशोरी लाड़िली, करी लाल उर हार ॥ ३५ ॥
निशि दिन तो पहिरे रहैं, रूपकि मनि उजियार ।
ता रस में लटके छके, रहत अधिक रस मार ॥ ३६ ॥
अंग अंग मन मन मिले, नेननि नैन विशाल ।
रूप वेलि प्यारी वनी छवि के लाले तमाल ॥ ३७ ॥
जोरी दूलह दुलहिनी, मोहनी मोहन आदि ।
परत न अन्तर निमिप को, जीवत रूपहि चाहि ॥ ३८॥
महा मधुर रस माधुरी, नव नव वेस किशोर ।
अद्भुत रसमें मगन हैं, नहिं जानत निशि भोर ॥ ३९ ॥
नव किशोरता माधुरी, सब गुन लीन्हें संग ।
जुगल चरन सेवत रहैं, रँगी प्रेम के रंग ॥ ४० ॥
नित्य लाड़िली लाल दोउ, नित वृन्दावन धाम ।
नित्य सखी ललितादि निज, सेवत श्यामा श्याम ॥४१॥
व्रज में जो लीला चरित, भयो जु वहुत प्रकार ।
सबको सार विहार है, रसिकनि कियो निर्धार ॥ ४२ ॥
वृन्दावन महिमा कछू, कहत हो सो सुनि लेहु ।
द्रुम द्रुम प्रति अरु लता प्रति, लपट्यो सहज सनेह ॥४३॥
महा प्रलय जवहीं भयो, रह्यो न वे कछु आनि ।
गिरि वन व्योम न भूमि रहि, नहिं नक्षत्र शशि भान ॥४४॥
सर सरिता सागर मिले अमित मेघ की धार ।
तीन लोक जल चढ़ि गयो, वूड्यो सव संसार ॥ ४५ ॥

कोटि कोटि उत्पति प्रलय, होत रहत इह भांति।
जैसे अरहट की घरी, भरि भरि ढरि ढरि जाति ॥४६॥
लोक पाल लीला रचित, अब कछु दीसत नाहिं।
निगम रिचा भूली भ्रमत, तरत फिरें तिन माहिं ॥४७॥
सहज विराजत एक रस, वृन्दावन निज भौन।
माया जल परसत नहीं, अरु माया की पौन ॥४८॥
न्यारौ चौदह लोक तें, वृन्दावन निज धाम।
इक छत विलसत रहत नित, सहजहि श्यामा श्याम ॥४९।
चहूं ओर वृन्दा विपिन, सेवत सब अवतार।
करत विहारि विहार तहँ आनद रग विहार ॥५०॥
निगमनि सोच विचार कै, यह ठहराई चित्त।
भजन ताहि कौ कीजिये, इक रस रहै जु नित्त ॥५१।
तव लागे अस्तुति करन, वाढयौ उर आनंद।
जानौं पूरन सवनि पर, श्री वृन्दावन चद ॥५२॥
एकै पुरुष किशोर है, दूजौ नाहिंन कोइ।
जाकी इच्छा सहज ही, यह कौतुक सव होइ ॥५३।
गावत जाकौ सुयश रस आनद वढयौ अपार।
देखि कछू छवि की छटा, वृन्दा विपिन विहार ॥५४॥
रूप माधुरी देखि कछु, विवस भए मुरझाइ।
वाढ़ी रुचि की चाह अति, रहे ललचाइ लुभाइ ॥५५।
काम कामना वढ़ी उर, यह उपजी अति आइ।
खेलें ऐसे रूप संग, वनिता को तन पाइ ॥५६॥
तिन प्रति तव वानी भई, यह प्रभु लीन्हीं मानि।
प्रगट होहु व्रज जाय तुम, हमहू प्रगटैं आनि ॥५७॥

तहाँ सबै सुख पाइ हौ, जो जो करी मन श्रास ।
हम तुम एकै संग मिलि, करि हैं रास विलास ॥५८॥
जाकों बानी भई ही, सो सखि प्रगटी आइ ।
वेदहु आनंद भयौ, अद्भुत दरसन पाइ ॥५६॥
एक अशङ्का बढ़ी उर, चित्त रह्यौ बिसमाइ ।
कछु इक नित्य विहार रस, हमहिं देहु समुझाइ ॥६०॥
प्रभु आज्ञा इक भई है, सो पहिले करि लेहु ।
ता पाछे जो पूछि हौ, ताकौ उत्तर देहु ।३१॥
सखी कियौ जब चिंतवन, श्रीपति प्रगटे आइ ।
प्रभु आज्ञा तिन सों भई, सृष्टि रचावहु जाइ ॥६२॥
ऐसे ही अवतार सब, लीन्हें तहाँ बुलाय ।
अपनो अपनो काज तुम, कीजो समयो पाइ ॥६३॥
धर्मराज सों कही तहँ, मेरौ बचन सुनि लेहु ।
जाके रंचक भक्ति है, ताहि कष्ट जिन देहु ॥६४।
भक्ति छाँड़ि अरु सबनि कों, तेर आगे न्याव ।
हरि भक्तनि ते विमुख जे, तिनकौ तू समझाव ॥६५॥
पुनि फिरि वेदन सों कही, जो पूछी सुनि लेहु ।
नित ही नित्य विहार करें, यामें कछु न सँदेहु ॥६६॥
नित्य सहज वृन्दा विपिन, नित्य सखी ललितादि ।
नित ही विलसत एक रस, जुगल किशोर अनादि ॥६७॥
नवल प्रेम सों रँगे दोउ, नित ही नवल किशोर ।
होत रहत उतपति प्रलय, नहिं जानत निशि भोर ॥६८॥
वेदहु जाने अग सब, मिट्यौ भरम तेहि काल ।
समुझे पूरन सबनि पग, नित्य निहारी लाल ॥६६।

अपने अपने सदन कों, कीन्हों सबनि पयान ।
ता पाछे सोई सखी, भई जु अन्तर ध्यान ॥७०॥
श्रीपति चितयौ है जबहिं, पुरुप प्रकृति की कोद ।
तिहि छिन उपजी हीय में, कीजे कछुक विनोद ॥७१॥
प्रथमहिं प्रगटे तीन गुन, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
ता पाछे सुर असुर नर, लोक पाल सर्वेश ॥७२॥
दोइ महूरत में रचे, चौदह लोक बनाय ।
वादी प्रभुता पुरुपता, कापे बरनी जाय ॥७३॥
बहुन भाँति लीला चरित, तिनको नाहिन पार ।
सोई मूल्यो रम्यो फिरे, क्यों चहे निर्धार ॥७४॥
सब तजि जुगलकिशोर भजि, जो चाहत विश्राम ।
हित ध्रुव मन बच हेत सों, सेवहु श्यामा श्याम ॥७५॥

॥ इति श्री सुरत बावनपुराण लीला की जै जै श्री हित हरिवंश चन्द्रजी ॥

॥ अथ सिद्धान्त विचार लीला ॥

॥ वचनका ॥

प्रेम की बात कछु एक लाडिली लाल जू जैसी उर में उपजाई तैसी कही। रसिक भक्तनि सों यह विनती है जो कछु घटि वढि भूलि कही गई होइ तौ कृपा करि समुझाइ देनी॥ जेहि प्रेम माधुरी श्री जुगलचंद आनंद कंद नित्यानद उन्नत नित्य किशोर। श्री वृन्दावन निकुंज विहार रस मत्त विलास करत हैं। यथा मति किंचित ढांठो के कही। जैसे सिन्धु तें सीप भरि लीजे॥ प्रेम नेम के लच्छन कहा। कहा प्रेम, कहा नेम, प्रेम को निज रूप चाह, चटपटी, अधीनता, उज्जलता, कोमलता

स्निग्धता, सरसता, नूतनता, सदा एक रस रुचि तरंग बढ़त रहे। सहज सुछंद मधुरता, मादिकता, जाको आदि अन्त नाहिं, छिन छिन नूतनता स्वाद, अरु नेम अनेक भाँति हैं। कछु इक कहे, देखिवो, हँसिबो, बोलिवो, मान, ॥ निकृ जांतर किंवा निकट होइ। और कोक के बिलासादिक सब प्रेम के नेम हैं॥ जाको आदि अन्त होइ सो सब नेम जानिवो। जहाँ संयोग में देखत देखत विरह रहे तहाँ स्थूल विरह की समाई नहीं। सब रस, सब शृंगार, सब प्रेम, सब नेम, मूरति धरें। श्रीकिशोरी किशोर जू को सर्वदा सेवत रहत हैं। जिन भक्तनि जैसो भाव धरि भजे तिनको तहाँ पूरन सुख देत हैं। प्रेम नेम के रूप अनेक हैं कहाँ ताई कहें जाहि। प्रेम मई रस को सार व्योरो कियो। श्रीकिशोरी किशोर जू के प्रेम ही को नेम है। और कुछ रुचत नाहिं, ताही रस में मन दीजे सदा, के उनके रसिक उपासिकनि सौं चित लावैं, सदा संग करें। ते रसिक भक्त कैसे हैं॥ आदि रसिक रसिकनी जू के प्रेम रस विहार विना और वात कछू रुचत नाहिं। तिन की दृष्टि में और रस कछु न आवे। तेहि रस के बल सब ते वे परवाह रहत हैं। और जहाँ तांई अवतार लीला जहाँ तेमिये भाँति के भक्त हैं। एक भक्त ऐसे हैं सब अवतार लीला गावत हैं कछू भेद नाहिं। ते ऐश्वर्य्य महातम ज्ञान लिये हैं। एकनि के इष्ट धर्म है ये उनते सरस कहिये। काहे तें जु इहाँ सनेह पाइयत है। इष्ट कहिये सनेही सों ताते सनही को छाँड़ि दूसरी ठौर मन न चले। जो चले तौ सनेही नाहीं॥ अनन्यता याको कहिये छाड़ि अपनो इष्ट और न जाने न मन चले जो चले तौ अनन्यता नाहीं। रसिक

ताको कहिये जो रस को सार गहै। और जहाँ तांई भक्त,जनक, उद्धव सनकादिक और लीला द्वारिका मथुरा आदि तिन सबनि पर अति गरिष्ट सर्वोपरि व्रज देविनि को प्रेम है। ब्रह्मादिक जिनकी पद रज वांछित हैं। तिनके रस पर महा रस अति दुर्लभ श्रीवृन्दावनेश्वरी श्रीवृन्दावनचद आनद घन उन्नति नित्य किशोर सब के चूड़ामनि तिन प्रेम मई निकुंज माधुरी विलास ललिता विसाखा आदि इन सखियन के प्रान अधार अहार यहै है। इन सखियन को प्रेम सर्वोपरि जानो, या पर और सुख न और रस, श्रीरसिकानद किशोर प्रेम की सींवाँ ललिता बिसाखादि सखियनिको प्रेम विना सींवाँ जु कह्यौ न जाइ सदा नौतन ते नौतन एक रस रहै। इनको प्रेम समुझनौं अति कठिन है॥ जिन पर उनकी कृपा होइ तबहीं उर में आवै। सखियन को प्रेम सर्वोपरि विराजमान है। काहे तें जु लाड़िली लाल जू के मननि को कोइक सुख है तासों आसक्त अवलम्ब रहीं हैं। इनको भाव धरि याही रस की उपासना में कपट छाड़ि भ्रम छांड़ि निशि दिन मन दे, यहै विचार में रहै। अनन्य होइ ताको भाग कहिवे को कोई समर्थ नाहीं। एक ने कही कि जब प्रेम उपजै तब नेम रहै कि जाइ? जे नेम प्रेम तें न्यारे हैं ते जाइ, जे नेम प्रेम सों जन्त्रित हैं ते कैसे जाइ! नवधा भक्ति हू नेम है। जब प्रेम लच्छिना उपजै तहाँ प्रेम में लीन ह्वै रहै ताको दृष्टांत॥ जैसे स्वेत वस्त्र लाल रँग्यौ तब वह लाल भयौ, वस्त्र कहू नाहीं गयौ, जैसे भरिया पात्र को आकर नेम, पात्र प्रेम, जो कारिये अरु निवरै सो सब नेम, अरु सदा एक रस रहै सो प्रेम, अद्भुत प्रम की गति ऐसी है जो देह के सुख जहाँ ताईं हैं ते सब

भूलि जाहिं। एक जासों प्रेम हैं ताही रंग अरु ताके अग संग की जितनी बातें है ते सब प्यारी लागें,ताके नाते। अरु ताको भावे सोई याको रुचै। एक ने कही, प्रेम में अरु काम में कहा भेद है, सो कहो समुझाइ देहु ? तातें जैसी यथा मति उपजी तैसी कही। और जहाँ ताईं सुख हैं तिन पर काम रस अधिक है यापर और नाहिं। तहाँ व्यास जू ने कही उहा के सुख की निशानी पद में 'काम रति सुख की निशानी'। ये प्रेम के सुख रस आगे सो काम लज्जित होइ रहैं। ताते सबनि काम सुख नम में राखे। यापर प्रेम को सुख निमित्य रहित सदा एक रस है ताते प्रेम नेम के लच्छन ऊपर कहि आये हैं। जाको आदि अंत होय सो नेम जानिनो। जाको अंत नाहीं सो प्रेम सर्वदा एक रस है। सो अद्भुत प्रेम है। जुगल किशोर जू को रूप जानिवो, जिन प्रेम ने ये बस किये हैं,सो प्रेम महा अद्भुत है। तो प्रेम के एक निमेष पर और सुख कोटि कल्पनि के वारि डारिये। स्वाद विशेष के लिये भयो शुद्ध प्रेम है। जैसे खांड़ अरु जल एकत्र कियो, तब खाड़ न जल, शरबत भयो। खाँड़ जल भी वाही में है। ऐसे महा मधुर रस स्वाद को शुद्ध प्रेम है, प्रगट कियो जहाँ नायक नाइका बरनन कियो है, नायक अपनो सुख चाहै नाइका अपनो रस चाहै सो यह प्रेम न होइ साधारण सुख भाग है। जब ताईं अपनो अपनो सुख चाहिय तब लाइ प्रेम कहा पाइय। दोउ सुख दोउ मन दोउ रुचि जब ताईं प्रेम कहा पाइये है। दोउ सुखदोउ मन दोउ रुचि जब ताईं एक न होइ तबताईं प्रेम कहाँ ? कामादि सुख जहां स्वारथ भये हैं तो और सुखनि की कौन चलावै ? निमित्य रहित नित्य प्रेम सहज एक रस

श्रीकिशोरी किशोर जू के हैं और कहूँ नहीं। जो कोऊ कहे कि काम नेम में कहि आये तो उनहूँ की काम केलि तो गाई है। सो यह काम प्राकृत न होइ, प्रेम मई जानिवो, निज प्रेम मई जानिवो, निज प्रेम है,नेम रस सिंगार पोषक के लिये न्यारे के कहें हैं। जो बात प्रिया जू के अंग संग ते उपजै सोई प्रीतम को प्यारी लागै, यह अप्राकृतिक प्रेम है, श्रीकृष्ण काम के वस नाहीं। जिनको रूप देखत कोटि कोटि मनोज रति सहित मूर्छित होहिं, ऐसे नवल किशोर श्री वृन्दावनचंद जू मदन सहित सबके मन मोहिं राखें, तेई यहाँ श्रीवृन्दावनेश्वरी जू के प्रेम मई अनंग चितवनि रस मई मोंहन तें तरंग उपजै तिन प्रेम मई अनंग ने सहज ही ऐसे मनमोहन मोहिं राखे अपने वस किये, सो साक्षात् प्रेम है। श्री प्रियाजू जित चाहें जित चलें,जासो बोलें जो पहिरें,जो हाथ करि छुवें, ते सब बात प्रीतम के प्रान ह्वै जाहिं। इहाँ को नेम ऐसो है जो प्रेम शोभा पावै। एक रस समझनौ जैसे ताना बाना दोऊ मिलि एक पट भयो, स्वाद के लिये नेम न्यारे के कहे हैं, नेम प्रेम को साधन, सो एकै जानिवो॥ प्रिया जू को अंग संग छाड़ि और ठौर मन न चलै प्रीति ऐसी है। तहा श्री जू की बानी॥ प्रीति की रीति रंगीलोई जानै। यह बात प्रेम के बिना श्री वृन्दावनचंद को जानै, को समुझै। जो बात प्रिया जू को भावै, सोई इनको भावै॥ तहाँ श्रीजी की बानी॥ जोई जोई प्यारो करै सोई मोहिं भावै, भावै मोहि जोई सोई सोई करै प्यारे। सहज प्रेम के रस में दोऊ मत्त रहत हैं। एक रस सनेह की रीति एसी है, जो सनेही को सुख चाहै, अपनी चाह कछु नहीं। प्रिया जू

विलास करें सव लाल जू के हेत। और लालजू जामें लाड़िली जू सुख पावें सोई करें, अपनी चाह कछू नाहीं ॥ तहाँ भर केलि महा मदन के सुख रस में लाल जू के वचन ॥ तहाँ श्री जी की वानी ॥ विरमि विरमि नाथ वदत वर विहार री। ताते सनेही के सुख सों आसक्त होइ सो सनेही कहिये। जैसे सखियनि की रीति, दोऊ के प्रेम रस सों अवलम्बि रहीं हैं। और निमित्य वीच कछू नाहीं। श्री गुसाँई श्री हरिवंश चंद जू प्रगट भये जुगल केलि रस माधुरी प्रगट करिवे को। और सवनि मिश्रित गाई श्री प्रेम की आशक्तता श्री गुसाई जू ने गाई। आशक्त कहा। सक्ति रहित आशक्त। जव ताई मन की गति भँवर की सी चचल फिरे तव ताई आसक्त नाहीं। जब सव ठौर तें चचलता छुटे तव आशक्त के रस में अटके॥ तहाँ श्री जी की वानी॥ कहा कहौं इन नैननि की बात। ये अलि प्रिया मदन अंबुज रस अटके अनत न जात॥ अरु॥ चचल रसिक मधुप मोहन मन राखे कनक कमल कुच कोरी। इत्यादि। ऐसे रसिक लाड़िली लाल जू जिनको मूरति वन्त आशक्तता सेवत रहे हैं॥ पद श्री विहारीदासजी॥ आशक्त उपाशक दम्पति को सुख। दोहा पुरातन। फँद मरकावत फिरत दिन चित चचल जु कहत। फँधो जु कुन्तल विकट लट टक टक मुख जोवन्त॥ श्री लाड़िली लाल जू प्रेम रम मई मूरति वत हैं। इनते उपजे सो सव प्रेम है। विलासमई। ताते दोइ नाम रस स्वाद के निमित्य परे। प्रेम नेम जैसे ततु का ताना वाना, न्यारो कोई नाहीं। और सोना है ताते भूषन करयो सो नेम भयो। सोना एक रस है सो प्रेम है॥

॥ कुँडलिया ॥

प्रेम मदन के सिंधु द्वै वहत रहत दिन हीय।
कबहुँ विवस चेतत कबहुँ छिन छिन प्यारी पीय ॥
छिन छिन प्यारी पीय मधुर रस विलसत ऐसे।
सूक्ष्म प्रेम की वात कहो कोउ वरनें कैसे ॥
यह सुख सखियनि बाँट पर्यो भूले ध्रुव सब नेम।
इक रस फूली फिरत संग पाइ माधुरी प्रेम ॥

प्रेम मदन के सिंधु द्वै लाड़िली लाल जू के हिये वहत रहत हैं। जब प्रेम रूपी सिंधु के तरङ्ग आवैं तब विवस होहि। जब मदन रूपी सिंधु के तरङ्ग आवें तब चेतन्य होहि। विलास के रग में परे ऐसे प्रेम नेम ओत प्रोत हैं। प्रेम की क्रिया विवसता नेम की क्रिया सावधानता, यातें एक कहिये स्वाद को दोइ। कबहू खिलारी खेल वस कबहू खिलारी वस खेल। ऐसी भाति को विहार निशि दिन करत हैं। या रस की अधिकारनी सखी हैं के जिन भक्तनि के सखियनि को भाव है, धन्य तेई भक्त रसिक श्री वृन्दावन निकुञ्ज धाम में श्री वृन्दावन चंद उन्नत नित्य किशोर प्रेम मई विलास करत हैं। तामें प्रेम ही को नेम नित्य है एक रस कबहुँ न छुटै। तहाँ की आसक्ता कोऊ जिनि करो निमित्य रहित विहार में दोऊ मगन रहत हैं। यहाँ प्रेम नेम में कुछ भेद नाहीं स्वाद विशेष के लिये कहे हैं। जैसे रस मई फल बिनु गुठली बिन वक्ला होइ। तातें इनके रस विहार में दोइ रस नाहीं, एक प्रेम सो आसक्त हैं। निश्चय मन वच क्रम के जानिवो। ऐश्वर्य्यता, ज्ञान, महातम, विषय या रस माधुरी को आवरन है। इनतें चित्त कादि माधुर्य्य रस में देनों।

तन मन की वृत्ति जब प्रेम रस में थके तब आशक्त कहिये ॥ तहाँ श्री जी की वानी ॥ बिषयो मोहन मृग सकत चलि न री ॥ अद्भुत प्रेम की आसक्तता समुझनी कठिन है। जिनके मन अति सरस होहिं तिनके उर आवै। जो प्रेम रस में मान हू नेम है। दुहू के तन मन सहज प्रेम रस भरे हैं। नेम कहाँ रहै,ठौर नाहीं। श्री प्रियाजी के सहज स्वभाव प्रेम रस रूप जोवन रस की गरूरता देखि लालजू व्याकुल ह्वै जात हैं। यह अवस्था देखि लाडिली जू अपनो सुभाव भूलि जात हैं। महा प्यार सों अङ्क भरि लेहि। जो कबहू प्रिया जू अपने रस में लालजी तन न चितवें, नेकहू न बोलें तो उनकी गति मीन जल की सी होइ है। जहाँ मान सहज को यह है। जो कोऊ कहै कि मान तो रस को पोषक है। अरु रुचि बढ़ावै, सु यह प्रेम साधारण जानिबो, इहाँ यों नाहीं। नित्य छिन छिन प्रीति रस सिंधु तें तरंग रुचिके उठत रहत हैं नय नये ॥ तहाँ श्री स्वामी जी को पद ॥ जब जब देखों तेरो मुख तब तब नयो नयो लागत। अरु श्री जी की वानी ॥ करत पान रस मत्त परस्पर लोचन त्रिपित चकोर ॥ ताते प्रेम विरह अनेक भाँति है। जैसो जहाँ प्रेम तैसो तहाँ विरह है। जहाँ स्थूल प्रेम। तहाँ स्थूल विरह। जहाँ सूक्ष्म प्रेम वहाँ सूक्ष्म विरह। जो कोऊ कहै स्थूल कहा सूक्ष्म कहा ॥ सूक्ष्म प्रेम यासो कहिये जो एक सेज पर रूप देखत चन्द चकोर ज्यों नैनाँचल ओट भये महा कठिन दसा होइ। अरु देह हू अपनी न्यारी नाहीं सहि सकत यह हू विरह मानत है। तहाँ की बात श्री गुसाईं जू गाई ॥ तहाँ श्री जी की वानी ॥ श्रुति पर कंज दृगंजन कुच बिच मृगमद ह्वै

न समात। (जैश्री) हित हरिवंश नाभि सर जलचर जाँचत सांवल गात ॥ अरु श्री स्वामीजी को पद ॥ ऐसी जिय होत जो जिय सों जिय मिले तन सों तन समाइ लेउँ तो देखो कहा हो प्यारी। यह प्रेम अति तीव्र है जापर श्रीजू के रसिक भक्तनि की कृपा होइ तव उर में आवे। ऐसे अद्भुत प्रेम में और भाँति को विरह न समवे। जो फूलनि की माला देखे कुम्हिलाइ ताको असिवर को दिखाइवो अनीत है। भ्रमहू को विरह कहत डर आवे। या प्रेम में न स्थूल प्रेम की समाई। न स्थूल विरह की समाई। न मानकी। एक रस यह प्रेम ही विरह रूप है। या रस की जिनके उपासना है तिनके हिये ठहराइ। जो कोऊ कहै कि मान विरह महा पुरुषन गायो है सो सदाचार के लिये। औरनि के समुझाइवे को कह्यो है। पहिले स्थूल प्रेम समझै तव आगे चलें॥ जैसे, श्री भागवत की वानी॥ पहिले नवधा भक्ति करें तव प्रम लच्छना आवें। अरु महा पुरुपनि अनेक भाँति के रस कहे हैं। ऐ पर इतनी समुझनो के उनको हियो कहाँ ठहरानो है सोई गहनी ॥ तहाँ विहारनि दास ी को पद ॥ तहाँ कछु ने श्रम तम न गम विरह भ्रम मान लवलेश न प्रवेश न प्रमगी। और सव प्रेम नेम या नित्य महा प्रेम रस के आगे साधन हैं यह निर्धार जानिवो॥ नित्य अखंडित एक रस सहज निमित्य रहित, महामाधुरी निकुञ्ज केलि अद्भुत रसिकानन्द दोऊ विलसत हैं। या पर न और रस, न और सुख, न और प्रम, ऐ पर तहाँ को जु रससार तामें सखी ललिता विसाखादि आसक्त हैं। सार को सार प्रम सुख यह अद्भुत महा रस प्रेम की उपासना श्री

जू प्रगट कर दई है। निश्शंक सबके कल्याणार्थ जो उर में आवे ठहराय। या प्रेम की सूक्ष्म गति है। म्याइ और त्रिपित होइ और॥ तहाँ श्री जीं की वानी॥ जेंश्री हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर। यह सार को सार। बिरला कोई इक जाने समुझै। साधारन प्रेम। साधारन विरह सबके मनमें आवे। भगवत भजन की विधि महातम और जहां ताई ऐश्वर्य्य लीला तिनमें समाई है। यहाँ श्रीजी जो रस प्रगट कर्यो ता रस उपासना में कछू न मिलै। अद्भुत उपासना सबनि ते न्यारी गति ताकी है। यह महामाधुरी रस जाके उर न आवे तासों संग न करिये। संग करनो बड़ी अज्ञानता है। और सब भजन में गोष्टी है, सनेह में गोष्टी कहा। समस्त भागवत धर्मनि ऊपर यह निकुञ्ज। माधुरी श्री जुगलचन्द जू विलास करत हैं। जिन यह रस समुझ्यो नाहीं तासों रस की बात करनी उचित नाहीं। जो कहै तो आपतें जाइ, अन्तर परे, निस्सदेह। ताते मौन होइ रहनो, बहुत भलो है विजाती सों मिलवो भलो नाहीं। बिन सजाती सों मिलि बात न चलावे। अनेक भाँति भक्ति भेदनि के भेद ते सोई भक्त हैं। जेंसो जाको भाव है तेंसो सिद्ध होइ। ताते औरनि सों प्रयो जन नाहीं॥ तहाँ बखानो है॥ तोहि विरानी कहा परी तू अपनी निवर ? आपको यों चाहिये औरनि सों मत्सरता छाँड़ि आपनो रस लिये रहै। और याही रस के उपासिकनि मों अन्तर खोलि मग करे। श्री व्यास जी के वचन॥

व्यास विवेकी भगत सों, दृढ़ करि कीजे प्रीति।
अविवेकी को संग तजि, यहै भक्ति की रीति॥

तो विवेकी कहा? विवेकी तासों कहिये। भली गहै बुरी छाँड़े। अविवेकी भली बुरी कू न समझे, सब गहै सब छाँड़े, तातें सजाती सो मिलि वात जुगल विहार की करें विचारे॥ तिनकी जूठन खाइ चरनोदक पीवें। विजाती को परस हू न करे। और वृन्दावन चन्द एक प्रीति ही मानें हैं। कोटि भाति भावे अपरस रहो भावे सपरस रहो अनेक आचार करो। उनको एक प्रीति की सचाई सो काम है। तव एक ने कही आचार न करे। थोरो वहुत करे सदाचार के लिये। जब श्रीजी की सेवा पाक करे तहाँ आचार करे। जैसे संभवे। अपने प्रसाद पाइवे को आचार वहुत न करे। प्रसाद ही कोटि आचार को स्वरूप है। भोग लागे पाछे वहुत आचार उचित नाहीं। शास्त्र हू में कही है। अति आचार अनाचार समान है। राधे अन्न विपय कछू न मानें। जो भोग श्री जी को न लाग्यो तौ सब बरावर। कहा काचो कहा पाको। वैष्णव सदाचार के लिये आचार करे। मनमें विश्वास न धरे कि याहीं तें कारज सिद्ध होइगो। शुद्धता के लिये करे। श्रीजी की टहल कोटि-कोटि आचार को स्वरूप है। वहुत आचार तें हियो अति कठोर होइ जाय है। यह भजन अति कोमल है, कोमल कठोर एक सग न वनें। जे सनेही भजनीक हैं तिनकी घटि वढ़ि क्रिया में मन न देइ। आपको वड़ी हानि हैं। वडो अपराध है। कोटि-कोटि आचार उनके एक निमेप के रस भजन के ऊपर वारि डारिये। ब्रह्मादिक सनकादिक या वात में भूले हैं। औरनि की कौन चलावे, जो यह वात मनमें न आवे तिन सब अनाचार किये। जे सनेही भक्त हैं तिनकी पदरज कोटि आचार है। साधन

सिद्ध तीरथ है ॥ श्री गुसाईं कृष्णदासजी को पद ॥ साधुचरन रज सब सुख साधन यहै मेरे मत काज सुधी को ॥ व्यासजी को पद ॥ साधु चरन रज माँझ व्यास से कोटिक पतित समात । इत्यादि ? अनत लीला अवतार अनेक तिनकी ऐश्वर्य्यता को वार पार नाहीं। ऐसे ही नाना प्रकार के भक्त हैं, श्रीकृष्ण लीला तीन प्रकार की। तिनहू में भेद भक्त बहुत हैं। जहाँ जहाँ जाको मन लाग्यो ते सब नीके हैं। घटि कोऊ नाहीं। आपको यों चाहिये और की घटि बढ़ि कछू कहै नाहीं। अपने रस में जैसी उपासना है तहाँ मन दिये रहै। जे रसिक अनन्य श्री वृन्दावन की उपासना में श्री किशोरी किशोर जूकी किशोर ताई की छवि अरु निकुंज माधुरी रस जिनके हिये बसत है। नैननि में झलकत है, तिनकी चरन रज सीस पर धरिये, उनको संग निशिदिन करिये, जूठन पाइये, अंतर न राखिये। जो ऐसे भक्तन सों कछू आचार निमित्त ग्लानि आने तो तिन सब अनाचार कियो। यह बड़ो अंतराय है। ताते या रसके पाइबे को कछू और जतन नाहीं। बिन भक्तनि की पदरज। जो कहु यह बात काहूके मन न आवै कहै कि कहाँ कही है ताकी साखि ॥ श्री भागवत। श्लोक। मतानियन्न वंदामि तीर्थानि नियमायमा। यथा बरु धेत् सत्स्ङ्ग सर्व संगापहोहिमाँ ॥ अरु श्री मुख कही कि हौं भक्तन के पाछे फिरत हौं। जो एकाँता भक्त हैं तिन की चरन रज निमित्त और भी महा पुरषन यह सिद्धांत करि राख्यो है ॥ तहाँ श्री जू की बानी ॥ जै श्री हित हरिवंश प्रपंच धंच सब काल व्याल को खायो। यह जिय जानि श्याम श्यामा पद कमल संगी

सिर नायो। अपने रस की उपासना में सावधान रहिये। भक्तन के अपराधन सो डरपत रहिये। छिन छिन भजन ही को सँभार्यो करें। जैसे पुतरीन सो पलकें।

दो०-पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिनु सो अति प्यार।
ऐसे लाड़िलि लाल के, छिन छिन चरन सँभार॥

एक ने कही कि यह लाडिली लालजू को अद्‌भुत निकुंज माधुरी को रस सबतें दुर्लभ दुर्घट है तासो प्रेम कैसे उपजै कौन उपाय कौन साधन ? मूल तो कृपा रसिक भक्तनि की जिनसों संग मन वच क्रम करि करें निशिदिन। अरु रस मई भजन के अभ्यास में रहे। और कठिन क्लेश साधन सो न बनें। यह रस अति कोमल है। माखन सो माखन मिले कठोरता न चाहिये। कठिन साधन सो शुद्ध भक्तिहू न पाइये। तो यह महा माधुर्य्य रस कैसे पावे? सर्वोपरि साधन यह है, जो रसिक भक्त हैं, तिनकी चरन रज वंदे। तिनसों मिलि किशोरी किशोरजू के रसकी वातें कहै, सुनै, निशदिन। अरु पल पल उनकी रूप माधुरी विचारत रहै। यह अभ्यास छांड़े नहीं, आलस न करे। तो रसिक भक्तिन को संग ऐसो है आवश्यक प्रेम को अंकुर उरमें उपजै। जो कुसङ्ग पशु तें बचे जवताईं अंकुर रहै। तव ताईं भजन जल सों सींच्यो करे वारम्बार। अरु सतसंग की वारि दृढ़ करै तो प्रेम की वेलि हिये में बढ़े। फूलें, जड़ नीचे गहै तो चिंता कछु नाहीं यह ही यतन है। संग तें कृपा, कृपा ते संग तब भक्ति होइ, या सिद्धांत पर और कछू नाहीं। यह वात अबहू काहू के मन न आवें तो तासों कछु नमात नाहीं, अपनी वह जानै। या रसको विचार

अपने मन समुझाइवे को, कै जिनको मन या रस में होइ तिन के हेत कह्यो। जो या विचार में रहै तो काल वृथा न जाय। जिन को यह रस रुचै नाहीं तिनके पास न बैठे। न यह प्रसंग चलावै। जो विजाती सों गोष्ठी करै तो या रसमें अंतर परै, चित्त कठोर ह्वै जाइ। जैसे महा रंक धनको छिपाये फिरै। तैसे महा प्यारसों उरमें राखै यह भजन। अरु अभिमान छोंड़ै। मान अपमान उरमें न आनै, दीन होइ। जहाँ रसिक भक्तनि की मंडली सुनै तहाँ जाइ, तिनकी चरन रज शिर पर धरै। अरु उनसों मिलि काल वितीत करै, निमित्त रहित भजन स्वाद लिये होइ। जैसे विषई को अपनो अपनो रस रुचै। ऐसे भजनी होइ तब विषय नेम को भस्म करै जब प्रेम बढ़ै। जबताँई मन भ्रम्यो फिरै। कबहू महातम कबहू ग्यान। कबहूं बिरक्तता तिनकों या रस माधुरी सौं बहुत अंतराय है। जो निस्प्रेही भयो ताको जैसी कौड़ी तैसो रतन। और सब रस या माधुर्य्य रस के आवरन हैं। अंतराय बनाये हैं सो यह बात रसिकनि की कृपातें मनमें आवे। श्री किशोरी किशोरजू के प्रेम रस माधुरी तबहीं उर में आवें। जाके सांगोपांग उपासना सहज की होइ। सांग कहा? गुरु इष्ट मंत्र रसिकनि को संग। जब या रस माधुर्य्य के जुरै तब उपासना सिद्ध होइ वे उपासिक कहिये। जो मन नेकहू और धर्म में चलै तो उपासना में भंग होइ। और श्रीवृन्दावन में जो कोई निमित्त तिथि विधि मानै सो भली नाहीं श्री लाड़िली लालजू जहाँ नित्य बिहार करत हैं। ऐसो श्री वृन्दावन है ताको निमित्त धमनि में सानै यह बड़ी चूक है। चंद्र मनिहि लै ज्यों काँच

की मनियनि में पोवें तो शोभा न पावई । जो वृन्दावन की तुल्य को वैकुण्ठहू नाहीं । तौ तुच्छ धर्मनिमें मिलावे यह बड़ी अज्ञानता है । रसिक अनन्य ऐसो चाहिये । धीर सुभट मन कहू न चलें या बात की समान ॥

॥ चौपाई ॥

यह प्रबोध ध्रुव जो मन धरें ❀ सोई भलो आपनो करें ॥
यह सिद्धांत सार है जानौ ❀ और कछू जियजिन उरआनौ॥
छिनछिन कालवृथा चल्योजाई ❀ लाडिली लालहिं लेहुलड़ाई ॥
छाडि कपट मन वच चित दीजे ❀ अलि ज्यों चरन कमल रस पीजे
जिनके मन निश्चय यह आई ❀ रससुखकी निधि तिनहीं पाई ॥
तिनहीं देह धरी या जग में ❀ जाकौ मन लाग्यौ या रँग में ॥
दोहा—यह सिद्धान्त विचार ते, चारु बुद्धि ध्रुव होइ ।
तन मन के सव भरम मल, पल में डारे धोय ॥

॥ इति श्री सिद्धान्त विचार लीला की जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ प्रीति चौवनी लीला लिख्यते ॥

दोहा—नवल रँगीले लाल विनु, को समुझे रस रीति ।
सव तजि वस आपुन भये, रँगे रँगीले प्रीति ॥१॥
चूडामणि सब लोक के, लये प्रेम रस मोहि ।
यद्यपि रूप निधान पिय, प्रिया वदन रहे जोहि ॥२॥
वरनौं ऐसे प्रेम कौं, जिहिं वस कीनें लाल ।
शुद्ध सरूप अनूप ध्रुव, अद्भुत परम रसाल ॥३॥
आदि अन्त जाकौं नहीं, रहत एक रस रूप ।
रुचि तरंग पल पल बढ़े, सहजहिं सुखद अनूप ॥४॥
नित्य नवल मृदु मधुर वर, भीने रंग सुहाग ।

जामें नाहिं निमित्त कछु, सो अभग अनुराग ॥५॥
प्रेम नेम न्यारो कियो, जो आयो उर माहिं ।
याते न्यारे दुहुँन के, लच्छण जाने जाहिं ॥६॥
गेहि तन वन गरजत रहैं, अद्भुत केहरि प्रेम ।
जामें पावे रहन क्यों, गज विहंग मृग नेम ॥७॥
रहन न पावत और रस, जहां प्रेम को राज ।
सकल सुखन को दलमले, ज्यों पंछिन को वाज ॥८॥
मन पंछी जब लग उड़े, विषय वासना माहिं ।
प्रेम वाज की झपट में, जब लगि आयो नाहिं ॥९॥
जहँ लगि लालच विषय को, सो न होय ध्रुव प्रेम ।
तासों कहा बसाइ ध्रुव, पीतल सों कहै हेम ॥१०॥
पलट परत ताकी दसा, जो सनेह रँग रात ।
और अंग मिटि कै सबै, नैना ही ह्वै जात ॥११॥
रहन देत नहिं और रस, यहै प्रेम की टेक ।
याको सहज सुभाव यह, करत दोइ तें एक ॥१२॥
भूली नहीं अपनी विषय, मिट्यो न मन तें नेम ।
तासों ध्रुव कैसे कहै, जानि बूझि कै प्रेम ॥१३॥
तन विलास जो विषय के, जो न प्रम तें जाहिं ।
भानु उदै जो तम रहैं, तो वह भानुहि नाहिं ॥१४॥
यामें नाहिंन प्रीति कछु, जो जाको आहार ।
हिम ऋतु ग्रीषमता रुचै, ग्रीषम माहिं तुषार ॥१५॥
अलि पतंग मृग मीन गज, चातक चक्र चकोर ।
ये सब झूठे नेह में, बँधे विषय की डोर ॥१६॥
जब लगि ह्वै मन बीच कछु, स्वारथ को हित होय ।

शुद्ध सुधा कैसे रहै परै जो तामें तोइ ॥१७॥
आदि अन्त जाको भयो, सो मव प्रेम न रूप।
आवत जात न जानिये, जैसे छाँह (अ) रु धूप ॥१८॥
जब बिछुरत तब होत दुख,मिलतहिं हियो सिराइ।
याही में रस द्वै भये, प्रेम कह्यौ क्यों जाइ ॥१९॥
तन मन के बिछुरे नहीं, चाह बढ़ै दिन रैन।
कबहू संजोग न मानहीं, देखत भरि भरि नैन ॥२०॥
ऐसो प्रेम न कहू ध्रुव, है वृन्दावन माहिं।
तिन बिच अतर निमिप को, होत जु कबहू नाहिं ॥२१॥
प्रेम रूप वय घटत नहिं, मिटत न कबहुँ सँजोग।
आदि अंत नाहिन जहाँ, सहज प्रेम को भोग ॥२२॥
अग अंग मिलि रहै सब, मनसों मन अरुझात।
देखौ अटपटि प्रेम गति, चित्त न कबहुँ अघात ॥२३॥
प्रेम चाल वाकी चलन, मन पग नहिं ठहराय।
नख सिख अरुझे नेम तें, ते कैसे तहँ जाय ॥२४॥
प्रेत बातहू बात तें, सूछम कही न जाय।
तन तरवर को छाँड़ि के, मनहिं झुलावे आय ॥२५॥
प्रेम प्रकार अनेक विधि, तिनमें उत्तम भांति।
अद्भुत प्रीति दुहून की, जिनके उर झलकाँति ॥२६॥
नेह निवाहन कठिन है, फिर्यो जगत सब जोइ।
विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ लग सब कोइ ॥२७॥
प्रीति प्रीति सब कोउ कहै, कठिन तासु की रीति।
आदि अन्त निबहै नहीं, बारू की सी भीति ॥२८॥
प्रीति आरसी विमल है, जो कोउ राखे जानि।

कपट मोरचा लगत ही, होत दरस की हानि ॥२६॥
जाके हिय में जग मगे, रूप दीप उजियार ।
परसे ताके जाइ नसि, दुख सुख मन अँधियार ॥३०॥
वृन्दावन रस के रसिक, ये तो पइयत थोर ।
जिनके हिय में वसत रहैं, रस में मधुर किशोर ॥३१॥
जो कोउ खोजत फिरें, आवें जव अवगाहि ।
नेही दुर्लभ पावनों, और सुलभ सव आहि ॥३२॥
वक्ट घाटी नेह की, अतिहि दुहेली आहि ।
नैंन पगनि चलिवो तहाँ, जो ध्रुव वनें तो जाहि ॥३३॥
चढ़िके मैंन तुरंग पर, चलिवो पावक माहिं ।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं ॥३४॥
लोक वेद सकल सुदृद, मन गज डारो तोरि ।
देखो प्रेम चरित्र यह, बँध्यो फिरे विन डोरि ॥३५॥
मन मतंग मद रस मत्यो, धस्यो प्रेम रन धाइ ।
लोक वेद कुलकानि की दई फौज विचलाइ ॥३६॥
जेहि उर उपज्यो प्रेम रस, सो नित रहत उदास ॥
भूल्यो हँसिवो खेलिवो, खान पान सुख वास ॥३७॥
रूप छटा अद्भुत निरखि, थकित भये मुख नैन ।
मान तहाँ पहिले गये, रोवत छाँड़े नैन ॥३८॥
रूप धसक हिय धमि गयो, शिथिल भये सब अ ग ।
मुख पियराई फिरि गई, बदलि पर्यो तन रंग ॥३९॥
प्रेम वेलि जेहिं पर चढ़ी, गई सबै सुधि भूलि ।
एक कमल ध्रुव चाह को ताके उर रह्यो फूलि ॥४०॥
मोह्यो नहिं सुनि राग धुनि खिंच्यो न उर छवि वान ।

तिनको ऐसें समुझ तू, पाहन चित्र समान ॥४१॥
पर्यो न रूप तरंग में, थर्यो न मृदु मुसिक्यान ।
रम्यो न मोह न माइ रस, नीरस तरु सम जान ॥४२॥
प्रेम रंग तन मन रँगे, कहँ समाइ सुख श्रौर ।
रोम रोम पिय रमि रह्यौ, बची नाहिं कहुँ ठौर ॥४३॥

॥ कुँडलिया ॥

नैननि पिय मूरति बसें, तेमि रस रहे समाय ।
ये लच्छन सुनि प्रेम के, श्रौर न कछू सुहाय ॥
श्रौर न कछू सुहाय, फिरे अपनो मदमातो ।
कुटुम्ब देह सों जाइ, टूटि सबही विधि नातो ॥
जहँ जहँ पिय की बात सुनें खोजत (फिरें) तिन गैननि ।
छिन छिन प्रति श्रव लेत प्रेम जल भरि भरि नैननि ॥४४॥

दोहा—कहा कहों गति प्रेम की, बढ़ी चाह की पीर ।
लोचन भूखे रूप के, भरि भरि ढारत नीर ॥४५॥
का ध्यावे कुलदेव को, कोव कहे उठि जाहि ।
प्रेम चटपटी जासु उर, ग्रह वन मूल्यो ताहि ॥४६॥
भाव बढ़्यो तब जानिये, यह गति होइ अनूप ।
भूलें भूख (अ) रु सैन सुख, नैन भरे रहें रूप ॥४७॥
चित्त रहै द्रवि भूत नित, अति कोमल रस प्रेम ।
हिय में झलकत रहे यों, जैसे चाँदी हेम ॥४८॥
वृन्दावन नित सहजही, आनँद को निज धाम ।
विलसत हैं जहँ प्रेम रस, इकछत स्यामा स्याम ॥४९॥
नवलकिशोरी नव कुँवर, सहज प्रेम की रासि ।
भीने दोउ आनँद रस, करत मंद मृदु हाँसि ॥५०॥

रूप परस्पर चितैबो, जीवनि दुहु (न) की आहि ।
यह सुख समुझत हैं सखी, रहत निरन्तर याहि ॥५१॥
या रस में चित दीजिये, छाँड़ि और सब आस ॥
धन्य धन्य तेई जु नर, जिनके यहै उपास ॥५२॥
हित सों जाहि चिन्हार नहिं,तासों करि न चिन्हारि ।
बिन ध्रुव नेही भाजनहिं, रंग न दीजै डारि ॥५३॥
प्रीति चौवनी जो सुनें, उपजैगी निज प्रीति ।
ताहीं तें ध्रुव समुझि है, वृन्दावन रस रीति ॥५४॥
हित सों हिये धरे रहो, यह माला रस प्रेम ।
हित ध्रुव ताके झलमलै, हिये केलि रस छेम ॥५५॥

॥ इति श्री प्रीति चौवनी लीला की जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ आनदाष्टक लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—सखी सबै उडगन मनो, एक बार आनंद ।
पिय चकोर ध्रुव छकि रहे, निरखि कुँवरि मुखचंद॥१॥
ऐसी अद्भुत सभा बनी, इकवत सुख की रासि ।
फूले फूल आनंद के, महज परस्पर हाँसि ॥२॥
देखि लाल के लालचहि, लालच हू ललचाइ ।
नवल कटाच्छ तरंग रस, पीवत हू न अघाइ ॥३॥
एकहि वय गुन प्रम रस, रूप (अ)रु शील सुभाव ।
अद्भुत जोरी बनी ध्रुव, देखि बढ़त चित चाव ॥४॥
या रस के जे रसिक जन, तिनको कौन समान ।
बिना मधुर रस माधुरी, परमत नहिं कछु आन ॥५॥
रसिक तबहिं पहिचानिये, जाके यह रस रीति ।
छिन छिन हियमें झलक रहै, लाल लाड़िली प्रीति ॥६॥

यह रस जिन समुझो नहीं, ताके ढिंग जिनि जाहु ।
तजि मतसंग सुधा रसहि, सिंधु सुतहि जिनि खाहु ॥७॥
वृन्दावन रस अति सरस, कैसे करों बखान ।
जेहि आगे बैकुण्ठ को, फीको लगत पयान ॥८॥
यह अष्टक ध्रुव पढ़ै जो, सन्ध्या और सवार ।
ताके हिये प्रकाश रहै, मिटै त्रिगुण अँधियार ॥६॥

॥ इति श्री आनंदाष्टक लीला को जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ श्री भजनाष्टक लीला प्रारंभ ॥

दोहा–ज्ञान शांत रस ते अधिक, अद्भुत पदवी दास ।
सखा भाव तिन तें अधिक, जिनके प्रीति प्रकास ॥१॥
अद्भुत बाल चरित्र को, जो यशुदा सुख लेत ।
ताते अधिक किशोर रस, व्रज वनितनि के हेत ॥२॥
सर्वोपरि है मधुर रस, जुगल किशोर विलास ।
ललितादिक सेवति तिनहिं, मिटत न कबहुँ हुलास ॥३॥
या पर नाहिंन भजन कछु, नाहिंन है सुख और ।
प्रेम मगन विलसत दोऊ, परम रसिक सिरमौर ॥४॥
वृन्दावन निज सहज ही, नित्य सखी चहुँ ओर ।
मध्य विराजत एक रस, रस मय मधुर किशोर ॥५॥
छैल छबीली लाड़िली, छैल छबीलो लाल ।
छैल छबीली सहचरी, मनों प्रेम की माल ॥६॥
पंचबान जेहि पानि हैं, देखि गयो यह रंग ।
तेई बान तेहि फिरि लगे, जर जर भये सब अंग ॥७॥
विवस भयो सुधि रही न कछु, मोह्यो महा अनंग ।
लज्जित ह्वै रह्यो नमित अति, करत न सीस उतंग ॥८॥

यह अष्टक ध्रुव पढ़ै जो, जुगलचन्द संजोग ।
ताके हिये प्रकाश रहै, मिटै तिमिर हृदि रोग ॥६॥

॥ इति श्री भजनाष्टक लीला को जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ भजन कुँडलिया लीला प्रारम्भ ॥

॥ कुँडलिया ॥

हंस सुता तट विहरिवौ, करि वृन्दावन वास ।
कुंज केलि मृदु मधुर रस, प्रेम विलास उपास ॥
प्रेम विलास उपास रहै, इक रस मन माँहीं ।
तेहि सुख को सुख कहा कहौं, मेरी मति नाहीं ॥
हित ध्रुव यह रस अति सरस, रसिकन कियौ प्रशंस ।
मुकतन छाँड़ै चुगत नहिं मान सरोवर हंस ॥१॥

दोहा–रस भीज्यौ रस में फिरै, रस निधि जमुना तीर ।
चितत रस में सने दोउ, श्यामल गौर शरीर ॥२॥

॥ कुँडलिया ॥

नवल रँगीले लाल दोऊ, करत विलास अनंग ।
चितवनि मुसकनि छुवनि कच,परसनि उरज उतंग ॥
परसनि उरज उतंग चाह रुचि अति ही वाढी ।
भई फूल अँग अँग भुजनि की कसकनि गाढी ॥
यह सुख देखत सखिन के रहे फूलि लोचन कमल ।
हित ध्रुव कोक कलान में अति प्रवीन नागर नवल ॥३॥

दोहा–प्रेम तृषा की वेलि को, केलि अदन रस आहि ।
परम रसिक नागर नवल, पीवत जीवत ताहि ॥४॥

॥ कुँडलिया ॥

मदन केलि को खेलि है, सकल सुखन को सार ।
तेहि विहार रस मगन रहैं, और न कछू सँभार ॥
और न कछू सँभार, हार कर प्रान पियारी ।
राखत उर पर लाल, नेकहूँ, करत न न्यारी ॥
याही रस को भजन तो नित्य रहौ ध्रुव हिय सदन ।
कुंज कुंज सुख पुंज में, करत केलि लीला मदन ॥५॥

दोहा—केलि बेलि फूली रहत, चितवनि मुसकनि फूल ।
तेहि लागे छवि फल उरज, ढापे प्यार दुकूल ॥६॥

॥ कुँडलिया ॥

प्रेमहि शील सुभाव नित, सहजहि कोमल बैन ।
ऐसी तिय पिय हीय में वसत रहो दिन रैन ॥
वसत रहो दिन रैन नैन, सुख पावत अतिही ।
प्रिया प्रेम रस भरी लाल तन, चितवत जबही ॥
देखो यह रस अति सरस, विसरावत सब नेम हीं ।
हित ध्रुव रस की राशि दोउ, दिन विलसत रहैं प्रेम हीं ॥७॥

दोहा—एकै सहज सुभाव बन्यौ, एकै विधि सब भांति ।
एक रंग रुचि एक रस, एकै बात सुहाति ॥८॥

॥ कुँडलिया ॥

सीसफूल झलकानि छवि, चंद्रिका की फहरानि ।
ध्रुव के हियमें बसत रहौ, विवि चितवनि मुसकानि ॥
विवि चितवनि मुसकानि, रह्यौ यों उर में छाई ।
तिहि रस के वल मनहिं, और कछुवै न सुहाई ॥
या शोभा पर वारिये कोटि कोटि रति ईश ।

रीझि रीझि नख चद्रकनि,जव लावत पिय शीश ॥६॥
दोहा–सीस फूल मिखि चंद्रिका, सदा वसो मन मोर ।
अरु जव चितवत लाड़िली, पिय तन नैननि कोर ॥१०॥

॥ कुँडलिया ॥

ऐसे हिय में वसत रहो,नव (ल) किशोर रस रासि ।
चितवनि अति अनुराग की, करत मंद मृदु हाँसि ॥
करत मंद मृदु हाँसि दोउ होत जु प्रेम प्रकास ।
छके रहत मदमत्त गति आनँद मदन विलास ॥
हित ध्रुव छवि सों कुंज में, दें अंशनि भुज वैसे ।
मेरी मति इति नाहिं कहौं उपमा दे ऐसे ॥११॥
दोहा–नवकिशोर चितचोर दोउ, परम रसिक शिर मोर ।
ऐसे हिय में मिलि रहो, वचे नहीं कहुँ ठोर ॥१२॥

॥ कुँडलिया ॥

(श्री) राधावल्लभलाल की, विमल धुजा फहरन्त ।
भगवत धर्महुँ जीत के, निज प्रेमा ठहरन्त ॥
निज प्रमा ठहरन्त नेम कछु परसत नाहीं ।
अलकलड़े दोउ लाल मुदित हँसि हँसि लपटाहीं ॥
हित ध्रुव यह रस मधुर (है) सार को सार अगाधा ।
आवे तवही हीय (में) कृपा करें वलभ (श्री) राधा ॥१३॥
दोहा–महा माधुरी प्रम रस, आवे जिहिं उर माहिं ।
नवधा ह तिहि रुचे नहिं, नेम सवै मिटिजाहिं ॥१४॥

॥ कुँडलिया ॥

(श्री) राधावलभ लाड़िली अति उदार सुकुमारि ।
ध्रुव तो भूल्यो ओर तें तुम जिनि देहु विसारि ॥

तुम जिनि देहु बिसारि ठौर मोकों कहुँ नाहीं ।
प्रिय रँग भरी कटाक्ष नेंक चितवो मो माहीं ॥
बढ़े प्रीति की रीति बीच कछु होइ न बाधा ।
तुम हो परम प्रवीन प्राण वल्लभ श्री राधा ॥१५॥
दोहा—अतिहि मृदुल नागर नवल, करुणासिंधु अपार ।
ऐसे शील सुभाव पर, ध्रुव कीन्हों बलिहार ॥१६॥

॥ कुँडलिया ॥

वृन्दाविपिन निमित्त गहि तिथि विधि माने आन ।
भजन तहाँ कैसे रहै खोयो अपने पान ॥
खोयो अपने पान मूढ़ कछु समुझत नाहीं ।
चन्द्रमणिहिं लै गुहै कांच के मनियनि माहीं ॥
जमुना पुलिन निकुंज घन अद्भुत है सुख को सदन ।
खेलत लाडिलीलाल जहँ ऐसो है वृन्दाविपिन ॥१७॥
दोहा—है अनन्य इक रस गहै, वृन्दावन रस रीति ।
विधि निषेध माने न कछु, करै भजन सों प्रीति ॥१८॥

॥ कुँडलिया ॥

वारवार तो वनत नहिं यह सजोग अनूप ।
मानुष तन वृन्दाविपिन रसिकन सँग विवि रूप ॥
रसिकन संग विवि रूप भजन सर्वोपरि आहीं ।
मन दै ध्रुव यह रंग लेहु पल पल अवगाहीं ॥
जो छिन जात सो फिरत नहिं करहु उपाइ अपार ।
सकल सयानप छाड़ि भजु दुर्लभ है यह वार ॥१९॥
दोहा—भजन रंग सतसंग मिलि वृन्दावन सो खेत ।
एक कृपा ते जुरे ध्रुव, याके चहिये हेत ॥२०॥

दस दोहा दस कुँडलिया कुँडल भजन को श्राहि ।
वाहर पाँव न दीजिये छिन छिन यह श्रव गाहि ॥२१॥
भजन कुँडलिया में रहो, पग वाहिर जिन देहु ।
एके जुगल किशोर सों, करि ध्रुव सहज सनेहु ॥२२॥

॥ इति श्री भजन कुँडलिया लीला की जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ श्री भजन सत लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—श्रीहरिवंश सरोज पद जो पै सेये नाहिं ।
भजन रीति अरु प्रेम रस, क्यों आवैं मन माहिं ॥१॥
हरिवंश चन्द, अरविंद पद, यह निज सर्वसु जानि ।
हित ध्रुव मिथुन किशोर सों, तिहिं वल है पहिचानि॥२॥
सोरठा—प्रेम सहित हुलसात, सेवा स्यामा श्याम की ।
कीजे मन इहि भाँति दिन दिन अति अनुराग सों ॥३॥
दोहा—प्रथमहिं मंजन कीजिये, सौरभ अंग लगाइ ।
ता पाछें रचि पचि कर, सुन्दर तिलक वनाइ ॥४॥
तिय के तन को भाव धरि, सेवा हित शृंगार ।
जुगल महल की टहल को, तव पावे अधिकार ॥५॥
नारी किंवा पुरुष हो, जिनके मन यह भाव ।
दिन दिन तिनकी चरन रज, लै लै मस्तक लाव ॥६॥
दुलहिन दूलहु छवि झलक, तहँ राखे दोउ नैन ।
भाव तरङ्गनि मन रँगे, सुनत मधुर, मृदु वैन ॥७॥
लाल लड़ैती केलि कल, अद्भुत प्रेम विलास ।
तिनही के रंग रँगि रहैं, सब ते होइ उदास ॥८॥
मन की दृढ़ता हेत लगि, कही भजन की रीति ।

सुनें हिये के श्रवन दे, तव उपजें मन प्रीति ॥९॥
(श्री) राधा-वल्लभ रूप-रस, करहु नैन मग पान ।
प्रेम सहित निज केलि गुन, करि रसना दिन गान ॥१०॥
गद्गद सुर नैना सजल, दंपति-रस रहै भीन ।
इहि गति बृन्दा विपिन में, फिरे प्रेम तन लीन ॥११॥
नील पीत अंचल झलकि, नैननि में रहै निच ।
जावक युत नख चरन युग, सदा बसो ध्रुव चित्त ॥१२॥
सोरठा—चलत रह्यो दिन रैन, प्रेम वारि-धारा नयन ।
जाग्रत अरु सुख सैन, चितै चितै विवि कुँवर छवि ॥१३॥
दोहा—करत टहल वंदन अधिक, रंज प्रेम मन ज्यौंन ।
तेतौ सब ऐसे भये ज्यों सालन विन लौंन ॥१४॥
हित ध्रुव निरखत नेकु नहिं, वैभवता की ओर ।
रच प्रेम में अपुनपौ, हारत नवल किशोर ॥१५॥
साधन करत अनेक जो, कोटि कोटि जुग जाहिं ।
तऊ न आवत प्रेम विन, रसिक कुँवर मन माहिं ॥१६॥
एक प्रेम पैयत कुँवर, करहु जतन बहुतेर ।
मन वच निश्चय जानि यह, एक ग्रथि सौ फेर ॥१७॥
नैन न झलक्यौ प्रेम जल, भई न तन गति और ।
तेहि उर कहो कैसे लसै, परम रसिक सिर मौर ॥१८॥
नवकिशोर इक प्रेम वस, नाहिंन और उपाइ ।
अनेक चतुरई करो किनि, बातें कोटि बनाइ ॥१९॥
मनकी गति यों चाहिये, भयो रहै दिन दीन ।
रसिकनि की पद रज तरें, लुठत सदा ह्वै लीन ॥२०॥
सहजहि जल अरु प्रेम को, एक सुभावहिं जानि ।

चलत अधिक तेहि ठौंव को, पावत जहाँ निवांनि ॥२१॥
देखो अद्भुत प्रेम फल, सनते ऊचो आहि।
सीस करें जब चरन तर, तब पहुँचे कर ताहि ॥२२॥
वैभव सुख ध्रुव जहँ लगि, छत्रधार सत अर्ब।
प्रेम गरीब सहज पर, वारि डारि भ्रव सर्व ॥२३॥
जब लगि मन चंचल भयो,फिरत विषय सुख माहिं।
तब लगि दंपति चरन सों, होत प्रेम छिन नाहिं ॥२४॥
मन गति चंचल सबनि तें, उपजत छिन सत रंग।
आवत तबहीं हाथ जो, रसिकनि को होइ संग ॥२५॥
भयो न रसिकनि संग जो रँग्यो न मन 'रँग प्रेम।
पारस बिन परसे कहो, होत लोह ते हेम' ॥२६॥
जब लगि मन गज खुमत नहिं, प्रेमपंक में आइ।
तब लगि पाँचो अघिन के, सुख में रहत समाइ ॥२७॥
सोरठा–रसिकनि के रहु संग, रे मन आन बिचार तजि।
नैननि को ले रंग, मिथुन रूप रस रंगि के ॥२८॥
दोहा–रे मन रसिकन संग बिनु, रंच न उपजे प्रेम।
या रस को साधन य है, और करो जिनि नेम ॥२९॥
दंपति छवि में चित्त जे, चाहत दिन इक रंग।
हितसों चित चाहत रहो, निशि दिन तिनको संग ॥३०॥
झूलत झूमत फिरें दिन, घूमति दंपति रंग।
भाग पाइ छिन एक जो, पैयत तिनको संग ॥३१॥
सेवा अरु तीरथ भ्रमन, फलत है कालहि पाइ।
भक्त सग छिन एक में, लेन भक्ति उपजाइ ॥३२॥
जिनके हिये बसत रहैं, (श्री) राधा वल्लभ लाल।

तिनकी पद रज धोइ ध्रुव, पीवत रहु सब काल ॥३३॥
महा मधुर सुकुमार दोउ, जिनके उर बसे आनि ।
तिनहू तें तिनको अधिक, निश्चय करि ध्रुव जानि॥३४॥
जिनके जाने जानिये, जुगल चन्द सुकुमार ।
तिनकी पद रज सीस धरि, ध्रुव के यहै अधार ॥३५॥
सो०—तृन सम सब ह्वै जाहि, प्रभुता सुख त्रैलोक की ।
उपजै जो मन माँहि, अद्भुत रचक प्रेम जब ॥३६॥
दोहा—मन वच धरें अनन्य व्रत, करत भजन रस रीति ।
तेई भावत श्याम मन, हित ध्रुव मानत प्रीति ॥३७॥
पिय प्यारी के पद कमल, निसि वासर करि ध्यान ।
रे मन भजन अनन्य में, मिलवहु मति कछु आन ॥३८॥
(श्री) राधा वल्लभलाल से, परम रसिक सिरमौर ।
ते पद छाँड़े मूढ़ मति, खोजत फिरै कछु और ॥३९॥
ज्ञान धर्म व्रत कर्म में देत है मन अज्ञान ।
करत श्राम तंदुलनि को, कूटत है तुस धान ॥४०॥
(श्री)राधा वल्लभलाल जग,जिहिं उर नाहिं सुहात।
देखो ते नर मद मति, करत आप अपघात ॥४१॥
संजम व्रत सतमख करत, वेद पाठ तप नेम ।
इन करि हरि पैयत नहीं, बिनु आये उर प्रेम ॥४२॥
कर्म धर्म मत अमित के, त्यागि सास्त्र विधि योग ।
माया उदधि प्रवाह में, दिये बहाइ सब लोग ॥४३॥
तहाँ जु नौका कर परें, भक्ति विमल रससार ।
तिहि पर भक्तनि कृपा बल, चढ़त सुलभ ह्वै पार ॥४४॥
जे अनुसरत हैं ज्ञान पथ, निबटत निरखो कोइ ।

तेहि साधन को फल यहै, मुक्ति जीव की होइ ॥४५॥
कर्म श्राद्ध में कुशल जे, पितर लोक ते जाहिं।
भक्त गनत नहिं मुक्ति को, और लोक किहि माहिं ॥४६॥
कर्म धर्म में करहु जिनि, भगवत भजन मिलाइ।
सिंह शरन गहि मूढ़ मति, स्यार शरन कित जाइ ॥४७॥
बड़ी मूढ़ता गही जिय, लई लोक की लाज।
पाछो गधर्व को गह्यो, चढ़े बढ़े गजराज ॥४८॥
विधि निषेध के बंध हैं, और धर्म मृग मानि।
केहरि पुनि निर्बन्ध है, भगवत धर्महि जानि ॥४९॥
यदपि विषय इन्द्रियन वस, भक्त अनन्य जो होइ।
कर्मठ कोटि जितेंद्रियन, तेहि सम सर नहिं कोइ ॥५०॥
श्रुति पुरान विधि स्मृति बहु, अलप आयु यह काल।
लेहु सार गहि हंस जिमि, बिमल भजन नंदलाल ॥५१॥
रीति भजन की यहै ध्रुव छाँड़ै सब की आस।
जुगल चरन की शरन गहि, मनमें धरि विश्वास ॥५२॥
भक्तहि भ्रम तर को रचे, (सब) नाना विधि के फंद।
चित्त भ्रांत सब दूरि करि, करो भजन आनद ॥५३॥
नाना विधि सब भजन के, तिनहिं भजत सब कोइ।
जो है जाकी भावना, सिद्ध सोइ पै होइ ॥५४॥
भुवन चतुर्दश नाहिं सुख, भक्त न पद सम तूल।
माया कौतुक जो कछू, सो हैं सब दुख मूल ॥५५॥
सो दिन कबहू आइ है, तन दुर्वासना जाहिं।
सरस चित अहनिशि फिरौं, सघन बिपिन वन माहिं ॥५६॥
भक्त प्रकार अनेक विधि, मन मन औरे बात।

(जे) भीजे विपिन विहार रस, तिनहिं न और सुहात ॥५७॥
जे सेवत वृन्दा-विपिन, युगल कुँवर रस ऐन ।
ते वैकुंठ सुखादि तन, चितवत नहिं भर नैन ॥५८॥
नौतन वैस किशोर छवि, वसत है जिहि उर नित्त ॥
पौगंड वाल लीलादिहू, भावत नहिं तेहि चित्त ॥५६॥
सकल भजन के माँहि है, हित ध्रुव यह रस सार ।
युगलकिशोर सु नव कुँवरि, करत है विपिन विहार॥६०॥
नवल प्रिया छवि बसत रहो, इहि विधि नैनन माहिं ।
निकसत सघन लतान ते, धरे कंठ पिय वाँहि ॥६१॥
नीलाचल रह्यो अरुझि के, कनक लतनि सों आहि।
या छवि सों कव निरखि हो, पिय निरवारत ताहि ॥६२॥
नवल कुंज नव सहचरी, नवल खगादि कुरंग ।
सब नवलनि में नवल दोउ, करत केलि सुख रंग ॥६३॥
अद्भुत सुख रस मार में, कब ह्वै है मन लीन ।
ध्रुव अँखियाँ तहँ यों रहो, ज्यों जल में गति मीन ॥६४॥
यह विधि गति ह्वै है कवहुँ, और न कछु सुहाय ।
वृन्दावन सुख रंग में, रहै चित्त ठहराइ ॥६५॥
सकल वात घटतें घटो, मन की वृत्ति अनेक ।
वृन्दा विपिन विहार रस, यहै वढ़ो उर एक ॥६६॥
विवस दशा विहरत रहों, अद्भुत सुखहि निचारि ।
नैन सजल ह्वै के ढरें, शोभा विपिन-निहारि ॥६७॥
जिनके मन ध्रुव रचि रहे, वृन्दावन सुख रंग ।
तेहि सुख को जानत सोई, डोलत भये मनंग ॥६८॥
हित ध्रुव जब लगि प्रान हैं, आनहु जिनि कछु चित्त ।

परम रसिक विवि कुँवर वर, हिये लड़ावहु नित्त ॥६६॥
ऐसे रसिक किशोर तजि, भजत मन्द मति आन।
कौन देह खोवत वृथा, समुझत नहिं कछु हान ॥७०॥
जे नर वृन्दाविपिन तजि, अनतहि मन लै जात।
कंचन तजि गहि काँच को, फिरि पाछे पछितात ॥७१॥
धावत वृन्दा विपिन तजि, जे जन आन विचारि।
अति ही दुर्लभ ठौर यह, तातें कढ़ियत मारि ॥७२॥
दुर्लभ वृन्दा विपिन है, राख्यो सब तें गोइ।
तेहि ठाँ पावें रहन क्यों, भाग हीन जो होइ ॥७३॥
करत हैं विविध विहार तहँ, परम रसिक शिरमौर।
वृन्दावन बिनु चित्त में, आनहु जिनि कछु और ॥७४॥
जे नर निंदत मंद मति, वृन्दावन को वास।
सुपनेहुँ परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनको पास ॥७५॥
दुर्लभ निधि देखत सुनत, सो आवत उर नाहिं।
जिन धर्मनि में कष्ट बहु, हठ ठानत मन माहिं ॥७६॥
पांचों इन्द्री साधि कै, योग मौन व्रत लीन।
देखो भजन अनन्य बिनु, बाद वृथा श्रम कीन ॥७७॥
ह्वै आवे या देह तें, कैसेहुँ दोष विशाल।
जो है एक अनन्य व्रत, तजत न ताहि गोपाल ॥७८॥
ज्यों घरनी है अति बुरी, पति नहिं छाँड़त वाहि।
देखत ही पर पुरुष तन, तजत तिही छिन ताहि ॥७९॥
बिन अटके मनपद कमल, जेहि छिन रहत हैं प्रान।
देखियत पशु विहरत मनों, जीवत मृतक समान ॥८०॥
विवि किशोर छवि रंग जो, नैनन भीजे नेह।

अरु मन भयो न मैंन सौं, तो निष्फल गई देह ॥८१॥
विन अर्पे जे जो कछू, तो लागत हैं स्वान ।
देखौ तिहि अपराध को, कहँ लगि कहौं प्रमान ॥८२॥
जलहू भूलि न पीजिये, विन लीन्हें निज नाम ।
ऐसी जो उपजे हिये, तो पावे सुखधाम ॥८३॥
(श्री) राधावल्लभलाल को, रुचि सौं जेवावहु नित्त ।
सो जूठन लै पाइये, श्रौर न आनहु चित्त ॥८४॥
सुनि ध्रुव धर्मी आन सौं, कवहुँ न कीजे वाद ।
मवते दिनहि निशंक ह्वै, लीजै महा प्रसाद ॥८५॥
रे मन लागत भोग जव, कीजे तव न विचारि ।
सव प्रसाद लै पाइये, व्यौरो भेद निवारि ॥८६॥
जो है मन विश्वास ध्रुव, तव सुधरे सव वात ।
नातर माया पंथ में, फिरत जु टक्कर खात ॥८७॥
ज्यों चातिक स्वाती विना, परसत नहिं जल श्रौर ।
दृढ़ता यों मन चाहिये, फिरै न वहुते ठौर ॥८८॥
विच विच दुख सुख देख के, ह्वै आवत अनियास ।
भजन पंथ ते डिगहु जिन, मन में राखि हुलास ॥८९॥
विपति काल व्यौहार में, माया मोह समीर ।
हुलवत वहु विधि चित्त को, टिकै सोइ जो धीर ॥९०॥
प्रभुता सपति के भये, मन इन्द्रिय वस होइ ।
परम धीर निनु कैसेहू, राखि सके नहिं कोइ ॥९१॥
परतहि प्रेम प्रवाह में, रहम सरस दिन चित्त ।
दुख सुख संपति विपति के, तृन सम पैयत कित्त ॥९२॥
अल्प बुद्धि कल्पत कजू, भक्तनि चरन प्रताप ।

इहि विधि जो मन अनुसरै, जाहिं विविधि तनताप॥६३॥
सो०—भक्तनि सों अभिमान, प्रभुता अगे न कीजिये।
मन वच निश्चय जात, इहि सम नहिं अपराध कछु ॥६४॥
दो०—सकल आयु सत कर्म में, जो पै वितई होइ।
भक्तनि को अपराध इक, डारत छिन में खोइ ॥६५॥
और सकल अघ मुचन को, नाम उपाइ है नीक।
भक्त द्रोह को यतन नहिं, होत वज्र की लीक॥६६॥
निंदा भक्तनि की करै, सुनत है जे अघराशि।
वे तो एकहिं संग दोउ, बँधत भानु सुत पाशि॥६७॥
भूलि हुँ मन दीजै नहीं, भक्तनि निंदा ओर।
होत अधिक अपराध यह, यो मत जानहु थोर॥६८॥
सेवा करत में भक्त जन, होइ प्राप्त जो आइ।
सो सेवा तजि वेगिही, अचरहु तिन को जाइ ॥६६॥
भक्तनि देखै अधिक हो, आदर कीजै प्रीति।
यह गति जो मन की करै, जाइ सकल जग जीति॥१००॥
जात अभिमान न कीजिये, भक्त जननि सों भूलि।
सुपच आदि दै होइ जो, मिलिये तिनसों फूलि॥१०१॥

कुंडलिया

बहु बीती थोड़ी, रही सोऊ बीती जाइ।
हित ध्रुव वेगि विचारि कै, वसि वृन्दावन आइ ॥
वसि वृन्दावन आइ, लाज तजि कै अभिमानै।
प्रेम लीन ह्वै दीन आपको, तृण सम जानै ॥
सकल भजन को सार सार तू, कर रस रीती।
रे मन देखि विचारि रही, कछु इक बहु बीती ॥१०२॥

सोरठा-वृन्दावन रस रीति, रहै विचारत चित्त ध्रुव।
पुनि जे है वय बीति, भजिये नवलकिशोर दोउ ॥१०३॥
दोहा-दुर्लभ मानुष देह यह, पैयत कैसेहुँ भाँति।
सोई खोयो कौन नग, बाद भजन बिनु जाति ॥१०४॥
बिषया जल में मीन ज्यों, करत कलोल अग्यान।
नहिं जानत ढिंग काल बक, रह्यो ताकि धरि ध्यान॥१०५॥
ज्यों मृग मृगियनि संग में, फिरत मत्त मन बांधि।
जानत नाहिंन पारधी, रह्यो काल सर सांधि ॥१०६॥
निशिवासर कर कतरनी, लिये काल कर वाहि।
कागदसम भई आयु हो, छिन छिन कतरत ताहि॥१०७॥
जेहि तन को सुर आदि दे, ईछत रहै दिन आहि।
सो पायो मति हीन है, वृथा गँवावत ताहि ॥१०८॥
रे मन प्रभुता काल की, करहु जतन ह्वै ज्यौंन।
तू फिरि भजन कुठार सों, काटत ताही क्यौंन ॥१०९॥
पुरुष सोई जु पुरीष सम, छांडि भजै संसार।
विपिन भजन गहि हृदै दृढ़, तजि कुटुम्ब परिवार ॥११०॥
सुख में सुमरैं नाहिं जो, (श्री) राधा वल्लभलाल।
तन कैसे मुख कहि सकत, चलत प्रान जेहि काल॥१११॥
ढीठौं (ह्वै) करि विनती दियो, कंचन काँचन बताइ।
इन में जाके मन रुचै, सोई लेहु उठाइ ॥११२॥
सोरठा-तव पावै रस सार, शुद्ध भजन ध्यावै हिये।
याते कह्यो विस्तार, भजन नशेनी प्रेम की ॥११३॥
दोहा-यह रस तौ अति अमल है, रहौ विचारत नित्त।
कहत सुनत ध्रुव भजन सत, दृढ़ता ह्वै है चित्त ॥११४॥

॥ इति श्री भजन सत लीला की जै जै श्री हित हरिवंशजी ॥

अथ शृ गार सत लीला की तीसरी शृ खला प्रारम्भ

दोहा—श्रीहरिवंश नाम ध्रुव, चिंतत होत जु हिये हुलास।
जो रस दुर्लभ सबनि तें, सो पैयत अनयास ॥१॥
व्यास नन्द पद कमलबल, सकल सुखन को सार।
रचि कीन्हों शृ गार सत, अद्भुत प्रेम विहार ॥२॥
बाँधी ध्रुव गुन शृ खला, प्रथम चालीस अरु तीन।
दुतीय चालिस अरु तीसरी, द्वै पर चालिस कीन ॥३॥
प्रथम शृ खला माहिं कछु, कह्यो लाड़िली रूप।
निरखि लाल सखि रहे छकि सो छबि अतिहि अनूप॥४॥
छिन छिन नेह कटाच्छ जल, सींचत पिय हिंय ऐन।
भाग पाइ जो कबहुँ ध्रुव, या सुख सों लगें नैन ॥५॥

॥ सवैया ॥

कैसो फब्यो है नीलांबर सुन्दर मोहि लिये मन मोहन माई।
फैलि रही छबि अगनि क्रांति लसै बहु भाँति सुदेश सुहाई॥
सीस को फूल सुहाग को छत्र सदा पिय के मन को सुखदाई।
और कछू न रुचै ध्रुव पीय कों भावै य है सुकुमारि लड़ाई॥६॥

॥ कवित्त ॥

(श्री) राधिकावल्लभ प्यारी फुलवारी माँझ ठाढ़ी, फूलकारी सारी तन शोभित बनाव की। लोचन विशाल बाँके अनियार कजरारे, प्रीतम के प्रान हरें हेरनि सुभाव की॥ चूरी मखतूल नील मनिन की कर बनी, बेसर सुदेश उर अँगिया कटाव की

कुन्दनकी दुलरी अरु मोतिन के हार हिये, हित ध्रुव चारु चौकी लसत जड़ाव की ॥७॥

जरकसी सारी तन जगमग रही फवि,छवि की छलक मनो परी है रमालरी । उज्वल सुरंग अनियारी कोर नैननि की, सीस फूल बेंदी लाल सो है वर भालरी॥ रतन जटित नीलमनि चौंकी झलमलै, हित ध्रुव लसै उर मोतिन की मालरी । पानिप अनूप पेखें भूली है निमेषै देखें,मन्द मन्द बेसर मुक्ता की हालरी ॥८॥

फवि रही सारी मृदु केसरी सुरंग रंग,भीजी है फुलेल स्वच्छ सोंधे मोद में सनी । खुल रही तामें आली अँगिया जगाली गादी दमकन कंठ लर मोतिन की है बनी॥ मृगमद बेंदी लसै प्रीतम के मन बसै बेसर झलक छवि बरसत है घनी । मुसकनि मन्द सुख रग के तरग उठें,सोहने रसीले नैन सैनमें निकेधनी॥६॥

तन सुख सारी मिही भीजी है फुलेल माहिं, तामें लाल अँगिया सुदेश कसनी कसी । सोंधे मगवगे वार वन्यो है मादो सिंगार,मुख पर डारौं वारि कोटि कज औ ससी॥ चंचल छबीले बड़े सोहने रसीले नैन,चितै नेक अलबेली अचल लै मन्दहँसी । हित ध्रुव बस भये देखत ही रह गये, थिरकनि बेसरि की प्रीतम के मन बसी ॥१०॥

काकरेजी सारी तन गोरे कसी शोभियत, पीत अतरौटा मो दुर ग छबि न्यारी है । मुख की पानिप अति चंचल नैननि गति, देखे भ्रुव भूली मति उपमा को हारी है ॥ बेंदी लाल नथ मोहै नन्यो मोती मन मोहै,बस भये पिय सुधि देह की बिसारी है । गहे द्रुम डारी एक रहि गये ताकी टेक, ऐसे बेस जब ते किशोरी जू निहारी है ॥११॥

सुरंग कसूभी सारी पहिरे रँगीली प्यारी, आली अलवेली भाँति रंग माहिं ठाढ़ी है। केसरी सुरंग भीनी सोंधे सगबगी कीन्हीं, सो है उर अंगिया कसनि अति गाढ़ी है॥ फैलि रही अरुनाई तैसी ध्रुव तरुनाई, मानो अनुराग रूप में भकोर काढ़ी है। वदन झलक पर परी है अलक आइ, देख पिय नैनन ललक अति वाढ़ी है॥१२॥

सवैया

सारी सुरंग सुही अति झीनी सुगंध सों भीनी महा सुखदाई।
रची चुनि भान समान सुजान ने फूलनि मोद हू ते मृदु माई॥
भूलि रही मति की गति हेरत जानत ही उपमा ध्रुव पाई।
रँगी पियप्यारेके रँग मनो एँकि अंगनि रूप तरंगनि छाई॥१३
सारी हरी ने हर्यो मन लाल को मोहनी सोहनी के तन सोहै।
अंगिया लाल सुरँग वनी लहि गातहि रंग खरो मन मोहै॥
रूप की राशि सवै गुन आगरि या छवि की उपमा कहो को है।
राजत है ध्रुव कुंजविहारनि सो छवि लाल पलोपन जो है॥१४॥

कवित्त

हँसनि में फूलन की चाहन में अमृत की नखसिख रूप ही की वरपा सी होति है। केशनि की चंद्रिका सुहाग अनुराग घटा, दामिनी की लसनि दशनि ही की दोति है॥ हित ध्रुव पानिप तरंग रस छलकत ताको मानो महज सिंगार सींवाँपोति है। अति अलवेली प्रिये भूषित भूषन विनु, छिन छिन औरै और वदन की जाति है॥१५॥

छविसों सों छवीली खरी प्रीतमके रसभरी, कोटि कोटि दामिनी न नख श्रि पावही। छन्द कोटि मन्द होत मोतिन की कहाँ

जोति, नेक ही की चितवनि ढरे लाल आवही । देखत हैं रुचि लिये मुख शोभा चित दिये, परम प्रवीन प्यारो रुचि लें लड़ावही । हित ध्रुव छिन छिन मैन के तरंग बढ़ें, प्रेम के हिंडोले चढ़े मदन झुलावहीं ॥११॥

गोरी मृदु अँगुरिन मेहँदी को रंग फब्यो अतिही सुरंग कंज दलनि लजावही । मनिनके बहुरंग हरित जंगाली छल्ले, जिहिं पोरी जैसे बने पिय पहिरावही ॥ चितै छवि कर गहै नैनन को छ्वाइ छ्वाइ, चूँमि चूँमि माथे धरि आनि उर लावही । हित ध्रुव निशिदिन याही रस रहै पगि, जेही अंग मन परै तिहिं सचु पावही ॥१२॥

कंचन के वरन चरन मृदु प्यारी जू के, जावक सुरंग रँगे मनहि हरत है । हित ध्रुव रही फवि सुमिलि जेहरि छवि, नूपुर रतन खचे दीप से वरत हे । रीझि रीझि सुंदर करनि पर पट धरें, आरसी,सी लिये लाल देखिबो करत है ॥ नख मनि प्रभा प्रतिबिंब झलमले कंज चंद्रिनि के यूथ मानों पायन परत है।१३

दोहा–अद्भुत पद पल्लव प्रभा, मृदु सुरंग छवि ऐन ।
छिन छिन चूमत प्यारसों, रहत लाल उर नैन ॥१४॥

॥ कवित्त ॥

फूलि फूलि रहे मन फूल फुलवारी में के,रीझि रीझि छवि आइ पाइनि में परी है । लाड़िली नवेली अलबेली सुख सहजही निवसि निकुंज नें अनूप भाति भरी है ॥ नख शिख भूषन लावण्यही के जगमगे, दीठ मों चुवत सुकुमारता ढ़ ढरी है । हित ध्रुव मुसिकनि हेरत निकाइ रहे, दामिनी की दुति अरु दीपनि की हरी है ॥१५॥

कु जनि के आँगन में जहाँ-जहाँ पग धरैं, छवि के बिछौना से बिछाये तहाँ जात हैं। रग भरी लाड़िली निपट अलबेली भांति,अलवेले लोचन न कछु ठहरात हैं॥ नईनई माधुरी को सार है सुभाइन में,मुसकनि मानों सुख फूल विगसात हैं। सोंधे की सीं वास ध्रुव फैलि रही पहले हो, रूप निधि पानिप के पु ज वरसात हैं॥ १६ ॥

अलवेली चितवनि मुसिकनि अलवेली अलवेली चलन ललन मन हर्‌यो है। वृन्दावन मही सब मई छवि मई आली, पग पग पर मानों रूप झरि पर्‌यो है॥ कनक वरन भये पत्र फूल द्रुमनि के, आभा तन रही छाइ कुन्दन सों ढर्‌यो है। हित ध्रुव ऐसी भाँति झलकत तन काँति चितवन पिय चित नेकहू न टर्‌यो है॥ १७ ॥

देखत छवीली जू की छवि छके छवि निधि, ऐसी छवि देखि आली टग नहिं टारिये। अलवेली चितवनि हैंमन ललन पर मानों सुख पु ज रंग के प्रवाह ढारिये॥ छिनछिन नई नई छविकी तरंग छटा,विवस करत प्रान कैसे के सँभारिये। हित ध्रुव प्यारी जू के चरन निछनि पर,कोटि कोटिरति दुति मोहनी सी वारिये।१८।

थिरकन वेसरि के मोती की अनूप भाँति, प्रीतम के नैना देखि अति ही लुभाने हैं। तेहि छवि की समान देवे कों न कछू आन,याही ते विहारीलाल आपुही विकाने हैं॥ परे रूप सिंधु माँझ जानत न भोर साँझ, हित ध्रुव प्रमदी के रंग रस साने हैं। प्यारी जू के मिलिवे की तृपित न होत क्योंह , कोटि कोटि युग एक सुख में विहाने हैं॥ १६ ॥

नहे वड़े उज्ज्वल सुरग अनियार नैना अंजन की रेख देरे

हियरो सिरात है। चपलाई खजन की अरुनाई कंजन की, उज राई मोतिन की पानिप लजात है ॥ सरस सलज्ज नये रहत हैं प्रेम भरे, चचल न अचल में कैसेहु समात हैं। हित ध्रुव चितवनि छटा जेही कोद परै,तेही ओर वरपा सी रूप की ह्वै जात है।२०।

कोलपत्र सारी वनी सौंधे ही के मोद सनी, चितै रहे स्याम धनी मानों चित्र ऐन हैं। आंगी नील रही कवि कहि न सकत छवि, मोतिन की झलकनि अति सुख दैन हैं ॥ चितवनि मैन मई मुसिकनि रस मई, कोकिला हू वारि डारी ऐसे मृदु बैन हैं। हित ध्रुव अंग अग सबै सुख सार मई, मन के हरनहार वाके दोऊ नैन हैं ॥ २१ ॥

रूप जल में तरंग उठत कटाछनि के,अंग अग भौंरनि की अति गहराई है। नैनन को प्रतिबिंव पर्यो है कपोलनि में, तेई भये मीन तहाँ ऐमी उर आई है ॥ अरुन कमल मुसिकनि मानों फनि रही,थिरकनि वेसरिके मोती की सुहाई है। भयो है मुदित सखी लालको मराल मन,जीवन जुगल ध्रुव एक ठौंव पाई है।२२।

चलनि छवीली जू की चितवत छके पिय, कहि न सकत कछू आज ओरै भाँति है। अलवेली रूप पुंज कुंजतें निकसि जव, चद कोटि मद होत एमी तन काति है ॥ देखे हंसी मोरी मृगी तेई तहाँ मोहि रही, झनक भनक सुनि भूलि सुधि जाँति है। हित ध्रुव फूलनि की माला शीश हेली मन, एसे रहिगई मानो चित्रनि की पाँति है ॥२३॥

दोहा—अद्भुत छवि की माधुरी, चितै चिवस ह्वै जाहिं।
यह मोन पिय प्रम को, रहत पिया मन माहिं ॥२४॥

॥ कवित्त ॥

छवि के छिपाइवे को रसके बढ़ाइवे को, अंग अंग भूषण बनाये हैं बनाइके। देखे नासापुट वेह प्रीतम भये बिदेह, याही हेत बेसर बनाइ धरी चाइके ॥ रोम रोम जगमगे रूपकी पानिप अति, सकें न सँभारि हँसि चितई सुभाइके। हित ध्रुव बिवस लटकि जात छिनछिन,यातें सखी शोभा सब राखी है दुराइके।२५

ऐसी है ललित प्यारी लाल जू की प्रान प्यारी,दीठहू न ठहरात कैसे कै निहारिये। जाकी परछाई पर कोटि कोटि चंद अरु, दामिनी भामिनी काम कोटि कोटि वारिये ॥ काजर की रेख जहाँ पानन की पीक भारी,और सुकुमारताई कैसे कै विचारिये। सहज ही अग अंग रूप सार मोद मई,हित ध्रुव प्राण न्योछावरि करि डारिये ॥२६॥

अनियारे नैन सर वेध्यो मन प्रीतम को, विथकित चकित रहत बल हीने हैं। काजर की रेख जहाँ रही फबि निसिदिन तरफ गिरत सखो अंक भरि लीने हैं॥ रसिक किशोर पिय महा सूर प्रेम रन,नैनन तें नैना तौऊ न्यारे नहिं कीने हैं। हित ध्रुव प्यारी सुकुमारी रीझि देखे गति, अति सुकुमार महा प्रेम रंग भीने हैं ॥२७॥

प्यारी जू की मुसिकनि बीजुरी सी कौंधि जाति,प्यारे जूके उरतें न रेखा मी टरति है। भरि भरि आवें नैन कैसेहू न पावें चैन, बान कीसी अनी हिये खरक्यो करति है॥ लाड़िली नवेली अलबेली खानि माधुरी की, सहज सुभाइन में सर्वसु हरति है। हित ध्रुव नये नये छवि के तरंग देखें, रीझि शीश चन्द्रिका पगन को ढरति है ॥२८॥

हारनि के भार भारी ऐसी सुकुमारी प्यारी, रसिक रँगीले लाल कीन्हीं उर हार सी। छवि के तमाल लपटानी रूप वेलि मानौं, हँसन दशन फूल फूले सुख सार सी॥ नखशिख जगमगे रोम रोम प्रतिबिंब, लसत है ऐसे जैसे आरसी में आरसी। हित ध्रुव इहि विधि देखे सखी चित्र भई, चहु कोद रही झूमि कंचन की डार सी॥२६॥

अति अलवेली भांति फूलें अलवेली प्रिये, सहज छवीली छवि नवल निहारही। सारी सुही सुरँग परति खसि खसि सखी वार वार प्यारो पिय फूल से सँवारही॥ जेही ओर अंग पट भूषन खिसत पिय, तेही ओर मुरि मुरि प्रान ज्यों सँभारही। हित ध्रुव प्रीतम के नाहिं और दूजी गति छिन छिन तिनही के सुख ही विचारही॥३०॥

॥ सवैया ॥

रूप रसीली हँसीली छवीली रँगीली रँगीले के प्रानते प्यारी। सुलज्ज सुरँग सुनैन विशालनि सोभित अंजन रेख अनियारी॥ महा मृदु वोलनि मोती की डोलनि मोल लिये ध्रुव कुंजविहारी। रहे सुख पाय न और सुहाइ भये बस नेह के देह बिसारी॥३१॥

॥ कवित्त ॥

सोने तें सुरंग गोरी सोंधे सों सुवास अति, मृदुताई पर वारौं जेतिक सुमन री। रूप ही को रूप जगमगत सकल वन, आरसी को आरसी लसत ऐसो तन री॥ फैलि रही छवि प्रभा जहा लौं विराजे सभा, हित ध्रुव चितें लाल भयेहैं मगन री। प्राननि के प्रान और नैननि के नैन मेरे, रीझि रीझि वार वार ल्हे ल्हे चरनरी॥

कौन भाँति कौन काँति कौन रूप कौन नेह, कौन एक

है सुभाव कहा आली कहिये। कौन माधुरी तरग हाव भाव कौन रंग, कौन मुख पानिप विलोक्त ही रहिये॥ कोक कला रंगमई जोवन की जोतिनई,रही है विचारि मति उपमा न लहिये। हित ध्रुव ऐसी प्यारी मृदुताई वारि डारी रीझि पिय छ्वावत चरन नैनन हिये ॥३३॥

छवि ठाढ़ी करजोरे गुन कला चौर ढोरे,दुति सेवे तन गोरे रति वलि जाति है। उजराई कुंज ऐन सुथराई रची सेन,चतुराई चितै नैन अतिही लजाति है॥ राग सुनि रागिनी हू होत अनुराग वस, मृदुताई अगनि छुवति सकुचाति है। हित ध्रुव सुकुमारी पुतरीन हू ते प्यारी,जीवत देखे बिहारी सुख वरखाति है ॥३४॥

रूप की नौलासी प्यारी नाना रगके सुभाइ, भाइनि की मृदुताई कही न परति है। नैननि के आगे लाल लिये रहै निशिदिन,एकौ छिन मन तें न क्यों हू विसरति है॥ भीजि भीजि जात पिय सुख के तरंगनि में, जब प्रिया बातनि के रग में ढरति है। हित ध्रुव प्यारे जू की जीवन किशोरी गोरी, छिन छिन प्रीतम के मन को हरति है ॥३५॥

रूप की नौलासी देखें फूल की नौलासी सखी, परी लसि नवल रँगीले जू के करतें। हाव भाव रगनि के जगि मगि रही प्यारी, चित्र से ह्वै रहे चितै चितै प्रम भरतें॥ अति ही विचित्र सखी रही है सँभारि ध्रुव, जिनि धुकि परें धर पर गाही हरतें। छिन छिन प्रम सिंधु के तरंग, नाना भाँति रह्यौं जकि थकि मन तेहि रस परतें॥ ३६॥

दोहा–अंग अंग ढरे मैन ज्यों, रूप तेज की काँति।
चहुँदिस थामे रहति सखि,देखि लाल की भांति ॥३७॥

॥ कवित्त ॥

दीठि हू को भार जानि देखत न दीठि भरि, ऐसी सुकुमारी नैन प्रानहू ते प्यारी है। माधुरी सहज कछू कहत न बनि आवे, नेकही के चितवत चकित बिहारी है॥ कौन भाँति मुख की अनूप कांति सरसाति, करत विचार तऊ जात न विचारी है। हित ध्रुव मन पर्यो रूप के भँवर माँझ नेह बस भये सुधि देह की बिसारी है ॥४२॥

॥ सवैया ॥

भीजी नवेली चँवेली फुलेल सों फूलनि के पट भूषन सोहे।
लोइन बँक बिशाल सचिक्कन अंजनि की छवि प्रानन मोहे॥
रूप तरंगनि पानिप अंगनि प्यारी सखी ललितादिक जोहे।
भूलि रही ध्रुव तो छवि श्री अरु मोहनी मैन की नारि धौं कोहे ?

॥ कवित्त ॥

कुंज तें निकसि दोऊ ठाढे जमुना के तीर, आजु सखी और भाँति प्रिया रंग भरी है। निशि के चिन्हनि चितै मुसकाति रस निधि, बहु विधि सुख केलि रंग रस ढरी है॥ देखें ध्रुव छवि सींवा मृदु भुज मेलें ग्रीवा, हँसी भोरी भोरा मृगी ठौरु ते न टरी है। हरी हरी लाल लाल पीत सेत सारी तन, पहिरे सहेली सबै चित्र की सी स्वरी है ॥४४॥

नवल नवेली अलबेली सुकुमारी जू को, रूप पिय प्रानन को सहज अहार री। बिंजन सुभाइनि के नेह घृत सौंज बनें, रोचिक रुचिर है अनूप अति चारु री॥ नैननि की रसना तृपित न होत क्यों हू, नई नई रुचि ध्रुव बढ़त अपार री। पापिन को

पानी प्याइ—पान—मुसिक्यान खवाइ, राखें—उर सेज स्वाइ पायो सुख सारं री ॥४५॥

प्रानहु ते प्यारी सुकुमारी जू को देखत, बिहारी जू के रोम रोम लोचन है जात हैं। ज्यों ज्यों रूप पान करें निमिष न चैन धरें, त्यों त्यों प्यास बाढ़े अति क्यों हूँ न अघात हैं ॥ छवि के तरंगनि में झूलत किशोर-पिय, हार तन हेरि हेरि खरे ललचात हैं। हित ध्रुव आरत में भयो भ्रम चाहत ही, मिलें हैं कि नाहिं मन क्यों हूँ न पत्यात है ॥४६॥

॥ सवैया ॥

रहे चकि लाल चितै मुख बाल परयो मन रूप तरंगनि माहीं। भाइ सुभाइ उठे छिनही छिन लालची नैनन क्यों हूँ अघाहीं ॥ योवन रंग-भरे अँग अँग विलास अनंग, कहे नहिं जाहीं। बानिक आहि अनूप छबीली की पानिप की, उपमा ध्रुव नाहीं ॥४७॥

॥ कवित्त ॥

मुख छवि कांति सोहै उपमा को चन्द को है, रहे मोहिं जोहि जोहि नवल रसिक वर। शीश फूल शोभा कछु कहत न बनि आवे, मनहुँ सुहाग छत्र झलकत शीश पर ॥ बेंदी लाल रही फबि कहा कहौं नय छवि, और सब रहे दबि जहाँ लगि दुति धर। हित ध्रुव नैननि में अंजन बिराजे खरो, चंचल चपल मनमोहन को चित्त हर ॥४८॥

दोहा—कुँवरि छबीली अमित छवि, छिन छिन औरे और।
रहि गये चितवत चित्रसे, परम रसिक शिरमौर ॥४६॥

॥ इति श्री शृङ्गार सत प्रथम शृंगार लीला की जै जै श्रीहित राधे ।

॥ अथ दुतिय शृंखला प्रारंभ ॥

दोहा—दुतिय शृ खला सुनत ही,श्रवननि अति सुख होइ ।
प्रेम रतन गुन रूप सों, मानों राखी पोइ ॥१॥

॥ कवित्त ॥

दुलहिन दूलहू कुँवर दोऊ सहज ही, रसिक रँगीले लाल भीने सर रँगना। छवि के बसन अभरन अलबेले ताके,ठाढे हैं छबीली भाँति कुजनि के अँगना ॥ सहज सुरग मृदु झलकें चरन कर, रूप गुन पोइ बाँध्यो प्रेम ही के बगना। ध्रुव सहज द्रगचलनि गाठि परी,नयो चाव नई रुचि बढ़त अनंगना ॥२॥

जैसी अलबेली बाल तैसे अलबेले लाल, दुहूँनि में टलही सहज गोभा नेह की। चाहनि के अश्रु दे दे सींचत हैं छिन छिन, अाल वाल भई सेज छाया कुंज गेह की। अनुदिन हरी होत पानिप बदन जोति, ज्यों ज्यों ही भौवार ध्रुव लागे रूप मेह की नैननि की वारि किये हेरें सखी मन दिये, मित्र से ह्वै रही सब भूली सुधि देह की ॥३॥

प्यार जू की जीवन है नवल किशोरी गोरी, तैसी भाँति प्यारी जू की जीवनि बिहारी है। जोई जोई भावे उन्हें सोई सोई रुचे इन्हें, एकें गति भई ऐसी रचको न न्यारी है॥ छिन छिन देखि देखि छवि की तरग नाना, प्रीतम दुहूँनि सुधि देह की बिसारी है। हित ध्रुव रीझि रीझि रहे रति रस भीजि प्रीति ऐसी अब लगि सुनी न निहारी है ॥४॥

प्रीतम को प्रम गति देखे भूली तन गति, घरे घड़े नैना दोऊ आये प्रम जल भरि। पिया लाल लाल कहि लिये उर जन,

चूँमि चूँमि नैना रही अधर दशन धरि । हित ध्रुव सखी सब देखत विवस भई, प्रेम पट नाना रंग झलके सबनि परि । एक चित्रकी सी खरी एक धर खसि परी, एकनि के नैनन तें गिरे नेह नीर ढरि ॥५॥

–नैनन के आगे प्यारी विलपत हे विहारी, असुँवनि प्रेम जल धारा चली जाइ री । कौन प्रेम केहि फंद परे हैं रँगीले लाल अटपटी गति हेरे हियो अकुलाइ री॥ हित ध्रुव चेति के किशोरी गोरी धीर धरि, नैना नेह नीर भरि लीन्हें उर लाय री। प्रेम को समुद्र फिरि गयो है सबनि पर, जहाँ तहाँ सखी धर परी मुरझाइ री ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

सेज सरोवर राजत है जल मादिक रूप भरे तरुनाई । अंगनि आभा तरंग उठे तहाँ मीन कटाछनि की चपलाई ॥ प्यासा सखी भरि अंजुल नैन पिये तें गिरी उपमा ध्रुव पाई । प्रेम गयन्द ने डारे हैं तोरि के कंचन कंज चहूँ दिशि माई॥७॥

॥ कवित्त ॥

सखीनि की गति हेरें ठाढे भये जाइ नेरे, करुना कैं चितयो दुहुँनि तिन ओर री । अमी की सी धारा उर सींचि गये सबनि के, प्रेम सिंधु भौंर तें निकासी बर जोर री । चहूँदिशि राजे खरी महा रंगभरी,नैननि की गति बहे तृषित चकोररी । सहज तरंग उठें जल जैसे छिन छिन,हित ध्रुव यहै खेलि तहाँ निशि भोररी

नई सेज नई रुचि नयो रूप नयो नेह, नेही नये अलबेले अति सुकुमार री। नई साज नयो रंग नेह रँगी चितवनि,नई केलि को सिंगार सोहे उर हार री ॥ छिन छिन तृषा बढ़ें पानिप अनूप चढ़ें,मधुर विमल निज यहै प्रेम सार री। हित ध्रुव प्यारी

मानों छुई है न मनहू के, एके रस दिन जहाँ विशद विहरै री ॥६॥

॥ सवैया ॥

सेज रँगीली रँगीली सलीन रची बहुरंग सुरंग सुहाई।
तापर बैठे रँगीले छबीले हँसे रस में सुख की सरसाई ॥
(स) त्रिकनि अंजन नैन लसें मेंहदी झलकै पद पनि रचाई ॥
रूप की दीपत तें ध्रुव कुंज फनूस सी ह्वै रही यों उर आई ॥१०॥

॥ सवैया ॥

फूलसों फूलनि ऐन रची सुख सैन सुदेश सुरंग सुहाई।
लाड़िलीलाल विसाल की रासि श्रो पानिप रूप बढ़ी अधिकाई।
सखी चहुँश्रोर निलोकें झरोखनि जाजि नहीं उपमा ध्रुव पाई।
खजन कोटि जुरे छवि कें ऐकि नेननि की नव कुंज बनाई ॥११॥

दोहा—नवल रँगीली कुंज में, नवल रगीले लाल।
नवल रगीलो खेल रचो, चितवनि नैन विशाल ॥१२॥

॥ कवित्त ॥

फूलनि की कुंज ऐन फूलनि की रची सैन फूलनि के भूषन बसन फूल मन में। फूलही की चितवनि मुसकनि फूलही की फूलि-फूलि लपटात फूल के सुदन में। फूलनि की हाव भाव फूलनि को नह्यो चाव, फूल फूल दम्पि ध्रुव उभै तन धन में। अरपत सुख फूल झुरत हिंडोरे भूल, फूलही की दामिनी लसत फूल धनमें ॥ १३ ॥

शाद्वी रुचि सों श्रन ले बैठ हैं छबीली भाति, रतन निकुंज माहि बातें रति करहीं। परम प्रवीन प्यारा ताहू ते अधिक प्यारी, रसमसी चितवनि चितो चित्त हरहीं। नवल नवल भाइ पेख्यों है

परम जाइ, आनँद को रगपाइ सुख रस ढरहीं । हित ध्रुव रीझि रीझि देबे को न कछू आहि, फिरि फिरि प्यारेलाल पाइन में परहीं ॥ लाल पीत फूलनि की कुंज सुख पुंज मध्य, लाल पीत बागे तन दोऊ लाल पहिरें । भूषन की दुति प्रति अगनि में झलकत मानों रूप सिंधुन तें उठति हैं लहिरें मद मद हँस कहैं कछू रँग भीनी बात, बेसरि के मोती दोऊ छबि सों थरहिरें हित ध्रुव रीझि रीझि रहे रति रस भीजि, अचलनि सुधि भूलि परे सुख गहिरें ॥ १५ ॥

प्रीतम किशोरी गोरी रसिक रँगीली जोरी, प्रेमही के रग बोरी शोभा कही जाति है । एक प्राण एक बेस एकही सुभाव चाव, एक बात दुहुँनि के मनहि सुहाति है । एक कुंज एक सेज एक पट ओढ़े बैठे, एक एक बीरी दोऊ खंडि खंडि खाति हैं । एक रस एक प्राण एक दृष्टि हित ध्रुव, हेरि हेरि वदन चोंप क्यों हैं न अघाति हैं ॥ १६ ॥

साँवरे किशोर लाल लाड़िली किशोरी गोरी, बाढ़ीं जोरी एके संग नीके देखि पाये हैं । कंचन के कंचनि की कुंजनि में बैठे सखी, बीती रति केलि निशि तऊ न अघाये हैं ॥ हारनि के ब्याज पिय छुयो चाहें उरजनि, प्रिया जानि अंचल सों तबहीं दुराये हैं हित ध्रुव परम प्रवीन कोक अंगनि में, समुझि समुझि मन दोऊ मुसिकाये हैं ॥ १७ ॥

बैठे सेज एक संग भीजे रस अंग अंग, मनके मनोज रग मुदित करत हैं । अधिक अधीरताई देखि प्रिया मुसक्याई, विवस किशोर पिय अंक में भरत हैं ॥ चितै चितै नैन ओर छुवे लाल कुच कोर, भौंहनि की मुरनि तें अतिही डरत हैं । हितध्रुव ललित

कपोल नामा पुट,चूम अधरनि रस हित पाइनि परत हैं ॥१८॥

दुलहिनि दूलहु किशोर इक जोर दोऊ, भूषन सहाने आगे वने अंग अंगरी। चंचल नैना विशाल अंजन वन्यो रसाल,कर पद रचे सोहैं मेंहदीको रंगरी॥ सहज सहानी कुंज रची है सहानी सेज, लिये लाल बैठे हैं लड़ेती को उछंगरी। हित ध्रुव छिन छिन बढ़त सहानो नेह,रोम रोम उपजत छवि के तरंगरी।।१६॥

नवल निकुंज सुख पुंज में रँगीले लाल, दुलहिनि दूलहु रसिक शिरमौररी। रति रस रंग साने ऐसे अंग लपटाने, परत न सुधि कछु को है श्याम गौररी॥ महारस माधुरी को पीवत हैं ज्यों ज्यों दोऊ, बढ़त अधिक आली त्यों त्यों प्यास औररी। हित ध्रुव हेरि हेरि करत विचार सखी, कौन प्रेम कौन रूप जुर्‌यो इक ठौररी॥ २०॥

रूपनिधि पानिप तरंगनि के चितवत, मैन रंग भरे नैन शोभित विशाल री। आनन्द की कुंज ऐन राजत हैं प्रेम सैन, तापर रंगीले जगमगें दोऊ लाल री॥ माधुरी मदन मोद मद के विनोद करें,लालन की राशि ललचात सब काल री। हावभाव चतुरई छिन २ नई२,हित ध्रुव रस वस कीन्हें बर बाल री ॥२१॥

॥ सवैया ॥

आनँद पुंज सुहाग की कुंज में सेज सुदेश सुरंग सहानी।
रो ध्रुव फूल अनूप दुकूल रची सुख मूल सुगंध सों सानी॥
दूलहु दोऊ विचित्र महा कलही कल कोक कला कल ठानी।
पे (परे)रस रंग तरंग अभंग भई लब रैन विहात न जानी॥२२॥

दोहा—अद्भुत कोक कलान की, नवल रंगीली केलि।
हार जीत समुझति नहीं, बढ़त रहै रुचि बेलि॥ २३॥

॥ कवित्त ॥

माधुरी की कुंज तामें मोदकी लै सेज रची,तेहि पर राजे अलबेले सुकुमार री। रूप तेज मोद के जुगल तन जगमगें,हाव भाव चातुरी के भूषन सुढार री॥ नेह नीर नैनन की सैनन में रहे भीजि,कौन रंग बाढ्यो जहाँ बोलिबोऊ भार री। अतिही आसक्त सखी रही मोहि जोहि जोहि, हित ध्रुव प्राननि को यहै है अहार री॥२४॥

कमल निकुंज में गुलाब दल सेज रची,बागे कोलपत्र मृदु अतिही सुरंग री। अंग अंग रहे भीजि सौंधेही के मोद मौंफ झूँ झूँ लर मोतिन के फोंदा बने संग री॥ कोलपत्र वारि डारे नैन अरुनाई पर,चपलाई पर फोके खंजन कुरंग री। फूले मुख देखि सखी रहिगई न्यारी२ छकी अनुराग ध्रुव सबके अभंग री॥२५॥

फूलनि में फूले दोऊ संग सखी नाहिं कोऊ,रंगभीनी बति यनि कहि मुसिकातरी। आनँद के सिंधु परे नैन मैन रंग भरे, हित ध्रुव रस ढरे उर लपटातरी॥ अधर अधर जोरे मिलि रही नैन कोरे,थोरे थोरे बेसरि मे मोती थहरातरी। चली है उमड़ि शोभा याही रति पति गोभा, देखिलाल लालनहि लालचो लजातरी॥२६॥

लाल कुंज लाल सेज लाल बागे रहे बन, राजत हैं दोऊ लाल बातनि के रंग में। लालनि की लाल भूमि लाल फूल-रहे झूमि,ललित लडैती लाल फूले अंग अंग में॥ लाल लाल सारी तन पहिरे सहेली सब, भीजे दोऊ प्रान प्यारे प्रेम ही के रंगमें। हित ध्रुव चितवत लोचनि सिरात तब,देखे जब प्यारी जू को पिय के उछंग में॥ २७॥

जहाँ जहाँ राधा प्यारी धरति चरन पिय, तहाँ तहाँ नैनन

के पाँवड़े बनावही। महा प्रेम रंग रंगे तिनही के प्यार पगे, सेवा सब अंगनि की करें सचुपावही ॥ आदिक मधुर पिये प्यारी को सुभाव लिये, छिन छिन भाँति भाँति लाड़नि लड़ावहीं। तैसिये प्रवीन प्यारी हित ध्रुव सुकुमारी, समुझि सनेह रस कठ सों लगावही॥ २६ ॥

॥ सवैया ॥

नेह रँगी मद मैन छकी पिय छानी लगी जु चितै मुख भोरी। गुन रासि किशोरी सुखाकर गोरी सु फोक कलानिके सिंधुझकोरी ॥ रंग तरंग अनंग अभंग बढ़े छिन ही-छिन प्रीति न थोरी। सखी हितकी चितकी तिन की ध्रुव सो मुख पीवति है निशि भोरी॥

॥ कवित्त ॥

छिन छिन नई छवि पानिप रही है फबि, राधिका बल्लभ पर प्रान वारि डारिये। अंगनि झलकि अरु भूषन झमकि आली, देखत रँगीली भाँति पलकै न टारिये ॥ रंग भीनी करें बातें, बीच बीच मुसिकात, चाहन चपल चितै मोहिं सखी सारिये। प्रेम की अनूप गति भूली तहाँ ध्रुव मति, तन मन धन शुद्धि मनो बात हारिये ॥ ३० ॥

सुमिलि सुठौर अंग, झलकत नये रंग, पानिप झलक बहु भाँति झलकात हैं। हाव भाव माधुरी की मूरति रंगीली जोर, कानन लों नैन कोर रंगही चुचात हैं। फूले द्रुम तर ठाढे प्रेम के तरंग बाढे हित ध्रुव मंद मंद दोऊ मुसिकात हैं। छवि की छलक मानो उछरि उछरि परै, ऐसे रूपआली कहो कैसे कहे जात हैं॥३१॥

केशरी सुरंग इक रंग बागे दुहूँनि के, जमुना के फूल फूल बाढों जोरी आवहीं। सखिन के यूथ साथ आवत हैं पाछे आछे,

हित की निकट सखी संग लागी गावहीं ॥ कहूँ कहूँ ठादे होइ देखत फूलनि छवि, मन भाये रंग लें लें पियहि बनावहीं। अति अलवेली भाँति फिरें अलवेले दोऊ, करत विनोद ध्रुव जे जे मन भावहीं ॥३२॥

जमुना के फूल कूल जहाँ तहाँ फूले फूल, वाहीं जोरी लटकत आवत हैं मोरहीं। सघन लतनि माहिं फले फिरें रग भरे, कहू कहूँ ठादे होइ फूलनि को तोरहीं ॥ थोरी सखी संग जहाँ सोऊ न्यारी होइ रही, हित ध्रुव देखि छवि पलकें न जोरहीं। प्रेम रस राते माते छिनहून होत हाते ऐसे मन मिलि रहे चले एक ओरहीं॥

दोहा—एक प्रान मन एकही, एक प्रेम को चाव।
एकै शील सुभाव मृदु, सहजहिं बनौं बनाव ॥ ३४ ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी के जगाली वागो लाल के गुलाबी आली कवि रहे जैसे मोपें कहत न आवही। मृगमद बेंदी इत वनी है सुरग उत, हारि रह्यो मन कछु उपमा न पावही ॥ कुँवरि के नथ सोहै बेंसरि बिहारी जू के, कौन एक छवि वाढ़ी देखवोई भावहि। झलकत मोती लरें कुन्दन की माल गरे मुसकनि मंद ध्रुव सुख वरसावही ॥ ३५ ॥

अग भरि पट भरि भूपन मवन भरि, चल्यो हैं उमहि छवि अंबु चहूँ ओररी। सखिन के नैन मीन परे हैं तरगनि में, जानत न कहाँ होत आली निशि भोररी ॥ वृन्दावन कुंज कुंज रह्यो पूरि सुख पुंज, हँसी और मोरी मृगी भयेहैं चकोररी। हित ध्रुव एक रस रसके समुद्र कोऊ, नागर अनग केलि नवल किशोररी ॥

॥ सवैया ॥

फूलि चले दोऊ फूल निकुंज तें फूलनि फलनदेखत आवैं।
धौं (मनो)छवि के विविचद अनन्द सों मंदहि मंद मिले सुरगावैं॥
नूपुर भूषन की झनकार सखी सुनि कें चहुँ ओर तें धावैं।
रूप सुधा रस प्रेम सुरंगहि नैन चकोरन को ध्रुव प्यावैं ॥३७॥

॥ कवित्त ॥

ललित रँगीली सेज पर दोऊ रंग भर, हँसि हँसि लपटात सुख केलि करहीं। सहज अनन्द मोद मई तन दम्पति के, प्रेम रस मोद भीजि मृदु भुज भरहीं॥ मैन मोद के तरंग झलकत अंग अंग,लोचनि राजें सुरंग चिते चित हरहीं हित ध्रुव सखी सर्व प्रेम रस मोद माती ,रहित विवस नैनानेह नीर ढरहीं॥३८॥

रसिक रँगीले दोऊ तहाँ नाहिं सखी कोऊ, हँसत मुदित मन उर लपटातरी। अधर मधुर मधुपान के विवस रहें, जानत न रैनि दिन कहाँ धौं विहातरी। ॥ रति रस सिंधु केलि तेहि रस रहे झेलि,हित ध्रुव तऊ नैक नाहिंन अघातरी। छिन छिन ओरैं ओर मौहिन के भाइ भेद, रीझि रीझि रस भाजी लाल हा हा खातरी ॥ ३६ ॥

नवल रसिक पिय एक मन एक हिय, एकै बात है सुहात दुहूँनि के मन को। एक वैस एक जोर, एक से भूषन पट, एक सा छवीली छवि राजत है तनको ॥ रूपही के रंग भीने लोचन चकोर कीन्हे, एकै संग चाहैं ऐसे जेसे मीन चनको। हित ध्रुव रसिक शिरोमनि युगल बिनु आली को निवाहै एक रस प्रेम पन को ॥ ४० ॥

रूपकी अवधि दोऊ उपमा को नाहिं कोउ, मेत मीव सुकु-

मार एक रंग रंगे हैं ।, सहज अटक जहाँ विन हेते हित तहाँ, उज्वल अनूप रस दोऊ मन पगे हैं । मदन कुसुम मोद रमि रह्यो दुहूँ कोद, अग अंग रोम रोम भाइ जगमगे हैं । हित ध्रुव हेरि हेरि छबि रस भये वस, तृपित न नैक क्योंहूँ रैनि सब जगे हैं ।।

ज्यों ज्यों लाल देखै मुख नैनन को तृषा होत, प्यारी जू का रूप मानों प्यास ही को रूप है । डीठि डीठि रही मिलि जैसे एक धारा ध्रुव, हों हूँ भूली देखि दसा अति ही अनूप है ।। कौन रस स्वाद गयो कैसे हूँ न जात कह्यो, जानत न छाँह और कैसी होत घूप है । और सुख जेते सब भये हैं पतग, रस, राज राज के सुखनि पर प्रेम भान भूप है ।।४२।।

छुवत न रसिक रंगीली लाल प्यारी जू को, मनहू के करनि सौं छुवत डरत हैं । प्रेम की नौलासी प्यारी सहज ही सुकुमारी, आनन की छाया तिन ऊपर करत हैं ।। नेकही को हाँस सखी सार है पिलासन को, जाके हेरे और सब सुख विसरत हैं । अतिही आसक्त ताकी हित ध्रुव यहै गति, रीझि रीझि दूरही तें पाइन परत हैं ।।४३।।

हेरि हेरि रूपहि चकित ह्वे रहे हैं दोऊ, प्रेम को न वार पार कैसे कै वखानिये । मन मन चतुराई तन सुधि विसराई, कौन एक रंग वाद्यो जानत न जानिये ।। और को प्रवेस कहाँ मन हूँ न भेदी जहाँ, ऐसी प्रेम छटा ताहि काहि लै प्रमानिये । हित ध्रुव जोइ कछु कहिवो है ऐसी भाँति, जैसे आली पाहन सौं मानिक लै मानिये ।।४४।।

दोहा—कहिवो सुनिवो रहि गयो, देखत मोहन रूप ।
अद्भुत कौतुक सौं रँगे, प्रेम विलास अनूप ।।

।। इति श्री शृंगार मत द्वितीय शृंखला लीला की जै जै श्रीहित हरिवंश ।।

॥ अथ तृतीय शृंखला प्रारंभ॥

दोहा–अब सुनि तीजी श्रृ खला, रति विलास आनन्द ।
तेहि रस मादिक मत्त रहें, सिवि वृन्दावन चन्द ।

॥ सवैया ॥

भाँति भली नव कु ज विरारजत राधिका लल्लम लाल विहारी । आनन की मनि प्यारी विहारनि प्यार सों भीतम लें उर भारी ॥ ज्यों (मनो) छवि चन्द्रिका चन्द के अक में बादी महा छबि की उजियारी । त्यों (सखी) चहुँ कोद चकोरी सखी (भई) ध्रुव पीवत रूप अनूप सुधा री ॥ २ ।
केलि करें सुकुमारी बिहारी बढ़ी छवि भारी कही नहिं जाई । लालची लाल रँगे रसवाल बिलोकि रहे ध्रुव सु दर ताई ।।पीवत नैन कटाच्छन माधुरी कौतुक न एक न नेकु अघाई । सो (हितें) हित हेरि लुभाय रह्यो रुचि को रुचि देखि के आप लजाई ॥३॥
भाँति रँगीली छबीली के सग छबीलो बन्यो छवि की निधि माई । सेज सहानी सुरग बनी तिहि ऊपर केलि करें सुखदाई ॥ त्यों (हिय सों) हिय लाय रहे लपटाय लसे अँग अग में अ गनि माँहि । [मिली]है ध्रुव द्वै सरिता छवि की मनों दीठि तहाँ न कहूँ ठहराई ॥४॥

लाडिली लाल विलास करें रचि सेज सुदेश सुरंग सुहाई । मंदहि मद हँसें रस मत्त भरे अनुराग महा छवि पाई ॥ कोक कलानि की घातिन माँहिं विचित्र विनोद बढ़ावत माई । सखी चहुँ कोद लतानि लगीं निरखें ध्रुव प्राननि देत बधाई ॥ गोगी किशोरी की अँगनि काँति लसे यहु भाँति न जात बखानी ।

रंग को रास रच्यो रतिरासि विलासी की अोधि निकुंजनि रानी ॥
अंसनि बाहुँ जुरी भ्रुव मंडली, नैननि नितंत रैन विहानी-।
अंचल चीर करें श्रम जानिके भूषन अंग तेई भये गानी ॥६॥

॥ कवित्त ॥

मदन के रस मौंक मगन विहार करें, सुख के प्रवाह माहिं लाल मन भीनों है। श्रम जलकन मुख छवि के समूह मानों, नैन वैन सेन सर पंजर सो कीनों है ॥ कहा लों सँभारे पिय परे सेज वे सँभारि,लटकत शीश गहि लाय उर लीनोंहि। हित ध्रुव परम प्रवीन सब अंगनि में,अधर अधर जोरि सुधारस दीनों है ॥

सरस विलास साने अंग अंग लपटाने, आरस में अरसाने नैना न अघाने हैं। जब जब छुटि जात फिरि फिरि लपटात, छाँड़ि न सकत सेज ऐसे ललचाने हैं ॥ उठिवे को मन करें पुनि तेहि रंग ढरें, घरी एक और जाउ कहि मुसिकाने हैं। हित ध्रुव ऐसी भाँति छिन छिन सरसात, जानत न रैन दिन केतिक विहाने हैं ॥८॥

मोर कुंज द्वार खरे अंग अंग रंग भरे, अरुनाई नैननि की वरनी न जाति है। अधर अंजन लीक फवी है कपोल पीक, वसन लपटि परे शोभा झलकति हैं ॥ रसमसी अलवेली लटकी है लाल भर मुंदरी की आरसी निरखि मुसिकाति है। हित ध्रुव ऐसी छवि देखत ही रीझि रहे,प्रीतम की अँखियाँ तो क्यों हूँ न अघाति है ॥६॥

॥ सवैया ॥

आज की वानिक लाल रँगीले की मोपे कछु नहिं जात वखानी
लाड़लीरंग भरी सुकुमारि रहीं लपटाइ हिये अलसानी॥

रहे छुटि वार न हार न सम्हार बिहार विनोद रैन बिहानी। रूप बिलास सनेह निहारि सखी हित वारि पियें ध्रुव पानी॥

॥ कवित्त ॥

भोर भये साँझ ही को धोखो है दुहुँनि मन, सुपनो सो चेत कहे कहा बात है भई। ऐकि हम मिले नाहिं बैठे हैं अबहिं आये, ऐकि निशा आज कछु बीचही तें ह्वै गई॥ भूषन बसन छूटे देखें पुनि समुझत, कोन एक भ्रम दशा उपजी है सुख मई। हित ध्रुव यहै जानें लियो अनमिल्यो मानें, नेनन में रुचि ही की प्रेम वेलि है बोई॥११॥

नवल रँगीली दोऊ रसमें रसीले अति, सहज सुरंग नये नेह अनुरागे हैं। देखि देखि प्यारो अनदेखी सी लगत मन, निमिषो न लागें नैन रैन सब जागे हैं॥ चाह भूलि चाहि चाहि यद्यपि लहेंती पाहि; ऐसे प्रेम रंग रस मोद मद पागे हैं। तेहि सुख की निकाई ध्रुव पै कही न जाई, तृपितो न आई उर उर जन लागे हैं॥१२॥

॥ सवैया ॥

न आदि न अंत बिलास करें दोउ लाल प्रिया में भई न चिन्हारी। है नई भाँति नई छबि कांति नई नवला नव नेह बिहारी॥ रहे मुख चाहि दिये चित आहि परे रस प्रीति सु सर्वस हारी। रहें इक पास करें मृदु हास सुनों ध्रुव प्रेम अकत्थ कथारी॥१३॥

दोहा—नवल कुंवर दोउ रसिक मनि, उपमा दीजै कौन।
चितै चितै मुख माधुरी, ह्वै रहिये ध्रुव मौन॥१४॥

॥ सवैया ॥

प.ग सुर ग वनी है छबीली के भाँति अनूप सखीन वनाई ।
त्यों परयो मन लाल को प्रेमके पेंच में देखत पेंच रहेहैं लुभाई ।
वेंदी जराव की भाल दिये अरु नैननि अंजन रेख सुहाई ।
तैसोई नत्थ को मोती वन्यों छवि छाइ रही न कही भुव जाई ॥
चूंदरी लाल सुरंग छबीली की ओढ़ि छबीले महा छवि पाई ॥
केशन (कत्र) गूँथि (सुदेश) रची रुचि माँग (अरु) नैनन अंजन रेखवनाई ॥ वेंदी दई हँसि लाड़ली रँग सो वेसर लै अपनी पहिराई । रूप वढ़यो मन मोद चढ्यो भुव देखत नैन निमेष भुलाई ॥ १६ ॥

पाग जगाली वनी है किशोरी कै केशर रंग किशोर के माई ।
वेंदी मृगमद साहे इतै उत लाल रसाल अनूप वनाई ॥
वेसरि नत्थ वनी भलकैं भुव खोज रह्यो उपमा नहिं पाई ।
रूप तुरंग चितै मन मोद सखी चहुँ कोद रहीहै लुभाई ॥१७॥
चूँनरी लाल वनी है विहारी के पाग विहारनि के सिर सोहै ।
है छके नवनेह महा रस मेंद छके सखी आइ जोई छविजोहै ॥
वेसरि पीयके नत्थ मुतीय के वानिक रूप अनूपम मोहै ।
भाति रंगीली कही न परै सखि या छविकी उपमा कहो को है ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी जू की सारी अति प्यारी लागै प्रीतमको, सोंधे भीजी अंगिया सुरंग उर धारीहै । नवल रंगीली जूके भूषन विहारी लाल, पहिरम वादी फूल जात न सभारी है ॥ जोई कछु प्रिया जूके अंगन परस होत, सोई मान जात होत ऐसी प्यारी

प्यारी है। हित ध्रुव प्रेम॥वात कैसेहु न कही जात, जानें साई जिहि शिर मोहिनी सी डारी है ॥१६॥

॥ सवैया॥

उज्वल स्याम सुरंग सुहावनी लाज भरी अंखियाँ अति सोहैं प्रेम भरी रस माइ भरी ध्रुव प्यार भरी पिय की दिशि जो हैं॥ घाढ्यो [अ] नुराग सुरंग सुहाग सबै अंग प्रीतम प्रानन मोहैं। भालई [छवि] छीनि प्रवीन विहारनि खंजन मीन कुरंगनि को है ॥२०॥

॥ कवित्त ॥

खेलत बसंत होरी नवल छबीली जोरी उड़त गुलाल अनु राग को सुरंग री। मृदु मुसकानि उर फूल पई फूल भये, हाव भाव सोंधे भीजे माहैं अंग अंग री ॥ नैनन की चितवनि चिर कनि प्रेम नीर, सींचतहैं पिय हिय भरी रस रंग री। हित ध्रुव भोजे सुख वारिध विलास हास, सोई सुख देरो सखी दिनहि अभंग री ॥ २१ ॥

॥ सवैया ॥

खेलत फाग भरे अनुराग सों लाड़िली लाल महा अनुरागी। भीजियें अंग मखी सुठि सोहनी प्रेम सुरंग सुधा रस पागी॥ है(नैनें) पिचकारी चितौन छबीली की प्रीतमके उर अंतर लागी। रंग को ओर न छोर सनेह को देखि उपमा ध्रुव भागी ॥२२॥ सखीन की मंडली मध्य जु खेलत रंग विहारनि संग विहारी। लै लै नव कुकुम रंगनि छीटत चंदन डारत नैन सँभारी॥ परै तहीं बूंद जहीं जहीं चाहिय ऐसे प्रवीन सिंगार सिंगारी। बढ्यो ध्रुव रंग तरंग अनंग मनेह की राशि रहे हैं निहारी॥

लाड़िली लाल निकुंज में खेलत अनँद प्रेम विलास की होरी। हैं अँखियाँ पिचकारी भरी ध्रुव प्यार सों छोड़त प्रीतम गोरी। मैन को खेल बढ्यो सुख पुंज बजे धुनि भूषन (की) थोरी ही थोरी। भो (भयो) छवि को छिरकाव मनों जब साँवरे ओर हँसी मुख मोरी॥ २४॥

॥ कवित्त ॥

हँसजा विमल नीर सुंदर सुदेश तीर, निर्तत मयूरी मोर आनँद अधीर री। कमल निकुंज कुंज मधुपनि होत गुंज, बरषत सुख पुंज रटें पिक कीर री॥ खेलें तहाँ रस राशि, विविध विनोद हास, सुरंगित भये ध्रुव अगनि के चीर री। बदन ढारत प्यारी छिरकें लालबिहारी रंगत की बूँदे बनी सुभग शरीर री॥२५

सोरठा—खेलत कामिनि कंत, भीने रंग अनुराग में।
अद्भुत रास बसंत, छबिहू तहँ भूली फिरे॥ २६॥

॥ सवैया ॥

खेलत रास दोऊ रस राशि विचित्र सुढंग कलानि में भाई। त्यों नई(नई)भाति नइ गति लेत हैं निरतं हूँ रीझि तहाँ बलिजाई
कंचन मंडल में प्रति बिंबित अंगनि रूप तरंगनि झाई। ज्यों(मनों)ध्रुव चंद उभै छवि के विधु ऊपर निर्त्तत यों उर आई।
खेलें मनो अनुराग के बाग में चाँहु लता छवि असनि दीने। चहूँ दिशि राजें सखीन के वृन्द विचित्र बनाइ सिंगारहि कीने॥
सारी सुही सब एकहि रंग फबी पहिरे कर कंजन लीने। मध्य किशोर किशोरी बने दोउ रूप सने ध्रुव रंग में भीने॥२८॥

॥ कवित्त ॥

माधुरी तरग रग उपजत छिन छिन,रोम रोम प्रति भ
रही है लुभाइ के । फूलनि कौं छांड़ि छांड़ि आवत मधुप धाइ,
की सुवास अति रही वन छाइ के ॥ रूप की अनूप क
कैसे हू न कहो जात, नख आभा पर चन्द गयो है लजाइ के
हित ध्रु व पिय मन यहै सोच रहै दिन, ऐसी सुकुमारी क्यों
देखी न अघाय कें ॥ २६ ॥

प्यारी जू की भौहनि की सहज मरोर मौंफ, गयौ है मरो
मन मोहन की माई री । ऐसे प्रेम रस लीन तिल हू में भये छी
जैसे जल विन कन्ज रहै मुरझाइ री ॥ धारज न नैक धरें नै
नेह नीर ढरें,विवस पगनि ओर ढरयौ शीश जाइ री । व्याकु
निहारीलाल चितै अङ्क भरेवाल,पाये प्रान तब ध्रुव मृदु मुसकाइ

नागरी नवल गुन सीव सब अगनि में, तेई भाइ जानि
को नागर प्रवीन है । रूप अरु योवन की जैसी ये गरूताई,तै
उत रसिक शिरोमनि अधीन हैं ॥ नेकु मुरि बैठे जब व्याकु
ह्वै जात तब, सहजहि गति ऐसी जैसे जल मीन है । रच ह
चाहत ही रोम रोम होत फूल,हित ध्रु व नेह जहाँ सदाई नवीन है

प्रेम के तरगनि में प्यारी जू को मन परयौ, कछुक रुख
छवि औरै भांति भई है । मानि पिय मानि लीन्हौं हियो गहव
दीन्हौं, दीरघ उसास लेत भूलि सुधि गई है ॥ प्राण प्या
लाल जू की गति हेर फेरि मन, उर सों रही है लाइ आमें भ
लई है । हित ध्रु व दुहुँन को प्रेम कैसे कह्यौ जात, जानत
येई छिन छिन भाँति नई है ॥३२॥

जौलों प्यारी नतरात चितै चितै मुसिकात, पिय हिय लपटा

तोही लगि गाति है। प्रेम नेम में प्रवीन याही रस भये लीन, जैसे जल माहिं मीन प्यारो ऐसी भांति है ॥ रुचिही की वेलि नई नैननि में आनि वई, वादत है रस मई फैली अति जाति है। आनँद के फूल के ताहि लगे अनुराग पागे, छिन छिन डहडहे औरें ध्रुव काति है ॥ ३३ ॥

जहाँ जहाँ पग धरें माधुरी को मन हरें, रूप गुन पाछे फिरे ऐसे सुकुमार री। हाव भाव सिंधु के तर ग उठें अग अग नेकही की चितवनि मोहे कोटि मार री ॥ छिन छिन नई नई पानिप अनूप कांति, देखे तन मलकाति रहे न सँमार री। हित ध्रुवचित चोर नवल रँगीलो जोर, निशि दिन सखियनि कीने उर हार री॥

॥ सवैया ॥

लाडिली र ग भरि सुकुमारि सिंगार सखीन अनूप करयो है।
रेन घदयो ध्रुव र ग को खेल महा सुख में रस सिंधु तरयो हैं॥
रहे छुटि वार टूटी लर हार सुअ ग को अ गनि र ग ढरयो है।
मैंन रची फुलवारि में मानहुँ प्रेम को वारन आन परयो है ॥३५॥
सोरठा—फूल सों जव मुसिकाति, चिते लाडिली लालतन।
का वरनें यह भाति, प्रीतम हूँ रहे भूलि तहँ ॥३६॥

॥ सवैया ॥

मैंन की बेलि बढ़ी पिय हीय में फूल मनोरथ बाढ़े अपारा।
एकहि र ग सुर ग रहे दिन सींचे करें रस प्रेम की धारा॥
रीझि क चाहि रही सुकुमारी विहारी किये अपने उर हारा।
देखत ही ध्रुव या छवि को शिर नाइ लजाइ गये सत मारा॥

॥ कवित्त ॥

नवल नवेली हेली अलवेली भांति दोऊ रस केलि सहजहि रंग भरे करहीं। वदन वदन जोरे मिलि रही कोरे, थोरे थोरे वेसरि के मोती थरहरहीं ॥ आरस में अरसानी छवि न परे वखानी, प्यार सों लटकि प्यारे पिय पर ढरहीं। हित ध्रुव सखिन की जीवनि है यहे सुख, रुख लिये दुहुंनि कों मनअनुसरहीं।३८।

॥ सवैया ॥

कही न परे मुख की छवि पानिप राजत आज रँगीली विहारनि।
भूलि रहे बिसरी सुधि देह की मैंन मनोरथ वादें आपरनि ॥
मोह के सिंधु परे मनमोहन हेरत नेह नवेली निहारनि।
लिये ध्रुव इत सों लाइ हिये प्रिय देखि सखी सुकुमारि सँभारनि ॥

॥ कवित्त ॥

प्रेम के खिलौना दोऊ खेलत हैं प्रेम खेल, प्रेम फूल फूलनि सों प्रेम सेज रची है। प्रेम ही की चितवनि मुसकनि प्रेम ही की, प्रेम रँगी बातें करें प्रेम केलि मची है ॥ प्रेम के तरंगनि में प्रीतम परहैं दोऊ, प्रेम प्यार भार प्यारी पिय हिय लची है। हित ध्रुव प्रेम भरी प्यारी सखी देखें खरी, हित चितवन छवि आनि उर सची है ॥ ४० ॥

प्यारी जू की उनहार पिय के अहार यहै,हिय हू कों हार छिन चित तें न टार ही। अंग की सुवास पर भ्रमत भँवर मन,लोचन छवीली जू की छविही निहारहीं॥ पल पल पानिप तरंग रंग ओरें ओर, माधुरी सुभाइन की अमित अपारही। हित ध्रुव प्रेम रस विवस रहत दिन, चितें चितें मुख ओर प्रानन कों वारहीं॥

आज की छवीली छवि छटा चित वेधर ही,कही नहीं जात कछू और गति भई है ॥ नवल युगल हाँस चितवति ठाढ़ी पास, मानों तेहि ओर नई नेही वेली चई है ॥ हित ध्रुव नीरज से नीर भरे ढरे नैन, बोलत न कछू बैन चित्र सी ह्वै गई है । नैंना छाइ लीन्हें रूप परी तब प्रेम कूप, वाकी गति जाने सोई जेहि अनभई है ॥ ४२ ॥

॥ सवैया ॥

आलिन [सखीन की) प्रानन की मनों मूरति लाड़िली लाल बनाइ सँवारे । जीवति हैं सब देखि दुहुँन को राखत ज्यों अखियाँनि में तारे ॥ खान (अ) रु पान विलास विनोद अहार यहे तिनके सुख सारे । रूप विलास सनेह की सींव निहारि रही ध्रुव नेनन न टारे ॥ ४३ ॥

रूप की राशि किशोर किशोरी रँगे रस केलि निकुंज विहारा । मातें अनंग प्रवीन सबे अँग फूल सरीखहु ते सुकुमारा ॥ बसो उर नेनन में दिन रैन नसों मन के जीतें आदि विकारा । जाँचत यात न और कछू ध्रुव देहु प्रिये रस प्रेम की धारा ।४४

॥ कवित्त ॥

सहज सुभाव परयो नवल किशोरी जू को, मृदुता दयालुता कृपालुता की रासि है । नेकहूँ न रिस कहूँ भूलेहू न होत सखी, रहत प्रसन्न सदा हिये मुख हासि है । ऐसी सुकुमारी यारे लाल जू की प्रान प्यारी धन्य धन्य धन्य तेई जिनके उपासि है । हित ध्रुव और सुख जहाँ लगि देखियत, सुनियत तहाँ लगि मनें दुख पासि है ॥ ४५ ॥

॥ सवैया ॥

ऐसी करो नव लाल, रँगीले जू चित्त न और कहूँ ललचाई ।
जे दुख सुक्ख रहे लगि देह सों,ने मिटिजाइ औ लोक वड़ाई ॥
संगति साधु वृन्दावन कानन तो गुन गाननि माँझ विहाई ।
छवि कंज चरन तिहारे बसो उर, देहु यहे ध्रुव को ध्रुवताई ॥

दोहा–शीश फूल सिखि चन्द्रिका, सदा वसो मन मोर ।
अरु जव चितवति लाड़िली, पिय तन नैनन कोर ॥४७॥
इकसत विंस (अ) रु पंच मिलि, भये सवैया आहि ।
मन दे यह शृंगार सत,छिन छिन प्रति अवगाहि ॥४८॥
नव किशोरता माधुरी, एक वेस रस रस एक ।
या रस विनु कहिये न कछु, धरिये ध्रुव यह टेक ॥४६॥
रस प्रति रस शृंगार को, यह रस है शृंगार ।
धन्य धन्य तेई जु नर, जिनके यहे विचार । ५१॥
सव तें कठिन उपासना, प्रेम पथ रस रीति ।
राई सम जो चले मन, छूटि जाइ ध्रुव प्रीति ॥५१॥
प्रेम भजन विन स्वाद नहिं,भजन कहा विन स्वाद ।
देत प्रान मृग विवस ह्वे, सुनत कपट को नाद । ५२॥
या रस सों जे रहे रँगि, तिनकी पद रज लेहु ।
जिन समुझी यह बात ध्रुव, सफल करी तिन देहु ॥५३॥
भये कवित्त शृंगार के, इकसत अरु सच्वीस ।
दोहन मिलि सब ठीक भये, इकसत दश चालीस ॥५४॥

॥ इति श्री शृङ्गार सत की तृतीय शृंखला सम्पूर्ण श्री मैंमैं श्रीहित हरिवंश ॥

॥ अथ मन शृंखलालीला प्रारंभ ॥

दोहा–हरिवंश इस आवत हिये, होत जु अधिक प्रकास।
अद्भुत आनंद प्रेम को, फूले कमल विलास ॥१॥
नवल किशोर सहज ही, झलकत सहजहि जोति।
उपमा दे वरनों तिनहिं, यह ढीठो अति होति।२॥
रूप रंग को सार तन, सार माधुरी अंग।
चन्द सार को मोद सुख, कांति सार को रंग।३॥
ललित लड़ैती कुंवरि को, वरनों कछु इक रूप।
पिय तन मन जो पूरि रह्यो, मोहन सहज सरूप ॥४॥
अतिहि सोहनी मोहनी, पिय मन सुख की सीव।
उपमा सब सेवति तिनहिं, कीन्हें नीची ग्रीव ॥५॥
नवल छबीली वदन मनु, आनद मोद को फूल।
इक रस फूल्यो रहत दिन, पिय तन यमुना कूल ॥६॥
कुंडल दुति अरु मुख सुखप्रभा, राजत ऐसी भांति।
झलमलात मिलि एकठौं, मनु रवि शशि की कांति ॥७॥
चिकुर चंद्रिका रचि रुचिर, रची मनोहर वानि।
मनो घटा श्रृंगार की, जुरी चन्द पर आनि ॥८॥
लटकनि वैनी की ललित, फूलनि गुही सुढार।
मनो हाति गुत मेरु तें, उतरति रविजा धार ॥९।
शीश फूल रह्यो झलकि के तमिये मांग सुरंग।
मानो छत्र सुहाग को, लिये अनुरागहि संग ॥१०॥
निरखि अरुन वेंदी छबिहि, मति की गति भइ मूक।
मानों विधु पूज्यो सम्निन, आनि फूल बधूक ॥११॥

वक भृकुटि कल मोहनी, अलक जुरी तहँ आनि ।
मानो पिय मन मीन को, वगी राखी वानि ॥१२॥
लोइनि तो श्रवननि लगे, विवि कुंडल झलकात ।
मनो कुंज हित जानिकैं, 'पूछन गये कछु वात ॥१३॥
अंजन युत चचल चपल, अंचल में न समाहिं ।
अति विशाल उज्वल सुरँग,चुभे लाल मन माहिं ॥१४॥
सहजहि सूक्ष्म अलक छुटि, परी पलक पर आइ ।
खंज(न)मीन मनु ग्रहनकों,विधु दइ पाशि चलाइ ॥१५॥
श्रवननि छवि ताटंक दुति, रहि गंडनि झलकाइ।
मनो भान आभापरी, कंज दलनि पर आइ ॥१६ ।
कहि न सकत नासा वनक, अधर सुरंग निहारि ।
मानो शुक झुकि छकि रह्यो, मनमें कछू विचारि ॥१७॥
वेसरि की थरहरनि छवि, मीन रका मनु ऐन ।
पिय हित हृदि में मीन मन, ताको चितवन लेन ॥१८॥
अरुन श्याम उज्वल दशन,अति छवि सों झलकाहिं ।
कंज में अलि मुक्तिन सहित,मनु रँगे बदन माहिं ॥१६॥
शोभा निधि वर चिबुक पर श्याम बिंदु सुख देत ।
रहि गयो अलि शावक मनो, कंज कली रस हेत ॥२०॥
नील बिंदु उपमा दुतिय, कह कहों अतिहि अनूप ।
मानो पिय मन विवस हैं, परयो आनि छवि कूप ॥२१॥
द्वै लर मोतिन कंठ बनी, डारी सब छवि निंद ।
मानो पूरण चन्द पर,प्रगट्यो दुतिया इंद ॥२२॥
जलज हार हीरावली, बिच बिच मनि झलकाहिं ।
मानो मैन तरंग उठैं, रूप सरोवर माहिं ॥२३॥

रतन खचित चौकी ललित, जगमग जगमग होति।
विविगिरि कंचन वीच मनु,छवि रवि कियौं उदोति ॥२४॥
भूषन युत मृदु भुजनि को, निरखि लाल रहे भूलि।
मानौ छवि की लता द्वै, फूलनि सों रही फूलि ॥२५॥
उरज पीन कटि छीन छवि, नवकिशोर रहे चाहि।
मानौ आनँद वेलि सों लागे सुख फल आहि ॥२६॥
आई उपमा ओर उर, वस किये मोहन मैन।
मुँदे कुंज देखत मनौ, खुले कमल पिय नैन ॥२७॥
अति सुदेश अँगिया वनी, सौंधे सनी सुरंग।
पिय मन अलि तहँ भ्रमत रहे,तजत न कबहू संग ॥२८॥
नीलाम्बर छवि फबि रही, मन में रहत विचार।
मानौ सार शृंगार को, ओढ़े वर सुकुमार ॥२६॥
सारी पीरी जरकसी, झलकत छवि सों जोति।
कुन्दन की वरषा मनौ, कालिंदी पर होति ॥३०॥
जब सुरंग सारो सुही, पहरत भरी सुहाग।
अंतर भरि मनु उमगि के, प्रगट्यौ पिय अनुराग ॥३१॥
राजत सुन्दर उदर पर, अद्भुत रेखा तीन।
देखत सींवा रूप की, ललन भये आधीन ॥३२॥
शोभित नाभि गँभीर ढिग, रोमावलि अनुसार।
मानौ निकसी कमल तें, सूच्छम रेख शृंगार ॥३३॥
पृथु नितम्ब ऊपर वनी, मणि मय किंकिनि जाल।
फिर आई चहू ओर मनु, छवि दीपन की माल ॥३४॥
अति सुढार सुठि सुमिलि वनी,मणिमय जेहरि चारु।
चलन छवीली भाँति पर, मत्त मरालनि वारु ॥३५॥

पायल नूपुर की झनक, होति है मन्दहि मन्द ।
मनु सावक कल हंस के, बोलत भरे अनन्द ॥३६॥
चरन कमल कोमल सुरंग, मधुप लाल मन मत्त ।
दृग कंजनि छ्वावत रहत, कर कमलनि सेवंत ॥३७॥
मेंहदी को रंग फबि रह्यो,नख मणि झलक अपार ।
मनो चंद कमलनि मिले, रही न और सँभार ॥३८॥
करि शृंगार दियो डीठि डर,श्यामल बिंदु कपोल ।
मुसिकनि छबि बदले मनो, राख्यो पिय मन ओल ॥३६॥
अपनो यश कछु रुचत नहिं, ऐसी लाल की बात ।
भान प्रिया गुन सुनत ही, अमित करन है जात ॥४०॥
सब अंग अद्भुत भाँति कोउ,सहज रूप की खानि ।
एनी मति मोपै कहाँ, नख छबि सकों बखानि ॥४१॥
उपमा तो सब जे कही, ऐसी चित्त विचार ।
जैसे दिनकर पूजिये, आगे दीपक बार ॥४२॥
रूप माधुरी सहज ही, झलकत नये तरंग ।
उपमा हू सब सुफल भई, वही ठौर के संग ॥४३॥
याही ते कछु इक कही, पाइ बात को फेरि ।
जैसे रति इक हेम ते, समुझै शोभा मेरि ॥४४॥
अग अंग मृदु माधुरी, अतिहि रसीली आहि ।
तैसे मधुर किशोर पिय, जीवत तिनको चाहि ॥४५॥
ललित लड़ेती कुँवरि बिनु,और न कछू सुहाइ ।
नैक नैन की कोर के, लीन्हीं चित्त चुराइ ॥४६॥
अमित कोटि ब्रह्मांड की, प्रभुता मन लगी थोर ।
करजोरे चितवत रहे, बंक दृगनि की कोर ॥४७॥

देखो वल या प्रेम को, सर्वस लीन्हों छीन ।
मक्षा मोहन गज मत्त पिय, विनु अकुंश वस कीन ॥४८॥
अखिल लोक की साहिवी, दीन्हीं तृण ज्यों हारि ।
छिन छिन प्रति सेवा करें, रहे अपनपो हारि ॥४६॥
पानी पान शृंगार सव, करत आपने हाथ ।
वँधे जु प्रेम अनंग गुन, फिरत प्रिया के साथ ॥५०॥
प्रेम खेल ऐसे भयो, जैसे खेलत यूप ।
तन मन धन सव हारि कै, भये दीन रस भूप ॥५१॥
नवकिशोर के प्रेम की, वात कही नहिं जाइ ।
सहचरि जे निज कुँवरि की, तिनके परत हैं पाइ ॥५२॥
नैन सैन चितवनि चपल, मन मुक्ता छवि ऐन ।
सखी सवै मनु हंसनी, चुगत है भरि भरि नैन ॥५३॥
पिय की प्रीति की रीति सुनि, हीये होत हुलास ।
दासी जहँ लगि प्रिया की, ह्वै रहे तिन के दास ॥५४॥
अव सुनि प्यारे लाल की, छविहि नाहिने ओर ।
वँधे लाड़िली प्रेम सों, ऐसे रसिक किशोर ॥५५॥
कुँवर माधुरी रूपकी, सोऊ कहत, वनैं न ।
घटि वढि कहे न जात हैं, जैसे दोऊ नैन ॥५६॥
मोहन के मोहन सवै, अग रहे झलकाइ ।
नव चितै मुख माधुरी, मैन गिरत मुरझाइ ॥५७॥
प्रथमहि प्रियहि शृंगार कै, पिय को करहि शृंगार ।
शोभा उभय निहार सखि, करत प्रान वलिहार ॥५८॥
इक रस रूप समान वय, दंपति नवल किशोर ।
नख शिख वानिक एक सी, छैल छवीली जोर ॥५६॥

द्वै मूरति शृ गार की, पुनि कीनों शृ गार।
मिले रूप के सिंधु द्वै भव को पावै पार ॥६०॥
अब सुनि रंग विहार की, बात न कबहुँ अघात।
इक रस प्रेम छके रहैं, और न कछू सुहात ॥६१॥
ललित रँगीली सेज पर, ललित रँगीले लाल।
राजत अद्भुत भाँति सों, सग छबीली बाल ॥६२॥
लाल वल्लभा लाड़िली, नवल छबीली भाँति।
प्रेम प्यार के चाइ सो, प्रीतम उर लपटाति ॥६३॥
सब अँग सुन्दर सोहनी, रूप–राशि सुकुमारि।
महा मोहन गज मोहनी, वस किये नेकु निहारि ॥६४॥
लाल रँगीली संग रँग, करत विनोद अनंग।
कबहुँ बात हँसि जात बिच, कबहू भरत उछंग ॥६५॥
कबहू कुच कमलनि छुवत, भौंह भंग ह्वै जात।
अति प्रवीन रस खेल में, चूकत नहिं कोऊ घात ॥६६॥
अंत लाल पाइनि परत, मृदु मुख हाहा खात।
ऐसे बचनन सहचरी, सुनि सुनि सब बलि जात ॥६७॥
विविधि भाँति रति केलि रँग, छिन छिन औरे और।
करत रँगीले लाल दोउ, परम रसिक शिरमौर ॥६८॥
कमल कपोलनि पर कछू, लागी पीक सुरंग।
मनो झलक अनुराग की, उछरि परी छवि संग ॥६९॥

अरिल–यादी अतिही चोंप न उरहि समात है।
समुझि लाड़िली ताहि हिये लपटात है॥
नवल रँगीली केलि छवीली भाँति है।
पुनि हां तिनके रस की बात कही क्यों जाति है ॥७०॥

दोहा—तन तो सिंधु है रूप कौ, लाल नैन मन मीन ।
खेलत तहँ आनंद सौं, नाभि भँवर घर कीन ॥७१॥
कुंज कुंज प्रति द्रुमनि तर,करैं विलास सुख झेलि ।
फैली वृन्दा विपिन में, वेलि रंग रति केलि ॥७२॥
ताके लागे फूल द्वै, कोमल सुरंग सुवास ।
ईषद् मुसिकनि सहज की, करत मंद मृदुहास ॥७३॥
पुनि फल उरजनि सो लगे, प्रीतम कर छवि देत ।
मानौ कुंदन घटनि सौं, नील कमल ढँकि लेत ॥७४॥
छवि निधि दुलहिनि नायका, नायक रूप निधान ।
प्रेम रंग तन मन रँगे, द्वै रहे एकै प्रान ॥७५॥
ललित कुँवरि वरनौ कहा, नख शिख रूप अपार ।
नैन कोर पाछे लगे, फिरत कुँवर सुकुमार ॥७६॥
मन अटक्यौ छवि अलक सौं, नैन वदन तन रंग ।
श्रवन लगे वैनन मधुर, नासा सौरभ अंग ॥७७॥
अंग अंग पिय के सबै, परे प्रेम के फंद ।
रुचि लै मुख जोवत रहैं, श्री वृन्दावन चंद ॥७८॥
भई भीर छवि की तहाँ, और प्रीति उर माहिं ।
पर्यौ लाल मन जाइ तहँ,निकसन पावत नाहिं ॥७९॥
अति उदार सुकुमार तन, रसिक शूर शिरमौर ।
नैन सैन वानन छयौ, छाडी नहिं तउ ठौर ॥८०॥
नैन श्रवन नासा अधर, चिबुक रूप की खानि ।
गहि लीन्हौं पिय मन सबनि,सौंप्यौ प्रेम के पानि ॥८१॥
अब सुनि फल शृंगार कौ, नवल रंग रस सार ।
दुलहिन दूलहु लाल की, रति विलास ज्यौंनार ॥८२॥

लाज वसन तजि न्हाइ मनु, पानी पानिप माहिं ।
चाह मदन की छुधा वढ़ी, चितै नवल मुसिकाहिं ॥८३॥
कुंज रसोई रचि दयो, चौका सेज वनाइ ।
अति दृढ चौकी प्रेम की, तापर बैठे आइ ॥८४॥
हार थार विच झलकि रह्यो, नाहिन इंदु समान ।
पहरे धोती फूल की, राजत मिथुन सुजान ॥८५॥
सुन्दर रुचि की खीर भई, मिश्री मुसिकनि घोर ।
ढोरा दयो घृत नेह को, स्वादहि नाहिंन ओर ॥८६॥
पुनि फल उरजनिकी झलकि, लेत लाल मन चोर ।
उरजनि के जव छुवत पिय, कछु भुकनि मुखमोर ॥८७॥
परिरंभन चुंबन अधर, महा मधुर रस पाइ ।
वीच सलोनी चितवनी, लेत है सुखहि वढ़ाइ ॥८८॥
हाव भाव लावण्यता, विंजन अंग निहारि ।
उज्वल हाँसि कपूर की, पुट दे रचे सँवारि ॥८९॥
भौंह वंक नैनन भुकनि, कर धूनन मुख नेत ।
अद्रक मिरचि अचार ढिग,ज्यों रुचि को करि देत ॥९०॥
नैनन रसना के रसिक, जेवत तृपित न होइ ।
अद्भुत गति या प्रम की, कहि न सकत है कोइ ॥९१॥
भाजन भूषन अंग दुति,श्रम जल छविहि न शोर ।
पलक कटोरनि कें पियत, श्यामा श्याम किशोर ॥९२॥
बीरी,मुख अनुराग की, स्वाँस पवन आनन्द ।
अति सुवास मृदु हाँसि चित, होत मंद ही मद ॥९३॥
पौढ़े प्रीति प्रयंक पर, ओढ़े प्यार, को चीर ।
गोर श्याम अंगनि मिले, ज्यों द्वै धारा नीर ॥९४॥

परम रसिक रस राशि दोउ, परे प्रेम के फन्द ।
रहत भरे आनन्द में, युग चकोर विवि चन्द ॥६५॥
सखी चकोरी अति सरस, दुहे शशि छवि रस रग ।
पल पल पीवत दृगन भरि, होत न कबहू भङ्ग ॥६६॥
हित ध्रुव सखियन शरन गहि, ऐसे मन अनुसार ।
औरहु तिनको सग गहि, जिनके य है विचार ॥६७॥
रचि कीन्हीं शृ गार मनि, जो लै राखी शीश ।
ताके हिय में बसत रहै, श्री वृन्दावन ईश ॥६८॥
जे है मणि शृ गार की, सब गुन भरि अनुराग ।
पहिरी पिय हिय प्यार सों, पोइ प्रेम के ताग ॥६६॥
अद्भुत सरिता प्रेम की, वृन्दावन चहुँ ओर ।
नव नव रंग तरंग उठे, मदन पवन झकझोर ॥७०॥
ऐसे रसिक किशोर पिय, ध्रुव के हिय में राखि ।
अद्भुत रस की माधुरी, नैननि रसना चाखि ॥१०१॥
दोहा कहे शृ गार मणि, साठि चौतिस अरु आठ ।
प्रेमा तिहि उर झलकि रहै, जो करि है ध्रुव पाठ ॥१०२॥

॥ इति श्री मन शृंगार लीला की जै जै श्री हित हरिवंशजी ॥

॥ अथ हित शृ गार लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—सहज सुभग वृन्दा विपिन, मिथुन प्रेम रस ऐन ।
सेवत शरद बसंत नित, रति शुत कोटिक मैंन ॥१॥
फूली फूलनि की लता, रही यमुन जल झूमि ।
तैंसिय अद्भुत झलमलें, कंचन मणि मय भूमि ॥२॥
जलज थलज विकसत सहज, नील पीत सित लाल ।
हेम बेलि रही लपटि कें, सुन्दर सुभग तमाल ॥३॥

नव निकुंज मंजुल वनी, सनी सनेह सुवास।
सुमन सुरंग अनेक रँग, छाई विविधि विलास ॥४॥
अति सुरंग वहु रग दल, कोमल कमल गुलाल।
रची रँगीली सखिन मिलि, सेज सुरंग रसाल ॥५॥
सो०—करत मिथुन मृदुहाँस, मन मन अति अनुराग सों।
अधर दशन छविरास, रहे तँमोल रंगि भीजि सखि ॥६॥
दोहा—विपिन देश चहुँदिश व है, सरिता श्याम सुदेश।
प्रेम राज राजत तहाँ, इकछत युगल नरेश ॥७॥
दुलहिनि रानी सहजही, दूलहु नृपति किशोर।
रूप छत्र शिर पर फिरे, आसन योवन जोर ॥८॥
कुंज धाम सखियनि सभा, मजा हंस मृगमोर।
वसत निरतर चैन सों, कीन्हें नैन चकोर ॥६॥
फुलवारी आनंद की, फूली छवि अँग अंग।
पट ऋतु मालिन सुख फलनि, देति दिनहि वहुरंग ॥१०॥
मैन रंग सतरंज तहँ, खेलत दोउ सुकुमार।
हाव भाव चितवनि चलनि, छिन छिन चाह अपार ॥११॥
मन नृप मत्री चोंप सों, रचि कीन्हीं रुख घाल।
उरज गयंद तुरंग दृग, पाइक अँगुरी लाल ॥१२॥
तिल कपोल पर अलक छवि, मुसिकनि कही न जात।
जब चितई पिय लाल तन, भये नैन सहमात ॥१३॥
रति नागरि दे अधर रस, हेत विमात सँवारि।
आलिंगन चुंवन मनो, खेलत फेरि सँभारि ॥१४॥
नव किशोर सुकुमार तन, विलसत प्रेम विलास।
अलवेली चितवनि हँसनि, नौतन नेह हुलास ॥१५॥

॥ सवैया ॥

नेह निकुञ्ज में रूप की मूरति खेलत प्रेम विलास विहारी।
चोंप की चालनि नैन विशालन चाहि रहे ध्रुव प्रीतम प्यारी॥
रँगे रस सार दोऊ सुकुमार महा रिझवार रहे मन हारी।
हेरत ठाढ़ी सखी सुख सींव दिये भुज ग्रीव निमेष विसारी॥१६॥

दोहा—सहज सरस सुन्दर वदन, चंद्र बिम्ब मनों आहि।
रूप किरन हित रसिक पिय, चख चकोर रहे चाहि॥१७॥
सगबगो केश फुलेल में, छुटे अधिक छवि देत।
कछु चितवनि पुनि मृदु हँसनि, प्रीतम मन हरि लेत॥१८॥
बेंदी श्याम सुहावनी, शोभित गौर लिलार।
प्रगट सुधाकर पर भयो, मनो रूप शृंगार॥१६॥
पल उतंग उज्वल अरुन, अति सलज्ज रस ऐन।
फरनाइत लोंने चपल, कजरारे कल नैन॥२०॥
भौंहनि बिच फगुवा फब्यो, अरुन भये छवि कौन।
बैठ्यो है अनुराग मनु, निज शृंगार के भौन॥२१॥
नासा पुट डोलत जलज, पल पल स्वाँसा संग।
यह छवि निरखत नवल पिय, होत नैन गति पंग॥२२॥
राजत वाम कपोल तिल, अलप अलक तिहि पाँहि।
डारयो मनो शृंगार फँद, खंजन नैनन चाहिं॥२३॥
दशन दमकि छवि कह कहौं मुसिकनि बरषत फूल।
अद्भुत अंगनि माधुरी, देखत भूली मूल॥२४॥
फब्यो चिबुक पर सहजही, बिंदुका अतिहि अनूप।
पिय साँवल को मन मनो, परयो रूप के कूप॥२५॥

॥ सवैया ॥

वैठे हैं सेज भरे रस रंग रँगीली कछू मुरि के मुसिकाई ।
ओर की ओर भई पिय की गति कैसेहू के न कही ध्रुव जाई ॥
चाहत चाहत रूप प्रिया को परे सुख में जिहि ठाँ गहराई ।
गुराई को भार भयो गरुवो मन बूढ़ि गयो छवि अंबु में माई॥२६

दोहा—करुना करि लिये लाइ उर, देखो लाल अधीर ।
लिये काढ़ि छवि भँवर तें, छ्वाइ दशन वर चीर ॥२७॥
छवि मुरझानी देखि छवि, मृदुताई मृदु अंग ।
चतुराई जहँ चित्र भई, चपलाई गति पंग ॥२८॥
कोटिक छवि मुख कमल पर, रंजित पाननि राग ।
छिन छिन प्रीतम नैंन अलि, पीवत पीक पराग ॥२६॥
नवल नवेली उर वनी, मृदुल चमेली माल ।
सारी सोंधे सोंसनी, अंगिया फूल गुलाल ॥३०॥
अलवेली चितवनि अली, रस वेली मुसिकानि ।
छिन छिन प्रति बाढ़त नई, फैली पिय उर आनि ॥३१॥
मेहँदी रँग भीने वने, मृदु कर चरन सुरंग ।
नख मनि दुति अति झलमले,पानिप झलकि अनंग॥३२॥
बरषत अद्भुत रूप जल, एकहि रस निगि भोर ।
तृषित पपीहा तऊ पिय, चितवत मुख की ओर ॥३३॥

॥ कवित्त ॥

रोम रोम रूप कांति पानिप जगमगाति, मोहनी के देखे आवें मोहन को मोहनी । हित ध्रुव माधुरी मदन मद मोद मई, अति सुकुमार तन सहज ही सोहनी ॥ दशन दमक देखे

दामिनी लजानी जाति, नख पटतर कोऊ को है पति रोहनी।
अति ही छबीली गोरी बरनि सकत को री,जाके संग फिरैं छकि छबिनि की छोहनी ॥३४॥

दोहा—रोम रोम प्रति अमित छवि,ज्यों दधि लहरि उठाति।
चसक अलप बहु प्यास पिय,तृषा मिटत किहि भाँति॥३५॥
गाढ़ी कै कसि कंचुकी, दरकि रही कुच कोर।
निरखत दृष्टि बचाइ पिय, नागर नवल किशोर ॥३६॥
मोहे मोहन मैंन रस, अति सलज्ज मुसिकानि।
लालच के लालच बढ़्यो, देखि लाल ललचानि ॥३७॥
बेसरि अरुझी अलक सों, सोभा बढ़ी सुभाइ।
पिय निरवारन ब्याज कै, दई अधिक उरझाइ ॥३८॥

सोरठा सुन्दर रूप निधान, परम चतुर नागरि प्रिया।
लयो झटकि पिय पान, जानि चतुरई लाल की ॥३९॥

दोहा—जो अँग चाहत रसिक पिय, इन नैनन सों छ्वाइ।
सो ठां सुन्दरि पहिल ही, राखत बसन दुराइ ॥४०॥
काँपत कर थरकत हियो, बनत न मन की बात।
कुशल युगल कल कोकमें, समुझि समुझि मुसिकात॥४१॥

॥ सवैया ॥

कोक विलास कलानि में नागर नाहिं दुहू कोऊ घटि घातनि।
नई नई भाँति नई भ्रुव चौंप बढ़ी मन माहिं चितै दृग पातनि॥
चाहत लाल छुयो उरहार लई सखि लाइ रँगीली जु बातनि।
आनि धरे कर तो कुच यों जनु कुन्दन कुम्भ ढके जलजातनि॥४२

दोहा—मन मन अन्तर सहज हो, बढ़ी रग रस केलि।
उर नैनन फैली अधिक, चाह मदन सुख बेलि ॥४३॥

दोउ प्रवीन नागर नवल, अपनी अपनी भांति ।
कवित न जब कछु चतुरई, तम पिय हा हा खात॥४४॥
कहत वचन अति दीन ह्वै, निरखि प्रिया मुख ओर ।
चरन अलंकृत करन को, जाँचत नवल किशोर ॥४५॥
आतुरता अति दीनता, चाह चौंप अधिकाइ ।
निरखि समुझि मन नागरी, चितई कछु मुसिकाइ ॥४६॥
मंजु कंज, पद विमल द्वै, गहे मृदुल पिय पानि ।
करत,चित्र अति गहर सौं, जावक को रँग वानि ॥४७॥
नखन माहिं प्रतिबिंब छवि, रही अधिक झलकाइ ।
चन्द कञ्ज मिलि एक ठौं, जनु पाइन परे आइ ॥४८॥
जेहि रस ढरे मनें नागरी, ढरत लाल तिहिं रंग ।
छिन छिन प्रति चितवत रहत, मौंहनि भौंह तरंग ॥४९॥
अतिहि छवीली सोहनी, प्रीतम यह उर आनि ।
सुन्दर मुख पर डीठि डर, दियौ दिठौना वाँनि ॥५०॥
अटपटी बात है प्रेम की, बरनत बनें न नेन ।
धरत चरन प्यारी जहाँ, लाल धरत तहँ नैन ॥५१॥
यद्यपि प्यारे पीय को, रहत है प्रेम अवेस ।
कुँवरि प्रेम गंभीर तहँ नाँहिन बचन प्रवेस ॥५२॥
प्रिया प्रेम सागर अमल, लहरि नि लेत समाइ ।
उमड़े जो मर्जाद तजि, काप रोक्यो जाइ ॥५३॥
छविं छिपाइ भूषन बसन, राखत प्रेम दुराइ ।
समुझि कुँवरकी गति कुँवरि,जतननि करत बिहार ॥५४॥

॥ कवित्त ॥

परी है कठिन अति नवल किशोरी जू को, छिन छिन नई

छवि कहां लों छिपावहीं। जोई अंग प्रीतम के दीठि सों परस होत, नीरज से नैना नीर भरि भरि आवहीं ॥ हित ध्रुव अधिक विवस भये जात पिय, ताही हेत सुकुमारी जतन बनावहीं। ओर अग राखे पट भूषननि से दुराइ, लोचन चपल चल कहे में न आवही ॥५५॥

दोहा—तहाँ मान कैसे बने, अद्भुत जहँ यह प्रेम।
भीजे दोउ आसक्त रस, कहँ समाइ बिच नेम ॥५६॥
जब चितवत अनुराग-युत, कुँवरि नैन चख कोर।
तेहि-छिन वारत प्रान पिय, ढरत शीश पग ओर ॥५७॥
भये मगन छवि निरखि पिय, गये बिसरि चख चोर।
रूप सरोवर में मनों, रहे कंज भरि नीर ॥५८॥
प्रेम सुरँग रँग रचि रहे, शोभा कही न जाय।
मनो लालच पिय हीय तें, नैनन प्रगट्यो आय ॥५९॥
पिय मुख अंबुज की दशा, सुनि सखि कही न जात।
फूलत अधरन रस पिये, बिन पीये कुम्हिलात ॥६०॥
अति प्रवीन रस नागरी, लिये कुँवर भरि अंक।
मनो सुधा रस प्रेम बल, कजहिं देत मयंक ॥६१॥
जबहि लाल लटकत विवस, ललना लेति सँभारि।
राखत हिय सों लाय हिय, लज्जा नेम बिसारि ॥६२॥
छविनिधि रसनिधि नेहनिधि, गुननिधि परम उदार।
रंगे परस्पर एक रँग, अद्भुत युगल विहार ॥६३॥
जोबन मद नव नेह मद, रूप मदन मद मोद।
रसमद रतिमद चाहमद, उनमद करत विनोद ॥६४॥

॥ कवित्त ॥

मधुर तें मधुर अनूप तें अनूप अति, रसनि को रस सब सुखनि को सार री। विलास को विलास निज प्रेम की राज दशा, राजे एक छत दिन विमल विहार री ॥ छिन छिन त्रिषित चकित रूप माधुरी में, भूलेसे ई रहे कछु आवे न विचार री। अमहू को विरह कहत जहाँ डर आवे, ऐसे हैं रंगीले ध्रुव तन सुकुमार री ॥६५॥

दोहा–दिन दूलहु दिन दुलहिनी, परम रसिक सुकुमार।
प्रेम समागम रहत दिन, नवल निकुंज बिहार ॥६६॥

सोरठा–कोक कलानि प्रवीन, नव किशोर दंपति सदा।
सुरत सिंधु सुख लीन, अति विचित्र नागर कुँवर ॥६७॥

दोहा–रति नागर दोउ रँग भरे, सुरत तरगनि माहिं।
चाह चौंप मन मन समुझि, चितै चपनि मुसिकाहिं ॥६८॥
वर बिहार कछु श्रमित भइ प्रिया परम सुकुमारि।
रुचिर पीत अंचल लिये मृदु कर करत बयारि ॥६९॥
गोर बदन पर फबि रही बिथुरी अलक रसाल।
शिथिल बसन भूषन सबै घूँमत नैन विशाल ॥७०॥
अति सुदेश आलस भरे अरुन छबीले नैन।
प्रेम की रैंनी में मनो रँगे कंज रति मैन ॥
अरुनाई बिच स्यामता छवि नहिं परत बखानि।
मनो मधुप अनुराग के रँग में बोर आनि ॥७०॥
रति विनोद जामिनि जगे शिथिल अटपटे बैन।
अँग अँग अरसाने सबै सरसाने सखि नैन ॥७२॥

॥ कवित्त ॥

सब निशि रंग भीने मन के मनोज कीने भोर एक चूनरी सुरंग ओढ़े ठाढ़े हैं। अरुझे हैं नख शिख घटति न चौंप केंहू, अंग अंग प्रति अति आलिंगन गाढ़े हैं॥ सौंधे भीजे सोहैं बार छूटि टूटि रहे हार, देखिबे को रूप नैना सतगुन बाढ़े हैं। हित ध्रुव रस मसे फबि रहे रसमाते, सुरत सुरंग रंग में झकोर काढ़े हैं॥७४॥

दोहा–रँग मगे दंपति रस मसे हित ध्रुव अद्भुत केलि।
छबि तमाल सो लपटि रही मानो छवि की बेलि॥७५॥
सीम सीस तरे बाहुँ दै, जुरे मिथुन सुख चाहि।
निशि दिन जीवनि सखिनके यह परम सुख आहि॥७६॥
उभै सरोवर रूप के, हंस सखिन के नैन।
अद्भुत मुक्ता चुगत दिन, चितवनि मुसकनि सैन॥७७॥
सहज रंग सुख सिंधु कौ, नाहिन है सखि पार।
श्रीहरिवंश प्रताप बल, कह्यो बुद्धि अनुसार॥७८॥
सोरठा होहि सकल जो गात, रोम रोम रसना सहित।
कह्यो तऊ नहिं जात, पिय प्यारी कौ प्रेम रस॥७९॥
दोहा–मन वच जो गावै सुनै, हित सौं हित सिंगार।
तेहि उर झलकत रहैं निव, पद अम्बुज सुकुमार॥८०॥
यह रस जिनके सुनत मन, नाहिंन होत हुलास।
सपनेहुँ परस न कीजिये, तजि ध्रुव तिनकौ पास॥८१॥
अस्सी दोइ दोहा कवित्त, हित शृंगार के कीन।
जाके उर में बसै ध्रुव, युगल चरण है लीन॥८२॥

॥ इति श्री हित शृंगार लीला की जै जै श्री हित हरिवंशजी ॥

॥ अथ सभामडल लीला प्रारम्भ॥

दोहा– प्रथम चरण हरिवंशजी, उर धरि करी बिचार।
जेहि प्रताप यह रस कछू, कहत बुद्धि अनुसार ॥१॥
सर्वोपरि-अद्भुत सरस, (श्री)वृन्दा विपिन विहार।
वरनों युगल किशोर को, मंडल सभा शृंगार ॥२॥
कुंडल यमुना को जितो, तितो आहि विस्तार।
पंकति कुंजनि की बनी, मंजु मंडलाकार ॥३॥
कहा कहौं वृन्दा विपिन छवि, जहँ विहरत सुकुमार।
पत्र पत्र सेवत दिनहि, कोटि कोटि रति मार ॥४॥
हेम लता फूलन सहित, लसत छबीली भाँति।
नैन चितै चकचौंधि रहे, शोभा कही न जाति ॥५॥
मत्त फिरत मधुपावली, करत मधुर गुंजार।
मनहु मेघ अनुराग के, गावत मंगलचार ॥६॥
कुंज कुंज अति झलमले, वनत न उपमा आन।
सोम सूर सत जोरिये, होत न तऊ समान ॥७॥
रचना चित्र विचित्र दुति, राजत परम रसाल।
झालर जलजनि झलकि रहि, बिच बिच हीरा लाल ॥८॥
जमुना की छवि कहा कहौं, तहाँ न आनंद थोर।
मनहु ढर्यो शृंगार-रस, करि-प्रवाह चहुँ ओर ॥९॥
फूल फूल-रहे फूल के, कमल सुरंग अनेक।
हंस हंसनी-फिरत-बिच, निर्त्तत केकी केक ॥१०॥
कुंज-कंज आसन-सुमन, राखी सेज रचाइ।
भरि सुरंग मादिक विविधि, भाजन धरे बनाइ ॥११॥

सपति इक इक कुंज की, को कहि सकै प्रमान।
शारद जो शतकोटि मिलि, हारहि तऊ निदान ॥१२॥
मधुर मधुर गति ताल सों कूजत विविधि विहंग।
मनो द्रुमनि चढ़ि रागनि गावत नान तरंग ॥१३॥
विविधि भांति रच्यौ फूलिकै, वृंदावन निज बाग।
रति अरु श्री लिये सोहनी, झारत कुसुम पराग ॥१४॥
मनि मय अवनी अति बनी, सुंदर सुभग सुढार।
निच कंचन को जगमगै, रतन खचित आगार ॥१५॥
फूली फूलन की लता, रही भरोखनि झूमि।
प्रति बिंबित जहँ तहँ मनो, रची फूलन की भूमि ॥१६॥
सौरभताई जहाँ लगि, अरु सुगंध रससार।
तिन करि वासिज रहत दिन, उठत मोद उदगार ॥१७॥
अति अनूप सुख पुंज में, चितवन चित्त लुभाइ।
रच्यो राज मत राज रति, नाना चित्र बनाइ ॥१८॥
भान कोटि तिहि सम नहीं, झलकत झलक अपार।
भाति भांति रचना नई, राजत चौंसठ द्वार ॥१९॥
द्वार द्वार प्रति सहचरी, खरी भरी रस प्रेम।
तिनकै प्यारी पीय की, सेवा ही को नेम ॥२०॥
मृदु मृदु दल लै जलज के, अति सुरंग रचि सैन।
ता पर विलसत नवल दोउ, मैंन रंग भर नैंन ॥२१॥
सुरत रंग सुख में सरस, दोऊ रस की रासि।
सरस भिंदी बतियनि करैं, मृदु मृदु इपर हासि ॥२२॥
दसन तिलक मुसकी दमक, रह्यो झलकि सब भौन।
मा रस तौ ललितादि निज भी, पीवत दृग दौन ॥२३॥

रंगी रग अनुराग सों, पगी दुहिन के प्यार ।
और न कछू सुहाइ मन, जीवन युगल बिहार ॥ २४॥
सहज सुभग अद्भुत अयन, सुख बरषत चहुँ कोद।
रँगमगे नवलकिशोर दोउ, तामें करत बिनोद ॥ २५॥
तेहि आगे मडल सभा, प्रभा कही नहिं जाइ।
शोभा तहँ की देखिवे, शोभा रहति लजाइ ॥२६॥
सुरंग बिछौना मृदुल अति, भाँति भाँति के आनि ।
जो जैसो जिहिं ठा बने, सखिनि बिछाये वानि ।,२७॥
कचन को रतननि रच्यो, मन मय विविध सुरंग ।
सिंहासन झलकत तहाँ, धर पर कछू उतंग ॥२८॥
कोमल कुसुमनि की गदी, ता पर धरी बनाइ ।
अति सुर ग सौंधे सनी, रह्यो विपिन महकाइ ॥२९॥
मधुर मधुर खग बोलहीं, डोलें छवि सों मोर ।
सखिनि सहित सब दरसको ह्वै रहे मनहुँ चकोर ॥३०॥
तब आये मंडल सभा, जहां सखिनु की भीर ।
भई एक गति सबनि की, बिसरे नैनन चीर ॥३१॥
बन बैठे भली भाँति सौं, नवल लाड़िली लाल ।
मनो तमाल ढिग लसत मृदु, कचन बेली बाल ॥३२॥
नख शिखपानिप रूप निधि,सहज सरस सुकुमारि ।
रोम रोम बरषत रहै, गुन माधुरी छबि वारि ॥३३॥
(श्री) राधा वल्लभ लाल सिर, फबी चन्द्रिका मोर ।
सुरंग पाग सौं लटकि रही, बाम भाग की ओर ॥३४॥
लाल भाल पर फबि रही, बेंदी लाल अनूप ।
मनो मूरति अनुराग की, प्रगट भई धरि रूप ॥३५॥

नासा पुट मुक्ता फब्यो, चितै रहे दृग द्वन्द ।
भाजन भरि तन छलकि परी,मनो रूप की बुंद ॥३६॥
अरुन अधर दशनावली, झलकत परम रसाल ।
हीरन की पंकति मनो, चंदन में करी लाल ॥३७॥
सांवल मुख छवि प्रभा पर, वारौं कोटिक चंद ।
जित चितवत बरषत तहीं, सहज रूप मकरंद ॥३८॥
रूप प्रिया को कहन को, कितक बुद्धि है मोर ।
तेई कुँवर चरननि लुठत, निरखि नैन की कोर ॥३९॥
जेहि मनमथ त्रैलोक सब,अपने बस कियो आनि ।
सोई मैन मोह्यौ चितै, मोहन मृदु मुसिकानि ॥४०॥
मोहनी सोहनी भौंह ते, उपज्यो सहज अनंग ।
ते मोहन भ्रुव बस किये, तेहि मनोज रस रंग ॥४१॥
चितवन मोहन चित्र से, रहे भूलि छवि ऐन ।
मानो तेहि ठा मोल के, नैनन लीने नैन ॥४२॥
यह सुख देखत हैं सखी, ठाढ़ी सब गहि ठौर ।
बरषत आनँद सबनि पर,रसिकनि मनि सिरमौर॥४३॥
लच्छ लच्छ के यूथ तहँ अगनित अमित अपार ।
रसन कोटि जो होइ तन, कहि न सकत विस्तार॥४४॥
यूथ यूथ प्रति नाइका, इक इक सखी उदार ।
तिनके नाम कहौं कछू अपनी मति अनुसार ।४५॥

॥ सखी वर्णन दोहा ॥

ललित विसाखा रुचि लिये, करत भावती बात ।
रँगदेवी चित्रा तहां, युगल रंग रस रात ॥ ४६॥
तुंग विद्या चंपकलता, इंदु लेखा गुन खान ॥

सखी सुदेवी सहित ध्रुव, आठों परम सुमान ॥४७॥
इनते अतर नेक नहिं, ज्यों छाया तन संग ।
मानो मूरति हेत की बढ़वत पल पल रंग ॥४८॥
एक वेस छवि रास सब, भूपन वसन समान ।
एक प्रेम में रहो सनि, इक मन एकै प्रान ॥४९॥
अब कछु तिनके नाम सुनि, हीयो श्रवन सिरात ।
प्रेम र ग उर में बढ़ै, अरु सब दुख मिट जात ॥५०॥

❀ सखीन के नाम वर्णन—दोहा ❀

चन्द्रभगा च द्राननना, चन्द्रप्रभा चित चाव ।
चन्द्रकला अरु चन्द्रिका, कोमल सहज सुभाव ॥५०॥
चन्द्रमती चन्द्रा सखी, चपक वरनी चारु ।
चित्रगा चंदनवती, चन्द्र जिता चितहार ॥५१॥
चपला चतुरा चंचला, चित्तहरा चित्त मैन ।
चंद्रछटा वर चदिनी, चंद्र कान्ति रस ऐन ॥५३॥
चारु मुखी चरिता चतुर, चारु दृगी चल नैन ।
चारु मती चपक तनी, चित्रांगी चित चैन ॥५४॥
रस र गा रस र गिनी, रस पु जा रस रूप ।
रस भरि रसिका रस वती, र गावली अनूप ॥५५॥
रतन प्रभा रस मजरी, रूप मजरी नाम ।
रस ऐनी रति मञ्जरी रस रैनी रस धाम ॥५६॥
रतन मजरी रति कला, राग र ग के साथ ।
रस दैनी अरु रस भरी गहै रसालिका हाथ ॥५७॥
वृन्दा विपिन विनोदनी, वन दीपा वन कानि ।
वन शोभा अरु वनमती, वन मादा भलीभाति ॥५८॥

वन रागा अरु वन प्रभा, वन भूपा वन केलि।
वन विद्मा विजया जया, वन माला वन वेलि ॥ ५६ ॥
सुभगा सुमती शारदा, सारगी रस सार।
सुखद जयती शीश मुखी, सरसी-मुखी उदार ॥६०॥
सुघर सुनन्दा सावरी, सहज सलोनी चाहि।
सिंदूरा शुभ आनना, शोभा की निधि आहि ॥६१॥
सरला सुमना सारिका, सौदामिनी लसत।
सुमुखी सग सुकुन्तला भ्रमत भँवर रस मत ॥ ६२ ॥
मालती माधवी माधुरी, मधुपा कै अति हेत।
मानवती मंदालसा, मदनावती समेत ॥६३॥
मजु केशी मन मजरी, मनि कुण्डला रसाल।
मृगनैनी मधु मालती, मजुपदा मनिमाल ॥ ६४ ॥
कलिहसी कटि केहरी, कलवशी कलकेलि।
कलनैनी कल गामिनी, कलवैनी कलबेलि ॥ ६५ ॥
कञ्ज मुखी कमलावती, कनकागी रही सोहि।
केलिकला कृष्णावती, कुमुदा रही छवि जोहि ॥६६॥
भौंमा भौंमती भानुजा, भवन सुदरी संग।
भानमनी मन भावनी, भूषण भूपा अग ॥६७॥
भद्रपदा भद्रावती, भामिनि दीपा भौन।
भद्र सरूपा भाग भरी, उपमा दीजै कौन ॥६८॥
तानवती तारावली, भरी तमाला रग।
तम हरनी तरला तहीं, तान तरगा सग ॥६९॥
पिकनैनी प्रभावली, प्रेमा रस में लीन।
परिमल पुन्या पावनी पदमावती प्रवीन ॥७०॥

नीरज नैंनी नन्दनी, नेह नवीना नित्त।
नांद नन्दिनी निर्मला, नवला कोमल चित्त ॥ ७१ ॥
गुनमाला अरु गुनवती, गुन भूषण गुन खान।
गुन कंदा अरु गुनकला गुन भेदा गुनजान ॥ ७२ ॥
चंप चँमेली केतकी, बासती रस ऐन।
बेलि गुलाली सेवती, सेवत हैं दिन रैंन ॥७३॥
रूप धरें सब रागिनी, रँगी रंग अनुराग।
लाल लड़ैती कुँवरि को, गावत दिनहि सुहाग ॥ ७४ ॥
दिवा जामिनी छहो ऋतु, ठाढ़ी रहैं करजोर।
करत जोइ तेहि छिन समुझि,जब चितवत जेहि ओर॥७५॥
गोरी गोरी सखी जे, भरी प्रिया रस गर्व।
चंद किरनि सी चहुँ दिशन,राजत अर्वनि अर्व ॥७६॥
कुंज भृंगी सब सहचरी, मोर मराली चाहि।
जेहैं प्यारी पच्छ की, ते सगर्व सब आहि ॥ ७७ ॥
शुक पिकवल्ली सखी सब, हंस मयूरी मोर।
लिये दीनता रहत दिन, जितक लाल की ओर ॥७८॥
जुगल मिलन सुख सहजही अद्भुत केलि विहार।
जीवन सब की एक ही, जीवत तेहि आधार ॥ ७९ ॥
यह नामावलि सखिन की, सुनत रुचैगी जाहि।
प्रेम मदै शोभा चढ़ै, रहै जाहि तेहि पाहि ॥८०॥
रज कन उडगन वूँद घन, आवत गिनती माहिं।
कहत जोइ थोड़ी सोइ, सखियन संख्या नाहि॥ ८१ ॥
मंडल जोर खड़ी मनों, जुरे चकोरनि वृँद।
इकटक रहीं निहारि सब, बिंब वृन्दावन चन्द ॥ ८२ ॥

अपनो अपनो गुन जिनों हित के रस सों सानि।
ते सब आगे दुहुँनि के, प्रगट करत हैं आनि ॥ ८३ ॥
सखी सुधगा नृत करें, लिये कला सब संग।
देखो अद्भुत गतिनि को, होत नैंन मन पंग ॥ ८४ ॥
उरप तिरप अरु हुरमई, लाग डाट वधान।
सरस सुलप सुन्दर चलन, मुसिकनि हरत हे प्रान ॥८५॥
अति प्रवीन सब अंग में, रीभ रीभ दोउ लाल।
तबहिं बोलि तेहि सखी को पहिराई उर माल ॥ ८६ ॥
पाछे गावत रागिनी, बीना लिये मृदंग।
एक सारँगी किन्नरी, एक सजे मुहँचंग ॥ ८७ ॥
अमृत कुण्डली हुड़कई, एक गहे करतार।
गुन सरिता उमड़ी मनों, बाढ्यो रंग अपार ॥८८॥
जितक कला संगीत की, तामें सबै प्रवीन।
गावत निर्त्तत लेत हैं अद्भुत गतिनि नवीन ॥ ८९ ॥
एक वेस गुन राशि सब, तैसो तिनको हेत।
देखि छबीली छबि तहां, रीझि दुहुँनि सुख देत ॥९०॥
तान तरंगा निकट ह्वै, गाई बाँकी तान।
तबहिं रीझि तेहि सखी को, दये बुलाय हँसि पान ॥९१॥
सोरठा—आनंद मेघ चुचात, सुखको सर ध्रुव दिन तहां।
क्यों आवें कहि बात, वृन्दावन विधु सभा की । ९२॥
दोहा—पावस ऋतु आगम कियो, अपनी सेवा हेत।
द्रुम द्रुम बोलत खग मधुर, नाम सनेह समेत ॥९३॥
श्याम सुचिक्कन मोहनी, आई घटा अनूप।
मानो रह्यो बन छायके, निज सिंगार को रूप । ९४ ॥

ऊँचे नीचे महल की, शिखर सखी चहुँ ओर।
जँह तँह आनंद रंग भरि, नृत्तत मोरी मोर ॥९५॥
सुरत हिंडोरे रंग में, भूलत समय विचार।
पानिप रूप तरंग उठे, सो छवि रही निहार ॥९६॥
रिम झिम बूँदन की परनि, गावत मधुर मलार।
यह सुख देखत सुरत ही, रहत न देह सँभार ॥९७॥
वदी ओप झलकत सबै, पत्र फूल फल डार।
मानों मन्त्रिन करि विपिन, फेरि कियो श्रगार ॥९८॥
देखि भांति वन की भली, रुचि में रुचि की गोभ।
उपजी है मन दुहुँनि के, एक केलि की लोभ ॥ ९९ ॥
शाहाजोगी चलत दोउ, देखन हित मव कुंज।
चहूँ ओर सन सहचरी मध्य प्रान सुख पुंज ॥१००॥
कमल कुंज आये प्रथम, सहज रंग रस ऐन।
अति सुरंग अंबुज दलनि, रची तहां सखि सैन ॥१०१॥
देखत रचना रुचिर अति, रीझ देउ सुकुमार।
बोल सखी कमलावर्ता, पहिरायो उर हार ॥१०२॥
पुनि पौढ़े तिहिं सेजपर, करत हाँसि पर हाँसि।
माज रंग अनंग में बाढ्या हिये हुलास ॥१०३॥
रति निनाद विलसत विविधि, उपज्यो आनँद रंग।
हँसनि दसनि अंगनि लसनि, छवि उठत तरंग ॥१०४॥
लतनि ओट ललितादि निज, सुख देखत भरि नैन।
कहत वचन जे रंग मग, सुनत श्रवन है चैन ॥१०५॥
ता पाछे तेहि कुंजतें, आये कुंज सिंगार।
नौतन भूषण वसन तन, पहिराये उर हार ॥१०६॥

सुरँग सहानी सेज पर, दुलहिनि दुलह लाल।
मुसिकनि मन हर लेन है, चितवनी नैन विशाल ॥१०७॥
मेँहँदी को रँग बनि रह्यौ, अंजन नैन सुदेस।
नवसत अंगनि जगमगे,कहि न सकत छविलेस ॥१०८॥
ललिता आनँद रँग भरी, विवि मुख चितै अनूप।
मनहु नैन नरजा किये, तोल्यो करत हैं रूप ॥१०९॥
जवहि ढरत जिहि कुंज को,तहँ की सखी सुजान।
नैननि के करि पावड़े, न्यौछावर करैं प्रान ॥११०॥
मान कुंज आये जवहिं, कुँवरि भौंह भई भंग।
चितै लाल पाइन परे,समुझि मान को अंग ॥१११॥
ऐसे रसमें हो प्रिये ऐसी जिय न विचारि।
तासों इतनी चाहिये, तन मन जोरयो हार ॥११२॥
कैसे कै सहि जात है, नेक रुखाई भौंह।
याते नाहिंन और दुख, प्यारी तेरी सौंह ॥११३॥
मेरो तो कछुवै नहीं, तुमही प्राननि प्रान।
यहै बात जिय समुझिकै,चित जिन आनौ आन ॥११४॥
सोरठा—मेरे है गति एक, तुम पद पंकज की प्रिये।
अपनें हठ की टेक, छांड़ि कृपा करि लाड़िली ॥११५॥
दोहा—मोहन के मोहन बचन सुनि मोहनी मुसिकाइ।
प्यारो प्यारी प्यार सों, रवकि लियो उर लाइ ॥११६॥
तेहि छिन, दीनों अधर रस, नवल रँगीली बाल।
तिनकी प्रीति न कहि परे, प्रेम सीव दोउ लाल ॥११७॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी जूकी रिस ऐसी दामिनी दमक जैसी, छिन एकच-

मकि मिलत जाइ घन में। नैन नेक बक करे फिरि ताहि रग
डरें, परम चतुर चित रस भरी मन में ॥ उरसों लपटि रहि छवि
न परत कही, मानो,मीनविहरत श्याम सर वनमें। हित ध्रुव मान
ऐसो विरह न होन पावे,समुझि प्रवीन प्यारी सावधान पन में ॥
दोहा—पुनि हँसी के तहाँ ते चले, आये कुंज विलास।
देखत रचना रुचिर अति बाढ्यो हिये हुलास ॥११९॥
मनि मय कनक प्रजंक पर, फूलनि सेज बनाय।
रचि राखी सखियनि जहाँ, अरगजा सों छिरकाय ॥१२०
मेवा फल सब अमृत मय, चहूँ ओर धर आनि।
भाजन भरि मधु मादिकन, बीरी राखी बानि ॥ १२१
आसन मृदु बहु भाँति के, शोभा कही न जाइ।
कहूँ चौंपर सतरंज कहूँ, राखी विविध बिछाइ ॥१२२॥
हँसि बैठे तेहि सेज पर, हेत सखिनु को जानि।
कहत परस्पर बैन मृदु, मैन रग सों सानि ॥१२३॥
सोरठा—कहत बनत कछु नाहिं,सुरत रंग सुख सिंधु बढ्यो।
पैरावत तेहि माहिं,पियहि लाइ कुच घटनि सों ॥१२४॥
दोहा—सबविधि नागरि निपुन अति,कोक विलास कलानि।
उपजत नव नव भाव सत,गुन रतननि की खानि ॥१२५॥

❀ कवित्त ❀

कोटि कोटि रसना जो रोम रोम प्रति होइ,प्यारी जू के रूप
को न प्रमान कह्यो जात है। अतिही अगाध सिंधु पार नहिं
पावे कोऊ थोरी बुद्धि सीप माझ के कैसे समात है॥ छिन
छिन नई नई माधुरी तरग रंग, देखें नख चन्द्रिकानि चन्दहूँल
जात है। हित ध्रुव अग अग बरषत छवि स्वाति नैना पिय

चातिक तो केहू न अघात है ॥१२६।

दोहा–रंग कुंज नीकी बनी, रंगावलि चिन लाइ।
दुलहिनि दूलहु हेत सों, तामें बैठे आइ ॥१२७॥
रंगमगे दंपति रसमसे, भरयो हिये रस मैन।
अतिही रंगीले रंगमगे कहत परस्पर बैन ॥१२८॥
उपज्यो रंग विनोद इक, सखियन के उर ऐन।
लाल लड़ैती व्याह को, सुख देखे भरि नैन ॥१२९॥
तबहिं भाव यह बढ़ि गयो, सबके भयो विचार।
जैसी रीति है व्याह की, करन लगी विधि चार ॥१३०॥
कुंज द्वार मण्डप रच्यो, सुमन सुरंग बनाइ।
हेम खम रतननि खच्यो, रखो मध्य झलकाइ ॥१३१॥
हीरा गज मोतीन की झालर रची सँभारि।
पट रितु मालिन फूल सों, बाधी बन्दन वारि ॥१३२॥
एक सखी गाइनि भई, गावत मंगल गीत।
और बहुत बाजे लिये, मगन भई रस प्रीति ॥१३३॥
मज्जन की विधि करन को, जुरी सखिनु की माल।
कोलाहल आनन्द को, बाढ़यों है तेहिकाल ॥१३४॥
कंचन चौकी पर दोऊ, राजत भांति अनूप।
बसन उतार सुठि घने, बाढ़यो सतगुन रूप ॥१३५॥
पट दै बिच अन्तर कियो, चतुर सखी इक सार।
चन्दन को करि उबटनो, उबटत दोउ सुकुँमार ॥१३६॥

सोरठा–होतहि पटकी ओट, पिय के दृग व्याकुल भये।
मनो कल्प सत कोट, मो छिन तो ऐसी भई ॥१३७॥

दोहा–कुंकुम तेल फुलेल मथि, सीमन ते दियो ढारि।

मानो पानिप रूप की, उमड़ि चली मित ढारि ॥१३८॥
अधिक हेत सों करें सखी, प्रथम चारु अस्नान।
इक गावत इक हँसत हैं, इक वारति हैं प्राण ॥१३९॥
एक प्रिया तन हाइके, कहत वचन परिहाँस।
सुनि सुनि पियके हीयते, नादत अधिक हुलास ॥१४१॥
सब सुगन्ध सोंवासि जल जेमो तनहि सुहाइ।
तब सबहिन अति प्यार सों, लीने कुँवर न्हवाइ ॥१४१।
मगटप तर आमन सुमन, राख्यौ रुचिर बनाइ।
सुरँग सहाने बसन तहाँ, ल्याई मृदु पहिराइ ॥१४२॥
एक सखी अजन दियो, एक खवावत पान।
इक हँसि बांधत कक्नो, एक करत है गान ॥१४३॥
मेंहदी को रग फबि रह्यो, भूषन छवि अँग अग।
मगन भइ शोभा निरखि, निर्तीत नारि अनग ॥१४४।
सीसनि सुभग जराउ के, झलकत सोंगी मोर।
देखि छबीली भांति दोऊ, छवि भूली तेहि ठोर ॥१४५॥
कुंकुम रोरी रँग लें, चित्रे अद्भुत भाति।
किय त्रित्र रचि मुखन पर अखियां निरखि सिराति।१४६॥
फूल सुनहरे सेहरे, सोभा बढ़ी नवीन।
प्रान थार दृग दीप करि, सखियन आरति कीन ॥१४७।
सुरँग पीत तिनि अंचलनि, जोरि ग्रन्थि बनाइ।
तिने कुँवरि सुमिराइ मृदु, रदु इक रही लजाइ ॥१४८॥
निगम छन्द नय, उच्चरत, चतुर सखी द्वै चार।
जदपि नियम हैं प्रम रस सब विधि करत सँभारि ॥१४९॥
अन्न अन्न मनि फूल नित, धरि चेरी सो कीन।

पाछे पिय आगे प्रिया, भांवरि विधि सों दीन ॥१५०॥
एक मधुर मिलि गावही, मङ्गल गीत सुहाग।
मानो बोलत कोकिला, मध्य विपिन अनुराग ॥१५१॥
तब ललिता हँसिके कह्यो, दुहु विधि मुखहि निहारि।
दूधा बाती करहु अब, पियसों मिलि सुकुँवारि ॥१५२॥
सुनत सखिन के वचन ये, मुरि बैठी पट तानि।
मानो लाजको ऐन रचि, कियोप्रवेश तह आनि ॥१५३॥
ऊ चे चितवति नैकु नहिं, नमित करि रही नारि।
घू घट पट नहीं छाड़ही, प्रिय कर देत हैं ठारि ॥१५४॥
तब सखियनि पियसों कह्यो, सुनहु रसिकवर राइ।
जो रस चाहत आपनो, गहो कु वरि के पाइ ॥१५५॥
अति सुरङ्ग मुख कमल तें, ललित उगारही लेति।
छलसों पियहि खवाइ के, हसि हसि तारी देति ॥१५६॥
कु वरि चरण छवि मनि मनो, प्रीतम वंदत ताहि।
मानो देवी प्रेम की, पियहि पुजावत आहि ॥१५७॥
तेहि तेहि छिन जो सहचरी, करवावत विधिचार।
करत कु वरि अति प्यार सों, यहै नेह की ढार ॥१५८॥
सबही निधि आधीन पिय, पगन सीस रहे लाइ।
तबहि लाज पट दूरि कर, चितई कछु मुसिकाइ ॥१५९॥
ऐसे सुम्ब के रङ्ग की, क्यों कहि आवे घात।
जदपे बीतत है कलप, छिन के मम ह्वै जात ॥१६०॥
नित्य विहार विवाह नित, दुलहिन दुलहु लाल।
नित्य सखी सुख सहजही, लेत रहत सब काल ॥१६१॥
रस सनेह सागर मथ्यो नवल रङ्ग रस सार।

तेहि रसमें सखी मगन भई, भूली देह सँभार ॥१६२॥

सोरठा—करवावत सब ख्याल, इच्छा सक्ति सखी तहाँ।
उपजावत तेहि काल, भाव सबनि के तैसोई ॥१६३॥

दोहा—बैठे कुञ्ज विनोद में, करत विनोद विहार।
चितवनि मुसिकनि लसनि रद, सोभा निधि सुकु वार॥१६४॥
लालसखी को भेष कियो, उपज्यो चित यहै भाव।
पट भूषन नव कु वरि के, पहिरन को बढ्यो चाव ॥१६५॥
तब सेवा सिङ्गार की, लगे करन भली भाँति।
जब फिरि चितवति लाड़िली, लाज सहित मुसिकाति॥१६६॥
छुटे बार सोंधे सने, पियकर पर प्रिया वार।
मनो सिङ्गारत रचि रुचिर, सिङ्गारहि सिङ्गार ॥१६७॥
बेनी रचि फूलनि गुही, सुन्दर सुभग सुढार।
नख सिख भूषन पट बने, अरु गज मोतिनहार ॥१६८॥
नैननि अञ्जन दियो जब, रीझे मुकर निहारि।
दसनि खंड अति हेतसों, बीरी दई सकुवारि ॥१६९॥
दसन वसने रस देत है, लालहि लिये उछङ्ग।
मानो चंदहि चंद मिलि, प्यावत सुधा सुरङ्ग ॥१७०॥
फूले आनन्द रङ्गभरि, अति सुखको रस पाइ।
नैन छवाइ चूमत चरन, कबहुँ रहत उर लाइ ॥१७१॥
कहा कहौं या प्रेम की, अद्भुत भाँति अनूप।
वृन्दावन घन कुञ्ज में, सेवत रूपहि रूप ॥१७२॥
उलटी चाल है प्रेमकी, को समुझै विन लाल।
ज्यों ज्यों हारे अपनपौ, त्यों त्यों बढ़े विशाल ॥१७३॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी जू की सारी अति प्यारी लागे प्रीतम को, सोंधे भीजी अँगिया सुरङ्ग उर धारी है। नवल रगीली जू के भूषन विहारी लाल, पहरित बादी फूल जात न सभारी है॥ जोई कछू प्रिया जू के अगनि परम होत, सोई प्रान जात होत ऐसी प्यारी २ है। हित ध्रुव प्रेम बात कैसेहूँ न कही जात, जानें सोई जेहि सिर मोहनी सी डारी है ॥१७४॥

दोहा-रेनि सुहावनी सरद की, राजत सहज सुदेस।
इक इक मनि आभा मनो, झलकत सत ररकेस ॥१७५॥
ऐसी रजकी देखि पिय, सजनी मन भयो मोद।
पुलिन हसजा रह्यो बनि, कीजे रास विनोद ॥१७६॥
सखिनि मण्डली जुरी तब, हेत दुहूँनि कों जान।
चहूँ ओर सब फिरगई, जोरि पानि सो पानि ॥१७७॥
मध्य रसिक दोऊ लाड़िले, सोभा रही सब हेरि।
मानो छविके चंद द्वै, छवि कमलनि लये घेरि ॥१७८॥
सरस एकते एक सखि, अपनी अपनी भाति।
निर्त्तत अग ग सुधग के, दामिनिसी दमकाति ॥१७९॥
नवल कुँवर वर कुँवरिसो, कहत बदन तन जोहि।
अपनीसी गति निर्त्तकी, कछुक सिखावहु मोंहि ॥१८०॥
नागर मनि नव नागरी, समुझि पीय को हीय।
भरी नेह आनन्द रस, अद्भुत कौतिक कीय ॥१८१॥
बेज दलनि पर रुचिर कल, करत निर्त्त सुकुवारि।
तेहि छिन जहाँ लगि सहचरी, चकित है रहीं निहारि ॥१८२॥
जो गति नहिं देखि सुनी, उपजें नव नव भाई।

निर्त्त जु मूर्तिवत ही, सोई रही लुभाह ॥१८३॥
तिरप मांभि दल एक पर, अलग लाग जहां लीन ।
दूजो दल परस्यो नहीं, लाघवता अति कीन ॥१८४॥
रीझि लाल चूवत चरन, ऐसी चित्त विचारि ।
मानहार पहिले रह्यो, अब कहा दीजे वारि ॥१८५॥
मोहन सग महा मोहनी, सुख वरपत है नित्त ।
चादनि में अति चमकि रही, चमकावत पियचित्त ॥१८६॥
श्रम जल कन मुख गौरपर, चितै रहे पिय मोहि ।
मानो छवि के कमलपर, छवि के कन रहे सोहि ॥१८७॥
रविजा वन परसै पवन, सौरभ घन जनु लेत ।
मंद मंद जैसी रुचै, आइ दुहुनि सुख देत ॥१८८॥
श्रीमान सरावर रस मई, झलकत निर्मल नीर ।
नव किशोर इक वेम द्रुम, रतन खचित वर तीर ॥१८९॥
छत्री मध्य जराव की, मैंन फूल छवि ऐंन ।
रचि राखी अति हेतसों, सखियनि तहां सुख सैंन ॥१९०॥
देखि भाँति सर की भली, वाढ़ी आनन्द वेलि ।
तामें दोऊ निज सखिन जुत, करन लगे जल केलि ॥१९१॥
हसि हसि छिरकत आप में, अलवेले सुकुवार ।
मानो वारन रूप के, विहरत वारि विहार ॥१९२॥
छुट वार सोंधे सने, टुटि रहे उरहार ।
विवस भये खेलत दोऊ, वाढ़ो चोप अपार ॥१९३॥
अंगराग बहु भांति मिलि, ह्वै गयो अबु सुरंग ।
मानो सरस अनुराग के, देखियत प्रगट तरग ॥१९४॥
निकसे दोऊ भीज वसन, सोभा कही न जाइ ।

मानो पानिप रूपकी, वढ़िके चली चुचाइ ॥१६५॥
अग अग छवि कहा कहौं, याढ़ी सतगुन ओप ।
उपमा दुति सब और जे,ते सब ह्वै गई लोप ॥१६६॥
पहिरे मृदु नव जरकसी, मृदु सुरंग अति चौंनि ।
सौंधे सों रहे घमड़ि के, सौरभता की खौंनि ॥१६७॥
देखत फिरत निसक मन, जैसे मत्त गयंद ।
विन अंकुस रुचि आपनी,ढुरत है सुरत स्वछंद ॥१६८॥
संग लिये सब सहचरी, विलसत लसत हसत ।
ऐसी छवि तहाँ रही फवि, खेलत मनो वसन्त ॥१६६॥
कु कुम सो तनको वरन, अम्बर विविधि गुलाल ।
अधर दसन मनो फूल भये, अंबुज नैन विशाल ॥२००॥
नौलासी भुज लतनि की, आगम जोवन मौर ।
कुच गेंदुक उर फूल भई, उपमा नहिं कछु और ॥२०१
चितवनि मुसिकनि छिरकिवौ, वाजे भूषन राव ।
देखत ऐसी मण्डली, उपजत है चित चाव ॥२०२॥
इहि विधि तौ खेलत रहैं, दिनहि वसंतरु फाग ।
यह सुख जो चितत रहै, ताही के ध्रुव भाग ॥२०३॥
कु ज कु ज सब ऐसेही, कीने विविधि विनोद ।
ता पाछे दोऊ रग भरे, चले महल की कोद ॥२०४॥
झलकत हैं विवि चंद ह्वै, सखिन्ह माल चहूंओर ।
मानो घेरे फिरत हैं, सब के नैंन चकोर ॥२०५॥
ठाढे भये मंडल सभा, सोभा सिंधु अगाध ।
जैसे रुचिही सखिनु की, पुजई सबकी साध ॥२०६॥
फूली अंग न मात हैं, भरी रंग आनन्द ।

जीवन सबके एकही, विवि वृन्दावन चन्द ॥२०७॥
रचि मृदु आसन सुमन पर, बैठारे दोऊ लाल।
अति प्रवीन सेवा करैं, जैसी रुचि जेहि काल ॥२०८॥
विविधि भांति विंजन अधिक, आगे राखे आनि।
मधुर सलोने चरपरे, खाटे मीठे वानि ॥२०९॥
हँसि हँसि स्वाद सराहि दोऊ, ग्रास परस्पर लेत।
ललित विशाखा तेहि समैं, वारि प्रान धन देत ॥२१०॥
कछु खाये सखियनि दियै, नागर नवल प्रवीन।
अमृत चितवनि चितै सखि,बोलि सवनि सुख दीन।२११॥
चतुर सिरोमनि नेह निधि, सब विधि रूप निधान।
पग धारे निज महल को, करि सबको सनमान ॥२१ ॥
मंडल सब देखत फिरत, बीते कलप अनेक।
सहचरि यौं मानत भई, मनो भई घरी एक ॥२१३॥
जब जानें सबही श्रमित, नवल भामनी स्यौंम।
वादयौ तिनके हत यह, नैंक करैं विश्राम ॥२१४॥
भांति रंगीली सेज पर, रहे लटकि लपटाइ।
ललतादिक निज सहचरी, तहाँ पलोटति पाइ ॥२१५॥
एक सुनावति सारंगी, रंग भीनी लिये वीन।
मंद मधुर सुरगावही, रुचि लिये तौंन नवीन ॥२१६॥
राग रग जुत प्रेम रस, अद्भुत केलि अनंग।
छिन छिन आनंद सिंधु के, उठिवो करत तरंग ॥२१७॥

॥ कवित्त ॥

नवल रंगीले लाल रसमें रसीले अति, छबिसौं छबीले दोऊ उर धुरि लागे हैं। नैंननि सों नैंन कोर मुख मुख रहे जोर, रुचि

राजत हंस सुता छवि न्यारी ❀ रसपति रसकी मनो पनारी ।८।
बहु विधि रग कमल कलफूले❀ आनंद फूल जहाँ तहाँ फूले ।६।
भ्रमत मधुप सौरभ रस माते ❀ पच्छी सबै गान गुनराते ॥१०
कोकिल कीर कपोत रसाला ❀ छविसौंनित्त तमोरमराला ।११।
जेहि वनको शिव श्रीपतिगावें❀ मन प्रवेश तहाँ कैसे पावें ।१२।
अगम अगाध सबनिते न्यारो ❀ प्रेम खेल तेहिठौं विस्तारो ।१३।
दोहा—प्रेम रासि दोऊ रसिक वर, रूप रंग रस ऐ न ।
मैंन खेल खेलत तहां, नहिं जानत दिन रैंन ॥१४॥
मंडलमनिमयअधिकविराजें ❀ निरखतकोटिमानससिलाजें ।१५।
तापर कमल सुदेस सुवासा ❀ षोडसदल राजत चहुपासा ।१६।
मध्यकिशोर किशोरी सोहैं ❀ दलदलप्रतिसहचरिछविजोहैं।१७
अति सरूप मोहन सुकुंवारा❀ रंगे परस्पर प्रेम अपारा ॥१८॥
रसिकानन्द रसिकनी सगा ❀ विलसत हैं नवकेलिअनंगा ।१६।
एक वैस रुचि एकै प्राना ❀ जीवनअधरसुधारस पाना ।२०।
अद्भुतरसनिधिजुगलविहारा❀सबसखियनिकेयहैअहारा ॥२१॥
अष्टसखीमनो मूरतिहितकी ❀ अतिप्रवीनसेवाकरैंचितकी ।२२।
आठआठ सहचीर दिन संगा❀ रंगी निरन्तरतेहिसुखरंगा ।२३।
दोहा—नाम वरन सेवा वसन, जैसे सुने पुरान ।
ते सब व्यौरे सौं कहौं, अपनी मति अनुमार ॥२४॥
ललिता परमचतुरसबबातनि ❀ जानत हैनिजनेहकीघातनि।२५।
पाननि बीरी रुचिर बनावे ❀ रुचिलैरचिरचिरुसौंख्वावे।२६।
मुखते वचन सोई तो काढ़े ❀ जाते दुहुमें अतिरुचिबाढ़े।२७
दोहा—गोरोचन सम तन प्रभा, अद्भुत कही न जाइ ।
मोर पिछकी भाँति के, पहिरे वसन बनाइ ॥२८॥

॥ तिनकी सखी ॥

रतन प्रभा अरु रति कला, सुभा निपुन सब अंग ।
कलहंसीरु कलापनी, भद्र सोरभा संग ॥ २९ ॥
मनमथ मोदा मोद सों, सुमुखी है सुख राम ।
निसि दिन ये आठौं सखी, रहैं ललिता के पास ॥३०॥
सखी निसाखा अतिही प्यारी ❀ कबहुँनहोन संगतन्यारी।३१।
बहुविधि रंग वसन जो भावे ❀ हितसों चुनिकें लेपहिरावे।३२।
ज्यों छाया ऐसे संग रहही ❀ हितकीबातकुँवरिसोंकहही।३३।
दोहा—दामिनि सत दुति देह की, अधिक प्रियासों हेत ।
तारा मंडल मे वसन, पहिरें अति सुख देत ॥३४॥

॥ तिनकी सखी ॥

माधवी मालती कुंजरी, हरनी चपला नैंन ।
गंध रेखा सुभ आनना, सौरभी कहै मृदु वैन ॥३५॥
चंपकलता चतुर सब जानें ❀ बहुतभाँतिके विंजनवानें ॥३६॥
जेहिजेहि छिन जैसीरुचिपावे❀तैसे विंजन तुरत बनावे ॥३७॥
दोहा—चंपकलता चंपक बरन, उपमा को रह्यो जोहि ।
नीलांबर दियो लाड़िली, तनपर रह्यो अति सोहि ॥३८॥

॥ तिनकी सखी ॥

कुरंगा श्रीमन कुंडला, चंद्रिका अति सुख दैन ।
सखी सुचरिता मंडनी, चंद्रलता रति ऐन ॥३९॥
राजत सखी सुमंदिरा, कटि काञ्चनी समेत ।
विविधिभांति विंजन करें, नवल जुगल के हेत॥४०॥
चित्रा सखी दुहुँनि मन भावें ❀ जलसुगंधलेंआनिपिवावें॥४१॥

राजत हस सुता छवि न्यारी ❀ रसपति रसकी मनो पनारी ।८।
बहु विधि रग कमल कलफूले❀ आनंद फूल जहाँ तहाँ फूले ।६।
भ्रमत मधुप सौरभ रस माते ❀ पच्छी सबै गान गुनराते ॥१०
कोकिल कीर कपोत रसाला ❀ छविसौंनित्त तमोरमराला ।११।
जेहि वनको शिव श्रीपतिगावे❀ मन प्रवेश तहाँ कैसे पावै ।१२।
अगम अगाध सवनिते न्यारो ❀ प्रेम खेल तेहिठौं विस्तारो ।१३।
दोहा—प्रेम रासि दोऊ रसिक वर, रूप रंग रस ऐ न ।
मैंन खेल खेलत तहां, नहिं जानत दिन रैंन ॥१४॥
मंडलमनिमयअधिकविराजै ❀ निरखतकोटिभानससिलाजै ।१५।
तापर कमल सुदेस सुवासा ❀ षोडसदल राजत चहूंपासा ।१६।
मध्यकिशोर किशोरी सोहैं ❀ दलदलप्रतिसहचरिछविजो हैं।१७
अति सरूप मोहन सुकुँवारा❀ रंगे परस्पर प्रेम अपारा ॥१८॥
रसिकानन्द रसिकनी सगा ❀ विलसत हैं नवकेलिअनंगा ।१६।
एक वैस रुचि एकै प्राना ❀ जीवनअधरसुधारस पाना ।२०।
अद्भुतरमनिधिजुगलविहारा❀सवसखियनिकेप्र हैअहारा ॥२१॥
अष्टसखीमनो मूरतिहितकी ❀ अतिप्रवीनसेवाकरैंचितकी ।२२।
आठआठ सहचीर दिन संगा❀ रंगी निरन्तरतेहिसुखरंगा ।२३।
दोहा—नाम वरन सेवा वसन, जैसे सुने पुरान ।
ते सव ब्यौरे सौं कहौं, अपनी मति अनुमार ॥२४॥
ललिता परमचतुरसनबातनि ❀ जानत हैनिजनेहकीघातनि।२५।
पाननि वीरी रुचिर बनावै ❀ रुचिलैरचिरचिरसौंल्यावै।२६।
मुखते वचन सोई तो काढ़ै ❀ जाते दुहुमें अतिरुचियाढ़ै।२७
दोहा—गोरोचन सम तन प्रभा, अद्भुत कही न जाइ ।
मोर पिच्छनी भाँति के, पहिरे वसन बनाइ ॥२८॥

दोहा–देह प्रभा हरताल रंग, वसन दाडिमी फूल ।
अधिकारिन सबकोमकी, नाहिन कोऊसमतूल॥५७॥

॥ तिनकी सखी ॥

चित्र लेखा अरु मोदिनी, मंदालसा प्रवीन ।
मद्रतुङ्गा अरु रसतुङ्गा, गान कला रसलीन ॥५८॥
सोभित सखी सुमंगला, चित्रांगी रस ऐन ।
ये तो रहै सब बात में, सावधान दिन रैन ॥५९॥
रंग देवी अति रङ्ग बढावै ❀ नखसिखलौंभूषनपहिरावै ॥६०॥
भांति भांति के भूषन जेते ❀ सावधान ह्वै राखत तेते ॥६१॥
कमल केशरी आभा तनकी ❀ बड़ीसक्ति हैचित्रलिखनकी॥६२॥
दोहा—तन पर सारी छवि रही, जपा पुहुप के रंग ।
ठाढी मन अभरन लिये,जिनके प्रम अभंग ॥६३॥

॥ तिनकी सखी ॥

कलकंठी अरु ससि कला, कमला अति ही अनूप ।
मधुरिंदा अरु सुन्दरी, कंदर्पा जु सरूप ॥६४॥
प्रम मंजरी सौं कहै, कोमलता गुन गाथ ।
एतो मन रस में पगी, रंग देवी के साथ ॥६५॥
सखी सुदवी अतिहि सलोनी ❀जाहि अंग नाहिनै थोनी॥६६॥
सुठ सरूप मोहन मन भावै ❀रुचिसौं सब सिंगार बनावै॥६७॥
कच कबरी गूँथति है नीकी ❀अतिप्रवीन सेवा करै जीकी ६८
अंजन रेख बनाइ सवारै ❀ रीझि मुकरलै प्रिया निहारै ।६९।
मागे सुवा पढावत नीके ❀ सुनिसुनिमोदहोतमयहीके ॥७०॥
दोहा–अति प्रवीन सब अंग में, जानत रस की रीति ।
पहिरे तन सारी सुही, बढ़वत पल पल प्रीति ॥७१॥

जहाँलगि रसपीवे के आही ❀ मेलि सुगध बनावे ताही ।४२।
जेहिछिन जैसी रुचिपहिचाने ❀ तबहीआनिकरावति पाने ।४३।
दोहा—कुकुम कोसो बरन तन, कनक बसन परिधान ।
रूप चतुरई कहा कहौं, नाहिन कोऊ समान ॥४४॥

॥ तिनकी सखी ॥

सखी रसालिक तिलकनी, अरु सुगंधिका नाम ।
सौर सेन अरु नागरी, रामिलका अभिराम ॥४५॥
नागवेंनिका नागरी, परी सबै सुख रंग ।
हितसौं ए सेवा करैं, श्रीचित्रा के संग ॥४६॥
तुङ्ग विद्या सब विद्या माहीं ❀ अतिप्रवीन नीकेअवगाहीं ।४७।
जहालगि बाजे सबै बजावें ❀ रागरागिनी प्रगट दिखावें ।४८।
गुनकीअवधिकहतनहिंआवे ❀ छिनरलाछिलीलाललड़ावे ।४६।
दोहा—गौर बरन छवि हरन मन, पंडुर बसन अनूप ।
कैसे बरन्यो जात है, यह रसना करि रूप ॥५०॥

॥ तिनकी सखी ॥

मजु मेधा अरु मेधिका, तन मध्या मृदु बैंन ।
गुनचूडा वारुमदा, मधुरा मधुमें ऐन ॥५१॥
मधु अस्पंदा अति सुखद, मधुरेछना प्रवीन ।
निसि दिन तौ ये सब सखी, रहत प्रेम रस लीन॥५२॥
इन्दुलेखा अति चतुरस्यानी ❀ हितकीरासिदुहुनिमनमानी ।५३।
कोक्कला घातनि सब जाने ❀ काम कहानी सरस बखाने ।५४।
बसी करन निज प्रेमके मंत्रा ❀ मोहनविधिकेजानतजंत्रा ॥५५॥
छिनरतेमन्त्र पियहि सिखावें ❀ तातेंअधिकप्रिय।मनभावें ॥५६॥

कहुँ अजन कहुँ पीक रही फनि❀कैसे कही जात है सो छवि।९०।
हार वार मिलि के अरुझाने❀निसिकेचिन्हनिरखिमुसिकाने ९१

दोहा–निरखि निरखि निमि के चिन्हन, रोमाचित ह्वै जाहि।
मानों अकुर मैन के, फिरि निपजे तन माहिं ॥९२॥

अद्भुत मिश्री मेलि मलाई❀अधिक हेतसोंआनि खवाई।९३।
चितवतजुगल वदननिधुओरी❀मानोरसभरीत्रिनिपत्रकोरी ।९४।

दोहा–कीनी मगल आरती, मंगल निधि सुकुवार।
मगल भयो सब सखिन के,यह रस प्रेम अधार॥९५॥

सखी एक ल्याई पिकदानी ❀ एक लिये झारी भरि पानी।९६।
रतन खचित कचन की चौकी ❀ झलमलातसोभा रवि सौंकी ९७
कोमल कुममनि गदी बिछाई ❀ अति सुगद सौंधे छिरकाई।९८
तेहि उपर बैठे दोऊ प्यारे ❀ जल सुगध सों बदन पखारे।९९
सहचरि एक मुकर लिये ठाढ़ी ❀ झलकनसोभासतगुनबाढी१००
तेहि छिन कछु सेवे का लाई ❀ मादिकमधुर बात मनभाई१०१

दोहा–बहु निधि मेवा मधुर फल, कह्यो दूध इक्सार।
लै आई निज सहचरी, जानि कलेऊ वार ॥१०२॥

हँसिहँसिनवलजुगलकछुलयो ❀ सखियनि के मनआनदभयो१०३
ललिता पान खवावत खरी ❀ निरखतछवि आनंदरसभरी१०६
न्हाइ प्याइके जबमनमान्यो ❀ मजनकोहितमनहिनिठान्यो १०४
काहू सखी तब जल आन्यो ❀ काहू घोरि उबटनो बान्यो१०५
एक फुलेल अरगजा ल्याई ❀ टहल हेत सब फिरतहैं धाई१०६
दंपति सुखके रस में भीनी ❀ छिनछिनतिनकी प्रीतिनवीनी१०७
एक रस भीनी रहै नितही ❀ जानतनहिनिसिबासर कितही१०८

॥ तिनकी सखी ॥

कावेरीरु मनोहरा, चारु कवरि अभिराम ।
मंजु केशी अरु केसिका,हार हीरा छवि धाम ॥७२॥
महा हीरा अति ही बनी, हीरा कंठ अनूप ।
उपमा कछु नहिं कहि सकत, ऐसी सबै सरूप॥७३॥
कहे गौतमी तंत्र में, इन सखियनि के नाम ।
प्रथम बदि इनके चरन, सेवहु स्यामा स्याम ॥७४॥
जो यह टहल सखीनु की, रहत विचारत नित्त ।
सो पावै ध्रुव प्रेम रस,तेहि सुख सों र गे चित्त॥७५॥

सबैसखीइहिविधिज्यों ज्यावैं❀छिनछिन प्रतिनवलाललड़ावैं ७६
फूलनि कु ज अनूप बनावैं ❀ लै गुलाब दल सेज रचावैं॥७७।
तापर लाल लाड़िली सोहैं ❀ अतिआसक्ति परस्पर जोहैं।७८।
चितवनिमुसिकनिअतिरसभीनी❀मैंनअनीमनो आगेकीनी ।७६।
आलिंगन चु बन अनुरागे ❀ अद्भु त सुरत प्रेम रसपागे।८०।
बिच बिच बतिय कहतसुहाई❀ऐं सियनिसोंअखियांअरुझाई८१
तेहि सुख रङ्गमें रैंन बिहानी ❀ रतिविहारकीतृपितनमानी ॥८२
अंग अग ऐसे लपटानें ❀ गौरस्यामतहाँजात नजानें ।८३।
दोहा—रैं नि घटी रुचि नहिं घटी, अद्भु त जुगल विहार ।
तन मन अरुझे लेत हैं, अधर सुधारस सार ॥८४॥

भोर भये सहचरि सब आई ❀ यह सुख देखत करत बधाई॥८५॥
कोऊ वीन सार गी वजावै ❀ कोऊ राग बिभासहि गावै॥८६॥
एक चरन हित सों सहिरावै❀ एक वचन परिहास सुनावै ॥८७॥
उठि बैठे दोऊ लाल र गीले❀बिथुरी अलक्सबैंअगढीले॥८८॥
घूमत अरुन नैंन अनियारे ❀ झूपन बमन न जात सम्हारे।८६।

दोहा–विज्ञन कर पल्लवनि, छुवत छवीली बाल।
तहाँ ते रुचिसों लेत हैं, नवल रँगीले लाल ॥१२७॥

चंपक लता चोंपसों जेवावें ❀ ललितानातनिरुचिउपजावें १२८
पीत भात सिखरन सुठिगादी ❀ ग्रासलेत अतिहीरुचिबाढी १२९

दोहा–हँसिहँसि दोऊ नागर नवल, ग्रास परस्पर लेत।
ललितादिक निज सखिनुके, नेननि को सुख देत ॥१३०॥

दूध पना सरनत रुचि कारी ❀ बहुत भांतिसों तरु सवारी १३१
हितकीनिधिसहचरीचहूँओ रें ❀ कौरकौर प्रति सबै निहोरें १३२
हँसि २ जेवत हैं पिय प्यारी ❀ तेहिछिनकौसुखकहोक्हारी १३३
मन जाने के दोऊ नेना ❀ रसना पै कछु कहत बनेंना १३४
यह आनन्द कह्यो नहि जाई ❀ रमना कोटि होहिजो माई १३५
तब सखियनआचमनदिवायो ❀ सबके नेंन प्रानसुखपायो १३६
ललिता रचिरचि बीरीकीनी ❀नवलकुँवरिअरुकुँवरहिदीनी १३७

दोहा–नेंन दीप हिय थार भरि, पूरि प्रेम घृत ताहि।
लीने हितके करनि सों, आरति करत उमाहि ॥१३८॥

सोप्रसादसबमखिगनि लीनों ❀ अपनोंसेसप्रभुवहि कछुदीन १३९
इहि विधि के जो भोग लगावें❀ ताकी चरन रेंन ध्रुव पावे १४०

दोहा–सखियन अद्भुत सेज रचि, नव निकुञ्ज रस ऐंन।
तहा रसिक दोऊ लाड़िले, करत सुखद सुखसेन ॥१४१॥

उरमों उर नेंननि मों नेना ❀ मनमोंमन बैननिसों बेना १४२
दसननि अधर रही धरिप्यारी❀ करुनारसकीनिधिसुकुमारी १४३
सुखको सिंधु परे पिय गहरे ❀ रतिविनोदकीउठत हैलहरे १४४
ललितादिक तेहि सुखें निहारें ❀ प्रेम विवस मानसनिको वारें १४५

* सवैया *

सखी चहूँ कोद फिरें चकडोरी सी सेवा को चाव वढयो मन माही। सौंज सिंगार नई नई आनत वानत नेकहूँ हारत नाही॥ प्रेम पगी तेहि रंग रंगी निरखें तिनको तनकों न अघाही। और सवाद लगे ध्रुव फीके रहे विवि रूप के छत्र की छाही॥१०६॥

रतन कुञ्ज में आये दोऊ ❀ ललितादिक विन तहां न कोऊ११०
दोहा–चांपि चुपरि मृदु सेज पर, न्योछावर करि प्रौंन।
अति सुगंध जल उस्न सों, करवावत स्नान॥१११॥
अद्भुत अग अंगोछे जब ही ❀ कोटि आरसी वारी तबही ११२
पुनि सिंगार कुञ्ज में आये ❀ मन भाये सिंगार कराये।११३
मन की रुचि लै सेवा करही ❀ छिनछिन प्रतिऐसेअनुसरही११४
फूलन आसन रचे वनाई ❀ भोजन कुञ्ज में बैठे जाई।११५
मनि मय चौकी राखी आनि ❀ हेमथार तापर धरयो वानि ११६
झलकि रहे बहु कनक कटोरा ❀ विञ्जन भरि२धरे चहूँओरा ११७
मध्य अनूप खीर अति नीकी ❀ भरी कटोरी सौंधे घी की ११८
उज्वल मिश्री पीस मिलाई ❀ रसना स्वादहिकहिनसकाई ११६
एक दूध के बहुत प्रकारा ❀ कहिनसकततिनकेविस्तारा १२०
त्रिविध भाँति पकवानबनाये ❀ तेसबनवलजुगल मनभाये १२१
मोहन भोग सरस घी माही ❀ अतिकोमलउपमाकछुनाही १२२
पतरीं रोटी घी सौं सनी ❀ वरी फुनौरी अतिही बनी १२३
खाटे चरपरे वरे सलोने ❀ घृत में नीके वने निमोने १२४
पापर कचरी गीचे नीके ❀ पावत रुचिसों प्यारे जीके १२५
सालन साक और तरकारी ❀ रसना स्वादहि लेत न हारी १२६

कोटि कलपजो यह सुख देखे❀रुचिन घटेछिनकी समलेखे १६७
दोहा–अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी वनाय।
स्वावत प्यारेलाल कों, पहिले प्रिया चखाइ ॥ १६८ ॥
रजनी मुख सोभा अति वढ़ी❀पानिपमैंन दुहूँनि मुखचढ़ी१६६
हुलसि हिये आनन्द रस भरे❀चाह चोंप रतिरङ्ग में परे १७०
सैन समय की विरिया जानी❀भोजनसोंजतबहिकछु आनी१७१
दूध भात मधु अति रुचिकारी❀जलसुगन्धभरिआनी झारी १७२
खाइ प्याइके वीरी दीनी❀प्रेम प्यारसों आरति कीनी १७३
मदन रंग नेंननि झलकान्यो❀मनकोहेतसखिनुजवजान्यो १७४
कल्प द्रुमनि कल कुंज सुहाई❀षोड्स द्वार वने तहाँ माई १७५
इक इक मनि की आभाऐसी❀कोटि दिवाकर प्रभा न तैसी १७६
कोमल कमलनि के दल लीने❀अति सुगन्ध सोंधे सों भीने१७७
रचि विचित्र वर सेज वनाई❀निरखत नेंन मेंन अरुझाई १७८
दोहा–सेज सुखद रचना रची, लै मृदु कुसुमनि मोद।
तेहि ऊपर सुकुँवार दोऊ, करत विलास विनोद ॥१७९॥
सोंधो पान सुगध मधु, दूध सो मिश्री आन।
भरि भरि भाजन हेम के, सखियनि राखे वांन ॥१८०॥
सबै सोंज ग्रह धरी वनाई ❀आपुन ललितन ओटरहि जाई१८१
तब दोऊ वतियनि के रस परे❀आलिंगन चुम्बन अनुसरे १८२
रूप मदन गुन नेह के ऐ ना❀तन मन अरुझि नेंन सेंना१८३
जो रस उपजत है दुहुँ माँही❀ललितादिकनिरखतनअघाँहीं१८४
यह रस तो समुझै नहिं कोई❀जाने सो सो इनको होई १८५
दोहा–रूप तरगनि में परी, अखियाँ मीन अनूप।
सुरत सिंधु सुख झिलि रहे, साँवल गौर सरूप ॥१८६॥

दोहा–मदन मोद आनन्द मद, मते रहत निशि भोर।
कुसल सुरत रस सूर दोऊ, नागर नवल किशोर ॥१४६॥
जबही घरी चार दिन रह्यो ❀ प्रीतम प्रान पियासोंकह्यो१४७
चलहु कुँवरि देखें वनराई ❀ फूलन सोभा कही न जाई१४८
फूली लता बढ़ी तरु छांही ❀ झूमिरहीजमुना जलमाही१४६
सिमटी आइ सखी हितकारी ❀ एक वैसअतिही सुकुँवारी१५०
विविधिभातिमधुभोजनआन्यो❀सब सुगंधसोबास्यो पान्यो१५१
जोई भायो सोई कछू लीनो ❀पुनिवन देखनको मनकीनो१५२
दोहा–भीने अति रस रंग में, नवल रंगीले लाल।
वाहांजोरी चलत दोऊ, मत्त मरालनि चाल ॥१५३॥
जिहिं द्रुम वेलि फूल तन हेरें❀सींचतमनो अनुराग सोंफेरें १५४
निकसत हैं घन वीथिन माहीं❀नवलनिचोलनिपरसतनाहीं १५५
वशी वट तट रविजा तीरे❀शीतल मन्द सुगन्ध समीरे१५६
उज्जल चौक अधिक झलकाई❀मानो सोभा आनि विछाई१५७
सखियनि सभा तहां सुखदाई❀सुखकी सींव कही नहि जाई१५८
मध्य महा मन मोहन माई❀आनन्दछवि सनपर वरपाई१५६
वैठे दोऊ ग्रीवां भुज मेले❀नैननि खेल परस्पर खेले१६०
अपने अपने गुनहि दिखावें❀निर्त्तत एक एक मिलिगावें१६१
दोहा–सहज रूपके चन्द द्वै, सखिन पुञ्ज चहुँओर।
मानो पीवत छवि सुधा, सनके नैंन चकोर ॥१६२॥
सखी सबै चहुँओर सुहाई❀निरखत फूलि अंगनि माई१६३
एक सारङ्गी वीन सुनावे❀एक मृदङ्ग अनूप वजावे१६४
तिरप लेत झलकत तन ऐसे❀बहुत रंग की दामिन जैसे १६५
राग रागिनी मूरति धारे❀सखी रूप सेवत सुखकारे १६६

कोटि कलपजो यह सुख देखे❀रुचिन घटेछिनकी समलेखे १६७

दोहा—अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी वनाय।
स्वावत प्यारेलाल को, पहिले पिया चखाइ ॥ १६८ ॥

रजनी मुख सोभा अति वढ़ी❀पानिपमैंन दुहूँनि मुखचढ़ी१६६
हूलसि हिये आनन्द रस भरे❀चाह चोंप रतिरङ्ग में परे १७०
सैन समय की विरिया जानी❀भोजनसोजतवहिकछु आनी१७१
दूध भात मधु अति रुचिकारी❀जलसुगन्धभरिआनी झारी १७२
स्वाइ प्याइके वीरी दीनी❀प्रेम प्यारसों आरति कीनी १७३
मदन रग नैननि झलकान्यो❀मनकोहेतसखिनुजवजान्यो १७४
कल्पद्रुमनि कल कुंज सुहाई❀षोड़स द्वार वने तहाँ माई १७५
इक इक मनि की आभाऐसी❀कोटि दिवाकर प्रभा न तैसी १७६
कोमल कमलनि के दल लीने❀अति सुगन्ध सोंधे सों भीने१७७
रचि विचित्र वर सेज वनाई❀निरखत नैंन मैंन अरुझाई १७८

दोहा—सेज सुखद रचना रची, ले मृदु कुसुमनि मोद।
तेहि ऊपर सुकुँवार दोऊ, करत विलास विनोद ॥१७६॥
सोंधो पान सुगध मधु, दूध सो मिश्री छान।
भरि भरि भाजन हेम के, सखियनि राखे वान ॥१८०॥

सवे सोंज प्रह धरी वनाई❀आपुन ललिन ओटरहि जाई१८१
तव दोऊ वतियनि के रस परे❀आलिंगन चुम्वन अनुसरे १८२
रूप मदन गुन नेह के ऐना❀तन मन अरुझि नैन सों नैना१८३
जो रस उपजत है दुहुँ मोंही❀ललितादिक निरखतनअघाँहीं१८४
यह रस तो समुझे नहिं कोई❀जाने सो सो इनको होई १८५

दोहा—रूप तरगनि में परी, अखियाँ मीन अनूप।
सुरत सिंधु सुख झिलि रहे, साँवल गौर सरूप ॥१८६॥

सेज सुरत सरिता मनो, मज्जत दोऊ सुकुवार।
विवस लाल पैरत फिरें, कुच तुम्बन आधार ॥१८७॥
अद्भुत रस मुक्तावली, मण्डल केलि विहार।
हित ध्रुव जो गावे सुनें, पावे प्रेम अपार ॥ १८८ ॥
साँझ भोर लो ऐसेही, भोर साँझ लों जानि।
हित ध्रुव यह सुख सखिन कों, निसदिन उरमें आनि।१८९।
दोहा चौपाई एक सत, नव्वें अति अभिराम।
हित ध्रुव रस मुक्तावली, रसिक जननि विश्राम ॥१९०॥
॥ इति श्री रसमुक्तावली लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥१८।

॥अथ रस हीरा वली लीला प्रारम्भः ॥

दोहा-प्रथमहिं श्रीगुरु कृपातें, यह उपजी उर आनि।
वरनो रसहीरावली, जुगल केलि रसखानि ॥१॥
रङ्ग भरे दोऊ लाल रंगीले❀रतिके रम पग रहे रसीले ॥२।
अति सुदेस वृन्दावन माँहीं❀नवल प्रमरस दिनवरपाहीं। ३।
सुख अनूप नव कुञ्ज सुहाई❀छविके फूलनिसों जनु छाई।४।
मृदु मृदु दल जलजनिकेमीने❀अति सुगन्ध सोधेसों भीने।५।
रचि विचित्र सुखसेज बनाई❀तेहि ऊपर बैठे सुखदाई। ६।
जहाँ तहाँ डोलत मोर मराला❀शुकपिकबोलतबचन नरसाला।७।
फूलनिकी छवि बनत निहारें❀होत मधुर मधुपनि गुंजारें।८।
मारुत त्रिविध बहैरुचि लिये❀मदनमोद उपजावत हिये।९।
हँसत परस्पर आनन्द रासी❀सुखफूलनिकी मनो बरपासी१०
दोहा-भीने नेह सुरङ्ग रङ्ग, अति उदार सुकुँवार।
प्यारी तन अति प्यारसों, रहत निहार निहार ॥११॥
देखी प्यारी अति रस ढरी ❀ तबहिलालइकविनती करी।१२

हाहा प्रिये वात इक पाऊँ ❀रचि अगनि सिंगार कराऊँ ।१३
आतुरता हियकी जब जानी❀पियतनचितैकछुकमुसिकानी १४
इहि विधि की जब अज्ञा पाई❀आनन्द फूलन उरहि समाई १५
मेलि फुलेल संवारत वारनि❀छविसोंराजतनित्य विहारनि १६
चिकुर चंद्रिका रुचिर बनाई❀गुहत गहर सों रहे लुभाई १७
कैसे कहों छवि जो उर माहीं❀इन नैनिन के रसना नाहीं १८
श्याम सुदेश सच्चिक्कन सो है❀लौं वे कचगू थत मन मोहैं १६
जानो कमल बहुत इक ठौरें❀पकति बाधि मृङ्गमनोदौरें ।२०
दोहा-गुननिधि अङ्ग सुवासनिधि, नवल छबीली नारि ॥१ ।
सौरभ की मूरति मनो, रची है रूप सवारि ॥ २१॥
सीस फूल छवियों उर आई❀रवि सुहाग कों प्रगट्यो माई २२
मनिमय बेंदी रुचिर बनाई❀रूप दीप मनो सोभा पाई २३
भाइनि भाइ भौंह सुकुवारी❀पिय पुतरी जहाँ रहे रखवारी२४
श्रवननि तरल तरौना झलकें❀निरखत लाल परतनहिं पलकें२५
पतरी अलक एक छुटिआई❀पियमनकौंजनौ पासिचलाई २६
वक विशाल नैन अनियारे❀उज्वल अरुन सहजकजरारे २७
सुठि सुढार पानिपमित नाही❀चचल अ चल में न समाही २८
नासा वेशरि जगिमगि रही❀छविकी सींव परतनहि कही २६
अधर निंव बधूक पवारी❀दमनि झलकपर दामिनिवारी३०
दोहा-अति अनूप वर चिबुक पर, श्याम विन्दु सुखदेत ।
मानौ मोहन मन मधुप, वदन क ज रस लेत ॥३१॥
नीलावर छवि ऐसी पाई ❀रैंनि मनो दिनके सगआई ३२
तामें अङ्गिया अरुन सुधारी❀याते उपमा और विचारी ३३
मनो सिङ्गार मेरु रह्यो छाई❀जनुअनुरागधरयोनिज आई ३४

कुन्दन की दुलरी वनी गरे ❀ फवी पात विवि मोतिनुलरे ३५
रतननि खच्योपदिकअतिसो है❀ ताकी दुतिपरदिनकर को है ३६
भुजमृनाल छवि उरज वखानो ❀ रसफलरूप लतालग मानो ३७
चूरी श्याम करनि फवि रही ❀ तिनकी उपमा पावत नही ३८
पहुचिनि के लटकन वने ऐसे ❀ भृमतभँवर कमलनपर जैसे ३९
गोरी अगुरिनु की छवि जो है ❀ मिहदीरंगभीनी अतिसो है ४०
दोहा–चन्द्रहार छवि कहा कहौं, पानिप मोतिनु हार ।
　　मनो रूप अरु प्रेम की, आइ मिली द्वै धार ॥४१॥
सरसी नाभि सुदेश सुहाई ❀ पियमन हंसवसत तहाँमाई ४२
त्रिवली प्रीतम प्रान अधारा ❀ मनो रूप रस गुनकी धारा ४३
रोंम राज सोभा यों दीनी ❀ मनो रेखा रतिपति की कीनी४४
सूक्ष्म कटि पृथु जघन सुढारा ❀अतिरोचिककिंकिनीझनकारा४५
जेहर सुमिलि अनूप विराजे ❀ नूपुर अद्भुतरागिनी वाजे ४६
तिनपर वशी वारत प्यारो ❀ हितभुवरीझि अपनपोहारो ४७
चरन कमल जावक रगभीनें ❀ प्रीतम चित्र प्यारसों ,कीनें ४८
परम रसिक रस में सहरावत ❀ कबहूँ ले हिय नैंनलगावत ४९
पियमन वसत रहत तेहि ऐ ना ❀ अटक्यो नागर नैननि सैंना ५०
कोक कला वरनी है जेती ❀ पिया चरन सेवत रहै तेती ५१
नखसिखलोंअतिकुँवरिसिंगारी❀ मानो सोभा की फुलवारी ५२
देखि छवीली भाँति लुभानें ❀ लालतहाँ विनमोल विकानें ५३
दोहा—वादी छवि सव भूषननि, अद्भुत भाँति अनूप ।
　　गहने को गहनो भयो, नवल नागरी रूप ॥५४॥
यातें अंगनि भूषन वाने ❀ ताके देत दोऊ उरधाने ५५
नितवत लाल निवस ह्वै जाई ❀ यातें राखे अंग दुराई ५६

दूजे सखियनि यों पहिरावें ❀ सेवा हितके सुखहि वढ़ावें ५७
अंगनि के भूषन यों भये ❀ मनो मनिन के ढपना दये ५८
रूप माधुरी सहजहि राजे ❀ छिन २ ओरै ओर विराजे ५९
दोहा—ऐसो रूप प्रकास तहा, नखकी सम नहिं भाँन ।
तेहिठौं उपमा दीप की, धरिवौ वड़ौ अयान ॥ ६० ॥
जहालगिदुतिअरुकातिवखानी❀ कुँवरिअगदेखत सकुचानी ६१
छवि ठाढ़ी आगे कर जोरे ❀ गुनकी कला चौर सिरढोरें ६२
चित्र भई तेहिठौं चतुराई ❀ पंग भई चितवत चपलाई ६३
ब्है न सकत अङ्गनि मृदुताई ❀ अतिसुकुवारकु वरि तनमाई ६४
यातें उपमा कछु उर आई ❀ वात खोज विन जातनपाई ६५
रति इक हेम छविहि उरआनें ❀ ताहि समुझि सुमेर पहिचानें ६६

दोहा—अङ्ग काति की छवि छटा, ताकी छटा सुदेस ।
उपमाँ सव जग की भई, तेहि सोभा कौ लेस ॥६७॥
सहज माधुरी अङ्गनि वरषे ❀ पल पल प्रीतम मन आकरषे ६८
देखत अद्भुत भाँति अनूपहि ❀ पियमन परयो प्रेमके कूपहि ६९
चितै रूप गुन अलक निकारो ❀ हितसों लाइ लयो उर प्यारो ७०
अधरनि रससींच्यो जव प्यारी ❀ तनकी सुधि जन जाइसभारी ७१
वढ़यो केलि रस सिंधु अभङ्गा ❀ हाव भाव तहाँ उठत तरङ्गा ७२
पायो रूप अंवु निधु ऐंना ❀ चचल मीन फिरत तहाँ नैना ७३
रग भरे पट अङ्ग विसारे ❀ रस विनोद भीजे दोऊ प्यारे ७४
अतिविचित्र सवही विधि दोऊ ❀ रस विहारमें घटि नहिं कोऊ ७५
निया कोक कला जिती कही ❀ तेऊ तहाँ भूलि सव रही ७६
तेहि सुख रंग परे सुनि सजनी❀ जानतनहिकितवासररजनी ७७

दोहा—मिटन न तृषा मनोज की, करत मधुर रस पान।
जैसे निवरत खेल नदि, जहाँ खिलार समान ॥७८॥
हाव भाव हीरा भये, हेम नील मनि अङ्ग।
जरे जु कुन्दन प्रेम भुव, पानिप झलक अनङ्ग ॥७९॥
पटरितु बरनो जुगल हित, बहु विधि करत विहार।
रितु रितु को सुख कहौं कछु अपनी मति अनुसार ॥८०॥

॥ सवैया ॥

खेलत कामिनी कंत बसंत बढ्यो मन मोद विनोद अनंगा।
तैसो रह्यो बन फूलनि फूल रगे दोऊ प्रीतम प्रेम सुरङ्गा॥
प्रिया मुख चन्द्र की ओर किशोर चकोर भये पिवै रूप तरङ्गा।
सखी चहूँ कोद विलोकत हैं भुव आनन्द को सुखसार अभंगा॥८१

॥ चौपाई ॥

रित बसंत आई सुख दाई ❀ भयो आनंद सबनिमन भाई ८२
हरितु अरुन दल अकुर नये ❀ जहाँ तहाँ फूल सुरंगित भये ८३
नवल जुगल सुखहेत विचारयो ❀ मानो वृन्दा विपिनसिंगारयो ८४
फूली वेलि तरुनि लपटानी ❀ मानोतिय पियसौं रतिमानी ८५
तन मन फूल कही नहि जाई ❀ फूले फूल जहाँ तहाँ माई ८६
शुक पिकबानी सुखसौं साँनी ❀ मानो कहत हैं मैंन कहानी ८७
इक द्रुम तो सब फूलनि छाये ❀ मानो अनत वितान तनाये ८८
सुरङ्ग सुगध गुलाल उड़ायो ❀ मनो अनुराग सबनिपरछायो ८९
तेहिठाँ खेल बढ्यो अति भारी ❀ चहूँदिससखीमध्य पियप्यारी ९०
छिरकतहँसत अधिक सुख देही ❀ बिचबिच अधर सुधारसलेही ९१
कुम्कुम अरगजा के रस भीने ❀ रस बिहार में परम प्रवीने ९२
कोमल सेज रची सुख सीवाँ ❀ तापर राजत दै भुज ग्रीवाँ ९३

झूलत दोऊ मिलि सुरत हिंडोरे ❀ नवल चपल स्याम तन गोरे ९४
चितै रहत प्यारी मुख ओरे ❀ माइनि भरी नैंन की कोरे ९५
छिनछिन प्रीतमको चित चोरें ❀ बाजत किंकिन थोरे थोरें ९६
रति बिलास रस ऐसी कीनों ❀ मनमथ कोटिमान हरिलीनो ९७
दोहा–रूप सखी को धरे ध्रुव, सेवत दिन ही बसन ।
छिनि छिन रुचि ले दुहुँनि की, झूलत झूल अनत ॥९८

॥ सवैया ॥

ग्रीषम की रितु जानि सहेलिनु कज कपूर की कुञ्ज बनाई । चंदन चद के खभ रचे दल कोमल रङ्ग सुरङ्गनि छाई ॥ उज्जल सेज सुरङ्ग सुहावनी वारि गुलाब सों ल छिरकाई । राजत हैं ध्रुव लाड़िली लाल विनोद को मोद बढ्यो अधिकाई ॥९९॥

॥ चौपाई ॥

आई ग्रीषम सोभा ऐंना ❀ अगनिछविदेखतभरि नैंना १००
झीने वसन झलक अति तनकी ❀ पूरन भई आस सब मनकी १०१
उज्वल फूलनि कुंज सुहाई ❀ उज्वल कोमल सेज रचाई १०२
फूलनि के रचि हार बनाये ❀ नै कपूर जल सों छिरकाये १०३
जहाँतहा उज्वल बसन बिछाये ❀ जलजनिके भूषन पहिराये १०४
दोहा–उज्वलता उज्वल सहज, उज्वल भाँति अनूप ।
बैठे उज्वल सेज पर, उज्वल प्रेम सरूप ॥ १०५
पुट कपूर दे चन्दन गारयो ❀ नव गुलाब ले तामें डारयो १०६
सबै सखी पहिरें मित सारी ❀ तैसेई भूषन अति रुचिकारी १०७
बहत है सीतल मंद समीरा ❀ मीरो अदन पान घर नीरा १०८
दोहा–सियराई सेवा करें चितवनि नैंननि कोर ।
खान पान सीतल सजें, लिये रहत निसि भोर ॥१०९

॥ सवैया ॥

स्याम घटा उमही चहूँ ओरनि पावस की रितु आई सुहाई ।
नाचत मोर मयूरी बिनोद सों आनंद की वरषा बरषाई ॥
कौंधे जहां तहां दामिनि कामिनि प्रीतम अंक रही दुरिमाई ।
कैसे कही ध्रुव जात है सो छवि देखत नैंन रहे हैं लुभाई।११०

॥ चौपाई ॥

पावस रितु जव आई तुलानी ❀भांति अनूप दुहुँनिमन मानी१११
स्याम सचिक्कन घटा सुहाई ❀उमड़िघुमड़ि चहूँ दिसतेआई११२
चमकत चपला कही न जाई ❀सकुचि कुँवरि पिय उर लपटाई ११३
गरजनघनसुनिपवनझकोरनि ❀आनंद बढ़यौमोर अरुमोरिनि ११४
रंग कुञ्ज में सेज सहानी ❀रचिरचि सखियनिहेतसौंवानी ११५
सोभित भूपन बसन सहाने ❀दूलहु दुलहिनि रंग में सानें ।११६
नवकिशोर मन मन अनुरागे❀मदन मोद आनद रस पागे ॥११७
रिमिझिमि रिमिझिमि बूंदें परें ❀रंग हिंडोरे झूलत खरें ।११८
तेहि छिन कुँवरिकछुकमन डरें ❀लपटि जात प्रीतम के गरें ॥११९
तिनके छल बल कहे न जाहीं ❀अतिविचित्रदोऊविद्यामाहीं १२०
दोहा—कुँवरि रूप वरषत दिनहिं,पिय चातिक न अघात ।
कहा कहौं या प्रेम की, सुनि ध्रुव उलटी बात ॥१२१॥

॥ सवैया ॥

खेलत रास विनोद विहार निसा उँज्यारी महा सुख दैंनी ।
सखीन के मंडल मध्य बने दोऊ गावत सुन्दर सारंग नैंनी ॥
रागजम्यो बजे भूपन अंगनि चंदहि भूली है आपनी गैंनी ।
सखी रही भीजि तहां रंग में ध्रुव रैंनि भई मनो प्रेम की रैंनी॥१२२

॥ चौपाई ॥

सुखद सरस रितु सरद सुहाई ❀ सखियनि मानौंनिधिसीपाई१२३
फूले नील कमल सित राते ❀ भ्रमत मधुप सौरभ रममाते१२४
कुञ्ज कुञ्ज गह्वर वन खोरी ❀ देखतफिरतकिशोरकिशोरी१२५
जहा तहां स्वच्छ भई धर ऐसी ❀ कीनी सिकल आरसी जैसी१२६
वनकी कांति कहांलों कहिये ❀ सोभा देखि चकितह्वै रहिये१२७
रैंनि उंज्यारी देखि विहारी ❀ रच्यो रास अतिहीसुखकारी१२८
सेज मडल मनि दीप विराजे ❀ अगनि भूपन वाजे वाजे १२६
पलक तार भौंहैं भई गाडनि ❀ निर्त्तत पुतरीसहज सुभाइनि१३०
सोभित अञ्जनरेख उपगा ❀ मनो कटाक्ष तहांमधुरमृदंगा१३१
चितवनिसुलपचलनअंगभ्र गा❀ कोक कलानि के उठत तरगा१३२
हाव भाव वहु विधि दिखरावत ❀ चुम्वन दान रीझ तहां पावत१३३

दोहा—रति विहार कौ रास दोऊ, खेलत परम प्रवीन ।
कोक कला घातें सहज, छिन छिन उठत नवीन ।१३४।

✻ सवैया ✻

लाड़िली लालहि भावत है सखि आनद में हिमकी रितु आई ।
ऐसे रहे लपटाय दोऊ जन चाहत अङ्ग में अङ्ग समाई ॥
हार उतार धरे सव भूपन स्वादी महा रस की निधि पाई ।
महा सुखको ध्रुवसार विहार है श्रीहरिवंश की केलि लड़ाई ।१३५।

॥ चौपाई ॥

हिमिरितु रंग कह्यौ नहि जाई ❀ लाड़िली लाल रहे लपटाई१३६
तहाँ लागत ऐसी सियराई ❀ चाहत अ ग में अ ग समाई१३७
ज्यों ज्यों प्यारी पिय उरलागें ❀ मनो आनन्द के रसमें पागें१३८

जाकों सोच करत हे मन में ❀ सहजहि बनिआई सोछिनमें१३६
हिमरितु अधिकलाल मनमाई ❀ जिनतों ऐसी वात वनाई १४०
या रितुकों गुन मानत भारी ❀ ऐसे रसिक लालपर वारी १४१
तन मन भये एक रस माही ❀तेहिसुखपरसहचरिबलिजाही१४२
सावधान सब सखी सयानी ❀ हितकी सोंजधरी सब बानी१४३
जेहि जेहि छिन जेंसी रुचिहोई ❀ हितसों आनि सबावत सोई१४४
हितमें हरपि सखी सुखकारी ❀ निरखत प्रीतिलेतबलिहारी१४५
मनकी रुचि लें सेवा करही ❀ सावधान सब ऐसे रहही १४६
अति सुकुँवार किशोर किशोरी ❀ सहजहि बँधे प्रेम की डोरी १४७
ऐसो लालच वढ्यो निहारी ❀ उरते प्रिया करत नहिंन्यारी१४८
अ ग अ ग एसे लपटाही ❀ भूषन हार न वीच समाही१४६

दोहा—अङ्ग अङ्ग सब रहे जुरि, अरु नेंननि सों नेंन।
रीति दुहुँनि की यहे ध्रुव, तबही लों चित चेंन ॥१५०॥

॥ सवैया ॥

ल्याई कछू सियराई सुगन्ध सों वात बहे अतिही सुखदाई।
कोमल फूल दुकूल सुरङ्गनि मञ्जु निकुञ्ज में सेज वनाई॥
बिलास को रमिक करें दोउ हाँसि मना छवि कञ्ज रहे निकसाई।
भोर अली सत आइ जुरी ध्रुव पीवत रूप परागहि माई॥१५१॥

॥ चौपाई ॥

आई सिसिर कछू सियराई ◌ त्रिविधि समीरबहे सुखदाई१५२
मंजुल कुञ्ज में बनी निकुञ्ना ◌ तामें रची सेज सुख पुञ्जा१५३
तापर रसिक रसिकनी माहे ◌ मधुरछबि सखी नेंनभरि जोहे१५४
कबहुँ बातनि क रस परे ◌ कबहूँ लटकि सेनपर ढरे १५५

ऐसी सभा बनी सुखदाई ❀ आनंद हँसि परस्पर माई १५६
दम्पति रुचिलै दिनहिं लड़ावें ❀ हितध्रुवरतिरसमंगलगावें १५७
यह रस प्रेम को सागर आही ❀ मोमति पैरसकै क्यों ताही १५८
जतन अनेक किये नहिं पावें ❀ सिंधु सीप में कैसे आवें १५६

दोहा—मो मति लव त्रिसरेनु सम, सोभा मेरु समान।
या मनके अवलम्ब हित, कही कछू उनमान ॥१६०॥
बरषा ग्रीषम नैंन सुख, सरद बसन्त बिलास।
लपटनको सुख,हिम सिसिर,प्रेम सुखद सबमास ॥१६१॥
रस मे रस हीरावली, पढ़ि है ध्रुव जो कोइ।
प्रम कमल तेहि हीयतें, तबहीं प्रफुल्लित होइ ॥१६२॥
और न कछू सुहाइ ध्रुव, यह जाँचत निसि भोर।
याही रसकी चटपटी, लगी रहौ हिय मोर ॥१६३॥
दोहा कवित्त चौपाई, इकसत साठिरु दोइ।
जुगल केलि हीरावली, हिय गुन माला पोइ ॥१६४॥

॥ इति श्री रसहीरावली लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥११॥

॥अथ रस रतना वली लीला प्रारम्भः॥

दोहा—प्रथम समागम सरस रस, वर विहार के रङ्ग।
बिलसत नागर नवल कल, कोक कलन के अंग ॥१॥
नमित अैंन छवि सींव रही,घूघट पटहि सभारि।
चरनन सेवत चतुरई, अति सलज्ज सुकुँवारि ॥२॥
जो अङ्ग चाहत छुयो पिय,कुँवरि छुवनि नहिंदेत।
चितवनि मुसकिन रसभरी,हरि हरि प्राननि लेत ॥३॥
चितवत ओरें अग पिय,छुयों चहत अंग ओर।
तऊ वनत नहिं चतुरई, कुँवरि चतुर सिरमौर ॥४॥

अलक सँवारन व्याज के, परस्यो चहत कपोल ।
मृदुल करनि डारति झटकि,रसमय कलह कलोल ॥५॥
बातनि लाई लाड़िली,बहु विधि करि छल छन्द ।
सुधि बल के खोल्यो चहत, नागर नीवी बन्द ॥६॥
नागरताई जहा लगि, कीनी नागर जानि ।
रहे दीन ह्वै चितै मुख, हारि आपनी मानि ॥७॥
आतुर पिय रस में विवस, उर अधीर अकुलात ।
कबहूँ गहत हे पगनि को, कबहूँ हाहा खात ॥८॥
यह गति देखत लाड़िली, भई कृपाल तेहि काल ।
हारही रस पाईये, उलटी प्रेम की चाल ॥९॥
नैंन कपोलनि चूं वि के, लये अङ्क भरि लाल ।
अधर सुधारस दै मनों, सींचत मैंन तमाल ॥१०॥
सुरत सिंधु सुखरस बढ़्यो, अति अगाध नहिं पार ।
लाज नेम पट दूरि कै, मज्जत दोऊ सुकुँवार ॥११॥
रस विनोद विपरीति रति, बरपत प्यार का मेह ।
चल्यो उमड़ि भरि नेम की, तोरि मेंड़ जल नेह ॥१२॥
अङ्ग अङ्ग उरझानि की, सोभा बढ़ी सुभाइ ।
मृदुल कनक की वेलि मनों, रही तमाल लपटाइ ॥१३॥
बिच बिच बोलत बैंन मृदु,सुनि सुख होत अपार ।
रोचक रस पोपक सदा, कल किंकिनि झुनकार ॥१४॥
प्रबल चोंप सरिता बढ़ी, कहत बनत कछु नाहि ।
पियहि लाइ कुच घटनि सों, पैरावति तेहि माहि ॥१५॥
अति उदार मृदु चित्त सखी, प्रम सिंधु सुकुँवारि ।
विविध रतन सब अंग जे, देत सँभारि सँभारि ॥१६॥

सुरत स्वाति वरषा मनो,निसि दिन वरसत आहि ।
रह्यौ हारि चात्रिक तहां, तृषा लाल की चाहि ॥ १७ ॥
सुरत रंग रस में कनहू, रसिक विवस ह्वै जाइ ।
करजन नासा पुट चटकि, ललना लेति जगाइ ॥ १८ ॥
ऐसो सुख को रस बढ्यौ, श्रम नहीं जान्यौ जाइ ॥
चाह चौंप रुचि तहां की, लालच चितै लजाइ ॥ १६ ॥
मैंन मनोरथ वेलि वढ़ी, सोभा चढ़ी अपार ।
मन न घटत तनहू नहीं, अटके सुरत विहार ॥ २० ॥
सुरति केलि ऐसी बनी, मानों खेलत फाग ।
हाव भाव सौंधौ भरयौ, मुख तँबोल अनुराग ॥ २१ ॥
अति सुरंग सारी सुही, छवि सों रहो झलकाइ ॥
कुंदन वेलि तमाल पर, मनों गुलाल रह्यो छाइ ॥२२॥
चंचल नैंननि की चलनि, पिचकारिनि की धार ।
विवस भये खेलत दोऊ, भीजे रङ्ग सुकुँवार ॥ २३ ॥
श्रम जलकन मुख गोर पर, अलकावलि गई छूटि ।
दरकी सब ठौं कंचुकी, हारावलि गई टूटि ॥ २४ ॥
अलक लटी मुख लाड़िली, प्रीतम प्यार की देह ।
श्रमित जानि अचल पवन, करत रंगे निज नेह ॥ २५ ॥
सिथल भये भूषन वसन, चित्रति पीक सुरङ्ग ।
लिख्यौ पत्र अनुराग मनौं, हारे कोटि अनङ्ग ॥ २६ ॥
अरुन नैंन घूमत वने, सोभा वढी सुभाइ ।
अधरनि रंग मादिक पियौं, सोई रंग झलकाइ ॥ २७ ॥
पीक कपोलनि फवि रही, कहु कहु अजन लीक ।
मनों अनुराग सिंगार मिलि, चित्र वनाये नीक ॥ २८ ॥

निरखत तेई चिन्हनि पुनि, वर्ण्यो चतुर गुन काम ।
गही शरन चरननि तबै, जानि सुखद सुखधाम ॥२६॥
लई लाल जिनकी शरन, कोमल सुरंग सुदेस ।
कछुक कहत हौं जथा मति, तिनकी छवि कौ लेस ॥३०॥
कुँवरि चरन सुख पुंज में, अंबुज छवि हरि लैंन ।
चहु दिसि तापर भ्रमत रहैं, प्रीतम के अलि नैंन ॥३१॥
लाल सखी को भेप धरि, रचि अद्भुत सिंगार ।
प्रेम प्यार के चावसौं, सेवत पद सुकुँवार ॥३२॥
करपर अंचल राखि के, तिन पर चरन अनूप ।
चितवत लीने मुकर ज्यौं, अमित माधुरी रूप ॥३३॥
चूंवत छुवावत नैंन पिय जावक चित्र बनाइ ।
देखि अटपटी प्रेम की, गति नहिं समुझी जाइ ॥३४॥
ते पद सेवत रहत दिन, सहज परयौ यह नेम ॥
चरन चारु कौं हार किय, पिय प्रवीन रस प्रेम ॥३५॥
चरन कंज कुन्दन बरन, झलमलात नख कांति ।
आइ मिली रस करन कौं, मनौ विधुन की पाति ॥३६॥
मनिगन जुत झलकत रहै, पद अंबुज सुख दैंन ।
सहज सुभग रसनिधि सरस, प्रीतम चित अलि ऐंन॥३७॥
सुमन सुखासन सेज पर, लटकी कुँवरि सुभाइ ।
पिय नैंननि के करन सौं, तहाँ पलोटत पाइ ॥३८॥
सब अंग नागर वैस सम, नेह रूप गुन ऐंन ।
पिय अधीर आधीन तहां, बँधे नैंन फंद सैंन ॥३६॥
लोहनि भीने मदन रस, निरखत पानिप अङ्ग ।
कहि न सकत कछु बात पिय, बेपथ भये अग अंग ॥४०॥

लाइ लये हितसों हिये, गहि अधरनि मृदु दन्त ।
मैंन रसासव रह्यो भरि, रोंम रोंम प्रति कन्त ॥४१॥
प्रेम खेल वृन्दाविपिन, नृप दोऊ नवल किशोर ।
प्रेम खेल खेलत जहां, नहिं जानत निसि भोर ॥४२॥
अति स्वादी दोऊ लाड़िले, केलि पुंज सुखरास ।
रीझि रीझि निच वित करत, मधुर मन्द मृदुहांस ॥४३॥
ज्यों ज्यों मैंन तरङ्ग उठैं त्यों २ मुख छवि कांति ।
कहा कहौं रुचि चाहकी, छिन छिन नव भाँति ॥४४॥
श्रम जल पीक सुरग कन, झलकत अमल कपोल ।
सुरत सिन्धुके मथत मनो, प्रगटे रतन अमोल ॥४५॥
यह सुख देखत सखिनुके, बाढ़्यो अति अनुराग ।
हितसों देत असीस सव, अविचल कुँवरि सुहाग ॥४६॥
रूप मदन गुन नेह जुत, ऐसो भयौ अनूप ।
सो रस पीवत छिनहि छिन, मिलि वृन्दावन भूप ॥४७॥
तेसि सुखकौ रसमोद सखि, जो उपजत दुहुँ माहि ।
पल२पीवत दृगनि भरि, ललितादिक न अघाहिं ॥४८॥
रस निधि रस रतनावली, रसिक रसिकनी केलि ।
हितसों जो उर धरै ध्रुव, बढ़ै प्रेम रस वेलि ॥४९॥
महा गोप्य अद्भुत सरस, चितत रहो मन माँहि ।
या रसके रसिकनि बिना, सुनि ध्रुव कहनो नाँहि ॥५०॥

॥ इति श्री रस रतनावली लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥

॥ अथ प्रेमावलीलीला प्रारम्भ ॥

दोहा–प्रगट प्रेम को रूप धरि, श्री हरिवंश उदार।
श्रीराधा वल्लभलाल को, प्रगट कियो रससार ॥ १ ॥
हरिवंश चन्द सब रसिकजन, राखे रसमें बोरि।
प्रेम सिन्धु विस्तार के, नेम मेंड़ दई तोरि ॥ २ ॥
रूप वेलि प्यारी बनी, प्रीतम प्रेम तमाल।
द्वै मन मिलि एकै भये, श्रीराधा वलभ लाल ॥ ३ ॥
लपटि रहे दोऊ लाड़िले, अलवेली लपटानि।
रूप वेलि विवि अरुझि परी, प्रेम सेज पर आनि ॥४॥
प्रेम रीति निज आहि जो, तामें लाल प्रवीन।
अङ्ग अंग सब हारिके, रहे आप है दीन ॥ ५ ॥
अलवेली नागरि जहां, धरत चरन छवि पुंज।
पल्कनि की करि सोहनी, देत कुँवर तेहि कुंज ॥६॥
धरत भाँवती पग जहां, रहत देखि तेहि ठौर।
को समुझै यह सुख सखी, बिना रसिक सिरमौर ॥ ७ ॥
भरि आये दोऊ नैंन जहँ, रहे नेह वस झूमि।
तेहि तेहि ठा काहे न भई, इन माननि की भूँमि ॥ ८ ॥
देख प्रेम पियको सखी, नैंन भरे जल आइ।
समुझि दसा पियकी तनहि, पुतरिनु लियौ समाइ ॥९ ॥
लिये दीनता एक रस, महा प्रेम रँग रात।
ऐसी प्यारी पीय को, देखत हू न अघात ॥ १० ॥
जावक रंग भीन चरन, गौर वरन छवि सींव।
निरखत पिय अनुराग सों, ढरी जात अधिसींव ॥ ११ ॥

अग अङ्ग सब लाल के, झुकत प्रिया का ओर।
सहज प्रेम को ढार परयो, बंधे नेहकी डोर ॥ १२ ॥
जिनके है यह प्रेम रस, सोइ जानत रीति।
जो हारें तौ पाईये, देह खेत में जीति ॥ १३ ॥
मनके पाछे मन फिरै नैंननि पाछे नैन।
यहै एक सुख लालके, रह्यो पूरि उर ऐन ॥ १४ ॥
नैंननि छवावत फिरत पिय, पत्र फूल वन जेत।
प्रान प्रिया द्रग छटा जल, सींचे सखि यह हेत ॥ १५ ॥
नैंननि बाढ़ी त्रिषा अति, ज्यों ज्यों देखत रूप।
पानी लागे प्यास जो, कहा करै ढिग कूप ॥ १६ ॥
विटप डारि अवलंब पिय, ठाड़े चित नहिं चैंन।
झलमलात भरे प्रेम रस, झलकत सुन्दर नैंन ॥ १७ ॥
और सबै सुख देह के, पिय मनतें गये भूलि।
अवलोकत मुख माधुरी, रहे प्रेम रस झूलि ॥ १८॥
हेरि हेरि हियो गहवरो, भरि भरि आवे नैंन।
कौन अटपटी मन परी, भ्रुव पै कहत बनै न ॥ १९ ॥
चितवनिसों चित रँगिरह्यो,मुसिकनि रस वस मैंन।
अग अंग दीप अनंग मनो, परत पतंग जु नैंन ॥२०॥
अद्भुत अंगन की झलक, उठत तरंग सुभाइ।
समुझि दसा पिय की प्रिया, रहत छिपाइ छिपाइ ॥२१॥
प्रीतम प्यार रूपके, सा रस कह्यो न जाइ।
नैन रूप ह्वै जाइ जो, प्यास न तऊ सिराइ ॥ २२ ॥
अद्भुत रूप विलास सुख, चितवत भये अंग।
सहज सिंधु सुख में परे, नखसिख प्रेम अभङ्ग ॥ २३ ॥

नयो नेह नेही नये, नयो रूप सुख रासि।
नयो चाव विलसैं सहज, परे प्रेम की पासि ॥२४॥
सहज प्रेम के सिंधु में, दोऊ करत कलोल।
भरि भरि रस हुलसत हियो,सुख की उठन अलोल ॥२५॥
रचि रचि बीरी देत पिय, महा प्रेम की रासि।
सर्वस है जिनके यहै, चितवनि के मृदु हाँसि ॥२६॥
पिकदानी लीने कुँवर, चितवत मुखकी ओर।
रहे उगार की आस धरि, ज्यों प्रति चन्द चकोर ॥२७॥
मन वच काइक एक रस, धरैं महा व्रत प्रेम।
प्रान पियहि सेवत कुँवर, याही सुख को नेम ॥२८॥
प्यारी सर्वस लाल के, लाल प्रिया के प्रान।
सहज प्रेम दुहुँ में धन्यो, फीके भये रस आन ॥२९॥
मन्द मन्द मुसिकात जब, वेसर तरल तरंग।
चिते चित्रमत रहे पिय, सितल भये सब अंग ॥३०॥
मुकर पानि लिये लाड़िली, बैठी सहज सुभाइ।
अनियारी अखियंन दियो, अञ्जन रुचिर बनाइ ॥३१॥
सोचि रही तेहि छिन कछू, इतउत चितवत नाहिं।
प्रीतम मनकी मृदुलता, गड़ी आइ मन माहि ॥३२॥
प्रेम रूप को सुख सहज, सो प्रभु कहत बनें न।
के जाने मन तेहि विध्यो, के समुझे दोऊ नैंन ॥३३॥
नित्य सहज दुलहु कुँवर,दुलहिनि अति सुकुँवारि।
नयो चाव नित ही रहै, अद्भुत रूप निहारि ॥३४॥
नव किशोर उन्नत मदा, आनंद की निधि गोभ।
नई अटक की चोंप दिन, परे प्रेम के लोभ ॥३५॥

और भोग नहिं प्रेम सम, सबको प्रेम सिंगार।
तेहि अवलम्बे रसिक दोऊ, सकल रमिन को सार ॥३६॥
प्रेम मदन मद किये रद, और सकल सुख जेत।
कुँवरि सुभाइनि रंग रंग्यो, छिन छिन होत अचेत ॥३७॥
लाल नैंन भये लालके, रगे रंगीली लाग।
अन्तर भरि निकस्यो चहत,इहि मग मनो अनुराग ॥३८॥
लै सुरंग जावक सुकर, चरननि चित्र बनाइ।
मृदु अगुरिनु की छवि निरखि,पुतरिनुमों रहे लाइ॥३९॥
दसन खण्ड अति रीझि के, पिय मुख बीरी दीन।
सींचो दोऊ अनुराग की, भये एक रस लीन ॥४०॥
पट भूषन जेहि कुँवरि के, प्रीतम केते प्रान।
अति अनन्य रस प्रेम में, परसत नहिं कछु आन ॥४१॥
ते पट भूषन पहरि पिय, सहचरि को वपु बाँनि।
फिरत लिये अनुराग सों कुसुम बीजना पाँनि ॥४२॥
प्रेम कुँवर को समुझिकै, प्रेम बारि भरि नैंन।
रही लपटि पियके हिये, सो सुख कहत बनैंन ॥४३॥
अमित कोटि जुग कलप लों, राखे उरजनि माहि।
ते सन लव त्रिमेंनु सम, बीतत जाने नाहि ॥४४॥
प्रिया प्रेम आसव महा, मादिक रहे दिन रेंन।
कैसे छूटे विवसता, भरि भरि पीवत नैंन ॥४५॥
महा मोहनी मन हरयो, तन डोलत तिन संग।
बोलत नहिं चितवत मनहि,बस्यो जाइ किहि अंग ॥४६॥
निन देखे देखत न कछू, छवि छायो उर ऐन।
कुँवरि राधिका लाड़िली, पिय नैननि के नैन ॥४७॥

जहाँ लगि सुख कहियत सकल,सुनि भ्रत्र कहत विचारि ।
सहज प्रेम के निमिष पर, ते सब डारे वारि ॥ ४८॥
यह सुख समुझन को कछू, नाहिन आन उपाइ ।
प्रेम दरीची जो कबहुँ, सहज कृपा खुलि जाइ ॥४९॥
एकै प्रेमी एक रस, श्री राधा वल्लभ आहि ।
भूलि कहै कोऊ औरठा, झूठो जानों ताहि ॥ ५० ॥
तीन लोक चौदह भवन, प्रेम कहू भ्रत्र नांहि ।
जगि मगि रह्यो जराव सो, श्रीवृन्दावन मांहि ॥ ५१ ॥
प्रेमी बिछुरत नाहि कहु, मिल्यौ न सो पुनि आहि ।
कौन एक रस प्रेम को, कहि न सकत ध्रुव ताहि ॥५२॥
ढूढ़ि फिरे त्रैलोक जो, बसत कहू ध्रुव नाहि ।
प्रेम रूप दोऊ एक रस, बसत निकुंजनि मांहि ॥५३॥
नित्य भूमि मण्डल सहज, श्री वृन्दावन ऐन ।
रतन जटित जगिमगि रह्यो,रसिकनि मन सुख दैन॥५४॥
तरनि सुता चहू दिस बहै, सोभा लिये अथाह ।
मनों ढरयो सिंगार रस, कुण्डल बाधि प्रवाह ॥ ५५ ॥
आवत उपमा और उर, अद्भुत परम रसाल ।
वृन्दावन पहिरी मनो, नील मनिनि की माल ॥५६ ॥
हेम वरन अद्भुत धरनि, मनिनु, खचित बहु रंग ।
बिच बिच हीरनि की झलक, मानों उठत तरंग ॥५७॥
मृगी मयूरी हंसिनी, भरी प्रम आनन्द ।
मत्त मुदित पीवत रहै, जुगल कमल मकरन्द ॥ ५८ ॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति झलमलें, आसन सेज सुदेस ।
सहज मौज छिन २ नई, कहि न सकत छबिलेस ॥५९॥

आनन्द वन नरपत कुवरि, कुञ्जनि में जहाँ नित्य ।
सुरग लता द्रुम फूल फल, झूमि रहे जित कित्य ॥६०॥
नेक होत ठाढी कुँवरि, जेहि फुलवारी माँहि ।
पत्र फूल तहाँ के सवे, पीत वरन ह्वै जाहि ॥६१॥
प्रेम रूप के मोद की, सोभा वढी विशाल ।
सोई लड़ैती लालजी, कीनी है उर माल ॥६२॥
रोम रोम प्रति लाड़िली, सहज रूप की खाँनि ।
प्रीतम की जीवन यहै, सरस मन्द मुसिक्याँनि ॥६३॥
अति सलज्ज अनुराग भरे, अनियारे छवि ऐंन ।
अरुन विशद सित सोहने, काजर भीने नैन ॥६४॥
अवनाइत वाके चपल, घूँघट पट न समात ।
अवलोकत जेहि ओर को, छवि नग्पा ह्वै जात ॥६५॥
हाव भाव लावन्यता, कही मञ्जल जे कोक ।
निसि दिन कर जोरे तहाँ, सेवत नैननि नोक ॥६६॥
अति सुदेस रत्नो झलमिलै, चदा सुरग रसाल ।
मनो सुहाग अनुराग को, प्रगट विराजत भाल ॥६७॥
नग मिश्र पट भूषन वने, कहि न सकत कछु रूप ।
सीस फूल सिंगार को, मानों छत्र अनूप ॥६८॥
झलक कपोलनि रहा कहा, मुख पानिप बहु भाति ।
अखियां रपटन चित्त तहा, डीठि नहीं ठहरात ॥६९॥
नासा वसरि फबि रही, साभा का मिति नाहि ।
मनो मीन तहा थरहरे, पर्यो रूप जल माँहि ॥७०॥
चनो कपोल पर अमित तिल, अलक रही लहरा थाह ।
प्रगट लालरी मन मनो, पर्यो पंक तिय नाह ॥७१॥

नन अधर कुच कर चरन, झलकत नये तरग ।
कनक वेलि मनो फुलिरही, नख सिख कमल सुरंग ॥७२॥
पिया वदन वर कञ्ज पर, भ्रमत भृङ्ग पिय नैंन ।
छनि पराग रस माधुरी, पीवन हूँ नहि चैन ॥७३॥
ठौर ठौर पिय रचत हैं, आसन कुसुम रसाल ।
को जानें कहां वैठि हैं, अलवेली नव वाल ॥७४॥
समुभि हेत पियको जवहि, वैठो तहाँ मुसिकाय ।
पिय ग्रीवाँ भुज मेलि कै, अङ्ग अङ्ग रही लपटाइ ॥७५॥
रची सेज मृदु दलनि लै, अरुनि पीत अरु सेत ।
तापर राजत लाडिली, इतनो मनको हेत ॥७६॥
रङ्ग रङ्ग के सुमन पिय, लै रचि माल वनाइ ।
तन मन को सुख को कहै, जव देखत पहिराइ ॥७७॥
रूप माधुरी की झलक, निरखि रीझि सुख पाइ ।
चहुदिस फिरि आपुन कुँवर, पगनि सीस रहे लाइ ॥७८॥
रूप सिंधु में मन परयो, ढरत नैंन दुहुँ नीर ।
डगमगात सखियनि गहे, देखे लाल अधीर ॥७९॥
लये अङ्क भरि लाडिली, विवस लाल को जानि ।
कही परत सखी कौन पै, निज मनकी अरुझानि ॥८०॥
प्रम प्रम मन मन समुभि, नैन सजल झलकात ।
मुख निसरत नहिं वैनकछु, विवस दोऊ ह्वै जात ॥८१॥
पिय प्यारी दोऊ रङ्ग भरे, ढर सेज पर आनि ।
निरख सखी चितवत खरी, महा प्रम लपटानि ॥८२॥
पर प्रम सुख रङ्ग में, दोऊ नवल किसोर ।
इतनी नहि जानत सखी, निसा होत कब भोर ॥८३॥

पीक कहूँ अजन कहूँ मुक्तावलि रही टूटि।
सिथिल वसन भूपन कहूँ, अलकावलि रही छूटि ॥८४॥
श्रम जलकन छवि बदनपर, चितवत प्रीतम ताहि।
पानिप को पानी मनों प्रगट देखियत आहि ॥८५॥
अञ्जन तिल रह्यो अधर पर, नैननि पर लगि पीक।
इत हद करी सिंगार की, उत दई प्रेम की लीक ॥८६॥
एक प्रेम विवि मन हरे, अरुझी मृदु भुज ग्रींव।
उभै सिंधु मिलि उमड़ि चले, रहत तहा सींव ॥८७॥
पीवत मुख छवि माधुरी, व्याकुल रहैं दोऊ नैंन।
रोम रोम बाढ़ी त्रिषा, जहाँ प्रेम को मैंन ॥८८॥
रस रंगी रस रङ्ग में, भीने सहज सनेह।
परत प्रेम आनन्द में, दोऊनि भूलि गई देह ॥८९॥
भये अचेत पुनि चेत के, उठे कुँवर सुकुँवार।
नैना प्यासे रूप के, पिवत डीठि भई धार ॥९०॥
कहि न सकन तिनकी दसा, छिन छिन नौतन नेह।
एक प्रान ह्वै रहे तहाँ, देखन को द्वै देह ॥९१॥
एक स्वाद ध्रुव एक रस, प्रेम अखंडित धार।
इकछत प्रेम दसा रहै, सकल सुखनि को सार ॥९२॥
प्रेम तरंगनि में परे, छिन छिन प्रति यह केलि।
महा मत्त घूँमत फिरैं, दोऊ कण्ठ भुज मेलि ॥९३॥
विलसत नित्य विहार दोऊ, प्रेम खेलि तेहि ठौर।
और कछु परमत नहीं, महा रसिक सिर मौर ॥९४॥
प्रेम पगी तैसी रुखी, रगी दुहुनि के हेत।
सहज माधुरी रूप की, नैननि भरि भरि लेत ॥९५॥

अद्भुत प्रेम सखीनु के, विमल असखण्डित धार।
रसिक कुँवर दोऊ लाड़िले, करि राखे उर हार ॥९६॥
सहज प्रेम की सींव दोऊ, नव किशोर वरजोर।
प्रेम को प्रेम सखीन के तेहि सुखको नहि ओर ॥९७॥
हारि हारि जीतत दोऊ, जीति जीति रहे हारि।
महा प्रेम देखत सखी, जह तहं रही विचारि ॥९८॥
नेक भौंह की मुरनि में, लाल दीन ह्वै जात।
जल सूखे जलजात ज्यों, वदन मृदुल कुँमिलात ॥९९॥
भरयो हियो अनुराग सों, रहि न सकी अकुलाइ।
लये लाइ पिय हीय सों, अधर सुधारस प्याइ ॥१००॥
मान मनावन छुटिगयो, परयो लपटि तहाँ प्रेम।
अन्तर भरि वाहिर भरयो, रहे ह्वै नेम ॥१०१॥
सरज रूप कों कञ्ज मुख, तामें मुसिकन मन्द।
जीवनि पिय दृग सखिन के, सोई तहाँ मकरन्द ॥१०२॥
अलवेली हँसिके जवहि, पियसों कहे कछु वात।
धनि २ के मानत सखी, तेहि छिनकी वलिजात ॥१०३॥
रह्यो झलकि वृन्दा विपिन, कुँवरि रूप के तेज।
रहे कुँवर छकिके तहाँ, धरि न सकत पग सेज ॥१०४॥
लीने कर गहि लाड़िली, ले वैठी धर अङ्क।
वदन वदन यों जुरि रहे, मनु मिले कज मयक ॥१०५॥
परम रसिक आसक्त दोऊ, भूली तिनहि निहारि।
अङ्ग अङ्ग मिलि उरझि रहे, सकत नहीं निरवारि ॥१०६॥
प्रेम मदन को हुख जहाँ, सहज प्रेम सिगार।
आदि मध्य अवसानि इक,इक रस विमल विहार ॥१०७॥

वृंदावन सरवर भर्यो, प्रेम नीर गभीर।
तामें मज्जत रसिक दोऊ, निसरे नैंननि चीर ॥१०८॥
सहज सघन छवि हरन मन, श्रीवृंदावन वाग।
रह्यो झूमि फलिके सरस, रसमे फल अनुराग ॥१०६॥
प्रिया वदन तहां झलमले, सहज रूप को चंद।
विमल प्रकास अखंड भरयो, सुधा प्रेम मकरंद ॥११०॥
श्रवत सोई मकरंद दिन, प्रीतम नैंन चकोर।
प्रेम अमी रस माधुरी, पान करत निसि भोर ॥१११॥
सघन निकुञ्जनि ओर प्रति, सुखको सहज निवास।
रही झूप जहां फूलिके, लता सुरंग सुवास ॥११२॥
परति दृष्टि जेहि सुमन पर, पिय नवीन यह जानि।
धाइ कुँवर सोई फूल लै, देत कुँवरि को आनि ॥११३॥
विहरत दोऊ अनुराग में, नवलासी लिये पानि।
न्यारे तन देखत सखी, छुटति न मन लपटानि ॥११४॥
घटत न मनकी चाह ध्रुव, हारत नहि दृग चाहि।
तृपित तऊ पिय लाड़िलो, कौंन प्रेम रसआहि ॥११५॥
प्रेम फूल प्यारी प्रिया, सुरंग सरूप सुवास।
इक जीवन आसक्त पुदि, मधुप लाल रहैं पास॥११६॥
अति सुकुँवारी लाड़िली, धरत चरन तेहि ठौर।
नैंन कमल के दल तहां, रचत रसिक सिर मौर ॥११७॥
प्रेम अवुसर विपिनवर, अति अगाधि मिति नाँहि।
कमय कमलनी रसिक दोऊ, रहे फूत तेहि माँहि ॥११८॥
भ्रमत सखी भँवरी तहाँ, पीवत रूप पराग।
पलु पलु प्रति वाढ़त रहै, मादिक नव अनुराग ॥११६॥

प्रेम खेत वृंदाविपिन, सुभट नागरी स्याम।
हाव भाव आयुध लिये, करत सुरत संग्राम ॥१२०॥

॥ कुण्डलिया ॥

पिय नैंननि कौ मोद सखी, प्रिया नैंनन कौ मोद।
रहत मत्त बिलसत दोऊ, सहजहि प्रेम विनोद॥
सहजहि प्रेम विनोद रूप देखत दोऊ प्यारे।
लोहनि मानत जीति दुहुँनि जदपि मन हारे॥
परे नवल नव केलि सरस हुलसत हिय सैंननि।
छिन २ प्रति रुचि होइ अधिक सुंदर पिय नैंननि।१२१।

दोहा-नित्य नवल वृंदा विपिन, नित्य नवल धर हेम।
नित्य नवल दोऊ लाड़िले, नित्य नवल तहां प्रेम।१२२।
वृंदाविपिन बिसात पर, प्रेम कौ खेल अपार।
निवरत नहिं छिन छिन बढ़े, तैसेही खेलन हार॥१२३।
विन रसिकनि वृंदाविपिन, को है सकत निहारि।
ब्रह्मकोटि ईश्वर्ज के, वैभव की तहँ वारि॥१२४॥
पीवत मुख छवि माधुरी, व्याकुल रहै तन नैंन।
रोंम रोंम बाढ़ी तृषा, जहाँ प्रेम कौ मैंन॥१२५॥
श्रीराधा वल्लभ प्रेम की, प्रेमावलि गुहि लीन।
हित ध्रुव जेतिक बुद्धिही, तासौं रचि पचि कीन।१२६।
घटि बढ़ि अच्छर होइ जौ, तहा दृष्टि जिनि देहु।
श्रीराधा वल्लभ लाल जस, यहै जानि उर लेहु॥१२७॥
प्रेम सार ध्रुव कछु कह्यौ, अपनी मति अनुमान।
अति अगाध सुख सिंधु रस, ताकौ नाहि प्रमान॥१२८॥

मन वच जा उर धारि है, प्रेमावलि को नित्य।
प्रेम छटा ध्रुव सहज ही उपजैगी तेहि चित्त ॥१२९॥
हित ध्रुव भई प्रेमावली सुनत जुगल दरमाहि।
सोलहसै इकहत्तरा श्री वृन्दावन माहि ॥१३०॥

इति श्री प्रेमावली लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥२१॥

॥अथ श्रीप्रियाजी की नामावली प्रारम्भ॥

श्रीराधे। नित्य किशोरी। वृन्दावन विहारनि। वनराज रानी। निकुञ्जेश्वरी। रूप रंगीली। छबीली। रसीली। रस नागरी। लाड़िली। प्यारी। सुकुँवारी। रसिकनी। मोहनी। लाल मुख जोहनी। मोहन मनमोहनी। रतिविलास विनोदनी। लाल लाड़ लड़ावनी। रङ्गकेलि बढ़ावनी। सुरत चदन चर्चिनी। कोटि दामिनी दमकनी। लालपर लटकनी। नवल नामा चटकनी। रस पुँजे वृन्दावन प्रकासनी। रङ्ग विहार विलासिनी। सखी सुखद निवासनी। सौंदर्ज रासिनी। दुलहिनी। मृदु हाँसनी। प्रीतम नैन निवासनी। नित्यानन्द दर्सिनी। उरजनि पिय परसिनी। अधर सुधारस बरसिनी। प्राननिरस सरसनी। रङ्ग विहारनि। नेह निहारनि पियहित सिंगार सिंगारनि। प्यार सों प्यारे को ले उर धारनि। मोहन मैन विथा निवारनि। जान प्रवीन उदार सँभारनी। अनुरागसिंधे। स्यामा। वामा। भाम। भाँवती। जुवतिन जूथ तिलका। वृन्दावनचन्द्र चंद्रिका। हाँस परिहाँस रसिका। नवरङ्गिनी। अलकावलिवदनि फन्दिनी। मोहन मुसिकनि मन्दिनी। सहज आनन्द कन्दिनी। नेह कुरङ्गिनी। महामधुर रस कन्दिनी। नैन विशाला। चंचलचित आकर्षिनी। मदनमान खण्डिनी। भ्रमरङ्ग रङ्गिनी। चकमकाचिनी।

सकलविधा विचक्षने। कुँवर अङ्क बिराजनी। प्यारपट नि:
जिनी। सुरत समर दल साजिनी। मृगनैंनी पिकबैंनी।
लज्ज अञ्चला। सहज चचला। कोककलानि कुशला। ह
भाव चपला। चातुज चतुरा। माधुर्य मधुरा। बिन भूषन
पिता। अवधि सौंदर्यता। प्राणवल्लभा। रसिक रवनी। व
मिनी। भामिनी। हंसकलि गामिनी। घनस्याम अभिरामिन
चंदविपिनी। मदन दवनी। रसिक रवनी। केलि कमनं
चित्तहरनी। ललम पर चरन धरनी। छविकञ्ज वदनी। रसि
आनन्दिनी। रूपमजरी। सौभाग्य रसभरी। सर्वाङ्ग सुन्दर
गौराङ्गी। रति रस रङ्गी। विचित्र कोक कला अङ्गी। छविच
वदनी। रसिक लाल वदिनी। रसिक रस रङ्गिनी। सखिनुस
मडिनी। आनँद कंदिनी। चतुर अरु भोरी। सकल सुख रा
सदने ॥

दोहा-प्रेम सिंधु के रतनह्वै ये, अद्भुत कुँवरि के नाम।
जाकी रसना रटै धुव, सो पावै विश्राम ॥१
ललित नाम नामावली, जाके उर झलकत।
ताके हिय में बसत रहैं, स्यामा स्यामल कन्त ॥२॥

॥ इतिश्री प्रियाजीकी नामावलीलीला संपूर्ण को पं ज श्रीहितहरिवंश ॥२२॥

॥ अथ रहस्यमजरी लीला प्रारम्भः ।

दोहा-करुना निधि, अरु कृपानिधि, श्रीहरिवंश उदार।
वृन्दावन रस कहन कों प्रगट धरतो अवतार ॥१॥

वृन्दावन रस मनको सारा ❀ नित मनोहर जुगल निहारा॥
नित्य किशोर रूप की रासि ❀ नित्य विनोद मंद मृदु हासि॥

नित ललितादि भरी आनन्द ❀ नित प्रकास वृन्दावन चन्द ।४।
कुञ्जनि सोभा कहा बखानों ❀ छवि फूलनि सों छाई मानों ।५।
राजत सुमन द्रुमन बहु रगा ❀ मानो पहिरे बसन सुरगा ।६।
नाचत हंस मयूरी मोर ❀ शुकसारिकपिकनादचहुँओर।७।
झलमलात महि कही न जाई ❀ चितामनि मय हेम जराई ।८।
सोभा दुतिय बढ़ी अधिकाई ❀ फूलनिकी जनो अवनीबनाई।६।
छवि सों जमुना व है सुहाई ❀ मानो आनंद द्रव चल्यों माई१०
जहँतहँपुलिननलिनकलकूल।❀ फूले सबके मनोरथ फूला ।११।
फूले फिरत मधुप मद माते ❀ जलजन सौरभ के रसराते ।१२
सीतल मन्द समीर सुवासा ❀ वृ दा कानन रग हुलासा ।।१३
सुखकी अवधि प्रेम को ऐना ❀ सेवत मैंननि की सन सैना ।१४।
दोहा—वृन्दावन चवि कहा कहों, कैसेहुँ कहत बनें न ।
नैंननि के रसना नहीं, रसना के नहि नैंन ।।१५।।
विहरत तहा परम सुकुवारा ❀ रूप माधुरी को नहि पारा ।१६।
प्रेम मगन अलबेली भाँति ❀जगिमगिरह्योबनअगनिकाँति१७
सखी सबै हितकी हितकारनि ❀जीवनि जिनके रंग निहारनि १८
तिनही के रगसों अनुरागी ❀ महा मधुर सेवा रसपागी ।१६।
रुचिले रुचिसों दुहूँनि लड़ावें ❀ पलु पलु सुखको रंग बढ़ावें २०
फूलसों भाजन भरिमधु आनें ❀ फूल चदोवा छवि सों तानें ।२१
फल सों फूलनि सेज बनाई ❀ अति सुगध सोंधे छिरकाई २२
तापर राजत रग बिवि ओर ❀ मुख जोवत ज्यों चद चकोर २३
नेक चितै तिरछे मुसिकानी ❀ लालहिसुधिबुधि सबैभुलानी२४
दोहा—नमी जु प्यारलाल उर, वह चितवनि मुसिकानि ।
तबतें कबहूँ छुटी नहि, चुभी जु उर में आनि ।।२५।।

तिनकोप्रेम और ही भाँति ❀ अद्भुत रीतिकही नहि जाँति २६
जो करुना करिवे उर आनें ❀ तव रसना के कछुक वखानें २७
जाको हियो सरस अति होई ❀ यह रस रीतहि समुझै सोई २८
सूक्ष्म प्रेम विरह सुखदाई ❀ दिन सजोग में रहत हैं माई२६
देखत ही अनदेखी मानें ❀ तिनकी प्रीतहिकहा वखानें ३०
प्रेम लालची लाल रङ्गीलो ❀ अवधिप्यारकीरसिकरसीलो ३१
करअंगुरिनु भुज मूलनि परसे ❀ अधरपानरसको जियतरसे ३२
छुवेनसकतउरजनि कर कों पें ❀ चतुरकुँवरि अचलसों ढाँपें ३३
सो वह छटा प्रेम की न्यारी ❀ लालहिविवसकरतिअतिभारी३४
तवहि सभारिलेत सुकुँवारी ❀ अधरकपोलनि चूवतप्यारी ३५
जब देखी अखियाँनि उघारी ❀ प्याइजिवाये अधर सुधारी ३६
जबही उरसों घुर लपटाँही ❀ तब नैंना बिरही ह्वै जाँही ३७
छुटे जब ही छवि देख्यो करें ❀ विरह आनि अगनि सचरें ३८
भाँति अटपटी सों चित हरयो ❀ जात नही उर धीरज धरयो३६
छिन छिन दसा और की औरे ❀ थांमे रहत सखी सिर मोरें ४०

दोहा—प्रेम अटपटी चटपटी, रही लाल उर पूरि ।
और जतन ताको न कछु, प्रिया संजीवनि मूरि ॥४१॥

विरहसजोगछिनहिछिनमाँही ❀ जदपि ग्रींवनि मेले वाँही ४२
इहिविधि खेलतकलप विहाने ❀ परम रसिक कबहूँ न अघाने४३
एकसमें मुसकी छवि पानिप ❀ निरखत भूली सबै सयानिप४४
चाह प्यार की यों फिर गई ❀ सोई आनिविच अंतर भई ४५
कुवरि छबीली मनधरिआगे ❀ विवसहोहपियविलपनिलागे।४६
चितवत चितवतलालविहारी ❀ कहत यहै कहाँ२सुकुँवारी ४७
प्रेम तरङ्ग कहे नहिं जाँही ❀ छिन२ जे उपजत मनमाँही ४८

दोहा-कौंन प्रेम के फंद परे, मोहन नवल किशोर।
भूलि रही चितवन खरी, सखी माल चहूँ ओर ॥४६॥
रसनिधि रसिक प्रवीन पियारी❀लाल हिराखत ज्यों फुलवारी ५०
प्रेम प्यार जल सींच्यौ करही❀पल२प्रति तिनके संगढरही ५१
दोहा-फूल पान ज्यों राखही, ढाँपि प्यार के चीर।
छिन छिन तिनकों छिरकही, नेह कटाक्षनि नीर ॥५२॥
रसिकमौलिमनिलालविहारी ❀ जिनके सर्वस प्रान पियारी ५३
नैंन जोरि देखति पिय रूपहि❀ मैंनमाधुरीभलक अनूपहि ५४
कौंन भाँतिमुखकीछविकहियें❀ चितवतसखी भूलहीरहियें ५५
मोंहनि भाइ कटाक्ष तरङ्गा ❀ गह्यो लालमन प्रेम अनंग।५६
स्वेद कप वेपथ अग लगा ❀ प्रानप्रिया भरिखेत उछंगा ५७
परसत हूँ परस्यो नहि जाने ❀ छिनछिन नईनई रुचिमाने ५८
सो गति चितै सखी मुसिकाँही❀वारिफेरि अचल घलिजाँही ५६
प्रेम प्यार वन तन मन सरस्यो❀औरस्वाद कवहूँ नहिपरस्यो ६०
रूप रंग सौरभता तनकी ❀ जीवनयहैदिनहिपियमनकी ६१
देखिवो जहाँ विरह सम होई❀ तहाँ को प्रेम कहा कहै कोई६२
दोहा-अटपटी भांतिको विरह सुनि, भूल रह्यो सव कोइ।
जल पीवत है प्यास कों, प्यास भयो जल सोइ ॥६३॥
महा भाग सुखमार सरूपा ❀ कोमलसील सुभावअनूपा ।६४।
सखी हेत उदवर्तन लावे ❀ आनद रससों सवै न्हवावे ।६५।
सारी लाजकी अति ही वनी❀अगियाभीतिहियेकसितनी ।६६।
हाव भाव भूपन तन वने ❀ सौरभ गुनगन जातनगने ।६७।
रसिपति रसको रचिपचि कीनों❀सोअंजन ले नैंनन दीनों ।६८
मेहदी रंग अनुराग सुरंगा ❀ करअरुनरन रचे तेहि रंग। ॥७६

वक चितवनी रससों भीनी ❀ मनोकरुना की वरषा कीनी ।७०
झलमल रही सुहाग की जोती❀नामाफविरछोपानिपमोती ॥७१।
नेह फुलेल वार वर भीने ❀ फूलके फूलनिसो गुहिलीने ।७२
मौरी रंग अनुराग की डोरी❀तिय करवाध्योपियमन गोरी ।७३
दोहा-हाँस झलक हारावली, अधर विंव अनुराग ।
त्रिवली सींवाँ रूप की, नवसत पोति सुहाग ॥ ७४ ॥
ऐसी प्यारी पीय उर बसे ❀ ज्योंघनमेंदिनदामिनिलसे ।७५
अद्भुत वृन्दावन रजधानी ❀ अद्भुत दुलहिनि राधारानी।७६
अद्भुत दूलहु नित्य किशोर ❀ अद्भुत रसके चन्द चकोर ।७७
अद्भुत जहाँ प्रेम को रग ❀ अद्भुत वन्यो दुहुनि को सग७८
अद्भुत रूप सहज सुकुँवारी ❀ वृन्दावन की मनि उज्यारी ७६
तिनको सेवत लाल विहारी ❀ तनमनवचनरहे तहाहारी ।८०
अद्भुत प्रेम एक वृत लीनो ❀ छाडिप्रियामनअनतनदीनो ।८१
छिन छिन औरेऔर सिंगारा❀गुहिफूलनि पहिरावतहारा ।८२
ठाढे होइ रहत कर जोरे ❀ लै वलाइ वारत तृन तोरे ।८३
दोहा-चितवनि जितही लाडिली, तितही मोहनलाल ।
सो ठौं प्यारी ह्वै गई, देखौ प्रीति की चाल ॥ ८४ ॥
तव मुसिकाइ लिये उर लाई ❀ रीझि प्रेममाला पहिराई ।८५।
अद्भुत प्रेम विलास अनंगा ❀ अद्भुत रुचि के उटत तरंगा८६
अद्भुत प्रेम कह्यो नहि जाती❀रसिकर गीलीतेहिर गराती ।८७
ललित विशाखा सखी पियारी❀दंपतिसुखमन समुझनहारी ।८८
सन सखियनि की दोऊ प्यारे ❀ जीवनिप्रान चखनि केतारे ।८९
दोहा-भुजमों भुज उरमों उरज, अधर अधर जुरे नैन ।
ऐसी विधि जो रहे तो, मधुप होइ नित चैन ॥ ९० ॥

या सुख पर नाहिन सुख औरे❀जेहि उर रचेगसिक सिरमौरे ६१
या रस सों ध्रुव जो मन लावे❀ताको भाग कहत नहि आवे६२
ऐसे अद्भुत भक्त अनूपा❀जिनके हिये रहत यह रूपा ६३
श्री श्रहरिवंश चरन उर धारे❀सो या रसमें ह्वै अनुसारे ६४
श्रीहरिवंशहि हितसों गावे❀जुगल विहार प्रेमरस पावे ६५
जापर श्रीहरिवंश कृपाला❀ताकी बाँह गहैं दोऊलाला ६६
श्रीहरिवंश हिये जो आने❀ताहि कुँवरि अपनो करिमाने६७
यह रस गायो श्रीहरिवंश❀मुक्ता कौन चुने बिन हंस ६८
रसद रहस्य मंजरी भई❀छिन छिन जोत होत है नई ६६
दुहूनि मध्य सखियनि लै वई❀आनन्द वेलि वढ़ी रसमई१००
श्रीहरिवंश प्रगट करिदई❀जाको भागतिनहिभुवलई१०१
दोहा-नित्यहि नित्य विहार दोऊ, करत लाडिली लाल।
वृन्दावन आनद जल, वरषत हैं सब काल ॥१०२॥
रूप रङ्गीली सभा सों, प्रेम रङ्गीलो राज।
सखी सहेली सङ्ग रङ्ग, अद्भुत सहज समाज ॥१०३॥
यह सुख देखत कठ दृग, रुकै न आनन्द वारि।
और अङ्ग हारे सबै, नैन न मानत हारि ॥१०४ ॥
सत्रह से द्वै ऊन अरु, अगहन पछि उज्यार।
दोहा चौपाई कहे, ध्रुव इकसत ऊपर चार ॥ १०५॥
इति श्री रहस्यमजरी लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहित हरिवंश ॥२१।

॥ अथ सुखमंजरी लीला प्रारम्भः ॥

दोहा-सखी एक हितकी अधिक, आनद को मर्म पाइ।
दसा कुँवर की प्रिया सों, कहत बनाइ बनाइ ॥१॥

चाह मदन की विथा कों, नाहिन है कछु और।
पल पल पिय हिय में वढ़े, यहै सोच मन मोर ॥ २ ॥
सिथल अङ्ग वल हीन सखि, कछुक भयो तन छीन।
करि उपाइ प्यारी प्रिया, तुम जल हो वे मीन ॥३॥
सोरठा–मिटत नहीं यह रोग, तुमहो मूरि संजीमनी।
वन्यो आनि सजोग, अव विलव कीजे न वलि ॥४॥
दोहा–उनके लछन कहों कछू चित्त दे सुनि सुकुँवारि।
नारी में पिय प्रान वसें, नारी नारि निहारि ॥ ५ ॥
जेंसे विथा वढ़े नहीं, कीजे जतन विचारि।
देवे कों कछु और नहिं, देहैं प्राननि वारि ॥ ६ ॥
सुनत सखी के वचन ये, करुना वढ़ी अपार।
तवहि कुँवरि अति हेतसों करन लगी उपचार ॥७ ॥
प्रथमहि नारी देखिके, हियपर कर धरयो आनि।
रोंम रोंम आनद भयो, परस होत ही पानि। ८॥
बहुत भाँतिकी औषधी, चितवनि मुसिकनि माइ।
संभराये तेहि छिन सखी, अधर सुधारस प्याइ ॥ ६ ॥
कोक कलनिके रस विविधि, जानत परम उदारि।
दियो किशोरी प्यार सों, अङ्ग मृगाङ्क संवारि ॥१०॥
नेन कटाच्छ सुवास अङ्ग, चितवनि प्यार की कीन।
अति प्रवीन रस लाड़िली, लालहि पथ मन दीन ॥११॥
परिरंभन चुम्बन अधिक, करत विलास अहार।
तुष्ट पुष्ट वल रुचि भई, वाढ़ी चाह अपार ॥ १२ ॥
गर पीताम्बर मेलि कें, चरननि पर धरयो सीस।
दयो अपनपो रीझि तन, श्री वृन्दावन ईस ॥ १३ ॥

पुनि पग परसे सखिनु के, कीनों बड़ उपकार।
तासों इतनी कहि कुँवरि, पहिरायो उर हार ॥१४॥
मदन चुधा पानिप त्रिपा, सरिता बढ़ी गम्भीर।
प्रेम मगन विलसत रहैं, पावत नाहिन तीर ॥ १५ ॥
विविधि विहार विनोद रग, उठत है मदन तरङ्ग।
अङ्ग अङ्ग सब चपल भये, नृर्त्तत मनहु सुभङ्ग ॥ १६ ॥
हार वलय किंकिनि झनक, नूपुर की झुनकार।
परे मीन मन दुहुनि के, रस प्रवाह की धार ॥१७॥
हाव भाव लावन्यता, अद्भुत प्रेम विहार।
केलि खेलि निवरत नहीं, तेंसेई खेलन हार ॥ १८ ॥
रूप रसासव पिवत दोऊ, नहि जानत दिन रैंन।
पल को अन्तर परत नहिं, जुरे नैंन सों नैंन ॥ १६ ॥
त्रिपित न कबहूँ भये हैं, जदपि मिले अङ्ग अङ्ग।
रुचि न घटे छिन छिन बढ़ै, प्रेम अनङ्ग तरङ्ग ॥२०॥
छके रहत दोऊ लाड़िले, यह रस रङ्ग विहार।
सभरावति छिन छिन सखी, तब कछु होत सँभार ॥२१॥
ज्यों ज्यों करत विहार दोऊ, बाढ़त चाह विलास।
जल पीवत हैं प्यास कों, सोई जल भयो प्यास ॥२२॥
रहे लपटि आनन्द सों, आनन्द को पट तानि।
हित ध्रुव आनन्द कुञ्ज में, रमि रह्यो आनद आनि॥२३॥
यह सुख निरखत सहचरी, जिनके यहै अहार।
प्रेम मगन आनन्द रस, रही न देह संभार ॥२४॥
अद्भुत वैदक मधुर रस, दोहा कहे पचीस।
सुनत मिटै हृद रोग ध्रुव, फलकहि उर बन ईस ॥२५॥

॥ इति श्री सुख मञ्जरी लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहित हरिवंश ॥ २४ ॥

॥ अथ रति मंजरी लीला प्रारंभ ॥

दोहा—हरिवंश ना ध्रुव कहत हौ, बाढ़े आनँद बेलि।
प्रेम रंग उर जग मगे, जुगल नवल रस केलि ॥ १ ॥
श्री हरिवंश चन्द पद नदिके, करत बुद्धि अनुसार।
ललित विशाखा सखिनु के, यह रस प्रौंन अधार ॥ २ ॥
एती मति मोपै कहाँ, सिंधु न सीप समात।
रसिक अनन्यनि कृपा बल, जो कछु वरन्यौं जात ॥३॥
प्रथमहि सुमिरौं श्री वृन्दावन ❀ जो देखत फूलै यह तन मन ४
कुंदन रचित खचित धर बनी ❀सो छवि कैसे जात है भनी ५
रज कपूर की झलकनि न्यारी ❀हियौ सिराह निरखि सोभारी ६
ललित तमाल लता लपटानी ❀कूँ जितकोकिलअतिकलवानी ७
तपन सुता छवि जात न वरनी❀रस पति रस ढारयौ मनुधरनी८
कुंज सुरंग सुदेस सुहाई ❀रति पति रचि रचि रुचिर बनाई९
दोहा—कुंकुम अंबर अगरसत, वलि चवेली फूल।
सखियनि सनक्या मोद लै, रची कुंज सुख मूल ॥ १० ॥
रूप पुञ्ज रस पुंज दोऊ, पौढ़े प्रेम प्रजंक।
विलसत नवलविहार निज, सुख निधि होइ निसंक ॥११
अब वरनौं निज रस सिंगारा ❀सुखनिधिसरसनिकुंजविहारा१२
नवल नाइका अति सुकुँवारी ❀ नाइक रसिक निकुंजविहारी१३
अति प्रवीन रस घात मैं दाउ ❀ राज हंस गति घटि नहि काऊ१४
दोहा—रूप मदन रस मोद की, सहज जुगल वर देह।
नेह प्यार की सेज पर, भर मोद मृदु नेह ॥ १५ ॥
एक रंग रुचि एक वय, एक प्रान द्वै देह।
पल पल पिय हुलसत रहत, अरुझे सरस सनेह ॥ १६ ॥

सबविधि नागर नवलकिशोरी❀सीलसुभाव नेहनिधि गोरी ।१७।
अति गम्भीर धीर वर वाला ❀ परम सलज्ज रूप की माला।१८।
नवल रंगीली राजत खरी ❀ रंग लता रस भाइनि भरी।१६।
दोहा-कोमल कुन्दन वेलि मनो, सींची रङ्ग सुहाग।
मुसिकनि लागे फूल फल, उरज भरे अनुराग ॥२०॥
वरषत छवि वरषा की माई ❀ चातिक लाल न पिवत अघाई २१
आतुर पिय आधीन अधीरा ❀ जाँचत रहत दसन वर चीरा २२
छिन छिन नई नई छवि ओरे ❀ सुधि नहि रहन देत सिर मोरे २३
जेहि अङ्ग ओर परे मन जाई ❀ छुटे न तहा ते रहत लुभाई २४
दोहा-ज्यों ज्यों सर में जल बढ़े, कमल बढ़े तेहि भाँति।
ऐसे पिय की रुचि बढ़े, निरखि पिया तन काँति ॥२५॥
अद्भुत सहज माधुरी अङ्गा ❀ चितै रीझि भरि लेत उछङ्गा।२६
झटकनिलटकनिकीछविन्यारी ❀ यह सुख जानत देखन हारी,२७
चितई नेक चपल भ्रू भङ्गा ❀ काँपत सकल अङ्ग अङ्गा २८
वचन सगर्व सुनन हुङ्कारा ❀ प्रीतम देह रही न सभारा ।२६
विवस भये विरज दुख भारी ❀ लटकि परे गहि चरन विहारी ३०
प्रेम प्यार की मूरत प्यारी ❀ लये लाल भरिके अङ्कवारी ३१
रही लाइ हित सों उर ऐसे ❀ खची नीलमनि कंचन जैसे ३२
दोहा-वदन कमल सुठि सोहनो, रस भर अधर सुरङ्ग।
पल पल प्यावति लाड़िली, उठन सुगन्ध तरङ्ग ॥३३॥
अधरनिरस सोच्योजवचाला ❀ फूल्योमनमनु मैन तमाला ३४
अति सुकुँवारकेलिरंग भीने ❀ छिन छिन उपजत भाइ नवीने ३५
प्रवल चाँप वाढ़ी दुहु माँही ❀ रस समतूल कोऊ घटनाँही ३६
सुरत समुद्र परे दोऊ प्यारे ❀ अवर लाज दूरि करि डारे ३७

भूपन सब दूपन करि जानें ❀ तन मन एक होइ लपटानें ३८
दोहा—सुख वारिध में परत ही, गये छूटि पट नेम।
मेड तहां कैसे रहे, उमड़त है जहाँ प्रेम ॥३६॥
बढ़ी त्रिपा निज केलि की, रस लपट न अघात।
चरन छुवत हा हा करत, रीझि रीझि बलिजात ॥४०॥
अति उदार नागरि सुकुँवारी ❀ पियरुचिजानिकेलिविस्तारी ४१
रतिबिपरितविलसतवर भाँती ❀ चुँवनअधरनेंन मुसिकाँती ४२
रसके बस ह्वै रस में झूले ❀ बात नेमकी ते सब भूले ४३
विरमिविरमिबानी पिय बोले ❀ अमितजानिअचलझकझोले ४४
दोहा—नाइक तहाँ न नाइका, रस करवावति केलि।
सखी उभै संगम सरस, पियत नैंन पुट भेलि ॥४५॥
तजि मर्याद विलास जु करहीं ❀ रतिजुतमदनकोटिदुतिहरहीं ४६
आलिंगन चुम्बन जब दये ❀ अगनि के भूपन अग भये ४७
अंजनिअधरपीकलगीनेंननि ❀ सुखमें कहत अटपटे बेंननि ४८
आनंद मोद बढ्यो अधिकाई ❀ बिचबिचलालत्रिवसह्वैजाई ४६
दुहुँ मन रुचि एकैह्वै जबहीं ❀ सुखकीबेलि बढ़े ध्रुव तबहीं ५०
गौरश्याम अग मिलि रहे ऐसे ❀ सीस रंग झलकत तन जैसे ५१
रसकी अवधि इहाँ लों माई ❀ विवि तनमन एकै ह्वै जाई ५२
दोहा—एक रग रुचि एक वय, एकै भाँति सनेह।
एकै सील सुभाव मृदु, रसके हित ह्वै देह ॥५३॥
अरिल्ल—चहुँ ओर रही छाइ प्रेम के प्यार सों।
पिय हिय सों रही लाइ हिये के हार सों॥
तिनके रसकी बात कही नहिं जात है।
हरिहा जानत नाहिन राति किधों ध्रुव पात है ॥५४॥

मादिक मधुर अधर रस प्यावे ❀ नैंन चूमि नासा चटकावे ५५
ऐसे जतननि पियहि जगावे ❀ रति नागरि रति केलि बढ़ावे ५६
अधरन दसन लगे जब जानें ❀ रोंम रोंम रतिपति रस सानें ५७
देखि रसिक रति रीझि भुलानी ❀ हियो खोलि पिय हियलपटानी ५८

दोहा—ज्यावति प्यारी प्यार सों, प्रेम रसासव सार।
त्यौं त्यौं प्यारेलाल के, बाढ़त त्रिषा अपार ॥५९॥

सुख सरिता उमड़ी चहूँ ओरे ❀ झनमलात सोभा तन गोरे ६०
कंचुकि दरकि तनी सब टूटी ❀ सगबगी अलकें सोभित छूटी ६१
श्रम जलकन दुति कहा बखानों ❀ छबि के मोती राजत मानों ६२
रति विलास की उठत झकोरें ❀ चंचल दृग अंचल चलकारें ६३
सुख सरमें दोऊ करत अलोलें ❀ मानों छबि के हम कलोलें ६४
ऐसे उमड़ि महा रस ढरी ❀ मानों प्यार की बरषा करी ६५
रस फिरि गयो दुहुँनि पर माई ❀ भूली तनगति रति न भुलाई ६६

दोहा—लाल त्रिषा कों सिंधु है, प्रेम उदधि सुकुँवारि।
इक रस प्यावत पिवत दोऊ, मानत नहिं कोऊ हारि ॥६७॥

होत बिवस तबही पिय प्यारी ❀ सावधान तहाँ सखी हितकारी ६८
कुँवरि अधर पिय अधर मिलावे ❀ रूप बदन नैंननि दरसावे ६९
पियके कर ले उरज छुवावे ❀ मनों मैंन कों खेल खिलावे ७०
उरसों उर मिलि भुजनि भरावे ❀ चरन पलोट सेज पौढ़ावे ७१
ऐसी भाँति नव लाड़ लड़ावे ❀ ताहीसों अपनों जिय ज्यावे ७२

दोहा—प्रेम रसासव छके दोऊ करत बिलास बिनोद।
चढ़न रहत उतरत नहीं, गौर स्याम छबि माद ॥७३॥

मेड़ तोरि रस चल्यो अपारा ❀ रही न तनमन कछु सँभारा ७४
सो रस कहो कहाँ ठहरानों ❀ सखियन के उर नैंन समानों ७५

तेहि अवलम्ब सबै सहचरी ❀ मत्त रहत ठाढ़ी रंग भरी । ७६
या रस की जाके रुचि रहै ❀ भागपाइ सो कछु इक कहै ७७
सखियनि सरनि भावधरि आवै❀सो यह रसके स्वादहि पावै ७८
छांड़ि कपट भ्रम दिन दुलरावै❀ताको भाग कहत नहिं आवै७९
रति मंजरी रग लागै जाके ❀प्रेम कमल फूलै हिय ताके ।८०
यह रस जाके उर न सुहाई ❀ ताको संग वेगि तजि भाई ८१
दोहा—या रस सों लाग्यो रहै, निसि दिन जाको चित्त ।
ताकी पदरज सीस धरि, नंदत रहो ध्रुव नित ॥ ८२ ॥

॥ इति श्री रति मंजरी लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहितहरिवंश ॥२१॥

॥ अथ नेह मजरी लीला प्रारम्भः ॥

वृन्दावन सोभा की सींवा ❀ विहरत दोऊ मेलि भुज ग्रींवा १
राजत तरुन किशोर तमाला ❀ लपटी कंचन वेलि रसाला २
अरुन पीतमित फूलनि छाये ❀ मनो वसन्त निज धाम बनाये ३
बरन बरन के फूलनि फूली ❀ जहाँ तहाँ लता प्रेमरस झूली ४
तीन भांतिके कमल सुहाये ❀ जलथल विकसि रहे मन माये ५
बहुत भाँति के पक्षी बोलें ❀ मोर मराल भरे रस डोलें ६
त्रिविध पवन सततजहा रहही❀ जैसी रुचि तैसी ही बहही ७
हेम बरन अद्भुत धर माई ❀ हीरनि खचित अधिक झलकाई८
रज कपूर की तहां सुहाई ❀ सौरभ मय सतत सुखदाई ९
तरनसुताचहुँदिशिफिरिआई❀ मनो नीलमणि माल बनाई १०
श्रीवृन्दावन की छबि है जैसी ❀ कापै कही जात है तैसी ११
दोहा—फूल जहा तहां देखिये, श्री वृन्दावन माँहि ।
द्रुम वेली खग सहचरी, विना फूल काऊ नाहिं ॥१२॥
सुन्दर सहज छबीली जोरी ❀ सहज प्रेम के रंग में बोरी १३

खेलति फिरत निकुंज नि खोरी ❀ एक वैस पिय कुँवरि किशोरी १४
तैसीये संग सहचरी भोरी ❀ बधी वंक चितवनि की डोरी १५
बिन प्राननि डोलत संग लागी ❀ प्रेम रूप के रग अनुरागी १६
महा प्रेम की रासि रंगीले ❀ चित्त हरन दोऊ छैल छबीले १७
जहा जहा चरन धरत सुखदाई ❀ झर झर रूप परत तहां माई १८
जो तेहि ठा ह्वै देखैं आई ❀ तन की ताहि भूलि सुधि जाई १६
नव किशोर बरनैं क्यों जांही ❀ प्रेम रूप की सींवा नांही २०
तिनको रूप कहन को पारै ❀ जो देखै सो पहिलै हारै २१
ऐसे दोऊ आप में राते ❀ अहर्निसि रहत एक रस माते २२
अंगअग विवस औरसुधि नाही ❀ प्रेम रसासव पान कराही २३
अद्भुत रस पीवत हैं दोऊ ❀ नितमेंत्रिपित होत नहिकोऊ २४
दोहा—मत्त परस्पर रहत ध्रुव, एक प्रेम रङ्गरात।
अति सुरंग लोइनि रहे, दिन अनुराग चुचात ॥२५॥
हाव भाव गुन सींव रगीली ❀ मुखपर पानिप झलक छबीली २६
बैठे कुँवर सोई छवि देखैं ❀ लोभी नैंन न परत निमेषैं २७
रहे चकित ह्वै रसिन विहारी ❀ रूप छटा नहि जात सभारी २८
सहजही प्रेम ढार ढरि जाही ❀ तेहिं रस जानत धाम न छांहीं २६
छिनछिन प्रति रुचि वाढ़ै भारी ❀ रही झूलि सो प्रेम निहारी ३०
कबहूँ ले मृदु कुसुम सुरगनि ❀ गुहिभूषन वानत सव अङ्गनि ३१
वारि वारि पीवत पिय पानी ❀ चितै कुँवरि कछुइकमुसिकानी ३२
छवि सींवाँ भुजलतनि पियारी ❀ छवि तमालपिय भरे ध्य कवारी ३३
महा मधुर रस जुगल विहारा ❀ जहालगि प्रेम सवनिकोसारा ३४
रहत लीन ह्वै दीन रंगीलो ❀ नख सिख सुन्दर रसिक रसीलौ ३५
तिनके प्रेम प्रेम बस भीनी ❀ सखी सोंसखी कहत रंग भीनी ३६

दोहा–जदपि मन चंचल हुतौ, मोह्यो अद्भुत रूप।
विसरि गई सब चतुरता, परत प्रेम के कूप ॥३७॥

प्रिया बदन सुन्दर अति राजे❀सहज रूप को चंद विराजे ॥३८॥
मुसिकनिमंददसनदुति न्यारी❀नापरदामिनि कोटिकवारी ।३६।
झलक कपोलन की चिकनाई❀अँखियारपटिगिरततहाँगाई ४०
अरुणअसित सितनैंन सलोनें❀छ्वैछ्वै जातहैं कानन कोने ४१
सहज चपल इत उतहि निहारैं❀बरपत मनो अनुरागकी धारैं ४२

दोहा–रग भरे अरु रस गरे, सरस छबीले नैंन।
सीचत पिय हिय कमल कौ, नेह नीर मृदु सैंन ॥४३॥

अति अनूप वेंदी जगमगे❀चितै चितै पियपाइनि लगे ४४
नासा बेसरि मोती झलकें❀मनो रूपकी आभा छलके ४५
अद्भुत रूप मेह सो वरसे❀तऊ कुँवर चातक ज्यों तरसे ४६
छवि डोलै चरननि सो लागी❀ उपमा सबै देखि यह भागी ४७
अद्भुत सहज रूप की माला❀ऐसी कुँवरि किशोरी वाला ४८
पहिर कुँवरछिनछिनहिसभारै❀ऐसो लोभ न नेक उतारै ४६
कुँवर प्रेम को सागर राजे❀प्रियाप्रेम तहँ भँवर विराजे ५०
ज्योंसवजलफिरिफिरतहांपरही❀एसे लाल प्रिया दिस ढरही ५१

सो०–प्राननि हूँ के प्रान, पियकी सर्वस लाड़िली।
तिनके नहिं गति आँनि, देखि देखि जीवत सखी ॥५२॥

लालहिप्रिता लगत अति प्यारी❀तापर प्रान करत बलिहारी ५३
जहँ जहँ चरन धरत सुकुँवारी❀सोठा चूँवत लाल विहारी ५४
प्रेम अटक की अटपटी रीती❀जाने सो जाके उर वीती ५५
कहिने को नहि प्रेम के बैना❀मन समुझै के दोऊ नैंना ५६
जेहिजेहि सुमन सुरग की ओरैं❀छिरत नेक नैंन की कोरैं ५७

धाइ कुँवर तेहि फूलहि लावे ❀ मन सेवाके प्रियहि रिझावे ५८
प्रीति रीति को जाने माई ❀ विनपियकुँवररसिकसुखदाई ५६
भये दीन यों तजी बड़ाई ❀ पुनि ताकी बाते न सुहाई ६०
मानत है धनि भाग बड़ाई ❀ एसी कुँवरि किशोरी पाई ६१
अब मोकों कछु और न चहिये ❀ नेननि में अ जन ह्वै रहिये ६२
ऐसे नेंन लगे सखि प्यारे ❀ कैसे रहें आप ते न्यारे ६३
ऐसी न होइ तो यह उर धरही ❀ मोही तन वे चितयो करही ६४
धन्य सोई छिन पल सखि मेरे ❀ कुँवरि नेंन भरि मोतन हेर ६५
दोहा–कोटि काम सुख होत हैं, हँसि चितवति पिय ओर।
भूलि जात तनकी दसा, परसे प्रेम झकोर ॥ ६६ ॥
कुँवर प्रेम जब मन में आयो ❀ वचन किशोरी कहनन पायो ६७
भरि हीयो अतिही अकुलानी ❀ पियकिशोर के उर लपटानी ६८
फिरि गयो प्रेम दुहूँनि पर माई ❀ अपनी अपनी सुधि बिसराई ६६
पियपियप्रिया कहति सुकुँवारी ❀ रहि गये ऐसे भरि अङ्कवारी ७०
प्रेम नीर उर अञ्चल भीने ❀ चितवत नेंन चकोरहि कीने ७१
दोहा—सहज रगीली लाड़िली, सहज रंगीलो लाल।
सहज प्रेम की वेलि मनो, लपटी प्रेम तमाल ॥ ७२ ॥
देखि सखी तहँ सबै भुलानी ❀ एक रही मनो चित्रकी मानी ७३
एकनि के नेंननि जल ढरही ❀ मनो प्रेम के झरना झरही ७४
एक गिरी धर अति मुरझानी ❀ रहिगई एक लता लपटानी ७५
भई अचेत पुनि चेत निहारे ❀ नवसवहिनिमिलिआइसँभारे ७६
देखे दोऊ उर में उरझाने ❀ तबसबहिनि के नेन सिराने ७७
सोरठा–जुगल रसिक सिर मौर, सब सखियनि के प्राँन हैं।
नाहिन है गति और, तिनहीं के सुखसों रंगी ॥ ७८ ॥

महा प्रेम गति सब तें न्यारी ❀ पिय जाने के प्रौंन पियारी ७९
अरुझे मन सुरभत नहि केहूँ ❀जेहि अङ्ग ढरत होत सुख तेहूँ ८०
एकै रुचि दुहुँ में सखि बाढ़ी ❀ परिगई प्रेम ग्रंथि अति गाढ़ी ८१
देखत देखत कल नहि माई ❀तिनको प्रेम वख्यो नहि जाई ८२
सहज सुभाइ अनमनी देखै ❀निमिषन कोटि कलपसमलेखै ८३
हँस चितवत जब प्रीतममांही❀ सोई कलप निमिषह्वै जांही ८४
खेलन हँसन लाल को भावे ❀ नेह की देवी नितही मनावे ८५
कौतुक प्रेम छिनहि छिन होई❀ यह रस समुझै बिरला कोई ८६
ज्यों ज्यों रूपहि देखत माई ❀ प्रेम तृषा की ताप न जाई ८७
दोहा—प्रेम तृषा की ताप ध्रुव, कैसे हूँ कही न जाइ।
रूप नीर छिरकत रहैं, तऊ न नैंन अघाँइ ॥ ८८ ॥
बिच बिच उठत हैं प्रेम तरङ्ग ❀खेलत हँसत मिलत अङ्ग अङ्ग ८९
नवल राधिका वल्लभ जोरी ❀ दूलह्न नित्य दुलहिनी गोरी ९०
सोभित नित्य सहाने बागे ❀ नये नेह के रस अनुरागे ९१
खेनत खेलत तहाँ मन भाये ❀ यह कौतुक कबहूँ न अघाये ९२
नेह मञ्जरी सहजहि भई ❀ हरी एक रस छिन छिन नई ९२
सींचत चाह चौंप के जलसों ❀ लगिरहेदगक्तलनिकेदलसों ९४
सोरठा—श्रीराधावल्लभलाल, रसिक रंगीले विवि कुँवर।
परे प्रेम के ख्याल, रुचत न तिनको और कछू ॥९५॥
नव निकुञ्ज रंग रंग चित्रसारी ❀राजतनवल कुँवरि सुकुवारी ९६
रस विहार की चौंपर खेलें ❀दोऊ प्रवीन अ सनि भुज नेलें ९७
सखियनि तलप निमात बनाई❀कहि न जाइ सोभा कछु माई ९८
पासे नैंन कटाक्षगि टारें ❀हाव भाव रंग रंग की सारें ९९
जो अंग लालहि परस्यो भावे❀समुझि किशोरी ताहिदुरावे १००

घात अनेक मन में उरजावें ❀ हँसकुँवरिजवनहितनिआवे १०१
हारि मानि पग परत थिहारी ❀ रसिकसिरोमनिकीवलिहारी १०२
नैंननिसैंन कछुक मुसिकानी ❀ मैंन सेन रस रैंन न जॉनी १०३
उरज कपोल झलक छवि छाई ❀ चितवतलाल विवसह्वै जाई १०४
तवहिकुँवरिभरि लियेअँकवारी ❀ करुनाकरिदियौअधरसुधारी १०५
दोहा—नागरि कोक कलानि में, विलसत सुरत बिहार।
रोचक रव रसना तहाँ, अरु नूपुर झनकार ॥१०६॥
नवल निकुञ्ज रङ्गीले दोऊ ❀ तेहिठौं सखीनाहिनें कोऊ १०७
रसिकलाल ऐसे रङ्ग भीने ❀ तनमन प्रौंन प्रियाकरदीने १०८
कवहूँ रूप सखी को धरही ❀ रुचिनैंसवगातनिकौकरही १०९
नख सिखनों सिंगार वनावे ❀ याही सेवा में सुख पावे ११०
अद्भुत वैंनी गूथि वनाई ❀ मनामलिनुकी सैंनी आई १११
दोहा—विच विच फूल सुरङ्ग दे, गूथी कवरि वनाइ।
मिलि अनुराग सिंगार दोऊ, गहीमरनमनोआइ ॥११२॥
नैंननि अञ्जन रखा दीनी ❀ ननङ्किवरिस्यारसोलीनी ११३
रीझि अङ्क लाजन भरिलीनौ ❀ अनिहितसोंअधरामृतदीनौं ११४
समुझि सनेह नेन भरि आये ❀ मनोंकज आनन्द जलछाये ११५
विवस होइ तन उर लपटौंने ❀ वीते कलप न नेक अघाने ११६
रहत यहै भ्रम पिय मनमाँहीं ❀ प्रौंनप्रियामोहिमिलीकिनाँहीं ११७
दोहा—देखत देखत हँसत ही, गये कलप वहु वीति।
पल समान जाने नहीं, विलसत दिनयह रीति ॥११८॥
कौन प्रेम तेहिठौं को कहिये ❀ दुहुँकोदचितवतसखिरहिये ११९
नित प्रम एक रस धारा ❀ अतिअगाधतेहिनाहिनपारा १२०
महा मधुर रस प्रम को प्रेमा ❀ पीवततहि भूलिगये नेमा १२१

तैसी सखी रहै दिन राती ❀ हितध्रुवजुगल नेहमदमाती १

दोहा—रसनिधि रसिक किशोरविवि, सहचरि परमप्रवीन ।
महा प्रेम रस मोद में, रहत निरन्तर लीन ॥१२

प्रेम बात कछु कही न जाई ❀ उलटीचाल तहाँ सब माई १
प्रेम बात सुनि बौरा होई ❀ तहाँ सयान रहै नहिकोई १
तनमान मान तिही छिन हारै ❀ भलीबुरी कछुवै न विचारै १
ऐसो प्रेम उपजिहै जबही ❀ हित ध्रुवबात बनैगीतबही १
ताको जतन न दीसत कोई ❀ कुँवरिकृपातें कहा न होई १
वृन्दावन रस सबते न्यारो ❀ प्रीतम तहाँ अपुनपो हारो १
श्रीहरिवंश चरन उर धरई ❀ तब या रसमें मन अनुसरई १
मोमति कवन कहै यह बानी❀हरिवंशचरनबलकछुकबखानी १
जुगल प्रेम मनही में राखें ❀ अनमिलिसोंकबहूँनहिभाषे १

दोहा—पिय प्यारी कौ प्रेम रस, सकहि तौ मनमें राखि ।
या रसके भेदी बिना, काहू सों जिन भाषि ॥१३

प्रेम बात आनन्द मय माई ❀ ताहिसुनतहिय नैंनसिहाई १
जहाँलगिसुखकहियतजगमाँही❀ प्रेम समान और कछुनाही १
यह रस जाके उर नहि आयो ❀ तेहिजगजनमलैवृथागमायो १
सब रस मे देखे अवगाही ❀ सबको सार प्रेम रस आही १
प्रेम छटा जेहि उर पर परई ❀ सो सुखस्वादसबै पर हरई १

दोहा—जेहि दुख सम नहिं और सुख, सुखकी गति कहै कौंन
वारि हारि ध्रुव प्रेम पर, राज चतुर्दश भौंन ॥ १३६

जहाँ लगि उज्वल निर्मलताई ❀ सरससनिग्धसहज मृदुलाई १
मादिक मधुर माधुरी अङ्ग ❀ दुर्ल्लभता के उठत तरङ्ग १
नौतन नित्यछिनहिछिनमाही ❀ इकरसरहतघटत रुचिनाही १

अतिहि अनूपम सहजस्वछंदा ❀ पूरनकला प्रेम वर चदा १४३
सबगुनते ताकी गति न्यारी ❀ जाकेवस भये लालविहारी१४४
दोहा–कहि न सकत रसना कछू, प्रेम सार आनन्द ।
को जाने ध्रुव प्रेम रस, विनु वृन्दावन चन्द ॥१४५॥
प्रेमकी छटा बहुतविधि आही ❀ समुझिनई जिनजैसीचाही१४६
अद्भुत सरस प्रेम ।निज सोई ❀ चित्तचननकीजेहिगतिखोई१४७
रसिक रसिकनी गुन अनुरागे ❀ एक प्रेम दपति मन पागे १४८
इकरस सार प्रेम रस धारा ❀ जुगलकिशोरनिकुञ्जविहारा१४९
यह विहार जाके उर आवे ❀ ताहि न बात दूसरी भावे १५०
औरो भजन आहि बहुतेरे ❀ ते सब प्रेम भजन के चेरे १५१
दोहा–नारदादि सनकादि सब, उद्धव अरु ब्रह्मादि ।
गोपिन को सुख देखि कै, भजन आपनो वादि॥१५२॥
तिन गोपिनु ते दुर्ल्लभ ताई ❀ नित्य विहारसहज सुखदाई १५३
शिवश्रीपतिजदपि ललचाहीं ❀ मन प्रवेस तिनहूँको नाहीं १५४
ऐसे रसिक किशोर विहारी ❀ उज्वल प्रेम विहार अहारी १५५
अति आसक्त परस्पर प्यारे ❀ एक सुभाव दुहुँनि मन हारे१५६
रस में बढ़ी नेह की बेली ❀ तेहि अवलम्बे नवल नवेली१५७
दोहा–हित ध्रुव दुर्ल्लभ सबनि तें, नित्य विहार सरूप ।
ललितादिक निजसहचरी, सो सुख लहति अनूप॥१५८॥
दुर्ल्लभ को दुर्ल्लभ अति माई ❀ वृ दा विपिन सहजसुखदाई १५९
बेलि फूलफल ललितनमाला ❀ प्रेम सुधा सींचत सब काला१६०
मृगी विहङ्गी सखी अपारा ❀ सबके यहि ठौ यहै महारा १६१
नित्य किशोर एकरस भीनें ❀ तन मनप्रान नेह रसरीनें १६२
इहिविधिविलसतप्रेमदिसजनी ❀ जानतनहिंकिनवासररजनी१६३

नेह मञ्जरी हित ध्रुव गावें ❀ दम्पति प्रेम माधुरी पावें १६४
दोहा–प्रेम धाम वृन्दाविपिन, मध्य मधुर बरजोर।
सरिता रस सिंगार की, जगमगात चहुँ ओर ॥१६५॥
सोरठा–प्रेम मई दोऊ लाल, प्रेम मई सहचरि जहाँ।
सेवत हैं सब काल, प्रेम मई वृन्दा विपिन ॥१६६॥
दोहा–वैभव सब ईश्वर्यता, ठाढ़ी, सेवत दूरि।
परसन पावत कबहूँ नहि, श्री वृन्दाबन धूरि ॥१६७॥
ब्रह्म जोति की तेज जहाँ, जोगेश्वर धरैं ध्यान।
ताही की आवरन तहाँ, नहिं पावै कोऊ जान ॥१६८॥
नेह मञ्जरी मञ्जु रस, मञ्जुल कुञ्ज विलास।
जेहि रस के गावत सुनत, रसिकन होत हुलास ॥१६९॥
रूप रंग की बेलि मृदु, छवि के लाल तमाल।
नेह मञ्जरी दुहुँनि में, हरी रहत सब काल ॥१७०॥

॥ इति श्री नेह मञ्जरी लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहित हरिवंश ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीवनविहार लीला प्रारंभ ॥

दोहा–रसिक नृपति हरि वंश जू, परम कृपाल उदार।
श्रीराधा वल्लभ लाल जस, प्रगट कियौ रस सार ॥१॥
वन विहार छवि कहा कहौं, सोभा बढ़ी विशाल।
मानो ब्याहन चढ़े हैं, श्रीराधा वल्लभ लाल ॥२॥
मौरी मौर जराव के, और मोतिनु के हार।
दुलहिन दूलहु अति बने रूप सींव सुकुँवार ॥३॥
फूलनि के बने सेहरे, झलकत प्रकट सुहाग।
बसन सुहाने फबे तन, मनु पहिरो अनुराग ॥४॥

नख सिख लौं भूषन सजे, फबे छबीली भाँति।
झलमलात अंग अग प्रति, मनि रतिननि की कानि ॥५॥
कहा कहौं वानिक बनक, सुन्दर परम उदार।
चरननि तर लोटन विवस, निरखि रूप सिंगार ॥ ६ ॥
जुरी बरात सखीनु की, कोटिक जूथ अपार।
उमड़े छवि के सिंधु मनु मधि दुलहू सुकुँवार ॥ ७ ॥
सबके सीसनि रहो फबि, सीस फूलनि की पांति।
मनो छत्र सिंगार के, झनकि रहे बहु भांति ॥ ८ ॥
किंकिनि धुनि मनो दुदुभी, बाजत हैं चहूँ ओर।
कहा कहौं कहि सकत नहि, आनद नख्यौ न थोर ॥ ९ ॥
अगनि छबि भूपन झलक, फैल रही वन माँहि।
ससि सूरज दुहि जहाँ लगि, निरखत सबै लजाहि ॥ १० ॥
छाडत छबि की फूलभरी, मदन हवाई दार।
निसि ते मानो दिन भयौ, कोटि भान उजियार ॥ ११ ॥
छुटत अलोकिक भोचँपा, जहाँ तहाँ फैली जोति।
कंचन की वरपा मनौ, वृन्दावन में होत ॥ १२ ॥
कुञ्ज कुञ्ज ऐसी बनी, मानो मत्त मतग।
लागत ही जनो पवन के, निर्तत लगा तुरंग ॥ १३ ॥
फूले द्रुम फूली लता, फूले जहाँ तहाँ फूल।
बहुत रंग वृंदा विपिन, पहिरे मनो दुकूल ॥ १४ ॥
उज्जल परम सुरग अति, नव कपूर की धूरि।
बढ़ी धूधि कहत न बनै, रह्यो अकास सब पूरि ॥ १५ ॥
वरिषा रूप सुराग की, बरषत वन चहूँ ओर।
जहाँ तहाँ आनद भरि, निर्तत मोरी मोर ॥ १६ ॥

रितुराज पखावज लियें कर, बीना शरद प्रवीन ।
ग्रीषम ताल रसाल धरें, पावस लाया कीन ॥ १७ ॥
कीर कपोती भँवर पिक, करत मधुर सुर गौन ।
भीजे सब आनंद में, उपजत नव नव तौन ॥ १८ ॥
उड़्यो गुलाल सुरंग बहु, सब वन भयो सुहाग ।
मानो द्रुम द्रुम तें भयो, प्रगट रंग अनुराग ॥ १९ ॥
कोलाहल सब द्विजनि को, तहाँ नाहिने थोर ।
श्रवननि सुनियत नाहि कछु, ऐसो ह्वै रह्यो सोर ॥ २० ॥
चौंर चलत सखियनि करनि, धुज पताक बहुरंग ।
सोभा को सागर बढ़्यो, मानो उठत तरग ॥ २१ ॥
फूलि फूलि फूली फिरें, देखत जहाँ तहाँ फूल ।
झलमलात दीपावली, मनि मय जमुना कूल ॥ २२ ॥
कुञ्ज कुञ्ज बजियार मनो, कोटिक भान प्रकास ।
मद सुगध समीर बहै, सब बन भयो सुवास ॥ २३ ॥
बंदीजन सब खग मनो, कहत हैं बिरद रसाल ।
गावत रागिनी रागमिलि, गुहि रागिनि की माल ॥२४॥
चतुरई चित्र करत फिरत, भीने रङ्ग अनुराग ।
उज्जलता को सग लिये, बंधी प्यार के ताग ॥ २५ ॥
कुञ्ज महल रतननि खच्यो, कीने चित्र रसाल ।
चहूँ ओर रही झलकि कै झालरि मोतिनु माल ॥ २६ ॥
झूमि रही फूलनि लता, बहु विधि रङ्ग अनेक ।
फूले आनंद रङ्ग भरि, निर्त्तत केकी केक ॥ २७ ॥
ललितादिक निज सहचरी, जुरी तहाँ सब आनि ।
कोलाहल आनंद को, कहां लगि सकों बखानि ॥ २८ ॥

यहीं सेज हुदेस रचि, फूलनि आसन वानि।
नव दूलहु दुलहिनि नवल, बैठाये तहाँ आनि ॥२६॥
सखियनि अचल दुहुनि के, ले गठजोरो कीन।
मिलवाई ग्रीवनि भुजनि, छविसों भाँवरि दीन ॥३०॥
सोभा भुव तेहि समै की, वरनैं ऐसो कौन।
रसना कोटि धरैं सरस्वती, तऊ ह्वै रहै मौन ॥३१॥
भीनैं अंचल में चपल, कजरारे कल नैन।
निरखत पिय व्याकुल भये, गह्यो आइ मन मैंन ॥३२॥
अनिसलज्ज सुकुँवरि रही, नखसिखलौं अङ्गढांपि।
छुयौ चहत छ्वै सकत नहि, उठत नवलकर काँपि ॥३३॥
सखियनि के उर फूल भई, दूधा भाती देत।
ऐसी बैठो मुरि कुँवरि, अंचल छुवन न देत ॥३४॥
सखियनि कीने जतन बहु, जुरवाये चखचारि।
रहिगये चितवत चित्र से, मोहन वदन निहारि ॥३५॥
निरखत छविको ससिवदन, वादी फूल अपार।
सुन्दर मुख दिखरावनी, पहिरायो हित हारि ॥३६॥
घूंघट पटके छुवतही, मुरि बैठी सुकुँवारि।
रसिकलाल पाइनि परत, सकत न धीरज धार ॥३७॥
समुझि दसा पियकी तवहि, चितई कछु मुसिकाइ।
फूल्यौ पियको हिय कमल, सो सुख कह्यो न जाइ ॥३८॥
नेकही घूंघट के खुलत, भयो प्रकासित चन्द।
भई किशोर चकार गति, परे मैन के फन्द ॥३६॥
रतननिनि के भाजन निविध, धरे सेज ढिग यौंनि।
मधु मेवा फल अमृत मय, धरि धरि राखे त्यौंनि ॥४०॥

सौंधौ पान सुगन्ध सब, रचि रचि धरे बनाइ।
सखियनि को सुख कहा कहौं, तेहिरस रही समाइ ॥४१॥
मङ्गल रैंन सुहाग कौ, गावत सखी प्रवीन।
प्रगत विलास अनंग रस, बाढ्यौ रग नवीन ॥४२॥
लई लाड़िली अङ्क भरि, कहा कहौं आनन्द।
मानौ छवि की चन्द्रिका, लीनी गहि छवि चन्द ॥४३॥
बढ़ि गयौ ऐसो प्रेम रस, विदा लाजकी कीन।
चितवनि मुसिकनि सहजकी, रतियनि माँहि प्रवीन ॥४४॥
कोक विलास कलान में, दोऊ पिय समतूल।
कहा कहौं तेहि समय की, बाढ़ो जा उर फूल ॥४५॥
वर बिहार रस रंग में, नागरि परम उदारि।
सींचत पिय पिय हिय प्यार सौं, लालच लाल निहार ॥४६॥
नवल रंगीनी रंग भरी, रग भरयो मोहनलाल।
बढ़ो दुहूनि के हीयनें, केलिकी बेलि रसाल ॥४७॥
बतबतात मुसिकात दोऊ, अति छविसौं लपटात।
गौर स्याम तन रहे मिलि, अग अंग झलकात ॥४८॥
दसनांचल अञ्जन लग्यौ, पलक पीक रस सार।
दयौ बदलि अनुराग के, अधरनि को सिंगार ॥४९॥
वारनिहारनि की अरुझ, तन मनकी अरुझानि।
मनों हाँसि सिंगार दोऊ, मिली आपु में आनि ॥५०॥
निसि बीती सब रंग में, उठे भोर सुकुँवार।
सखी सबै अति सोहनी, राजत संग अपार ॥५१॥
सुरंग सहानी तिलक पर, सुरंग चूनरी पाग।
बांहा जोरी फिरति दोऊ, भीने रस अनुराग ॥५२॥

लै लै फूल सुरग पिय, प्रियहि बनावत जात।
अंगनि उरजनि छुवति कौ, अति आतुर अकुलात ॥५३॥
देखि विपिन जमुना तुलिन, ढरे कुटी की ओर।
सोभा आवनि चलनि फिर, जो ध्रुव कहै सो थोर ॥५४॥
दोहा कहे पचास पर, चारि विचारि निहारि।
श्रीराधावल्लभ लाल जस, पल-पल ध्रुव उर धारि ॥ ५५ ॥
बन विहार लीला कही, जो सुनि है करि प्रीति।
सहजहि ताके उपजि है, श्रीवृन्दावन रस रीति ॥५६॥

॥ इति श्री बन विहार लीला सम्पूर्ण श्री ध्रुव श्रीहितहरिवंश ॥२०॥

॥ अथ रंगविहार लीला प्रारम्भः ॥

दोहा—राजत छबिसों रंगमगे, रगमग्यौ सहज सिंगार।
बैठे रगमगी सेज पर, रंगमग्यौ रूप अपार ॥ १ ॥
सखी एक दई आरसी, ललित लाड़िली पानि।
तेहिछिन पियका मन परयो, द्वै छबि के बिच आनि ॥२॥
बढ़ी अधिक सोभा झलक, कुञ्ज भवन रह्यौ छाइ।
मानो फटिक रूप के, चद उदय भये आइ ॥ ३ ॥
निरखि माधुरी सहजकी, नैन न मानत हार।
बढी जहाँ रुचिकी नदी, धीरज फूल निदार ॥ ४ ॥
पिय प्रवीन रस प्रम में, चितवत मोहनि भाइ।
जेहि छिन जैसी होत रुचि, जानत त्योंही लड़ाइ ॥ ५ ॥
छिन छिन औरे औरछबि, पलपल में गति और।
नागर सागर रूपके, परम रसिक सिर मौर ॥ ६ ॥

कबहूँ लाड़िली होति पिय, लाल प्रिया ह्वै जात।
नहिजानत यह प्रेमरस, निसिदिन कितहि बिहात ॥७॥
सुरंग चूनरी एक में, रंग भीने सुकुँवार।
लपटे ऐसी भांति सों, नहि समात बिच हार ॥ ८ ॥
इंद्रनील मनि पिय प्रिया, कोमल कुंदन बेलि।
लसति छबीली भाति सो, सुरत समर रस केलि ॥ ९ ॥
लाल मगन सुख सेज पर, लटकन रही न सँभारि।
रति सागर अधरनि सुधा, प्यावत बदन निहारि ॥१०॥
नैन कटोरी रूपकी, भरी प्रम मद मोद।
अद्भुत रुचि पीवत घड़ी, आनंद रग दुहुँ कोद ॥ ११ ॥
अङ्गनिकी छबि माधुरी, निरखत हूँ न अघाहि।
नैन भँवर भूले फिरे, रूप कमल बन माँहि ॥ १२ ॥
एसो छिन ह्वै है कबहि, कुँवरि अङ्क भरि लेहि।
दमन खंड अति हेत हँसि, पिय मुख बीरी देहि ॥१३॥
यह सोचत रहै चित्त में, भूषन बसन बनाइ।
पहिराऊँ अपने करनि, रहों रीझि सुख पाइ ॥ १४ ॥
जदपि पिय देखत रहै, मन की साध न जाइ।
कैसे हूँ एक [illegible], देख [illegible] अघाइ ॥ १५ ॥
अति [illegible], मोद [illegible] निधान।
तजि [illegible] अप [illegible] मौन ॥ १६ ॥
सौरभत [illegible]।
फलि [illegible] १७ ॥
अति [illegible]
सुनि [illegible] १८ ॥

अधरनि अंगनि परसिबौं, तिनको यहै उपाय।
चितवनि अति अनुराग की, लेत है पियहि जगाइ ॥१९॥
छिन छिन माहि अचेत ह्वै, पल पल माहि सचेत।
नहि जानत या रंग में, गये कलप जुग केत ॥२०॥

॥ कुण्डलिया ॥

एक लाडिली लाल में, अद्भुत सरस सनेह।
रुचि तरंग पल पल बढ़ै, बरषत रस को मेह ॥
बरषत रस को मेह बढ़ी सुख सरिता भारी।
मुसिकनि मनु छवि कमल अंग फूली फुलवारी ॥
हाव भाव अंकुर नये उपजत रंग अनेक।
हित ध्रुव हितसों बात करैं तन मन भये दोऊ एक ॥

दोहा—अलक लड़ी मुख लाडिली, अद्भुत रूप निधान।
मोहि रहे मोहन निरखि, भूले सबै सयान ॥२२॥
तिनके रूपहि बदनि को कितकि बुद्धि है मोर।
रस गुन सींवा रूप की, बँधे नैन की कोर ॥२३॥
अति सुरंग मोतिनु सहित, बनी मंग रस दैन।
मनो हंस अनुराग मिलि, राजत रमपति गैन ॥२४॥
फबि रही गोर ललाट पर, बेंदी की झलकानि।
मणि अनुराग सुहाग की, मानो प्रगटी आनि ॥२५॥
उज्वल श्याम सुरंग दृग, सने सनेह सलौन।
बार बार परसत रहैं, चपल श्रवननि कौन ॥२६॥
कहि न सकत नासा बनिक, उन्नत सुमिलि अनूप।
चितवत मोनी की छबिहि, मनों रूपहि रूपहि ॥२७॥

मधु मय अधर सुरग मृदु, छवि सींवा सुकुवारि ।
दसतनि पकति जोतिपर, दामिनि अगनित वारि ॥२८॥
उपमा सुन्दर चिबुक की, सकत न उरमें आनि ।
सोभा निधि अद्भुत मनो, हरिमन हीरा खानि ॥२६॥
मुसिकनि आनद फूल मनो, चितवनि सुखकी सींव ।
द्वै लर मोतिन पोति छवि, झलक रही मृदु ग्रीव ॥३०॥
उरजन की छवि कहा कहौं, तैसी झलकनि हीय ।
भूलत नहि मनके करनि, धरे रहत है पीय ॥३१॥
तन सौं सारी मिलि रही, सोंधे सनी सुरग ।
मानों सोभा छाइ रही, झलमलात अंग अंग ॥३२॥
रसभीनी झीनी बनी, अंगिया गोरे गात ।
अति सुदेस गाढीकसनि, लसनि ललित उरजात ॥३३॥
प्रीतमको चित मीन मनो, परयो नाभि हृदि मांहि ।
अति स्वादी सुख स्वाद रस, कैसेहूँ निकसत नाहिं ॥३४॥
नखसिखलों दोऊ उरझि रहे, नेकहूँ सुरझत नाहिं ।
ज्यों ज्यों रुचिबाढ़ै अधिक, त्यों त्यों अति उरझांहिं ॥३५॥
जेहरि रीझे नूपुरनि, निमिष न छाड़त पाइ ।
पाइल सुख की रासि तहँ, ते हरि रहे लुभाइ ॥३६॥
चरननि हित जावक लिये, ललन रहे अतिसोहि ।
चित्र करत चित चित्र भयो, छवि चरित्र रहे जोहि ॥३७॥
चाहि रहे च्छावत चखनि, वढ्यो, प्रेम को प्यार ।
रुचि प्रवाह में परयो मन, घूमत बारंबार ॥३८॥
रस भरी चितवनि नेह की, रगभीनी मुसिकानि ।
जीवन को सुख सहज फल, यहै लेत पिय मानि ॥३६॥

नेक कुँवरि मुरि सखी सों, बात कही ललि कान।
पिय की गति औरें भई, कोटिक विरह समान ॥४०॥
पुनि पुनि प्यारी प्यार सों, रँवकि लिये उर लाइ।
देखत मुख हिय दुख भयो, नैंननि जल भरे आइ ॥४१॥
गहि कपोल सुन्दरि करनि, नैंननि नैंन मिलाइ।
अधरनि रस प्यावत पियहि, लाज नेम बिसराइ ॥४२॥
छुटी मूरछा चेत भयो, चितवत मुख की ओर।
रटत पपीहा तृपित मनो, व्याकुल तृपित चकोर ॥४३॥
चरन कमलको निज महल, तहाँ बसत मन प्राँन।
इतनो नातो मानि कें, देहु अधर रस प्राँन ॥४४॥
हारी प्यारी देत रस, पिय पीवत न अघात।
देखि लाड़िली लालरुचि, रीझि रीझि मुसिकात ॥४५॥
करुनानिधि मृदु चित्त, उरजनिसों रही लाइ।
लज्जित ह्वै रहे विवस तहाँ, मदन कोटि सिर नाइ ॥४६॥
सोरठा–पिय सों कहै जु बात, अलबेली अति फूल सों।
हँसि मृदु उर लपटात, पिय के जीवन यहै सुख ॥४७॥
दोहा–प्रेम रासि दोऊ रसिकवर, एकै वेस रस एक।
निमिप न छूटत अङ्ग अङ्ग, यहै दुहुँनि की टेक ॥४८॥
अद्भुत गति सखि प्रीति की, कैसेंहूँ कहत बनेंन।
थोरेहूँ अन्तर निमिप को, सहि न सकत पिय नेंन ॥४९॥
अद्भुत रुचि सखी प्रेम की, सहज परस्पर होइ।
जैसे एकै ही रंग सों, भरिये सीसी दोइ ॥५०॥
स्याम रंग स्यामा रंगी, स्यामा के रंग स्याम।
एक प्रान तन मन सहज, कहिवे को द्वै नाम ॥५१॥

सखियनि के नैंना रंगे, नवल बिहार सुरग।
माती नेह आनन्द मद दम्पति केलि अनग ॥५२॥
प्रेममदन मद नैंन भरे, हियो भर्यो आनन्द।
सुरत रंग के रग रंगे बिवि वृन्दावन चन्द ॥५३॥
रस समुद्र दोऊ लाड़िले, नवनव भाग तरंग।
तामें मज्जन करत रहु, ध्रुव दिन मनहि अभग ॥५४॥
अद्भुत रंग बिहार जस, जो सुनिहै चित लाइ।
रसिक रंगीले बिवि कुँवर, तेहि उर झलकै आइ ॥५५॥
छप्पन दोहा कहे ध्रुव, रंग बिहार अनग।
या रसमों जे रग रहे, तिनहो सों करि संग ॥५६॥

॥ इति श्री रङ्गबिहार लीला सम्पूर्ण को ॥ श्रीहितहरिवंश ॥२८॥

। अथ रसबिहार लीला प्रारम्भः ।

दोहा—रूप नदी करिया मदन, नवल नेह की नाव।
चढ़े फिरत दोऊ लाड़िले, छिन छिन उपजत चाव ॥ १ ॥
रसबिहारी कछु प्रगट कहों, सुनहु रसिक चितलाइ।
नावनि चढ़ि वन विहरिवो, यह उपजी उर आइ ॥ २ ॥
कंचन की रतननि खची, रची अनेक अनग।
जमुना जल में झनकि रही, गुमटी नाना रग ॥ ३ ॥
मनि मय छत्री सननि पर, रही अधिक झलकाइ।
कहूँ कहूँ फूलनि की लता, रहिगई सहज सुभाइ ॥ ४ ॥
नाव बनाव जु कहन को, ऐसी मति धरें कौंन।
कुन्दन के हीरनि मचे, दुसने तिसने भौंन ॥ ५ ॥
लै लै कज गुलाब दल, आसन सेज रचाइ।
अम्बर अरगजा सों छिरकि, राखी सखिनि बिछाइ ॥६॥

तपर रसिकनी रसिक दोऊ, नागर नवल किशोर।
अवलोकत मुख माधुरी, जैसे चन्द चकोर ॥ ७ ॥
ललितादिक निज सहचरी, तेई राजत पास।
आनंद के अनुराग रंगी, लूटत सुख की रासि ॥ ८ ॥
और सतेसन पर चढ़ी, लीनै सौंज सिंगार।
चदन वदन अगरसत, और विविध उपहार ॥ ९ ॥
एकनि कर पानन डवा, एकनि के कर चौंर।
रस सुगंध भीजे सवै, भ्रमत चहूँदिश भौंर ॥ १० ॥
जहाँ जहाँ जल में झलमलै, अंगनि भूषन जोति।
मानों वरिषा रूपकी, कालिंदी पर होति ॥ ११ ॥
भूलि रही नहिं कहि सकत, मतिकी गतिभई पग।
कोटि भानससि कमल मनों, जुरे आइ इक संग ॥ १२ ॥
अति प्रवीन सव सहचरी, रंगी राग के संग।
कोऊ वीना कोऊ सारंगी, कोऊ लिये हुडक मृदंग ॥ १३ ॥
एक लिये किन्नरि मुरज, एक तार कठतार।
सरस एक तें एक सखी, गुनकी अवधि अपार ॥१४॥
एक मधुर सुर गावहीं, अद्भुत वांकी तान।
रीझि लाड़िली लाल दोऊ, देत सवनि कों पान ॥ १५ ॥
चलनि फिरनि छवि कहा कहों, नैना रहे लुभाइ।
मानों रूप छटानि के, लई रविजा सब छाइ ॥ १६ ॥
सुरंग सुगध गुलाल अति, सखियनि दियो उड़ाय।
अवर मनों अनुराग कों, तेहि छिन लियो उढ़ाइ ॥१७॥
कुसुमनि के गेंदुक लिये, खेलत दोऊ सुकुंवार।
आलिंगन चुंवन चपल, छुवत उरज उर हार ॥ १८ ॥

हाव भाव चितवनि चपल, चित्र २ मृदुमुसिकानि।
अति विचित्र घटि नाहिकोऊ, कोककलनिकी खानि॥१९॥
जबहि कुँवर नीवी गहत, भौंह भँग ह्वै जात।
वे पय वात न कहि सक्त, पद कमलनि लपटात ॥०२॥
देखि दीन आतुर पियहि, ह्वै कृपाल रस ऐंन।
अधर सुधा प्यावत पियहि, जुरे नैंन सों नैंन ॥ २१ ॥
रस विहार के सुनत ही, उपजे जिनके रग।
हित ध्रुव तो जाँचत यहै, तिनही सौं ह्वै संग ॥२२॥

॥ इति श्री रस बिहार लीला सम्पूर्ण श्री श्री व श्रीहित हरिवंश ॥ २१ ॥

॥ अथ रंग हुलास लीला प्रारंभ ॥

दोहा-सखी सबे सेवा करें, जिनके प्रेम अपार।
जैसी रुचि है दुहुँनि की, तेसे करत सिंगार ॥ १ ॥
सौरम सों तन उवटि के, मंजन कियो सुकुँवारि।
अगनि की छवि कहा कहौं, मतिसरस्वती रही हारि ॥२॥
मुख तवोल की अरुनई, झलकनि सहज सुहाग।
मनो कमल के मध्य तें, प्रगट भयो अनुराग ॥ ३ ॥
रची सचिक्कन चंद्रिका, फबि रही मग सुरंग।
मनु अनुराग सिंगार की, सींवों रची अनंग ॥ ४ ॥
बेंदी नथ अरु तिलक पर, सुरग चूनरी सोहि।
निरखत धीरज धरे सखी, तऊ रही सब मोहि ॥ ५ ॥
चिलकनिक्चचमकनिदसन, चितवनिमुसिकनिफूल।
झरत रहे पिय लाल पर, सुख निधि आनंद मूल ॥ ६ ॥

कजरारे उज्वल सुरंग अनियारे दोऊ नेन।
उपमा और कहा कहों, मोहन मन हरि लेन ॥७॥
अधरनि की छवि कहा कहों, रस मय मधुर सुरग।
सींचत पिय हिय लोचननि पानिप वारि तरग ॥८॥
अति सुन्दर वर चिबुक पर, साँवल बिंदु सलोंन।
मनहु स्याम मन अलप ह्वै, बेठयो तहां धरि मौंन ॥९॥
कैसे के बरनों सखी, शहजहि भाँति अनूप।
चले ढरकि मन मेंन ज्यों, लागति छवि रवि धूप ॥१०॥
पानिप झलक कपोलपर, छुटि रही अलक रसाल।
वेसरि को मुक्ता चपल, चञ्चल नेंन बिशाल ॥११॥
बिबिधि भाँति भूषन बसन, प्रतिबिंबित अग अग।
रूपनि मनि गन में मनो, झलक्त उठत तरग ॥१२॥
झलकनि झमकनि कहा कहों, सोभा बढ़ी सुभाइ।
मानों कोटिक दामिनी, छबिसों चमकी आइ ॥१३॥
मिहदी परम सुरङ्ग सों, रचे रचन मृदु पाँनि।
मनों रेंनी अनुराग की, रगे कमल दल बानि ॥१४॥
नेननि अञ्जन देत सखी, काँपत कर अरु हीय।
अति बिशाल चञ्चल निर्ते, विबस होत हैं पीय ॥१५॥
अति प्रवीन सब अग में रूप सींव सुकुँवारि।
याढत हे छवि अधिक तन, लालहि लेत सभारि ॥१६॥
प्रेम प्रिया को कहा कहों, राम्हे छमिसों छाइ।
पिय के सर्वस लाड़िली, रहे बिन मोल बिकाइ ॥१७॥
उपजत छबि हारावली, लालन रह निहारि।
तृपित न कबहूँ भये हैं, पियत प्रेम रस वारि ॥१८॥

नख सिख माहनी सोहनी, वारी रति श्री कोटि।
जद्दपि पिय मोहनहु ते, रहे चरन तरि लोटि ॥१६॥
सखियनि मण्डल में खरी तैसीयै झलक सिंगार।
मनु सेवति छवि चन्द को, रूप के कमल अपार ॥२०॥
अब सुन प्यारे लाल की, रुचिको रच्यौ सिंगार।
वेसरि सारी कंचु की, वेनी गुही सुढार ॥२१॥
बेंदी दई अति प्यार सों, हँसि लाड़िली सुकुँवारि।
वाढ़ी ऐसी फूल उर, सकत न लाल सँभारि ॥२२॥
कुन्दन के रतिननि खचे, बने तरौना कान।
मानौ छवि के कमल ढिग,झलकन छवि के भान ॥२३॥
जहाँ लगि भूषन कुवरिके, पहिरे तेई बनाइ।
कौन भांति अति लाज सौं, चितई मुरि मुसिकाइ ॥२४॥
वेप प्रिया को करत ही, पानिप वढ़ी अनूप।
मनो सबके मन हरन कौं, प्रगटी मूरति रूप ॥२५॥
नवल सखी छवि नई नई, अग अग झलकंत।
मनु सुहाग अनुराग की, सींव सुरंग सीमंत ॥२६॥
अति विशाल चञ्चल दगनि, अञ्जन दियौ बनाइ।
रेख सेम्ब कोरहि लगी, चितहि लियो चुराय ॥२७॥
नासा बेसरि फनि रही, थिरकनि मुक्ता मग।
मनहु खिलावत विधु बुधहि, हितसों लिये उछंग ॥२८॥
घनी महनी साँवरी, सोभा रही सुभाइ।
उपमा और कहा कहाँ, लाड़ली रही लुभाइ ॥२६॥
नितवनि अति अनुराग की, रगभीनो मुसिकानि।
देखि छगोनी छबहि छनि, पाइनि में परी आनि ॥३०॥

मोहन तें भई मोहनी, लई सखी सब मोहि।
अति सुठौंन बानिक बनक, रही कुँवरि मुख जोहि ॥३१॥
बीन कुँवरि कों लियो कर, बजई बाँकी तौंन।
अति प्रवीन लाली रिझै, गाई सुर बधौंन ॥३२॥
रीझि लाड़िली अङ्क भरि, लीनी उर सों लाइ।
द्वै सरिता छविकी मनों, मिली आप में आइ ॥३३॥
बाढ़ी रुचि या वेष पर, उपज्यो नौतन चाव।
मिटी न मनकी चपलता, भूले और सुभाव ॥३४॥
पियहि पिया कौ वेष रुचै, प्यारी कौं पिय वेष।
हियतें हिय छूटत नहीं, पर गई प्रेम की रेख ॥३५॥
ठाढ़ी जुवती जूथ में, छवि की उठत झकोर।
मानों चन्दहि घेरि रहे, सबके नैंन चकोर ॥३६॥
करि सिंगारि सहचरि सबै, रूपहि रही निहारि।
बैठे कुञ्ज सिंगार में सेज सिंगार सवारि ॥३७॥
राजत नवल निकुञ्ज में, नव किशोर चित चोर।
सखी सहेली सहचरी, झमकि रही चहुँ ओर ॥३८॥
प्रेम मदन रसको सदन, रत्न अदन धरे पीय।
रस समुद्र में परे दोऊ, जुरे नैंन अरु हीय ॥३९॥
लटकनि ललित सुहावनी, मो तो बसि रही हीय।
जब लावत उर प्यारसों, हँसि हँसि प्यारी पीय ॥४०॥
कजरारे सुठि मोहनें, उज्वल स्याम सुरंग।
नैंननि छवि पर वारि सत, खजन कज कुरंग ॥४१॥
जिहिजिहि चितवनिचितहरयो, तेहिचितवनिकोश्याम।
रसिकलाल छोड़त नहीं, निमिष लाड़िली पास ॥४२॥

❀ दोहा ❀

कुँवरि चाल सखी देखिके, कुँवरहि भूली चाल।
रहिगये ठाढ़े चित्र से चितवनि नैन विशाल ॥४३॥
जो फिरि चितवै लाड़िली, ठाढ़ी यमुना कूल।
फिरि आई अति प्यार सों, लीने गहि भुज मूल ॥४४॥
अद्भुत जोरी रूपनिधि, नवल लाड़िली लाल।
ऐसे रहे ध्रुव हीय में, जैसे कण्ठ की माल ॥४५॥
जोरी गोरी स्याम की, सोभा निधि सुकुँवारि।
अटके दोऊ आप में, उमड़ी प्रेम की धार ॥४६॥
तेहि धारा की बूंद इक, कैसे बरनी जाइ।
और जतन कछु नाहिं ध्रुव, रसिकन संग उपाइ ॥४७॥
मदन मोद मद रस मगन, रहत मुदित मनमाँहि।
दरसत परसत उरज उर, लपटत हूँ न अघाँहि ॥४८॥
कुँवरि कटाछनि की छटा, मनु अनियारे बांन।
पिय हिय में ध्रुव लगत रहैं, सोई ह्वै गये मौंन ॥४६॥
प्रीतम के जीवनि यहै, नैन कटाछनि पात।
त्यों त्यों पियकी सीससखि, चरननि तर ढरयो जात ॥५०॥
ऐसे रस में परे मन, जनम सफल ध्रुव होइ।
नैन सैन मुसिकनि रतन, हिय गुन सों लै पोइ ॥५१॥
लाड़िली लाल के प्रेम कौ, जिनके रहे विचार।
सुनि ध्रुव तिनकी चरन रज, वंदन करि सिर धार ॥५२॥

॥ इति श्री रङ्ग हुलास लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहितहरिवंश ॥१०॥

। अथ रंगबिनोद लीला प्रारम्भः ।

दोहा प्रथमहि चितवनि लाज की, दुतिय मधुर मृदु बैंन ।
तृतिय परस अगनि सरस, उरजनि छवि सुख दैंन ॥१॥
परिरंभन चुम्बन चतुर, पंचम भाइ तरग ।
पट रस विंजन स्वाद्र जिमि, उठत अनग तरग ॥२॥
विविध भाति रति केलि कल, सप्त समुद्र अपार ।
वचन रचन अष्टम नवम, रस निधि रगविहार ॥३॥
क्रम सों कहे भ्रुव नव रसहिं, मिटत न कनहूँ हुलास ।
ऐसो लाड़िली लाल कों, अद्भुत प्रेम विलास ॥४॥
अघ वरनों ज्योंनार कछु, रस में रस सिंगार ।
प्रीति रसोई अति वनी, प्रीतम जेवन हार ॥५॥
विविध भाति विंजन सरस, भए जु वहुत प्रकार ।
पानी पानिप अग दुति, पीवत वारम्वार ॥६॥
अधर सुधा मादिक मधुर, पुट कपूर की हाँसि ।
वीच सलोंनी चितवनी, पद्वत रुचि सुखिगसि ॥७॥
चाह सुधा रसना नयन, प्यास त्रिपा नहि थोर ।
परसत रति अति चोंप सों, छवि स्वादहि नहि थोर ॥८॥
आलिंगन वर कलप तरु, सुरत रंग सुख मूल ।
इक रस फूल्यों रहत दिन, चितवनि मुसिकनि फूल ॥९॥
अति सुगध वचनावली, वीरी मुख अनुराग ।
पोंढ़े सेज परजक पर, ओढ़े चीर सुहाग ॥१०॥
वृन्दावन द्रुम प्रेम के, फूले फल अनूप ।
लोहनि अलि ललितादिकनि, पीवत सोरभ रूप ॥११॥

परम रसिक नागर नवल, श्रीराधावल्लभ लाल।
मुसिकनि मन हरिलेत हैं, चितवनि नैंन विशाल ॥१२॥
नव किशोर चित चोर दोऊ, अलवेले सुकुँवार।
भीने रग सुरंग में, रचि रहे प्रेम विहार ॥१३॥
दुलहिनि दूलहु रस मसे, प्रेम रूप की रासि।
नवल रगीली सेज पर, करत हाँस परहाँसि ॥१४॥
अतिहिं छवीले कुँवर दोऊ, करत रसीली बात।
मर्म भिदी कहि कहि कछु, हँसि हँसि उर लपटात ॥१५॥
कजरारे चचल नयन, छवि की उठत झकोर।
को समुझै घन मेघ सुख, विना रसिक वर मोर ॥१६॥
रदन चिन्ह रति के सुरग, सोभित सुभग कपोल।
मनहु कमल के दलनि पर, झलकत रतन अमोल ॥१७॥
सुरत रंग पर सुख नहीं, वातिन ऊपर वात।
अधर पान पर रस नही, परसनि पर उर जात ॥१८॥
लटकनि लपटन रंग की, चितवनि हाँसि विनोद।
यह सुख समुझै को सखी, जो उपजत दुहुँ कोद ॥१९॥
कोमल फूली लतनि में, करत केलि रस माँहि।
तहाँ तहाँ की वल्ली सवै, सकुचि निवस ह्वै जाँहि ॥२०
वृन्दावन की लता द्रुम, कुञ्ज सवै चिद्‌रूप।
झनक झनक विहरत तहां, दंपति सहज सरूप ॥२१॥
सौरभ अगनि कहा कहाँ, स्वाँस सुवास अनूप।
रोंम रोंम आनन्द निधि, देखिवौ पानिप रूप ॥२२॥
फूलन में दोऊ फूल से, सौरभ रूप सुरंग।
ललितादिक पाछे फिरे, भीनी तिनके रग ॥२३॥

धय धन्य सखियनि सुकृत, देखति ऐसी भाँति ।
जबहि लाडिली लाल तन, प्यार सौं मृदु मुसिक्याँति ॥२४॥
जब देखो रस रंग ढरी, बाढ्यौ आनंद हीय ।
रचि बनाइ मृदु आँगुरीनु, बीरी ख्वावत पीय ॥२५॥
निचहि लाल चाहत छुयौ, कुच कच अरु भुज मूल ।
अति प्रवीन मनमें समुझि, ढाँपति नील दुकूल ॥२६॥
आतुर पिय अनुराग बस, कहि न सकत कछु बात ।
फिरि फिरि पाइनि में परत, मृदु मुख हाहा खात ॥२७॥
अति सनेह के रंग भरी, रहि न सकी अकुलाइ ।
लये लाइ उरजन तनहिं, अधर सुधारस प्याइ ॥२८॥
कहा कहौं या प्रेम की, बात कही नहि जाइ ।
प्यारी मानौं पिगहि लै, राखे प्यार सौं छाइ ॥२९॥
देखि प्रिया कौ प्रेम प्रिय, मुख तन रहे निहारि ।
नैन सजल अति त्रिवस ह्वै, रहे प्राँन वपु हारि ॥३०॥
वृन्दावन मैं सिंधु ह्वै, उमड़े रहत अपार ।
प्रेम मदन रस सौं भरे, रगत रंग सिंगार ॥३१॥
मध्य पुलिन सेज्या बनी, सुन्दर सुभग सुढार ।
विलसत स्यामा स्यामा तह, सोभा निधि सुकुँवारि ॥३२॥
प्रेम नेम रति रंग सुख, दिनहि परस्पर होत ।
पल पल नव नव दसा फिरैं, सहजहि ओत प्रोत ॥३३॥
मदन लहरि के उठतहीं, बाढ़त सुरत निहार ।
प्रेम लहरि में परतही, रहत न देह सँभार ॥३४॥
अद्भुत जुगल किशोर रस, छिन छिन और और ।
प्रेम मगन विलसत दोऊ, रसिकनि मनि सिरमौर ॥३५॥

रंगम सगम सागरनि, बढ़यो रुचि को तोइ ।
या रस में ललितादिकनि, राखे नैन समोइ ॥३६॥
सखियन को सुख कहा कहौं, मेरी मति इति नाँहि ।
यह रस उनकी कृपा तें, जो रहै ध्रुव मनमाँहि ॥३७॥
भाग पाइ ठहराइ जो, यह रस पारो प्रेम ।
ताके उर झलकत रहैं, गौर नील मनि हेम ॥३८॥
मेरी मति तो कौन है, यह रस परस्यौ जाइ ।
एक लाड़िली लाल की, सखिहि लेत बनाइ ॥३६॥
दोहा रङ्ग विनोद के, रचि कीने चालीस ।
सुनें गुनें हित सहित ध्रुव, तेहि पद रज धरि सीस ॥४०॥
॥ इति श्री रङ्ग विनोद लीला सपूर्ण श्री जै जै श्रीहितहरिवंश ॥२१॥

॥ अथ आनन्द दसाविनोद प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि श्रीगुरु कृपा तें, नित्य विहार सुरंग ।
बरनों कछु इक जथामति, दम्पति केलि अनग ॥१॥
नाइका तीन प्रकार की, वरनी कोक कलानि ।
प्रिया चरन उर में धरें, ठाढी जोरें पानि ॥२॥
नौढा मध्या अति चतुर, प्रौढा परम प्रवीन ।
कुँवरि चरन नखचंद्रिकनि, सेवत ज्यों जल मीन ॥३॥
एकै वय क्रम नाहिं कछु, सहज अलौकिक रीति ।
मिलमत विविधि विनोद रति, उपजावत निज प्रीति ॥४॥
अपनी अपनी समै सब, रुचिलै करें अनुसार ।
फिरत रहें छिन छिन नई, आनन्द दसा निहार ॥५॥

कहा कहौं छवि माधुरी, छिन छिन चाह नवीन।
अद्भुत सुख में मधुर मृदु, प्रेम मदन रस लीन ॥६॥
पल पल औरै और विधि, उपजत नाना रंग।
सब अंगनि कों देत सुख, यह कौतुक बिन अंग ॥७॥
प्रेम सिंधु उमड़े रहैं, कबहूँ घटत जु नाँहि।
तेहि सुख को सुख कहा कहौं, जो उपजत दुहुँ माँहि ॥८॥
प्रथमहि नौढा की दसा, रुचि लै प्रगटी आइ।
नख सिख अम्बर लाज कौ, मानौं लयौ उढ़ाइ ॥९॥
नमित ग्रीव छविसींव रही, अंग छुवन नहिं देत।
आतुर पिय अनुराग बस, मृदु भुज भरि भरि लेत ॥१०॥
चाहत उरजनि छुयौ जब, उठत नवल कर काँपि।
समुझि लाड़िली जोग भुज, कर कमलनि रही ढाँपि ॥११॥
परम चतुर चंचल सहज, अंचल में दोऊ नैंन।
रोम रोम पिय के बढ़्यौ, निरखि प्रेम रस मैंन ॥१२॥
भये अधीर आधीन अति, कहि न सकत कछु बात।
फिरफिर पाइनि में परत, मृदु मुख हाहा खात ॥१३॥
यह गति देखत पीय की, चितई कछु मुसिकात।
करुना करि चूँबत मुखहि, अधर सुधारस प्याइ ॥१४॥
लटकि लाल उरसों लगी, उपजे अगनित भाइ।
बचन रचन सुख कहा कहौं, प्रीतम रहे लुभाइ ॥१५॥
हाव भाव में अति चतुर, रति विलास रस रासि।
चंचल नैननि चितवनी, करत मंद मृदु हाँसि ॥१६॥
राखे लै अति प्यार सों, उरजनि मधि भुज मूल।
रुचि प्रवाह में परे दोऊ, तनिकें लाज दुकूल ॥१७॥

प्रेम मदन रस रंग करि, भरे रहत बिवि हीय।
लपटे ऐसी भाँति सों ह्वै, तन मन इक कीय ॥१८॥
अंग अग मन मन मिले, प्रेम मदन रससार।
ऐसे रंग बिहार पै, ध्रुव कीनौ बलिहार ॥१६॥
बिवस लाल सुख रग में, रही न देह सँभार।
प्रगट भई प्रौढा दसा, जाके प्रेम अपार ॥२०॥
लये अंक भरि प्यार सौं, उरजन सों रही लाइ।
सावधान कीने जबै, नासा पुट चटकाइ ॥२१॥
परिरंभन चुंबन अधिक, आलिंगन बहु रीति।
रति बिपरीति बिलसत बिबिधि, लये मीत रस जीति ॥२२॥
वक्र कटाच्छिनि हरत मन, बिच बिच मृदु मुसिकाति।
पियके उर पर लसत मनो, छबि दामिनि भलकाति ॥२३॥
श्रम जलकन मुख गोर पर, अंजन लसत सुदेश।
कहा कहौं छबि सहज की, खुलि रहे सगबगे केश ॥२४॥
पीक कपोलनि फबि रही, कहु कहु अंजन लीक।
मनु अनुराग सिंगार मिलि, चित्र रचे रति नीक ॥२५॥
जेती कोक कला कही, अद्भुत प्रेम अनंग।
छिन छिन औरै और बिधि, उपजत अगनि अग ॥२६॥
प्रेम चाह रस सिंधु में, मगन रहत दिन रैन।
उरसों उर अधरनि अधर, जुर नैन सों नैन ॥२७॥
रस समुद्र गहरे पर, त्रिपित होत तऊ नाहिं।
नैन मीन ललितादिकनि, तिरति फिरति तेहि माँहि ॥२८॥
न्यारी न्यारी दशा कही, एक स्वाद हित जानि।
जैसे एकै नाज के, कीने बिंजन बानि ॥२६॥

रति विलास रस सींव करें, मदन विनोद बहु भाँति ।
आतुरता पिय दृगनि की, निरखि कुँवरि मुसिकाँति ॥३०॥
निरखि निरखि ऐसे सुखहि, सखी सबै बलिजात ।
तिनहूँ तें फूली अधिक, आनद उर न समात ॥३१॥
सहजहिं शील सुभाव मृदु, रहैं प्रसन्न सब काल ।
एक लाल सुख स्वाद हित, करैं विलास नव बाल ॥३२॥
प्यारी भौंहनि चितै रहे, परम रसिक सिर मौर ।
चलत भौंवती रुचि लिये, रुचत नहीं कछु और ॥३३॥
रुचि रुचि रसके रचे रुचि, मानों प्यारी पीय ।
सहज प्रेम के रंग रंगे, द्वै तन मन इक जीय ॥३४॥
देवे कों राख्यो न कछु अति उदार सुकुँवारि ।
अधर सुधा प्यावत पियहि, मुख छवि रही निहारि ॥३५॥
अति प्रवीन सब अग में, जानत बहुत लड़ाइ ।
सुख समुद्र में लाड़िली, लिये जनु लाल न्हवाइ ॥३६॥
रुचि फुलवारी फूलि रही, प्रीतम के उर ऐन ।
सींचत प्यारी प्यार जल, चितवनि मुसिकनि सैन ॥३७॥
अलक लड़ी पिय पर लटकि, प्यार सों रही भुज डारि ।
याते चित्र से ह्वै रहे, जिनि भुज लेहि उतारि ॥३८॥
अग अग छवि माधुरी, निरखत पिय न अघाइ ।
देखि लाल के लालचहि, लालच रही ललचाइ ॥३९॥
कहा कहों या प्रेम की, पियके गति नहिं आँन ।
एक लाड़िली सगही, जिनके जीवन प्रान ॥४०॥

॥ कवित्त ॥

अलवेली सुकुँवारी नैननि के आगें रहे, जब लगि प्रीतम

प्रीतम के प्रान रहैं तन में। यह जिय जान प्यारी रचको न होत न्यारी, तिनही के प्रेम रग रगि रही मन में ॥ परम प्रवीन गोरी हाव भाव में किशोरी, नये नये छविके तरंग उठें छिन में। हित ध्रुव प्रीतम के नैन मीन रस लीन, खेलबो करत दिन प्रति रूप बन में ॥४१॥

दोहा—स्थूल मदन रस कछु कह्यो, अब सुनि सूक्षम रूप।
जहां विराजत एक रस, रहत हैं प्रेम सरूप ॥४२॥
भीने दोऊ आसक्त रस, तन मन रहे अरुझाइ।
एक प्यार ही दुहुँनि पर, रह्यो सहज ही छाइ ॥४३॥

॥ कवित्त ॥

प्यारही की कुञ्ज और प्यारही की सेज रची, प्यार ही सों प्यारेलाल प्यारी बात करहीं। प्यारही की चितवनि मुसिकनि प्यारही की, प्यारही सों प्यारी जू कों त्यारो अंक भरही ॥ प्यार सों लटकि रहे प्यारही सों मुख चहैं, प्यारही सों प्यारो प्रिया अंक भुज धरहीं। हित ध्रुव प्यार भरी प्यारी सखी देखें खरी, प्यारे प्यार रह्यो छाइ प्यार रस ढरहीं ॥४४॥

दोहा—चितवनि मुसिकनि सों रंगे, प्रेम रंग रस सार।
छके रहत मद मत्तगति, आनंद नेह सिंगार ॥४५॥
दरसत सरसत उरज उर, छुवनि कचनि भुज मूलि।
पहिरें पट दोऊ प्रेम के, बिसरे नेम दुकूल ॥४६॥
बूड़यो मन रस प्रेम में, धीरज धरि सकै नाँहि।
नैंन कमल हरुवे ढुते, लिरत रूप जल माँहि ॥४७॥
फूल सुरंग अनुराग के, उर उर में रहे फूलि।
मनहु भँवर मन दुहुनि के, छवि सुगंध रहे भूलि ॥४८॥

जीवनि मुसिकनि चितैवौ, अधर सुधा रस स्वाँस ।
लेत मधुप मन पिय मनो, कोमल कमल सुवास ॥४६॥
पहिरें दोऊ अति फूल सौं, फून विलास कौ हार ।
केलिहुँ तहाँ भारी लगत, ऐसे दोऊ सुँकुवार ॥५०॥

॥ कवित्त ॥

माधुरी की कुञ्ज ताके मोदकी लै सेज रची, तेहि पर राजें अलबेले सुँकुवाररी । रूप तेज मोद के जुगन तन जग मगे, हाव भाव चातुरी के भूषन सुढाररी । नेह नीर नैंननि की सैननि में रहे भींजि, कौंन रङ्ग बाढ्यौ जहाँ बोलिवोऊ भाररी । अतिहीं आसक्त सखी रही मोहि जोहि, हित ध्रुव प्राँननि कौ यहे है अहाररी ॥५१॥

दोहा–रसही की मूरति दोऊ, रसिक लाड़िली लाल ।
रस ही सौं चितवत रहैं, रस भरे नैंन विशाल ॥५२॥
पिय परसत भुज मूल करि, और उरज हिय हार ।
बूड़ि जात मन रूप में, रहत न देह सँभार ॥५३॥
प्रेम नेम की दशा जिती, उपजत आनहि आन ।
रस निधान निलसत रहैं, सुख कौ नाँहि प्रमाँन ॥५४॥
और न कछु सुहाइ मन, यह जाँचत निसि भोर ।
या सुख घन सौं लगे रहौं, ध्रुव लोइन दिन मोर ॥५५॥
यह सुख निरखत सखिन के आनन्द बढ़्यौ न थोर ।
हेम लता फूली मनो, झूमि रही चहुँ ओर ॥५६॥
छप्पन दोहा कहे ध्रुव, आनन्द दशा निनोद ।
रूप माधुरी रग रंगे, पगे प्रम रस मोद ॥५७॥

॥ इति श्री आनन्द दसा विनोद लीला संपूर्ण को श्री प श्री हितहरिवंश ॥२२॥

॥ अथ रहस्य लता लीला प्रारंभ ॥

दोहा–जो कह्यो श्री हरिवश रस, विरलो समुझन हार।
एक दोइ जो पाईये, खोजत सब संसार ॥१॥
नवकिशोर सुकुँवार तन, मृदु भुज मेले अंश।
जोरी सनी सनेह रस, प्रकट करी हरिवंश ॥२॥
नव दूलह नव दुलहिनी, एक प्रान द्वै देह।
वृन्दावन वरषत रहैं, नवल नेह को मेह ॥२॥
कहा कहौं पानिप मुखनि की, छावहि नाहि कहूँ ओर।
राजत ऐसी भाँति मनो, द्वै ससि चतुर चकोर ॥३॥
सीस फूल सिखि चन्द्रिका, छबि की उठत झकोर।
मानो छवि सिंगार ढिंग, निर्तत आनन्द मोर ॥४॥
विवि भालनि विवि बरन की, वेंदी दई अनूप।
मनु अनुराग सिंगार की, जोरी बनी वनी सरूप ॥५॥
सोरठा–लोचन परम रसाल, कजरारे सुठि सोहने।
चञ्चल नैंन बिशाल, अनियारे मन मोहने ॥६॥

॥ अरिल्ल ॥

देखत आप में रूप न कबहूँ अघात हैं।
दोऊ एक रस रीति न प्रेम समात हैं॥
पल पल में रुचि बढ़े सखी मुसिकात हैं।
हरि हाँ मुख यों मुख रहे जोरि तऊ ललचात हैं ॥७॥
दोहा–झलकनि वेसरि दुहुनि की, उपमा कही न जाइ।
स्वांस पँवन मुक्तनि हलनि सो छवि रही उर छाइ ॥८॥

कहा कहों छवि नासकनि, शुक तिल फूलनि डारि ।
अधर सुरङ्ग वधूक तें, विंव पँवारनि वारि ॥ ९ ॥
चिबुक मध्य बनो सहजही, बिंदुकन अतिहि अनूप ।
पिय साँवल को मन मनो, परयो रूप के कूप ॥१०॥
बंक चितवनी रस भरी, बेधे प्रीतम प्राँन ।
जदपि सूर प्रवीन हैं, भूले सबै सयाँन ॥११॥
रूप छटा छवि की छटा, उमड़ी रहत अनेक ।
कैसें सकै सँभारि सखि, पिय मन चातिक एक ॥१२॥
छुटे बार सोंधे सने, श्रम जलकन मुख जोति ।
मानों सींव सिंगार की, बनी कण्ठ पर पोति ॥१३॥
जलज हार हीरावली, रतनावली सुरङ्ग ।
अनुराग सरोवर में मनो उठत हैं रूप तरङ्ग ॥१४॥
पानिप झलक कपोल पर, अलक रही सुठि सोहि ।
रसिक लाल पाइनि परत छिन छिन यह छवि जोह ॥१५॥
कहि न सकत अङ्गन प्रभा, मेरी मति अति हीन ।
चन्द्र सीमंतक दामिनी, जम्बू नद रद कीन ॥१६॥
मोतिन की लर बीच बिच कण्ठ गुराई रेप ।
निरखि फन्यो मन मोद फद, निसरयो मादन वप ॥१७॥
कुच कमलनि की छवि निरखि, रहे लाल ललचाइ ।
अति विशाल अँखियनि निरखि चितई मुरि मुसिकाइ॥१८॥
अति सुदेश अंगिया बनी, कमनि कमी छवि देत ।
भुज मूलनि की गोरता, पिय प्रानननि हरिलेत ॥१९॥
सोभा की सरिता उदर, नाभि भँवर रम णे न ।
पर तहाँ निकसत नहीं, प्रीतम के मन नैन ॥२०॥

वसन सुहाने अति सुरङ्ग, चुनि पहिराये वाँनि ।
महिदी परम सुरङ्ग सों, रचे चरन मृदु पानि ॥२१॥
प्रेम वेलि दुहूँ में वढ़ी, फूली फूल विलास ।
निसि दिन पहिरे रहत उर, दम्पति हार हुलास ॥२२॥
पिय नैंननि में प्रिया वसैं, प्रिया नैंननि में पीय ।
हिय सों हिय लागे रहैं, मिलि रहे जिय सों जीय ॥२३॥
दरसत परसत हँसत ही, वीते कलप अनेक ।
कवहुँ आई पिय हियें, मिलि वैठे घरी एक ॥२४॥
अति उदार सुकुँवार दोऊ, रसिक सूर रस माँहि ।
छिन छिन वाढ़त चौंप नई, नेक मुरत मन नाँहिं ॥२५॥
रसिक रगीले रंग भरे, अति ही रमीले आहि ।
अद्भुत छवि की माधुरी, जीवत हैं दोऊ चाहि ॥२६॥
वदन किशोरी चन्द मनों, भये किशोर चकोर ।
पल न परत निरखत रहे, नवल नेननि की कोर ॥२७॥
वङ्क भृकुटि अति सोहनी, विच विच मुसिकनि मद ।
कैसें निकसे परयो मन, रचे जहाँ इते फन्द ॥२८॥
देखि दसा पिय लाल की, रही वाम तन घूमि ।
कोमल हित अति हेत सों लागी पिय हिय झूमि ॥२९॥
सोरठा–अद्भुत प्रेम विहार, रह्यो प्यार भ्रुव छाइ के ।
तैसेई दोऊ सुकुँवार, और सखीनु गति एकही ॥३०॥
दोहा–पिय को मन प्यारी मिया, प्यारी को मन लाल ।
पहिरे पट तन तन वरन, चलत एक ही चाल ॥३१॥
शील सुभाव सनेह गुन, वय अरु रूप समान ।
रंगे परस्पर एक रंग, अति प्रवीन रस जान ॥३२॥

छिन छिन बाढ़त नेह नव, पल पल रूप तरग ।
इक रस प्रेम छके रहैं, भीने रग अनंग ॥३३॥
मोहे मोहन मैंन रग, चितवनि मोहनि भाय ।
कबहूँ विवस चेतत कबहूँ, प्यारी प्यार उपाय ॥३४॥
खेलत रहस्य निकुञ्ज में, अतिहि रहसि निज केलि ।
लपटी प्रेम तमाल सौं, मनो रूप की वेलि ॥३५॥
नूपुर भूषन मनि झलक, किंकिनि शब्द अपार ।
सखियनि हियौ सिरात सुनि, झनक २ झनकार ॥३६॥
कबहूँ बात मुसिकात बिच, फिरि फिरि फिरि लपटात ।
ऐसे रग विहार में, तदपि न सखी अघात ॥३७॥
रीति दुहुँन की एक ही, हारत नाहिन कोइ ।
जो छिन आवत है सखो, चौंप चौगुनी होइ ॥३८॥
लागे आनन्द बलि सों, चितवनि मुसिकनि फूल ।
लाज बसन तजिके मनों, पहिरें फूल दुकूल ॥३९॥
नैंन कटाक्षनि की चलनि, चिते रहे मुसिकाइ ।
तबहिं कुँवरि दै अधर रस, लीने उर सों लाइ ॥४०॥
पिय के औषद यहे है, अधर सुधारस पाँन ।
एक लाडिली सहज हीं, जिनके जीवन प्राँन ॥४१॥
अगनि की छवि चितैवो, यह जीवन पिय जोग ।
और भुजनि भरि हेत सों, रहत लाइ जब हीय ॥४२॥
रसपति रतिपति भूल रहे, देखत अद्भुत रीति ।
घटत न कबहूँ बदन रहे, छिन छिन नव नव प्रीति ॥४३॥
हँसि चितवति जब लाडिली, डगमगात सुकुँवारि ।
अति प्रवीन रस नागरी, थामि लेति तेहि बार ॥४४॥

विवस होत जब दोऊ प्रिय, माते प्रेम अनंग।
रहत सहेली सहचरी, सावधान तिन संग ॥४५॥
अधर अधर हियसौं हियो, उरजनि सौं पिय पौंन।
अंगनि छवावत चेत भये, समुझत सखी सुजौंन ॥४६॥
कबहूं प्रिया पट पीत के, पिय प्यारी के बास।
पहिरें दोऊ आनंद में, निर्त्तत रास विलास ॥४७॥
हाव भाव निर्त्तत मनौं, चितवनि सुलप सुदेस।
उरप तिरप झटकनि भुजनि, खुले सगबगे केस ॥४८॥
अधरनि कीजुरी मढली, करनि फिरनि सुख मूल।
नैन सैन दे सीस रस, मुसिकनि बरषत फूल ॥४९॥
राग बचन धुनि भूषननि, बाजे बजत अनंग।
सखी मृगी रही मोहि के जिनकें प्रेम अभंग ॥५०॥
निसि दिन है अवलंब यह, अद्भुत जुगल विहार।
ललितादिक निज सहचरी, छिन छिन करत सिंगार ॥५१॥
यह रस तौ कछु सुगम नहि, तन मन ते अति दूरि।
जानत तेई रसिक जन, जिनके जीवन मूरि ॥५२॥
ब्रह्मादिक मुकटनि सहित, जिनकौं घँसत है सीस।
प्रिया चरन जावक रचत, तेई वृन्दावन ईस ॥५३॥
यह विलास जौ चिंतवत, चिंता मन मिटि जांहि।
आनन्द कौ दीपक दिपै, निसि दिन तेहि उर मांहि ॥५४॥
यह रस परस्यो नाहि जिन तिनहि न नेंक जताइ।
जैसें धन कौ धनी ध्रुव, राखत दूरि दुराइ ॥५५॥
सहज अलौकिक प्रेम पर, दंपति रहे लुभाइ।
लौकिक रसना वें कहौ, कैसे बरन्यो जाइ ॥५६॥

वृन्दावन वर कल्पतरु, सर्वोपरि ध्रुव आहि।
मनहूँ के जो चिंतवत, देत तवहिं फल ताहि ॥५७॥
दोहा रहस्य लतानि के, अष्ट ऊपर पचास।
सुनत सुनावत बढ़त उर, हित ध्रुव प्रेम विलास ॥५८॥

॥ कुंडलिया ॥

वार वार तो वनत नहिं, यह सयोग अनूप।
मानुष तन वृन्दाविपिन, रसिकनि सग विविरूप॥
रसिकनि सग विवि रूप, भजन सर्वोपर आही।
मनदे ध्रुव यह रंग, लेहु पल पल अवगाही॥
जो छिन जात सो फिरत नहीं, करहु उपाइ अपार।
सकल सयानप छाड़ि भजि, दुर्ल्लभ है यह वार ॥५९॥

॥ इति श्री रहस्य लता लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हितहरिवंश ॥३१।

॥ अथ आनंद लता लीला प्रारंभ ॥

दोहा-आनन्द को रंग नित जहाँ, सोच न दुचितई लेस।
इकछत्त विलसत राज रस, वृन्दाविपिन नरेस ॥१॥
खेलत फूलनि कुञ्ज में, वादचो रंग आनन्द।
आनन्द मे सव सहचरी, आनन्द के विवि चन्द ॥२॥
वास रंगीली लाडिली, फूल रगीलो पीय।
नेह देह नागर नवल, नागरि आनन्द हीय ॥३॥
आनन्द द्रुम आनन्द लता, फूले आनन्द फूल।
आनन्द रस जमुना वहै, मनिमय आनन्द कूल ॥४॥
सर्वोपरि आनन्द निधि, वृन्दावन सुख पुञ्ज।
द्रुम द्रुम वोलत खग मधुर, कुञ्ज कुञ्ज अलि गुञ्ज ॥५॥

जहाँ तहाँ फूले कमल वर, और फूल चहूँ ओर ।
फूले फूले फिरत तहाँ, रस में मधुपनि दोर ॥६॥
राजत हैं दोऊ रंग भरे, रूप सींव सुकुँवार ।
तन मन अरुझे प्रेम रंग, आनन्द रंग सिंगार ॥७॥
मदन हुलास विलास रंग, आनन्द रस को कन्द ।
कहा कहों चहूँ ओर सखि, लुटत फिरत आनन्द ॥८॥
नव किशोरता माधुरी, छबि विद्या सब आनि ।
प्रिया चरन सेवत रहैं, ठाढ़ी जोरे पाँनि ॥६॥
अधर जुरनि उर धुरनि, मुरनि अग कोऊ भाँति ।
सो छवि अद्भुत सहज की, कैसे वरनी जाति ॥१०॥
छुवनि कुचनि मन मन रुचनि, प्रीतमकर धरैंआनि ।
कंचन के श्री फल मनों, ढँके कमल दल वांनि ॥११॥
उरज कलस कुन्दन वने, मानों मगल साज ।
कुँवरि रूप के नगर कों, पिय पायों सुख राज ॥१२॥
कजरारे चंचल नैंन, निरखत अति सुख होइ ।
मानों छवि के कंज पर, खेलत खजन दोइ ॥१३॥
नैंन जुरनि भौंहनि मुरनि, सधि छवीली ठौर ।
कैसे निकसें परयो जहँ, चित्त रसिक सिर मौर ॥१४॥
प्यारी तन प्यारो सवैं, करत नैंन मग पौंन ।
अधर नाभि भुज मूल कुच, तहां वसत पिय भौंन ॥१५॥
ललित लड़ेती कुँवरि की, चलनि छवीली भाँति ।
विवस लाल पाछें फिरत, अवलोकन तन काँति ॥१६॥
जहँ जहँ मनि मय धरनि पर, चरन धरति सुकुँवारि ।
तहँ तहँ पिय दृग अंचलनि, पहिलहिं धरहिं सँवारि ॥१७॥

सो०-श्री वृन्दावन माँहि, आनन्द सिन्धु तरङ्ग उठैं।
घन अनुराग चुवाँहि, फूले छवि के फूल ह्वै ॥१८॥

॥ सवैया ॥

रूप को फूल रसीली विहारनि मैंन को फूल रसीलो विहारी।
फूल रहे अनुराग के बाग में राग को रंग मच्यो रुचिकारी॥
मावे यह पिय के मन को सुख सेनें हँसें रसमें सुकुँवारी।
सखी चहूँ ओर विलोकत हैं ध्रुव आनदवारि किधों फुलवारी॥१९॥

दोहा-सुजनि भरत मन मन हरत, करत रग रस केलि।
आनन्द स्याम तमाल सों, लपटी आनन्द वेलि ॥२०॥
नखसिख भूपन झलकि रहे, प्रति विंवित अग अग।
झल मलात अगनित मनो, दर्पण दीप अनग ॥२१॥
अद्भुत रंग अनंग रस, चित्र विच प्रेम तरंग।
इहि कौतुक न अघात कोऊ, जदपि मिले अग अ ग ॥२२॥
श्रम जलक मुख गोर पर, छुटे वार अरु हार।
लपटि परे पट सहज हीं, सोभा वदी अपार ॥२३॥
यह सुख निरखत सहचरी, भरी रग दुहुँ ओर।
अँखियाँ तो दुचिती भई, परी रूप झकझोर ॥२४॥
नेन अमित मुद्रित मनों, प्रीतम रहे छवि जोहि।
मानें कञ्चन कमल में, छवि के जलि रहे सोहि ॥२५॥
निरखत छवि मुख माधुरी, माच्यो प्रम अनग।
जैसे सिंधु तरग उठें, सिंधु तन अतिहिं उतंग ॥२६॥
तबहिं लाडिली लाल तन, हँसि चितवति मुख ओर।
मानो प्यावत प्यार सों, प्रेम रसासव घोर ॥२७॥
निरखत मोहन रूप तन, छिन छिन होत अचेत।

प्याइ अधर रस माधुरी, करवावत हैं चेत ॥२८॥
सोरठा–रुचि कौ यहे अहार, प्यारी की उनहारि सखि।
जीवत तेहिं अधार, प्रान प्रिया हिरदें वसें ॥२९॥
दोहा–परम रसिक नागर नवल, और न कछु सुहात।
के भावे छवि देखिवो, के सुन्यो चाहत वात ॥३०॥
पाँनिप को पानी पियत, त्रिपित होत नहि नैंन।
उमक्यो रहत है एक रस, प्रेम रग उर ऐंन ॥३१॥
जव जव मुख देखत रहैं, कज्जल नैंननि कोर।
पिय लोइनि निर्तत मनों आनन्द के द्वै मोर ॥३२॥
मेघ महल परदा कुही, राजत कुञ्ज निकुञ्ज।
वेंठे नेह की सेज पर, करत केलि सुख पुञ्ज ॥३३॥
अनिहिं लालची लाल पिय, निरखत हूँ न अघात।
प्रिया रूप तन विपिन में, रहे नैंन उरझात ॥३४॥
फूलनि देखत फिरत हैं, तदाकार इहि भाइ।
प्रिया चरन पावत जहां, तहँ तहँ रहत लुभाइ ॥३५॥
महा भाव गति अति सरस, उपजत नव नव भाव।
मोहन छवि निरख्यो करत वढयों प्रेम को चाव ॥३६॥
राजत अङ्क में लाड़िली, प्रीतम जानत नाँहिं।
विलपत रुदन वढ्यो जहाँ, महा भाव उर माँहिं ॥३७॥
अति प्रवीन मन सहचरी, जानत रसकी रीति।
अ गनि ल्छावनि करनि पिय, होत न तऊ प्रतीति ॥३८॥
हँसि लागी जव कण्ठ सों, लये जगाइ अनुराग।
मानों दीनो रीझिके, आनन्द हार सुहाग ॥३९॥
एक समे भ्रम प्रेम को वढ्यो दुहुनि के हीय।

पीय करत हौं ही प्रिया, प्रिया कहत हौं पीय ॥४०॥
अटपटी चाल है प्रेम की, को समुझै यह बात ।
रंगे परस्पर एक रंग, अदल, बदल ह्वै जात ॥४१॥
उपजत अंगनि अङ्ग रंग, छिन छिन औरै और ।
अति प्रवीन विलसत रहैं, परम रसिक सिर मौर ॥४२॥
वृन्दावन आनन्द की, वारि, सुहृद ध्रुव आहि ।
माया काल प्रपंच की पवन न परसत ताहि ॥४३॥
दुख, निमानी नैकु नहिं, इकछत सुख को राज ।
मत्त भये खेलत दोऊ, सखियनि सङ्ग समाज ॥४४॥
छवि वितौन आनन्द को, वृन्दावन रह्यौ छाइ ।
सोच धूप की ताप तहाँ, कबहूँ न परसत आइ ॥४५॥
वृन्दावन छवि झलक की, उपमा नहि कछु औन ।
जहिं आगे ससि भाँन दोऊ, होत है तिमिर समान ॥४६॥
भूली छवि श्रीमोहनी, सोहनी रहि गई पाँनि ।
झनक भनक श्रवननि परी, नैंननि मृदुमुसुकाँनि ॥४७॥
भजन आहि बहु भाँति के, नहिं आवत उर ऐंन ।
जुगल रूप घन विपिन तन, तहाँ उरझ्यो ध्रुव नैंन ॥४८॥
दोहा तीस उन्नीस कहे, आनन्द लता अनंग ।
सुनत हिये ध्रुव प्रेम को, फूलै कमल सुरंग ॥४९॥

॥ इति श्री अनुराग लता लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहितहरिवंश ॥१८॥

॥ अथ अनुराग लता लीला प्रारंभ ॥

प्रेम बीज उपजे मन माही ❀ तब सब निपै वासना जाहीं ॥१॥
जग तें भयो फिरे वैरागी ❀ वृंदावन रसमें अनुरागी ॥२॥

सो अनुराग परम सुखदाई ❀ तेहि बिन ताहि न और सुहाई ३
नवल प्रेम रस अटक्यो जोई ❀ धनि वैराग ताहि कौ हई ४
निस्प्रेही होइ देह तें न्यारो ❀ जहाँ मन लाग्यो सोई प्यारो ५
ताही के रस घूमत डोले ❀ भरे नैंन जल मुख नहि बोले ६
दोहा–तीन लोक को राज सुख, देखो तुला चढ़ाइ ।
निमिष प्रेम सुख गरुव अति, तेहि आगे घटिजाइ ॥७॥
याही रस जाको मन भीनो ❀ देह धरे कौ तेहि फल लीनो ८
रहे भूलि विवि रूप मझारी ❀ छिन छिन चाह बढ़े अतिभारी९
या रस कौ साधन नहिं कोई ❀ एक कृपा तें जो कछु होई १०
कहौ कृपा उपजे किहि भाँती ❀ रसिकनिसंगफिरै दिनराती ११
भक्त कृपा सग एकै मानो ❀ वृक्षवीज फल भिन्न न जानो१२
वहुत कहत विस्तारहि करई ❀ प्रेम कथा में अन्तर परई १३
मान अपमान न मनमें आने ❀ चित्त जुगल छविरसमें सानें १४
रुदत हँसत नाचत कछु गावै ❀ प्रेममगन दोऊलाल लड़ावै१५
इहि विधि कौ जग्र ह्वै वैरागी ❀ तेहिसमनाहिकोऊवड़भागी १६
दोहा–विन नेननि लै मुकुर अरु, विना लवन रस साग ।
तिन पिय तिय सिंगार सजि, विना प्रेम वैराग ॥१७॥
ऐसी विधि कत्र फिरि है वनमें ❀ तनअतिछीन प्रेमरंगमनमें १८
जहँ लगि स्वाद कहे जगमाहीं ❀ सहजहि ते फीके ह्वै जाहीं १९
जुगल रूप उर अंतर सचई ❀ निसिदिन एक प्रेमरङ्ग रचई२०
विना नेम जहाँ प्रेम निराजे ❀ सो निहकाम एकरस गाजे २१
राई सम जो नेम मिलाई ❀ काँजी दूध प्रेम ह्वै जाई २२
गोपिनु के सम भक्त न आँही ❀ उद्धवनिधि तिनकी रज चाही२३
तिन मन कछु मकामता आई ❀ तातें निज अंतर परचो माइ२४

दोहा–दुखको मूल सकामता, सुखको मूल निष्काम ।
विरह नियोग न तहा कछु, रस में ध्रुव सुख धाम ॥२५॥

अब सोइ ठाव कहों सुनिलीजें ❀ तहा सप्रेम एक रस पीजें २६
वृन्दाविपिन एक रस ऐना ❀ तहां सेवत मैंननि की सैंना २७
नवल लता द्रुम नवल सुहाये ❀ सुमन सुरंग सुवामनि छाये २८
तामें विहरत नवल विहारी ❀ सग प्रिया प्रौंनन तें प्यारी २६
जेहि द्रुम फूल वेलि तन हेरें ❀ मनों मदन रस सीचतफेरें ३०
चितवनिमुसिकनि सहज सुहाई ❀ जीवनि यहै दुहुँनि की माई ३१
प्रेम मदन के मद में माते ❀ मनों गयंद अपनेरगराते ३२

दोहा–तेज पुञ्ज रस पुञ्ज दोऊ, रूप पुञ्ज सुकुँवारि ।
मंजुल कुञ्ज निकुञ्ज तर, रचि रहे प्रेम विहार ॥३३॥

परे प्रेम एक रस फन्दा ❀ विवि वृन्दावनचंद स्वछंदा ३४
अतिरस वढ्यो कह्यो नहि जाई ❀ देखत देखतकल नहि माई ३५
तिनके प्रेम रग रस भरी ❀ डोलत संग लगी सहचरी ३६
प्रेम मगन तन नेम निसारे ❀ सखियनिप्रौंनप्रौंनदोऊप्यारे ३७
छिन छिन नवल रूप रसरगा ❀ तहाँ प्रेमको राज अभगा ३८

दोहा–प्रम रासि दोऊ रसिक वर, विलसत नित्य विहार ।
ललितादिक निज लेत हैं, तेहि रस को सुखसार ॥३६॥

नित्य किशोर रूप की रासी ❀ विलसत प्रेमनिकुञ्जविलासी ४०
ऐसे दोऊ रस में भीनें ❀ चंद चकोर नेंन मन कीनें ४१
एक प्रान द्वै देह विहारी ❀ तिनके बीचप्रेम अधिकारी ४२
सहजहि ताके रस बस प्यारे ❀ एकसुभाइ दुहुँनि मन हारे ४३
तेहि रस को सुख अद्भुत आही ❀ ललितादिकदिन लेत हैताही ४४

दोहा—अनुराग लता लागे सुफल, ललित लाड़िली लाल ।
ललितादिक दिक लेत है, तेहि रस सुरस रसाल ॥४५॥
प्रीति की रीति सबनि ते न्यारी ❀ को समुझे बिन लाल बिहारी ४६
तृण समजहा राखी जु बड़ाई ❀ तेहि रस आप गहीसेवकाई ४७
छिन छिन नवसत नवलबनावे ❀ रचि रचि बीरी आप खुवावे ४८
चरननि जावक चित्र सुहाये ❀ चतुर चतुरई सों जु बनाये ४६
ऐसो रूप बिचारत आही ❀ मेरी डीठि लगौ जिन ताही ५०
यातें सौंबल सरस सलौना ❀ सुन्दर मुख पर दियौ दिठौंना ५१
पुनि लै मुकरठाढ़े कर जोरे ❀ चितवत नवल प्रिया दृगकोरे ५२
तिनकी प्रभुता देखि भुलानी ❀ चितवत दूरि भई खिलखानी ५३
जो कुछ प्रीति लाल की गाई ❀ तातें अधिक कुँवरि की माई ५४
दोहा—प्रिया प्रेम के सिंधु में, पैरत नवल किशोर ।
रहे हारि यातें तहाँ, पावत नहिं कहूँ ओर ॥५५॥
शुक सनकादि न जानत भेवा ❀ जदपि करत बहुत विधि सेवा ५५
वैभवता में सब अरुभानें ❀ नित्य विहारी नहि पहचानें ५७
यहरस जो समुझे सो जानें ❀ औरभजनविधिमननहिआनें ५८
प्रेम सुभाव जाहि उर आवे ❀ ताहि न बात दूसरी भावे ५६
नवल राज नित रूप नवेला ❀ तेहिं ठौं राजत प्रेम अकेला ६०
बिना भाग अनुराग न आवे ❀ बिन अनुराग तिनहि क्यों पावे ६१
दोहा—नागर दोऊ अनुराग बस, नवल नह ग्ग रात ।
अनुरागे तिनके भजन, और न दूजी बात ॥६२॥
माया भ्रम सब जग जजाला ❀ जात नजान्योंदुर्लभ काला६३
जगत सगाई साँची जाँनी ❀ मतिपितुतियसुतसोंअरुभानी ६४
जैसे चित्र पेखना पेखे ❀ जग के सुख सब एसे देखे ६५

जेतिक द्यौस जिवे जग माँही ❀ ते वितवे वृन्दावन छाँही ६६
तेई भये जगत ते न्यारे ❀ जिन वृन्दावन चद समारे ६७
परम धन्य तिनही की देही ❀ जिन भजे दपति परम सनेही ६८
यह अनुराग लता जो गावे ❀ निश्चै सो अनुरागहि पावे ६६

॥ दोहा ॥

अनुरागे जिनके भजन, जुगल किशोर विहार।
तिन रसिकनि की चरन रज, ले ले ध्रुव सिरधार ॥७०॥
अनुरागे जिनके भजन, ते तौ पैयत थोर।
जिनके हीये झलमले, रस मय मधुर किशोर ॥७१॥
अनुरागे जिनके भजन, दूजी वात न और।
तिन रसिकनि की चरन रज, ध्रुव के सिर को मौर ॥७२॥
भाग पाइ जु पाईये, ऐसे रसिक रसाल।
जिनके हिय तें टरत नहि, श्री राधावल्लभ लाल ॥७३॥
परम सनेही जुगल वर, जानत प्रीति की रीति।
मन वचके ध्रुव जिन भजे, तेई गये जग जीति ॥७४॥

॥ इति श्री अनुराग लता लीला सपूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥१२॥

॥ अथ प्रेम लता लीला प्रारम्भ ॥

प्रथमहि शुभ गुरुपद उर आनों ❀ बात प्रेम की कछुक बखानों १
और कृपा रसिकनि की चाहों ❀ तब या रस को सर अवगाहों २
लाल लाडिली जो उर आनी ❀ तैसी मोपे जात बखानी ३
घटि बढ़ि अक्षर जो कहूँ होई ❀ लेहु बनाइ कृपाकरि सोई ४
रसिक रसिकनी को जस जानों ❀ और कछु जिय जिन उर आनों ५
कही प्रेम की गति ध्रुव यातें ❀ सुनतहि सरस होत हिय तातें ६

अरु रस रीति पथ पहिचाने ❀ तब या रस के स्वादहि जाने ७

दोहा-जिन नहि समुझ्यो प्रेम रस, तिनसों कौन अलाप ।
दादुर हूँ जल में रहे जाने मीन मिलाप ॥८॥

खान पान सुख चाहत अपने ❀ तिनको प्रेम छुवत नहिं सपनें ९
जो या प्रेम हिंडोरे झूलें ❀ तिनको औरसबै सुख भूलें १०
प्रेम रसासव चाख्यो जबहीं ❀ औरें रंग चढ़े ध्रुव तबहीं ११
या रस प्रेम परे मन आई ❀ मीन नीरकी गति ह्वै जाई १२
निसि दिन ताहि न कछुसुहाई ❀ प्रीतम के रस रहै समाई १३
जाको है जासों मन मान्यो ❀ सो है ताके हाथ बिकान्यो १४
अरु ताके अंग संग की बातें ❀ प्यारी लगत सबै तेहि नातें १५
रुचै सोई जो ताको भावै ❀ ऐसी नेह की रीति कहावै १६
जो रस लाल लड़ैती माँही ❀ ऐसो प्रेम और कहूँ नाँहीं १७

दोहा-व्रज देविन के प्रेम की, बंधी धुजा अति दूरि ।
ब्रह्मादिक वांछित रहैं, तिनके पद की धूरि ॥१८॥

तिनहूँ को मनतहां न परसे ❀ ललितादिक जेहिठां छबिदरसै १९
नित्य विहार अखंडित धारा ❀ एक बैस रस मधुर विहारा २०
नित्यकिशोर रूप निधि सींवाँ ❀ विलसत सहजमेलिभुज ग्रीवाँ २१
तिन बिच अंतर पल को नाँहीं ❀ तऊ तृषित प्रीतम मन माहीं २२
अद्भुत सहज रंग सुखदाई ❀ तहां प्रेम की एक दुहाई २३
पिय गज मत्त न अंकुस के बस ❀ परम स्वछंद फिरत अपनेरस २४
देखतहीं तिनकी पर छाँहीं ❀ मदन कोटि व्याकुल ह्वै जाँहीं २५
ते मोहन बस कीने गोरी ❀ राखे बांधि प्रेम की डोरी २६
छुटत न क्यों हूँ रहे अटक ❀ प्रान हारि चरननि तर लटके २७
प्रीति की रीति लालही जाने ❀ तजि प्रभुता निनमोल बिकाने २८

तैसीय रसिक प्रवीन किशोरी ❀ रसनिधि नेहके सिंधु झँकोरी २६
पिय को राखत नैंननि आगे ❀ हुलमिहुलसि प्रीतम उरलागे ३०
अवधि प्रेमकी सहजहि प्यारे ❀ परवस प्रेम दुहुँनि मन हारे ३१
एक रंग रुचि है सब काला ❀ उज्वल प्रेम लाड़िली लाला ३२
दोहा–तन मन रूप सुभाव मिलि, ह्वै रहे एकै प्राँन।
 जीवनि मुसकनि चितैवो, अधर रसासव पाँन ॥३३॥
वृन्दावन घन राजत कुंजे ❀ विहरत तहाँ रसिक रसपुंजे ३४
एक प्रान विवि देह है दोऊ ❀ तिन समान प्रेमी नहि कोऊ ३५
सब पर अधिक जान यह प्रेमा ❀ ताके वस भये तजि सब नेमा ३६
या सुख पर नाहिन सुख कोई ❀ जाने सो जो भेदी होई ३७
दोहा–अद्भुत नित्य अमृत रस, लाल लाड़िली प्रेम।
 छिन छिन नख मनि चन्द्रकनि, सेवत हैं सुख नेम ॥३८॥
प्रेम मई रस मैंन विनोदा ❀ नव नव उपजत है दुहु कोदा ३९
तेहि विहार रस मगन विहारी ❀ जानतनहिकितद्योसनिसारी ४०
जो कोऊ कोटिक भाँति बखानें ❀ बिनस्वादी या रसहिन जानें ४१
रहत है दिनहि प्रेम सरसाई ❀ तहाँ मान की नाहि समाई ४२
सूक्ष्म प्रेम न मनमें आवे ❀ स्थूल रूप सबहीं को भावे ४३
महा मधुर रस सब ते न्यारो ❀ जिहिठाँदुहुनिअपुनपौहारौ ४४
तिनहि देखि आसक्तिहूँ भूली ❀ ह्वै आसक्त सुरस में भूली ४५
दोहा–लाल लाड़िली प्रेम तें, सरस सखिनु को प्रेम।
 अटकी हैं निज प्रीति रस, परसत तिनहि न नेम ॥४६॥
सखियनिके सुख परसुख नाँहीं ❀ आनंद मोद रंगी मन माँही ४७
रूप रसासव पहे अहारा ❀ तन मनकी कछुनाहि सँभारा ४८
एकै रस नित भीजी रहही ❀ साँझभोरसमुभयोनहि कबहीं ४९

सो रस करत रहत नित पानें ❀ निसिवासर वीततनहि जानें ५०
या रस सों जाको मनमान्यो ❀ सोइध्रुवरसिकनिप्रानसमान्यों ५१
दोहा–छिन छिन नवल विहार में, करत हैं नवल सिंगार।
रुचि तरंग पल पल तहाँ, बाढ़त रहत अपार ॥५२॥
करि सिंगार जबे दोऊ निवरे ❀ छविसों नव निकुञ्जते निकरे ५३
भयोप्रकाशनखमनिदुति ऐसी ❀ कोटि चन्द आभा नहि तैसी ५४
तिनके रूप न बरने जाहीं ❀ मोहत मैंन देखि परछाहीं ५५
हित की सींव सहेली सोहै ❀ चहुँ दिसिमनोचकोरी जोहै ५६
अंगनि की निज सौरभ ताई ❀ जहँ तहँ पूरि रही बनमाई ५७
सो सुवास जो नेकहि पावे ❀ प्रेमविवसतन सुधि बिसरावे ५८
परे प्रेम के फन्द मझारी ❀ सर्वसु प्रान रहे तहाँ हारी ५६
तेहि बिन ताहि न और सुहाई ❀ बिन देखे हीयौ अकुनाई ६०
सुनत श्रवन भूषन झनकारा ❀ खगमृगचकितथकितजलधारा ६१
मिहिंदी रग पद अंबुज बने ❀ धरतअवनि पर छबिको गने ६२
लटकि लटकि अलवेली भाति ❀ लपटिलालउर मृदुमुसिकाति ६३
ऐसी छवि ध्रुव नेंननि माँझ ❀ रहो निरतर भोर और साँझ ६४
प्रेम वेलि वृन्दावन फूली ❀ पियतमाल असनि पर झूली ६५
देखि महाछवि सुधि बुधिभूली ❀ सब सखियनिकीजीवनमूली ६६
तिनसखियनि की कृपामनाऊँ ❀ या रसकी कनिका जो पाऊँ ६७
दोहा–निसि दिन तौ जाचत रहौं, वृन्दावन रस रैंन।
छिन छिन दम्पति छवि छटा, छाइ रहौ ध्रुव नेंन ॥६८॥

॥ इति श्री प्रेम लता लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥३६॥

—❀ ❀—

॥ अथ रसानन्द लीला प्रारंभ ॥

दोहा–हरिवंश हस उदित दिनहि, परम रसिक रस रासि ।
उमे प्रेम रस किरन मनो, करी जु जगत प्रकासि ॥१॥

प्रथम चरण हरिवंशजी ध्याऊँ ❀ तातें कछुक प्रेम रस पाऊँ २
प्रेमा रस तवही पहिचानें ❀ श्री हरिवंश नाम गुन गानें ३
नित्य विहार तवहि तौ जानें ❀ श्रीहरिवंश पदनि उर आनें ४
जो रस श्री हरिवंश जुगायौ ❀ सो रस तौ काहू नहिं पायौ ५
निगम आगमकी कौन चलावें ❀ महा विष्णु के मननहि आवें ६
या रस को तवही अधिकारी ❀ करहि कृपा श्रीराधाप्यारी ७
कृपा नागरी तवहीं करें ❀ श्रीहरिवंश सुकर सिर धरें ८

सो०–भजि रे मन दिन रैन, श्री हरिवंश जु पद कमल ।
देखौ भरि जु नैंन, तेहि प्रताप तें जुगल छवि ॥९॥

यह उपजीमनअतिअभिलाषा ❀ करहु कृपा जु करौं कछुभाषा १०
मोपै है अवहि मति थोरी ❀ कैसे वरनो यह रस जोरी ११
दीजे मोहि वुद्धि परकासा ❀ यह पुरवौ तुम मेरी आसा १२
रसिक अनन्य छरन रज पाऊँ ❀ सहज केलि नवदम्पति गाऊँ १३

दोहा–अगम ते अगम अगाधि अति, पहुँचत नहि मन वेद ।
श्री हरिवंश प्रताप वल, पावत सुगम सुभेद ॥१४॥

श्रीवृन्दावनरसअतहिअगाधा ❀ तहाँनित्यकेलिमोहनश्रीराधा १५
वृ दा विपिन करें नित केली ❀ पिय मोहन अरु प्रियानवेली १६
सोभित कंचन भूँमि सुहाई ❀ हंससुता छवि कही न जाई १७
मनिनजटितनिविकुन विराजे ❀ नवमराल नव कुञ्जसुगाजे १८
अति कमनीय वने नव कुञ्जा ❀ मधुकर तहाँ करत मधुगुञ्जा १९

विचविचकनकक्अश्रवि न्यारी ❀ अति अनूप झलकत सोभारी२०
वल्लिनु कुसुम वने वहु भाँती ❀ वरन वरन सुन्दर इक पाँती २१
वृ दा सकल रची मन सम्पति❀निरखिनिरखिआनदमनदंपति२२
फूले सुमन विविधि नव रगा ❀ अतिअनुराग होत प्रिय सगा २३
त्रिविधि पवनतह वहैं सुहाई ❀ शुक कपोत कोकिल कुहकाई २४
दोहा–सहज कुञ्ज अति ही वनी, मधुप करत गुञ्जार ।
सकल सुगधनि लै रच्यौ, अद्भुत मदन अगार ॥२५॥
सखियनि सेज्या रुचिर बनाई ❀ विविध भाँति सौरभ बुरकाई २६
ताप वैठे नवल दम्पती ❀ सखियनिहितसुखसदासपती २७
अंसनि भुजा परस्पर धारी ❀ मोहनलाल राधिका प्यारी २८
ईपद हाँस दोऊ मुसिकाँही ❀ अति अनुराग भरे मनमाँही२६
दोहा–मोहन जू निज पाँनि, प्रिया अङ्ग भूपन मजे ।
सुभग मनोहर ठाँनि, विविधि कुसुम बैंनी गुही ॥३०॥
मौरी सीस सुरग सुहाई ❀ मोतिन माँग रची सुखदाई ३१
वैंनी फूल देखि छवि न्यारी ❀ मनो मनमें प्रगटी उजियारी३२
मृगमद तिलक भालपर कीयो ❀ मधिविंदुका कुमकुमकोदीयो ३३
खुटिला खुभी श्रवन झनकाई ❀ वने नैंन प्रतिविंव की झाई ३४
दोहा–नैंन सुरग अनूप अति, चञ्चल वक विशाल ।
रुचिर रेख अञ्जन वनी, चितवनि चपल रसाल ॥३५॥
वाम कपोल स्याम विंदु सोहै ❀ अलप अलक मोहनमनमोहै३६
चितवनि चंचल परम सुहाई ❀ खञ्जन मीन तजी चपलाई ३७
वेसरि झनक अधिकछविपाई ❀ मुसिकनि वरपत सुन्दरताई ३८
अरुन अधर दसननिकीसोभा ❀ निरखिनिरखिमोहनमनलोभा३६
चिबुक मध्य स्यामल विंदुकनी ❀ कहि न जातजैसी छवि वनी४०

कंचुकिकसुँभि विराजत प्यारी ❀ नील वसन सोभित तन सारी ४१
कुन्दन दुलरी कण्ठ सुहाई ❀ मनो रूप की सींव बनाई ४२
तापरझलकत मोतिन माला ❀ बीचपदिक जगमगत रसाला ४३
भुजनिवलय अङ्गद सुठिसोहै ❀ रतन खचित पहुँची मनमोहै ४४
झलकि रही गोरी मृदु अंगुरी ❀ रंग रंग की सोभित मुंदरी ४५
त्रिवली उदर नाभि हृद जहाँ ❀ मीन रहत मोहन मन तहाँ ४६
कटि राजत रसना रस ऐनी ❀ झुनकतपियमनको सुखदेनी ४७
पाइल नूपुर की धुनि सोहै ❀ गति पर गज मराल मनमोहै ४८
चरननि जावक चित्र सुरंगा ❀ छवि लागी डोलत तेहिसंगा ४९
सुन्दर नवल नखनिके आगें ❀ अतन रतन विधु फीके लागें ५०

दोहा—रूप रासि अति नागरी, भूषन अङ्ग रसाल।
निरखि नैंन मोहन फसे, मनो मीन छवि जाल ॥५१॥

कछुहगसजलदेखिनिजरूपहि ❀ पियचितपरयो प्रेम के कूपहि ५२
निरखिनिरखि सोभा सुन्दरवर ❀ प्रेम विवस लटके सिज्या पर ५३
तब प्रियले मोहन उर लायो ❀ होइदयालअधरन रस प्यायो ५४
रतिविपरित चुम्बन इकसंगा ❀ करतविविधिनवकेलि अनंगा ५५
नूपुर रव किंकिन रुचिदाई ❀ उठत तरंग मैन अधिकाई ५६
कोक कला में निपुन विहारी ❀ केलि वेलि रति की विस्तारी ५७
रति रण रंग रच्यो अतिभारी ❀ बढ़ी चौंप जदपि सुकुँवारी ५८

दोहा—सुरत रंग विवि बदन पर, श्रमजलकन रहे सोहि।
रसिकसखी ललितादिसब, छवि अनूप रही जोहि ॥५९॥

कोमल अंचल पवन डुलावें ❀ अतिआसक्त नैन भरिआवें ६०
एक बैस सब सखी सहेली ❀ मानो नेह बाग की वेली ६१
सींची नवलकटाछनि जलसों ❀ फलीबाढ फल फल दलसों ६२

एक रूप तन मन अनुरागी ❀ जुगलहेत हित रसमों पागी ६३
तिनमें आठ सखी मन भाई ❀ देखत रूप न कबहूँ अघाई ६
ललित विशाखा वृ दा स्यामा ❀ चद्रामुदिता नन्दिनि भामा ६
अपनी अपनी टहल कराही ❀ प्रेम मगन आनन्द रहाही ६
ललिता लाड़िलीलाललड़ावे ❀ मधुरवचनकहितिनहि हँसावे ६
जुगलमिलनसुख अतिहीभावे ❀ नेह वदन की बात चलावे ६
सखी विसाखा मन की प्यारी ❀ कबहुँ न होत संगते न्यारी ६
पाननि बीरी रुचिर बनावे ❀ लटकिकुँवरितेहिपरढरिआवें७
वृ दावन को दिनहि सिंगारे ❀ सोभा भरि भरि नैंन निहारे७
बहु विधिदल फलफूल सुहाये ❀ सुमन सुरंग दुहुँनिमनभाये ७
स्यामा चीर विविध नव रङ्गा ❀ लियेरहत अनुराग अभगा ७
अचल कचनि सँभारयो करई ❀ षटरस विंजन आगे धरई ७
चन्द्रा चन्दन ठाढी लीये ❀ और अरगजा मृगमदकीये ७
अगनि चित्र विचित्र बनावे ❀ फूलनिमाल फूल पहिरावें ७
मुदिता मदन मोद उपजावे ❀ हितसों चरनकमल सहरावे ७
विचवित्र कहत है प्रेम पहली ❀ हँसिहँसिसमुझतनवलनवेली ७
नन्दनि अति आनन्द बढावे ❀ मधुरमधुर सुर बीन बजावे ७
बिच बिच मद मद सुरगावें ❀ सुनत हिये के श्रवन सिरावे ८
कुसुम बीजना मृदु कर लीये ❀ करत पवनहुलसतअतिहीये ८
भामा भूषन दिनहि सिंगारें ❀ सोभा भरिभरि नेन निहारें ८
यहसुखनिजसहचरी |दिखाही ❀ वारिवारि अचल वलिजाही ८
दोहा—श्रीराधा वल्लभ नव कुँवर, करत निकुञ्ज विहार।
प्रबल चोप तन मन बढ़ी, रसमें दोऊ सुकुँवार ॥८४॥
खेलत नवल नागरी नाइक ❀ चोपर खेल महा सुखदाइक ८

इक इक सखी भई दहुँ कोदा ❀ बढ़योजुगलमनमेंअतिमोदा ८६
अंगनि भूषन दाव लगावै ❀ कहुँकहुँफगरतअति छविपावै ८७
हारत लाल लगावत जोई ❀ त्यों त्यों चौंप चौगुनी होई ८८
हारे मोतिनु हार विहारी ❀ तबकटितें किंकिनी उतारी ८९
पीत बसन बंसी पुनि हारी ❀ छविसोंहँसतमधुरसुकुँवारी ९०
अकेलाल मुखिलखिहि निहारी ❀ चलतहिछकिपरसारविसारी ९१

दोहा—नैंना तौ अटके रहें, अद्भुत रूप निहारि।
परस कछू खेलत कछू, छ कही आवत सार॥ ९२॥

हित ध्रुव प्रेम खेल के आगे ❀ और खेल सब फीके लागे ९३

दोहा—प्रेम स्वाद कैसे कहूँ, नाहिन कछू समान।
भूषन पट की को कहैं, रहे हारि तहाँ प्रान॥ ९४॥

नवल कुँवर दोऊ बाहाँ जोरी ❀ विहरतनिपट साँकरी खोरी ९५
अति सुदेस भूषन झनकारा ❀ सुनतश्रवनसुखहोतअपारा ९६
सुभग मंदगति कमलफिरावै ❀विचविचसरसचारुकलगावै ९७

दोहा—एक प्रान द्वै सहज तन, गौरस्याम निज रूप।
वृंदावन आनद सदन, बिलसत विविध अनूप॥९८॥

कोमल वेलिद्रुमनि लपटानी ❀डोलत मृगी परम सुखदानी ९९
मोतिनु दुलरी कंठ बनाई ❀विचविचमनिअनूपपहिराई १००
अति आनन्द फिरै वनमाहीं ❀ करतकलोलद्रुमनिकीछाहीं १०१
नवल विपिन में सुमनसुरगा ❀ निरखत फिरै दोऊइकसंगा १०२
मान सरोवर जबही आये ❀ नाचतमोर देखि मुसिकाये १०३
ठाढ़े भये सरोवर तटहीं ❀कोकिलकीरमधुरसुर रटहीं १२४
अरुन अमित सित अंबुजमोहैं❀चलत मराल मदगति मोहैं १०५

॥ कुण्डलिया ॥

नवल नवल मोहन वनें, नव राधे नव नारि ।
नव वसत तहाँ नित रहै, नवल पहुप नव डारि ॥
नवल पहुप नव डारि रसिक मधुकर लपटाहीं ।
करत गुञ्ज अति चारु राग सौरभ मन माहीं ॥
सुनत श्रवन रुचि होत रहत फूलत आनद मन ।
परम रसिक जुग चंद सदा विहरत मोहन वन ॥१०६॥

खेलत फाग तहाँ रस सागर ❀नव राधे नव मोहन नागर १०७
ताल मृदग मधुर धुनि बाजें ❀सखियनिशृ दमाहिदोऊराजें१०८
चदन वदन और अवीरा ❀ सुरगित भये दुहुनि के चीरा१०९
एकनि डफ इक वीन वजावें ❀ एक गुलाल सुरंग उड़ावें ११०
निर्त्तत फिरत किशोरकिशोरी ❀मधुर वचन कहि होहो होरी १११
ज्यों ज्यों दोऊ तारी पटकें ❀अतिसुदेम पहुचीकरलटकें ११२
यह सोभा मनही तौ जानें ❀वलिवलिदेहिदासिनिजप्रानें ११३
सोरठा—एक प्रान द्वै देह, नवल रसिक अरु रसिकनी ।
अति आसक्त सनेह, रंगे परसपर प्रेम रग ॥ ११४ ॥
कंचन रुचिर हिंडोरा बन्यो ❀मनिमयजटितमनोहरठन्यो११५
झूलत रसिक राधिका मोहन ❀निरखिनैनभावतदिनजोहन११६
भूषन दुति अंगनि दमकाई ❀नील पीत अचल फहराई ११७
सखियनि नैन निमेष भुलाये ❀निरखतरूपअंसु भरि आये ११८
दोहा—सहज इदु द पति वदन, सखियनि नैन चकोर ।
निरखि रूप इक टक रहै, वधे प्रेम दृढ़ डोर ॥ ११९ ॥
तिनको रूप कहत नहि आवें ❀जो देखे तन सुधि बिसरावें१२०
परे प्रेम क फंद मंझारी ❀ सवसु मान रहै तहाँ हारी १२१

निसि दिन ताहिन और सुहाई ❀ निन देखे हीयो अकुलाई ११२
यह रस जो मन वचके गावे ❀ निश्चै सो सहचरि पद पावे ११३
इनहीं नेंननि सब सुख देखे ❀ जनमसफलअपनोकरिलेखे १२४
नव मोहन श्रीराधा प्यारी ❀हितध्रुवनिरखिखिजाँइवलिहारी १२५
दोहा–दंपति वारिधि रूप के, उठत तरंग जु मैंन।
दृग अगस्त नहिं तृपितही, पान करत दिन रेंन ॥१२६॥
आज वनी अति सुंदर जोरी ❀ पियमोहन अरुराधागोरी १२७
नवल कुँवर नटवर वपु कीने ❀सीसमुकुट अंजनदृग दीने १२८
नासा जलज अधिक छविपाई❀मुसिकनिवरपतसुन्दरताई १२६
प्रिया सुभग काछनी कटिसो है❀कज्जल नैंन रेख मन मोहे १३०
वेसरि सुभग मंद गति ढोलें ❀ईसद हँसनि सरस मृदुवोलें १६१
वदन कमल छवि कहीनजाई ❀मखियनिअलिदृगरहेलुभाई १३२
नील पीत पट तरल सुहाई ❀भूषन झलकवरनिनहिंजाई १३३

॥ कुण्डलिया ॥

दंपति रूप अनूप अति, भूषन झलकत अंग।
तरल झलक प्रतिविंव छवि, निरखि होत दृग पंग ॥
निरखि होत दृग पंग सुभग अति सुंदरताई।
सहज माधुरी अंग चितै छिन पलक न लाई ॥
पानि सरस फेरत कमल राजत परिमल रूप।
मंद हाँस चितवनि चपल मोहत दंपति रूप ॥ १३४ ॥
पाँनिन सुभग कलिंदी तीरा ❀ कंचनरासिसचिनमनिहीरा १३५
कनक कंज तेहि मध्य विराजे ❀सोभानिरखिकोटिरविलाजे १३६
चहूँ दिसि फूल रही फुलवारी❀तैसी सरद निसा उजियारी १३७
आनन्द को घन वनमें वरषे❀खगमृगसवसखियनिमनहरषे १३८

दोहा—सहज चद निमि सहजही, सहज वृ दावन राम ।
सहज पवन मुख सहजही द पति सहज विलास ॥१३६
खेलत रास तहाँ दोऊ नागर ❀ निपुनमुधगकलाररससागर १४०
विविधिवाद्यनिजुमहचरिसाजे ❀एकहि ताल मधुर धुनि बाजे १४१
एक वीन लिये एक उपंगा ❀एकतालिये मधुर मृद गा १४२
अतिकल मधुरदोऊमिलिगावें ❀ हस्तक भेद अनेक दिखावें १४३
उघटत शब्द थेई थेई बोले ❀ नासाविचवेशरिअतिडोले १४४
लटकनि अ ग सुभग अतिसोहै❀वकविलोकनि मन को मोहै १४५
यह सोभा तिज सखी निहारें ❀ प्रेमविवस प्राननि कों वारें १४६
दोहा—जेतिक अ ग सुधंग के, अरु सगीज प्रमान ।
औरें विधि निर्तत नवल, नवल नवल सुरगान ॥१४७॥
अलगलाग जहांलेहि परस्पर ❀अधिकचोंपसोंदोऊमुघरवर १४८
निपटविकटगतिलेत पियारी ❀ निरखन रहे लजाइ विहारी१४९
करहि जतन वहलागनआवे ❀त्योंत्योंहसिहसिप्रियाबतावे १५०
अति आनंद भरे मन माहीं ❀ कमल दलनपर निर्तकराहीं१५१
निर्त्तनश्रमित भयेअति भारी ❀ नवकिशोरनवला सुकुंवारी१५२
श्रमजलबू दजुमुखहि विराजे ❀मनोकनओस कमलपरराजे १५३
यह सुख तो नेंना ही जानें ❀रसनाहिव भुव कहा बखानें १५४
सोरठा—रसना कोटिक पाइ, कोटि कलप लों जीजिये ।
तऊ वरन नहिं जाइ, सहज माधुरी वदनकी ॥ १५५ ॥
श्रीमानसरोवर निर्मल नीरा ❀कचनमनिमयजटित सुतीरा १५६
क्रीड़त तहाँ नवल पिय प्यारी ❀ छिरकत हँसत यही सोभारी १५७
सखियनि प्रिया सेंनजवपाई ❀ छिरकतलालहिअतिअधिकाई१५८
अ बुधार छूटत अति भारी❀परम सुगध रुचिर सुखकारी १५९

गजकरनी ज्यों केलि कराहीं ❀ प्रेममगन क्रीड़न जलमाहीं १६०
दोहा—सहज सरोवर सुभग में, नव नागर विवि चन्द।
खेलत अति आनन्द मन दोऊ परम सुछन्द ॥१६१॥
मन्दिर कनक मध्य अति सोहै ❀ निरखत चित्र सुचित्त हि मोहै १६२
तापर लता मंजु नव कुञ्जा ❀ अति अनूपसुन्दर सुखपुञ्जा १६३
परम रुचिर वहैत्रिविधिसमीरा ❀ गुञ्जत भृङ्ग रटत पिक कीरा १६४
किशलय दलनि सुरग सुहाई ❀ रचित सैनकोमल सुखदाई १६५
दोहा—सहज कुञ्ज सुख पुञ्ज में, रची कञ्ज दल सेन।
रहत दिनहि सेवत तहाँ, वृन्द कोटि कुल मैन ॥१६६॥
करिजकेलि तहाँ दोऊ आये ❀ अगनि चीर सुरङ्ग वनाये १६७
सरस सुगध मोंहि दोऊ भीने ❀ लटकतहँसत असभुजदीने १६८
अतिविचित्र दपति मनमोंही ❀ छिनछिनप्रतिनवकेलिकरोंही १६९
पलटि वेष पिय भये सुकुँवारी ❀ भूषन पहिरि सुरगतनसारी १७०
वेसरिखुभी झलक अति चमके ❀ दुलरी जलज कंठपर दमके १७१
मुसिकनिकछुकलाजकी सोहै ❀ चमकनिदसनचपलमनमोहै १७२
खेलत हँसत किशोर किशोरी ❀ मानसमिथुनलेतछविचोरी १७३
वीरा खण्ड दसन वर गोरी ❀ देत परस्पर प्रीति न थोरी १७४
सखी भाँवती यह सुख देखे ❀ नेन सफल अपनो करलेखे १७५
दोहा—रसिक कुँवर दपति सदा, वसत रहो मम चित्त।
मम सजल भुव नैंन दोऊ, रहे निरखि छवि नित्त ॥१७६॥
एसी भांति नवल विविनागर ❀ करतविहारदिनहिसुखसागर १७७
वृन्दाविपिन प्रम निज धामा ❀ सतत राजततहँ श्रीस्यामा १७८
जो यह रस मन रुचिके गावे ❀ प्रम प्रसाद सहज ही पावे १७९
जो या रस में दिन अनुरागी ❀ परम धन्य तेई वड़ भागी १८०

यह रस तो मन ही में राखो ❀ भक्तिहीनसों कबहूँ न भाषो१८१
जथा बुद्धि तो यह रस गायो ❀ रसिक कृपाते जो उर आयो१८२
रसानन्द याको नाम कहावै ❀ श्रपतसुनत आनन्दरसपावै१८३
सम्वत से पोड़स पचासा ❀वरनतजसध्रुवजुगलविलासा१८४
दोहा–यह रसतो अति अमल है, कह्यो बुद्धि अनुमान ।
पंछी उड़े अकास कौ, जाहि सक्ति परमान ॥१८५॥

॥ इति श्री रसानन्द लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्रीहितहरिवंश ॥१७॥

॥ अथ ब्रज लीला प्रारम्भः ॥

एक समै विहरत वन माँही ❀ कियो ततोविवि द्रुमकीछाँहीं १
यह निज रस कीजे विस्तारा ❀ रसिकजननिकोअतिहीप्यारा २
नन्दलाल] वृषभान किशोरी ❀ रसिकनिहितप्रगटी यह जोरी ३
नित्य केलि दिनि ऐसे करहीं ❀ अति आनन्द प्रेम रस ढरहीं ४
रस निधि लीला ब्रज प्रगटाई ❀ रसिकजननिकोअतिसुखदाई ५
प्रथममिलन विधिजो उरआई ❀ जथा बुद्धि जैसी कछु गाई ६
रस विहून के मन नहिं भावे ❀ पाहन चित्तहि को समुझावे ७
नवल नेह रस अद्भुत आही ❀ रसिकनि विनको समुझेताही ८
दोहा–रसिकनि हित विवि कुँवर वर, प्रगट ब्रज आनि ।
प्रथम मिलन सुख कहतहौं, जहँ लगि बुद्धि प्रमानि ॥९॥
वैस किशोर भये मन मोहन ❀ अंग अंग सुन्दर अति सोहन १०
छवि तरंग कछु कहे न जाहीं ❀ मदनकोटिलुटैचरननि माहीं ११
इहि दिसि श्रीवृषभान दुलारी ❀ वैस किशोर भई सुकुँवारी १२
अद्भुत रूप कुँवरि को माई ❀ सगी एक पियपै कह्यो जाई १३
अतिसुकुँवारिनवीन किशोरी ❀ जुवतिनके मन लेत है चोरी१४

अग अग वानिक कहीन जाई ❀ जितचितवतवरपतछ त्रिमाई १५
रति कमला देवङ्गना नारी ❀ पदनख की दुति ऊपर वारी १६
याको रूप जु देखे आई ❀ सोऊ रूपवत ह्वै जाई १७
वट सकेत अनूर विराजे ❀ ताके निकट सरोवर राजे १८
सुन्दर ठौर सघन वन आही ❀ फूलि रही बहु जूही जाही १६
कबहु कनहु तहाँ खेलन आवे ❀ खेलत खेल जोई मन भावे २०

दोहा—कुँवरि रूप की बात सुनि,परम रसिक सिर मौर ।
अग अ ग सब सिथल भये,चित्त रह्यो नहिं ठौर ॥२१

सुनत चोंप पिय मन भई भारी❀किहिविधि देखियेनवलकु वारी२२
ताही तक अब लागे रहही ❀ काहू सों यह बात न कहही २३
नितउठि बरसाने तन जोंहीं ❀ जित सकेत सघन वन मौंहीं २३
सघन कुन्ज इक हुती सुहाई ❀ बैठे लाल तहाँ अरगाई २५
उत देख्यो इक कौतुक भारी ❀ सुन्दर सर अ बुज छबि न्यारी२६
तहा देखे जुवतिन के बृन्द ❀ मानो कोटि उदित भये चंद २७
तिनमें नवल किशोरी सोहे ❀ मोहनमन लाये छवि जोहें २८
पहिरे नीलवरन तन सारी ❀ मोतिन माँग बनाइ सँवारी २६
अतिविशाललोइनअनियार ❀ उज्जल अरुन सहज कजरारे ३०
फगुवा सुभग सुरंग विराजे ❀ तापर मृगमद बेदी राजे ३१
झलकि रह्यो बेसरिको मोती ❀ फीके भये धर जे जोती ३२
हँसद हँसन दसनअतिझलके ❀ छुटिरहीकहुकहु मुखपरअलकें३३
चचल चितवनि परम सुहाई ❀ मुखशोभाकछुकही न जाई ३४
सहज नवेलीअति अलबेली ❀ तैसी सोभित सग सहेली ३५
सखियनिमिलिरचोसुखकारी ❀ एकतें एक रहें दुति न्यारी ३६
चली दुरन तिदिठौं सुकुवारी ❀ बैठे हे तहाँ कुन्ज विहारी ३७

दोहा—अद्भुत कौतुक अधिक इक, वर्ण्योमहज सुखपुञ्ज ।
चली दुरनि तेहि लाड़ली, हुते लाल जेहि कुञ्ज ॥३८॥
कुवरि तहां अनजान आई ❀ जहां लाल ह्वै रहे लुभाई३६
चारों नैंन एक भये ऐसे ❀ बिछुरेखजन मिलत हैं जैसे ४०
सकुचि कुँवरि जवघू घटकीनों ❀ नवललालमिनके रग भीनो४१
पियमनमीन परयोछबिजाला ❀ व्याकुल देह सनेह विशाला४२
नैकही चितवति रूपरसाला ❀ मूर्छा आय गई तेहि काला४३
तवही लाल गिरे धरमाई ❀ सो ठॉ मनों प्रेम की छाई४४
दोहा—रूप सिंधु में मन परयो, दृरत दोऊ नीर ।
डग मगाइ धरनी परे, रही न सुधि जु शरीर ॥४५॥
पियकौमन आपुन हरिलीनों ❀ अपनोचित प्रीतम कौदीनों४६
मनरह्योउहींकुवरिफिरि आई ❀ और न कछुवै वात सुहाई४७
नैंननि छाई पिय की सोभा ❀ सुधितन न रहिफिरैउहलोभा४८
दोहा—देखि वात आश्चर्ज की, भूलि रही सुकुँवारि ।
सहजहि वार्ल्योप्रेम रस, ह्वै गई नई चिन्हारि ॥४६॥
भूल्यो सेचकुवरि कौ तवही ❀ नवलनेह रसउपज्यो जवही ५०
यह सहचरि किनहूँ नहिलेषी ❀ कुवरिकुवरकी देखा देखी ५१
दोहा—चली सखी मिलि भवनकों, लीनी कुवरि सँभारि ।
येई सबके प्रान हैं, अलवेली सुकुवारि ॥५२॥
पियकीगतिसुनि अपमोपाँही ❀ नैंननि नाक्छुमी मन माँही५३
भूले सुधिबुधि मूर्छा आई ❀ छबिअनूप नैंननि उर छाई५४
घरीचारिमुरझाँदि निताली ❀ पुनि चितचेतसुरतिउरआनी५५
फटौ देखोजिनि दहदिखाई ❀ हरिनियेमाँन देह अकुलाई ५६
यह सहचरिमनमें अतिमानी ❀ जिनियह छबिमापेउरआनी५७

दोहा—जो कुब्ज रूप वर्ण्यो हुतो, ताते सतगुन आहि।
वार वार तेहि सखी को, लालन उठन सराहि ॥५८॥
तबते मोहन रहत उदासा ❀ प्रेम खटक तें भरें उसांसा ॥५६॥
रूप छटा करके हिय मांहीं ❀ छिनछिनमों हिविकलहृ जांहीं ६०
तनकी गति ऐसी भई माई ❀ ज्योंजलनिनवारिज कुमिलाई ६१
भोजन पान कछू नसुहाई ❀ हृदै ध्यान नव प्रिया रहाई ॥६२॥
अतिही छीनजु भयो सरीरा ❀ दिनहि नैनभरि आवें नीरा ६३
दोहा—नैन सरावर से भरे, नवल नेह के नीर।
ढरि ढरि मुक्ता से परत, रहे भीज तन चीर ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

सीस चद्रिका धरी न माने ❀ सोरभ परमत अतिदुखपाने ६५
रुचे न उर रंजती माला ❀ मारनभई पावक सम ज्वाला ६६
पीत वमन वमी निसराई ❀ चाव्यो प्रेमकह्यो नहिं जाई ६७
वरसाने तन चितवत रहहीं ❀ मोनधरे कछु ने नहिं कहहीं ६८
उहदिमितेजुपवन सखिआवे ❀ सोरजअधिक लालमनभावे ६६
मन अरु नैन कुंवरिकेपासा ❀ देह रहे मिलव की आसा ७०
कल नपरततन आकुल भारी ❀ जन ते स्यामास्याम निहारी ७१
प्रेम की बात निपट अटपटी ❀ सोईजाने जेहि लगेचटपटी ७२
दोहा—प्रीति रीति अति कठिन है, कहे न समझे कोइ।
प्रेम बान जहि उर लगें, निसि दिन जानें सोइ ॥७३॥
इतहि अनमनी रहे किशोरी ❀ चित्त परयो पियप्रेमकी डोरी ७३
छुटि गई नैननि तें चपलाई ❀ उपजी अग अग सिथलाई ७५
निति रहे अवनी नन टाढी ❀ नेह वलि उर अतर बाढी ७६
ज सखी मायरी मेला टारी ❀ ते उन मनते मरे धिमारी ७७

दोहा–भूल्यो हँसिवो खेलिवो, भूल्यो अंग सिंगार।
निसि दिन रहैं या सोच में, रुवत नहीं उर हार ॥७८॥

हितकीसखीअधिकअकुलानी ❀ देखीकुँवरिकछुकछुँभिलानी ७६
गद गद कंठ नेह रस सानी ❀ बोली तहाँकछुक मृदुबानी ८०
चलहु लाड़िली प्रिया नवेली ❀ जाहि सरोवर कहे सहेली ८१
नाँक सँकोर स्वाँस अतिलेही ❀ सहचरि को उत्तर को देही ८२
प्रेम विवस कछुवैन सुहाई ❀ मोहन मूरति हृदे वसाई ८३
वढ़िगई प्रीतिकहतनहिआवे ❀ विसरत नहिजेत कविसरावे ८४
मन परचो प्रेम पेंच में जाई ❀ वलकियेकेसे निकसत माई ८५
ठाढ़ी नखन अवनि को खने ❀ फिरत न केहूँ फेरत मने ८६
नेंना अतिही सजल रहाहीं ❀ प्रीतम प्रेमजानि मनमाहीं ८७

दोहा–अति विशाल लोहन सुरंग, सहज रसीले आहि।
प्रेम लाज जलसों भरे, रही अवनि तन चाहि ॥८८॥

और सखी ढिंगते जव आई ❀ आठो रही कुँवरि मन भाई ८६
ललिता कहे श्रीराधा प्यारी ❀ मौसों वात कहो सकुँवारी ६०
मैं हूँ तो मनकी कछु पाई ❀ सो तुम मोहि कहो समुझाई ६१
अपनें सों दुरात्र नहिं कीजे ❀ दिन दिन देखतदेही छीजे ६२
जानी प्रिया सखी सुखदाई ❀ तव मन मेंकी वात चलाई ६३
एक द्योस खेलत वन माँहीं ❀ सखियन संग सरोवर पाहीं ६४
अतिही सघन कुंज है जहां ❀ नवलकुँवर इकदेख्यो तहां ६५
साँवल वरन पीत उपरेंना ❀ वडडे आहि सलोने नेंना ६६
अरुनअधरमुसिकनिछविराजे ❀ मोर चन्द्रिका सीस विराजे ६७
नासा वनिरह्यो जलजसुढारा ❀ कचन दुलरी मोतिनु हारा ६८
मुखपर पानिप झकल सुहाई ❀ नेह रूप मानो प्रगट पुचाई ६६

मो तन चितैं गिरे मुरझाई ❀ वहलखिपरननविसरतमाई १००
तेहि छिन तें जुगयो मन मेरो ❀ को सुधि कहै न कीयो फेरो १०१
हौं नहिं बोली लाज की लई ❀ तेहि पाछेधौं कौन गतिभई १०२
वहै करक तब तें मन मांही ❀ लटकतपलपलनिकसतनांही १०३
इतनो कहत हियो भरि लीनों ❀ बहुरि न कछुवै उत्तरदीनों १०४

दोहा–प्रेम सुरति पिय की हिये, तेहि छिन करकी आइ ।
मुख निसरत नहि बैन कछु, रही कुँवरि सिर नाइ ॥१०५॥

यहि गति देखत सखीमुलानी ❀ भरिआयेदोऊ लोइनपानी १०६
पुनि धरिधीरविचारनि लागी ❀ नवलकुँवरिकेहितअनुरागी १०७
करों जतन नदलालहि लाऊँ ❀ पिय प्यारी में रग वढाऊँ १०८
मिलहि दोऊ रस बाढ़ै भारी ❀ विरहविथाचितेहोइन्यारी १०६

दोहा–सहचरिमन आनंद बढ्यो, सुनत वचन अति चार ।
प्रेम मगन आनद भयो, मिलवन नंद कुमार ॥११०॥

नदगाम तेही छिन आई ❀ मन मोहन को सैन जनाई १११
सैन बूझ लालन उठि आये ❀ ललितादेखिकछुकमुसिकाये ११२
बूझत सखी चतुर तब बाता ❀ काहे मोहन हो कुस गाता ११३
तब मोहन मनकी सब कही ❀ जो जो पाछे ही गति भई ११४
ललिता एक किशोरी देखी ❀ मानों रूप की सींवा पेखी ११५
कौनभांति मुखकीछवि कहिये ❀ चितवत सखीचित्रह्वै रहिये ११६
कहा कहों अग अग निकाई ❀ छिनकमाँ हिलियोंचित्तचुराई ११७
मनो मोहनी और ठगोरी ❀ तीन लोककी करिइकठौरी ११८
नव किशोरता कछुक मुराई ❀ लाजभरींअखियनिमुसिकाई ११६
रूपहिकहत विवस भयो प्यारो ❀ प्रम नीर नैननि तें ढारो १२०

दोहा–नख सिखतें अति सोहनी, नाँहिन कछु सम तूल ।
रूपलता लागे मनो, चितवनि मुसिकनि फूल ॥१२१
अबतौ जतन करो वरनारी ❀ मिलै मोहि वृषभानदुलारी १२
तिनकी छबि उर नैननि छाई ❀ अटपटी भाति चटपटीलाई १२
तेहि छवि पावक प्रीति जरावे ❀ चतुरसोईजोप्रिया मिलावे १२
दोहा–मैं तौ यह जानी सखी, हितू न तोहि समान ।
यह गुन तेरौ मानि हौं, जब लगि घट में प्रौंन ॥१२५
जा दिनतें मोहि दई दिखाई ❀चकितचित्तकछु वैन सुहाई १२
अब लगितौ दिनवितये ऐसे ❀ अवधौं प्रौंन रहैंगे कैसे १२
दोहा–गह्वर आई सहचरी, सुनत लाल की वात ।
प्रेम दुहूँनि कौ समुझिमन, रीझि रीझि वलिजात ॥१२८
ललिता कहै सुनौ नदलाला ❀ मिलऊँआजतुमैंनववाला १२
इतनी सुनत सरस ह्वै आये ❀ विछुरेप्रौंन फेरिमनौ पाये १३
सुनत वचन आनंद न समाई ❀पगललिताकेसिरधरयौजाई १३
दोहा–रसिक सिरोमनि रसिक पिय,जानत रसकी रीति ।
प्रभुता राखी दूरिकै, भये दीन वम प्रीति ॥१३२
सखी मोहनसों जब वदि लई ❀ तव भीतर जसुदा पै गई १३
पकर चरन वैठी ढिग जाई ❀ घरीएक पाछेवात चलाई १३
कीरतिजू पाहलागन कहियौं ❀ कुँवरहिन्योतनपठइमईयौं १३
पुनिमनमें कछुआहि विचारी ❀ देख्यौ चाहतकुँवरविहारी १३
भूषन वसन वनाइ सबरे ❀ अवही संग देहु तुम मेरे १३
दोहा–मुदित महरि अति चाव सौं, भूषन वसन सुरंग ।
नवललाल अति वानिकै दयौ सहचरी सग ॥१३८
अधिक आनदवदयो मनमाँहीं ❀ वैठेजाइ निकुञ्जनि छाँहीं १३६

सहचरितवमन करत निचारा ❀ मोत्र नदी तहाँ वढ़ी अपारा १४०
अवकिहि विधि वरसाने जैये ❀ जो न लखें सोई जु वनैये १४१
गुरजन भीर तहा अति भारी❀ सवके मौन वहै सुकुवारी १४२
फनिमनि ज्योंलिये रहैमँवारी ❀ जीवत हैं सवताहि निहारी १४३
एसी कठिन ठौर सुनि प्यारे ❀ तेहिठौं लागे नैंन तिहारे १४४
सुनत सखी की वानी मानी ❀ प्यासौं माँगै पानी पानी १४५
सव विधि मोहि भरोसो तेरो❀ पूरन करौ मनोरथ मेरो १४६
एक वार कैसेहूँ दिखावौ ❀ तौललितामोहिजीवजिवावौ १४७
नासा अग्र प्रान रहे आई ❀ वुधिवलकरिक्छुनेगिउपाई १४८
ऐसे वचन सुनत गहवरी ❀ सहचरि सोच कूप में परी १४९
धीरज धरहु जाऊँ वलिहारी ❀तुमतें मोहिअधिकदुखभारी १५०
वचन करौं तुमसों दे तारी ❀ मिलऊँगीत्रलिप्रौंनपियारी १५१
तजिकै लोक वेद की लाज ❀ देहौं मान तिहारे काज १५२
दोहा—नैन भरें धीरज धरें, मनमें थापि विचारि।
पलटि वेप लै जाइये, जहा कुँवरि सुकुँवारि ॥१५३॥
तनललिताइकपतो विचारयो ❀ पियकोतियकोवेपसिंगारयो १५४
भये चावसों सखो विहारी ❀ देखन हित श्रीराधाप्यारी १५५
पहिरी लाल कसूभी सारी ❀ गुहिवेनी कनमागमवारी १५६
लाल मालपर वेंदी फवी ❀ त्रिभुवनकी सोभा मनदवी १५७
नासा वेसरि अतहि सोहनी ❀ मान हरनकी मनोमोहनी १५८
नैननि अंजन दियो वनाई ❀ चिवुकविंदुअतिहीसुखदाई १५९
कचन मोतिनकी गर दुलरी ❀ तेहिछविकीकोउनाहिंनतुलरी १६०
कंचुकि उरज वनाइ नवार ❀ मानों श्रीफल नोतन धारे १६१
जेहि विधक भूपन सुभगाये ❀ सुमिलि सुदन मोर्डपहिराय १६२

साजि लिये जवसन सिंगारा ❀ निरखिरूपसुखभयौ अपारा १६३
नवलसखीनव अधिक विराजै ❀ जुवतिनिवृन्ददेखिसवलाजै १६४
दोहा–स्याम अंग पर अति वनी, सारी कसुँमी सुरंग ।
नखसिख भूषन तियनि के, भूषित मोतिनु मंग ॥१६५॥
तव ललिता वरसाने आई ❀ सखी संग लै परम सुहाई १६६
जव प्रवेस रावल में कीनौं ❀ सकुचसहितमुखअचलदीनौं १६७
वूझत सकल जुवति जनहेरे ❀ यहको आई सखी संग तेरे १६८
ललितापरम चतुर अतिस्यानी ❀ उत्तरदियौ वेगि मृदुवानी १६९
यह उपनंद गोपकी वेटी ❀ मोकौं खोरि सांकरी मेटी १७०
जान अवार संग लै आई ❀ कहिकै वचनताहिसमुझाई १७१
गई लिवाइ तहां कर जोरें ❀ राजति जहांकुवरितनगोरे १७२
ललितादेखिकुवरि मुसिकौंनी ❀ सखी चतुरई मनमें जानी १७३
निरखि परस्पर आनद भारी ❀ विरहविथाविचरौं भईन्यारी १७४
सखी दोइ आई संग लागी ❀ अटक्यौ चितरूपअनुरागी १७५
कछुक्व्याजललितातव कीनो ❀ नवलप्रिया प्रीतमसुखदीनौं १७६
उठी वेगि जानें नहि कोई ❀ लीनी संग सहचरी दोई १७७
कहति है तिनसौंवचन वनाये ❀ करहु न टहलआजमनभाये १७८
माला सुमन सुरङ्ग वनावौ ❀ चित्रविचित्र गूथिलैआवौ १७९
ऐसी चतुर चतुराई कीनी ❀ टहल व्याजसवहीकौंदीनी १८०
मिले मोहन श्रीराधा प्यारी ❀ हितभुवनिरखिजाइवलिहारी १८१
दोहा–नवललाल नव लाड़िली, नवल केलि सुखरासि ।
नवल प्रीति नव नव वढ़ी, करत मंद मृदु हासि ॥१८२॥
वचन रचनसुख कह्यौ न जाई ❀ नाच्यो प्रेम सिंधु अधिकाई १८३
मनोज रंग कीने पिय प्यारी ❀ मनमनसुखनाच्योअतिभारी १८४

प्रेम पगी ललितादिक आई ❀ अति आनद न अंग समाई १८५
सोभित सिथिल दुहूँनिके अगा❀ निरखतिसहचरिप्रेमअभंगा १८६
श्रमितजानि जब पवन डुलावें❀ अतिआसक्त नैंन भरिआवें १८७
दोहा—कुँवर कुँवरि दोऊ रसिक वर, सब सखियनि के प्राँन।
दंपति सुख सुख जिनहुके,नाहिन गति कछु आन।१८८।
सखियनि जुत तबमतौकरौंहीं ❀ नित्यमिलेंहम वा वनमाँहीं १८९
यहमतजब मनमें धरिलीनों ❀निजसखियनिकोंअतिसुखदीनों१९०
तबतें खेलें वा बन माँहीं ❀ सुन्दर सुभग सरोवर पाँहीं १९१
यह लीला ध्रुव जो नितगावे ❀ प्रेम भक्ति सो दृढ़ करि पावे १९२
दोहा—प्रथम नेहि ऐसे भयौ, बिना जतन अनियास।
यह रस गावत सुनत ध्रुव, होत जु प्रेम प्रकास ॥१९३॥

॥ इति श्री व्रज लीला सपूर्ण श्री जै जै श्री हित हरिवंश ॥१८॥

॥ अथ जुगलध्यान लीला प्रारम्भ ॥

दोहा—श्री प्रिया वदन छबिचंद मनो, प्रीतम नैंन चकोर।
प्रेम सुधा रस माधुरी, पाँन करत निसि भोर ॥१॥
अगनि की छवि कहा कहौं, मन में रहत विचार।
भूषन भये भूषननि कों, अति सरूप सुकुँवार ॥१॥
सुरग माँग मोतिन सहित, सीस फूल सुख मूल।
मोर चंद्रिका मोहनी, देखत भूली भूल ॥३॥
स्याम लाल बेंदी बनी, सोभा बढ़ी अपार।
प्रगट बिराजत ससिनपर, मनो अनुराग सिंगार ॥४॥
कुण्डल कल ताटक चल, रहे अधिक झलकाइ।
मनों छबिके ससिभानुजुग, छबि कमलनि मिले आइ ॥५॥

नासा वेसरि नथ वनी, सोहत चंचल नैंन ।
देखत भांति सुहावनी, मोहे कोटिक मैंन ॥६॥
सुन्दर चिवुक कपोल मृदु, अधर सुरग सुदेस ।
मुसिकनि वरषत फूलसुख, कहि न सकत छवि लेस ॥७॥
अगन भूषन झलकि रहे, अरु अजन रग पान ।
नव सत सरवर तें मनौं, निकसे करि अस्नान ॥८॥
कहि न सकत अंगनि प्रभा,कुन्जभवन रह्यो छाइ ।
मानौ वागे रूपके, पहिरे दुहुँनि वनाइ ॥६॥
रतनागद पहुँची वनी, वलया वलय सुढार ।
अगुरिनु मु दरी फवि रही, अरु मिहिदी रंग सार ॥१०॥
चन्द्रहार मुक्ता वली, राजत दुलरी पोति ।
पानि पदिक उर जग मगै,प्रति विंवित अग जोति ॥११॥
मनिमय किंकिनि जालछवि, कहौं जोई सोइ थोर ।
मनौं रूप दीपावली, झलमलात चहुँ ओर ॥१२॥
जेहरि सुमिलि अनूर घनी, नूपुर अनवट चारि ।
ओर छाड़िके या छविहि, हियके नैंन निहारि ॥१३॥
विछुवनिकी छवि कहा कहौं,उपजत रवि रुचि दैन ।
मनौं सावक कलहंस के, वोलत अति मृदु वैंन ॥१४॥
नख पल्लव सुठि सोहने, सोभा घढ़ी सभाइ ।
मानौं छवि चन्द्रावली, कज दलन लगी आइ ॥१५॥
गौर वरन सांवल चरन, रचि मिहदी के रंग ।
तिन तरवनि तर लुठत रहें, रति जुग कोटि अनंग ॥१६॥
अति सुकुँवारि लाड़िली, पिय किशोर सुकुँवार ।
इग छत मग छके रहें, अद्भुत मग निहार ॥१७॥

अनूपम स्यामल गोर छवि, सदा बसौ मम चित्त।
जैसे घन अरु दामिनी, एक सग रहैं नित्त ॥१८॥
वरने दोहा अष्ट दस, जुगल ध्यान रसखान।
जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छवि उर में आन ॥१९॥
पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिनसौं अति प्यार।
ऐसे लाडिली लाल के, छिन छिन चरन सँभार ॥२०॥

॥ इति श्री जुगल ध्यान लीला सम्पूर्ण को जै जै श्री हित हरिवंश ॥ ६ ॥

॥ अथ निर्त्त विलास लीला प्रारंभ ॥

एक समै नागरि नव नागर ❀ प्रेम रूप गुनके दोऊ सागर १
परम प्रवीन सखी सग रहहीं ❀ छिनछिनप्रतिनवनवसुखलहहीं२
मंडल जोरि चहूँ दिसि ठाढ़ी ❀ प्रेम चितेरे चित्रसी काढी ३
राजत मान सरोवर तीरा ❀ आवत परम सुगध समीरा ४
सारस हंस चकोर चकोरी ❀ निर्त्तत फिरत वरहि संग मोरी५
देखिमुदित भईनवल किशोरी ❀ आनंद में झलकतछबिगोरी ६
उपजी बात एक मन माहीं ❀ सकुचत हैं पियकहि न सकाहीं ७
कबहूँ नूपुर धाइ बनावें ❀ याही मिसिचरननि छ्वैआवें ८
कबहूँ सुन्दर वीन बजावे ❀ नवल प्रिया मनरुचिउपजावे ९
निरखनमुखकहि सक्तनप्यारो ❀ हेत लालको प्रिया विचारो१०
परम प्रवीन मुकट मनि प्यारी ❀ निर्त्तकला गुनकी विस्तारी ११
तिरप बांधि कमलन पर चली ❀ निरखत थक्ति रहीहै अली१२
अद्भुत कमल मध्य सरमाहीं ❀ ताके सिरपर निर्त्त कराहीं १३

दोहा—निर्त्त विलासहि देखि सखि, रही सोच विस्माइ।
निर्त्त जु मूरतिवत ही, ठाढी लेत बलाइ ॥१४॥

हुड़क रवाव गजक वहुवाजें ❀ सखियनिभ्रतिआनंदसोंसाजे १५
किन्नर मुरज मृदग वजावें ❀ गतिमें गति नव नव उपजावें १६
अतिमुकु वारिनिर्त्त ग्गभीनी ❀ भाइ भेद गति लेत नवीनी १७
जो गति सुनी न देखी कवहीं ❀ नौतन प्रगट करी ते अयहीं १८
अलग लाग हुरमई जु लीनी ❀ प्रगटकला निजगुनकी कीनी १६
परत आइ मान जेहि दलपर ❀ वैसेई रहत चरन के तरहर २०
लाघवता सों पग रहे ऐसे ❀ परस न होत दूसरे जैसें २१
सुलप अनूप चारु चल ग्रींवों ❀ सहज सुधग विलासकीसींवों २२
थेई थेई कहत मोहनी वानी ❀ सखियनि नैंन चले ह्वै पॉनी २३
मुसिकनि मधुर चित्तको हरही ❀ चितवनि पामि दूमरी परही २४
दोहा–निर्त्त सुधग कला जिती, कही प्रगट परमौंन ।
छुई न तिनमें एकही, उपजी आनही औंन ॥२५॥
पुनि केशरि पर लसत रगीली ❀ झलकत वेशर परमछवीली २६
कछुक अलापमधुर धुनिकीनी ❀ मतिसुधि सवहीकी हरिलीनी २७
कवहूँसुनी न राग धुनि ऐसी ❀ कीनीअवहि कुवरिसखिजैसी २८
राग रागिनी जूथ लजाये ❀ खोजि रहे ते सुर नहिंपाये २६
मृगी मृगी सुनत मृदु वानी ❀ थक्योपवन अरुचलतन पॉनी ३०
श्रवत द्रुमनि तें रस की धारा ❀ आनंद प्रेम कियो विस्तारा ३१
राग पुज वरपत वरपासी ❀ हित ध्रुव गुनसींवोंसुखरासी ३२
दोहा–सुनत राग अनुराग, धुनि, मोहे नागर लाल ।
सक्यो न धीरज धरि सखी, मरम लग्यो सर वाल ॥३३॥

॥ कुडलिया ॥

लाल विवस सहचरि सवै, मोरी मृगी विहंग ।
गावत रस मे नागरी, नव नव तान तरंग ॥

नव नव तान तरग सब सुर सों मन ढरही।
ऐसी को सखी आहि सुनत जो धीरज धरही॥
नव नव गुन की सींव सब अति प्रवीन वर वाल।
नागर कुल मनि तैसेई श्रोता सुन्दर लाल ॥३४॥

अति विह्वल ह्वै गये विहारी ❀ भूषन पट सुधि देह बिसारी३५
रही सँभारि सखी हितकारी ❀ नैननि होत प्रेम वरषारी ३६
प्रिया प्रिया रव मुख ते निसरै ❀ नाम रूप गुन कबहूँ न निसरै३७
यह गति देखिलाल की प्यारी ❀ नेह रंग मगी अति सुकुँवारी३८
महा प्रेम समुभत उर घूँमी ❀ तेहि छिन आइलाल परझूँमी३६
देखतविवस भुजनि भरिलीनों ❀ चितै वदन नैना भरिदीनों ४०
महा प्रेम सों उर लपटानी ❀ तिनकी प्रीति न जातबखानी४१
भरि अनुराग लाल उर लायो ❀ अधर सुधा जीवन रस प्यायो४२
खुलि गये नैन प्रौंन घट आये ❀ प्रिया प्रेम भक्त भोरजगाये४३
ललित लाल डोलतमग लागे ❀ प्रिया प्रेम नखसिखलौंपागे ४४

दोहा—नख सिख लौं सखि पगि रहे, प्रीतम प्रेम सुरग।
तेही भाति पुनि लाड़िली, रगी लाल के रंग ॥४५॥

॥ कु डलिया ॥

नागरि नित्त विलास जस, जे अवगाहत नित्त।
हित ध्रुव अद्भुत प्रेम सों, सरस रहै दिन चित्त॥
सरस रहै दिन चित्त और कछु सुन्यो न भावै।
विन विहार रस प्रम और उर में नहिं आवै॥
अद्भुत सुख की सींव सकल अंगनि गुन आगर।
प्रीतम मन हरि लेत सहज, रस में नव नागरि ॥४६॥

दोहा–युगल प्रेम रस सार सर, रसिक हंस अवगाहि।
जगत काक बक विमुखजे, पलकहु पहुँचत नाँहिं ॥४७॥

॥ इति श्री मिर्त्त बिलास लीला सपूर्ण श्री जै जै श्री हितहरिवंश ॥ ७० ॥

—✲ ❀—

॥ अथ मान लीला प्रारम्भ ॥

दोहा–रची कुञ्ज मनि मय मुकर, झलकत परम रसाल।
राजत हैं दोऊ रङ्ग में, ह्वै गयो चित्र इक ख्याल ॥१॥
देखि प्रिया प्रतिबिंब छवि, चकित ह्वै रही लुभाइ।
तेहि छिन बैठी लाडिली, मान कुंज में जाइ ॥२॥
रहे सोच बिस्माइ तब, तनकी गति भई आँन।
लेत स्वाँस दीरघ वचन, कहत कहाँ प्रिया प्राँन ॥३॥
कोंन चूक मोतें परी, गई कहाँ दुख पाइ।
हे सखी मैं समुझी नहीं, इतनी सुधि लै आइ ॥४।
बार बार सोचत यहै, मैं तौ कह्यौ कछु नाँहिं।
मन दै नीके समुझ तू, कहा आई जिय माँहिं ॥५॥
कहा कहौं अब प्रान ये, नैंननि में रहे आइ।
जो गति देखी जाति है, तैसी जाइ सुनाइ ॥६॥
सो०–को समुझै यह बात, कहा कहौं हिय घटपटी।
प्रान चले ये जात, रहि न सकत हैं प्रिया बिनु ॥७॥
दोहा–सुनत वचन पिय के सखी, भरि आये दृग नीर।
रहि न सकी व्याकुल भई, चली प्रिया के तीर ॥८॥
आवत देखी सखी जब, मुरि बैठी सुकुँवारि।
भौंह रुखाई मौन धरि, नीचे रही निहारि ॥९॥

मान कुञ्ज अद्भुत बनी, माननी मान अनूप।
रस में कछु रिस नैन भरि, बाढ्यो सतगुन रूप ॥१०॥
चतुर सखी परी चरन में, रुचि लै करत है बात।
देखें पिय की गति प्रिया, हीयो दरक्यो जात ॥११॥
लुठत धरनि अँसुवनि भरनि, बाढ़ी नदी अपार।
गहि रहे गुन इक नेह को, राधा नाम अधार ॥१२॥
मुकट कहूँ वशी कहूँ, भूपन कहूँ पटपीत।
मैंन सेन लिये घेरिकै, तातें भये अति भीत ॥१३॥
सेज कुञ्ज भूपन बसन, अरु फूलनि के हार।
देखि सबै अनखात हैं, पावक कैसी झार ॥१४॥
चदन चद समीर बन, कज कपूर समेत।
सब दिन तो यह सुखद है, तुम बिन अब दुखदेत ॥१५॥
नेह रीति समुझत सबै, तुमते कौन प्रवीन।
जल तें न्यारो होइ जो, कैसे जीवै मीन ॥१६॥
तुम मग जोवत छिनहि छिन, और न कछू सुहाइ।
पत्र पवन खरकत जबहि, उठि धावत अकुलाइ ॥१७॥
जहाँ लगि तुम मग लाडिली, राखे नैंन बिछाइ।
ऐसे नेही नवल पिय, लीजै कठ लगाइ ॥१८॥
राधा राधा रट लगी, धर धारा इक ध्यान।
तदाकार तुव रूप भये, अब जिनि करहु निदान ॥१९॥
अरिल्ल–कहति हिये की बात सुनो जो कानदै।
बढ्यो सरस अनुराग प्रान प्रिय दानदै॥
इती समुझिकै बात विलंब न कीजियै।
पुनि हौं हँसिकै प्यारो लाल भुजनि भरि लीजियै ॥२०॥

दोहा–जब जान्यो कछु मन भयो, चतुर चित्तकी पाइ ।
स्यावन प्यारेलाल कौं, तेहि छिन आई धाइ ॥२१॥
सुनहु लाल नववाल वलि, बैठी अति हठ ठौंन ।
मौंन धरे नैना भरे, दे कपोल तर पौंन ॥२२॥
पाइन परि तृन दंत धरि, कीने जतन अनेक ।
लाल तिहारी लाड़िली, छाँड़त नहिं हठ टेक ॥२३॥
वहुत जतन विनती करी, वातें अधिक वनाइ ।
चलिये अब पिय प्रियाकौ, लीजे वेगि मनाइ ॥२४॥
मनतो कछु कोमल भयो, वातें लगी सुहान ।
मान छूटि है जातहीं, यह पायो उनमान ॥२५॥
आय लाल ठाढ़े भये, आगे दोऊ कर जोर ।
सुनि सुनि प्यारे वचन मृदु रही कुँवरि मुख मोर ॥२६॥
सुहृद अली अति हेत सों, वातें कहत निहोर ।
रसिकलाल वलि प्रेम सौं, वधे तिहारी डोर ॥२७॥

॥ श्री प्रियाजी के वचन ॥

दोहा–के तव स्याम सनेह मे, समुझावत सखि तोहि ।
अंतर सित वाहिर सुरग, हियके नैननि जोहि ॥२८॥
जाके उर कछु प्रीति है, कहत न अधिक वनाइ ।
जैसे लहरि समुद्र की, फिरि फिरि तहीं समाइ ॥२९॥
रति लंपट रस हेत ही, अति अधीन ह्वै जाइ ।
मधुर वचन सव कपट के, कहत वनाइ वनाइ ॥३०॥
अवतो कीनो नेम यह, चलौ न तिनकी गैंन ।
कैसो हँसिवो बोलिवो, सनमुख करौं न नैंन ॥३१॥

॥ श्री लालजी के वचन–दोहा ॥

तुम प्रवीन सब अग में, ऐसी जिय न विचार ।
तासों ऐसी चाहिये, तन मन जो रह्यो हार ॥३२॥
कैसे के सहि जात है, नेक रुखाई भौंह ।
याते नाहिंन और दुख, प्यारी तेरी सौंह ॥३३॥
जो जानत अपराध कछु, दीजे दंड विचारि ।
भुजन बाँधि रद अधर धरि, नख छद करि सुकुँवारि ॥३४॥
तुम जीवन भूषन प्रिये, तुमही हो निज प्राँन ।
और करहु जो रुचै सब, विचि जिनि आनों माँन ॥३५॥
सोरठा–मेरे है गति एक, तुम पद पंकज की प्रिये ।
अपने हठ की टेक, छाँड़ि कृपा करि लाड़िली ॥३६॥
दोहा–मोहन के मोहन वचन, सुनि मोहनी मुसिकाइ ।
प्यारौ प्यारी प्यार सों, ढरकि लियौ उर लाइ ॥३७॥
जब देखे खेलत हँसत, रसमें दोऊ सुकुँवार ।
हित ध्रुव तेहि छिन सखी सब, करत प्राँन बलिहार ॥३८॥

॥ इति श्री मान लीला सम्पूर्ण श्री जै श्री हित हरिवंश ॥७१॥

॥ अथ श्री दान लीला प्रारम्भ ॥

दोहा–एक समें उर सखिनि के, बाढ्यो आनंद मोद ।
देखे लाड़िली लाल की, लीला दान विनोद ॥१॥
वंशीवट तट हंसजा, सघन कुंज की खोरि ।
दानी ह्वै ठाढे भये, नागर नवल किशोर ॥२॥
भाँति रँगीली सखिनु जुत, नवल छबीली बाल ।
आइ गई तेहि छिन तहाँ, मत्त गयदनि चाल ॥३॥

सरकि लाल ठाढे भये, ललिता लई बुलाइ।
दान हमारो लगत कछु, कहो प्रिया सों जाइ ॥४॥
ललिता ललित प्रवीन अति, वीचहि उत्तर दीन।
नई रीति कबतें गही, यह सिखवनि किन दीन ॥५॥
कहो दान कबही भयो, कहत न आवत लाज।
यह वन राधा कुँवरि को, इक छत राजत राज ॥६॥
उलटी कैसे होत है, छाँड़हु अधिक सयान।
ठकुराइत जिनकी तहाँ, तिनपे माँगत दान ॥७॥
दान दान तुम कहत हो, सुन्यो न कबहूँ कौंन।
इहि ठाँ विन कुजेश्वरी, नहि काहू की आन ॥८॥
बहुत मोल की सौंज लैं, इहि मग आवत जात।
यह तो हम साँची कही, तुम काहे अनखात ॥९॥
ललिता तुम मानत नहीं, जे हम कहत जु वैंन।
नवल किशोरी रूप के, दिनही दानी नैंन ॥१०॥
इक इक मुक्ता माँग के, झलकत विमल अमोल।
नासा पर वेसरि लसे, कुडल तरल कपोल ॥११॥
हीरा हार हमेल वर, मुक्तनि माल रसाल।
अंगद पहुँची मुद्रिका, कटि तट किंकिनि जाल ॥१२॥
जेहरि पाइल अति बनी, बिछिया अनवट नीक।
झलकि रही नख चंद्रिका, ह्वै गये बिधु सत फीक ॥१३॥
नैंन सिखा नासा श्रवन, लै आये दिन दौंन।
अब तू विच ह्वै थाइ सखि, राखि हमारो मान ॥१४॥
तब ललिता हँसिकै कह्यो, सुनहु रसिकमनि जौंन।
यह रस तौ तब पाइये, जो हारो निज प्रौंन ॥१५॥

चरन गह्यौ विनती करौ, आगे दोऊ कर जोरि।
अति भोरी है लाडिली, लेहु लाल मन ढोरि ॥१६॥
पिय प्रवीन रस प्रेम में, कह्यौ सहचरि कौ कीन।
दान मान वल छाँडिके, सीस पगन तर दीन ॥१७॥
लये अंक भरि लाड़िली, मृदु भुज ग्रीवाँ मेलि।
फूले कुंजनिकुंज में, करत रंगीली केलि ॥१८॥
विविधि भाँति रति दान दै, पोपे पिय के प्राँन।
अति उदार मुसिकाइ कै, देत अधर रस पाँन ॥१९॥
जुरि मुरि कै उर सौं धुरी, सोभित सहज सिंगार।
मानौं पिय हहिरयौ हियैं, रति विलास कौ हार ॥२०॥
जो रस उपजत दुहुँनि में, प्रेम रंग सुकुँवार।
प्रेम रंगी निज सहचरी, निरखत प्रेम विहार ॥२१॥
नित उठि जो गावे सुनें, यह लीला रस रूप।
हित ध्रुव ताके हिय कमल, उपजै प्रेम अनूप ॥२२॥

॥ इति श्री दान लीला सपूर्ण श्री जं जं श्री हितहरिवंश ॥ ४२ ॥

इति श्री हित गोपीनाथ गोस्वामीजी के कृपापात्र श्री ध्रुवदासजी कृत बयालीस लीला सम्पूर्ण श्री जै जै श्री हित राधे ॥

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

॥ कवित्त ॥

जीव दसा गाय सब जीवन की अविद्या ढाय,वैदक सुन भव रोग सो नसाये हैं। पुष्टता दै मन शिक्षा भाषी है म बृहद, वावन पुरान नित्य वस्तु परसाये हैं॥ सिद्धांत वि भक्त नामावलि हिये धारि, प्रीति चौवनी अष्टक जुगल लख हैं। भजन कु डलिया त्यों भजन सत हूँ तैसें, वृ दावन हित स्याल हुलसाये हैं॥ १ ॥

सिंगारसत हितसिंगार मणिसिंगार, आनंद दसा रसा पंग हुलसायो है। रसमुक्तावली रसरत्नावली प्रेमावली, रसही वली सभा मडल रचायो है॥ निर्त्तविलास रहसि मंजरी मं रति नेहमजरी यों म जरी सुख सदायो है। रंगविनोद रगवि त्यों बन विहार, रस विहार जुगल ध्यान मन भायो है॥ २

आनदलता रहस्यलता अनुरागलता, प्रेमलता प्रियाजू नामन की माला है। दानलीला मानलीला ब्रजलीला मिलि, बयालिस लीला पद्यावलि हूँ रसाला है॥ टीका हितवा की सुवानी ध्रुवदासजू की, वृ दावन वसिवे को वानिक विशा है। करत निहाला सद प्रीति की प्रनाला हद, परमक्रपाला र जग प्रतिपाला है॥ ३ ॥

॥ इति विषयानुक्रमणिका ॥

❁ श्रीराधावल्लभोजयति ❁

श्री ध्रुवदासजी कृत पद्यावली

॥ राग ललित ॥

प्रगटित श्रीहरिवंश सुधाकर। प्रचुरित विशद प्रेम करि दिशि दिशि नसत सकल कर्मादिक तिमर ॥ विकसत कुमुद सुयश निज संपति सरस रहसि युत धर्मी अवनि पर। करत पान रस रसिक मृग ह्वै हित ध्रुव मन आनंद उमगि भर ॥ १ ॥

श्री व्यास सुवन तन मन वच भजि रे। लोक ग्यात कुल वेद कर्म व्रत साधन सकल धर्म तू तजि रे ॥ अद्भुत अनुपम श्रीवृन्दावन तिनमें वसौ लसौ नित गजि रे। नव निकुंज में दंपति सपति नीकें लै अघाय ध्रुव सजि रे ॥ २ ॥

॥ श्री प्रियाजी की नामावली ॥

॥ राग गौरी ॥

ललित रँगीली गाईये। तातें प्रेम रग रस पाईये ॥टेक॥ राधा गोरी मोंहनी नवल किशोरी भाँम। नित्य विहारनि लाड़िली अलवेली वर वांम ॥१॥ श्यामा प्यारी भावती नागरि परम उदार। वृन्दा विपिन विनोदनी कुजनि मणि सुकुँवार॥२॥ मृगननी गज गामिनी पिकबैनी नववाल। अति सुन्दर मृदु हासनी चचल नैन विशाल ॥३॥ कुंज कामिनी भामिनी छवि दामिनी अनूप। पिय हिय मोद प्रकासनी चंद वदनि रस

रूप ॥४॥ रसिक रँगीली रँगभरी रही लाल उर पूरि । पियहि लड़ावनि सुख लड़ी प्रीतम जीवन मूरि ॥५॥ मन हरनी सुठि सोहनी नवल छबीली भाँति । वृन्दावन जगमग रह्यो अगनि की छवि कांति ॥६॥ कुंज विलासनि दुलहिनी आनंद रूप सखियनि मोद बढ़ा वनी पिय प्राननि के प्रान ॥७॥ हित ध्रुव यह नामावली जो करि है उरमाल । ताके हियें दिनही बसें नेही मोहनलाल ॥८॥३॥

॥ श्रीलालजी की नामावली ॥

॥ राग गौरी ॥

लाल रँगीलो गाईये । तातें प्रीति रँगीली पाइये ॥टेक॥ श्री राधावल्लभ लाड़िलो दूलह नित्यकिशोर । कुंजविहारी भाँवतो सुख प्यारी चंद चकोर ॥१॥ रस रँगी राधा धनी राधा धव सुकुवार । कुंज रवन शोभा भवन वर सुन्दर सुघर उदार ॥२॥ रसिक रँगीलो रँगमग्यो श्रीवृन्दावन चंद । विपिन विलासी छवि चहा पिय राधा आनँद कन्द ॥३॥ रसिक मौलि आनन्द मणी मोहन कृष्ण कृपाल । सहज सलोनो साँवरो अंबुज नैन विशाल ॥ ४ ॥ हित ध्रुव यह नामावली मन गुन सों ले पोह । ताही की रसना रटै कुंवरि कृपा जब होइ ॥ ५ ॥ ४ ॥

॥ राग भैरों ॥

सोवत भोर लाड़िली लाल । भूषण शिथल भए अंग अंग के अरुझि रही कंठनि पर माल ॥१॥ अंचल नील बदन विवि ऊपर निरखत लोचन हियो सिरांत । तन न सँभार रैंन सब जागे सुरति केलि कीनी यहु भाँत ॥२॥ यह सुख सार निहार नैंन भर वेपथ

भई सखी सब गात। हित ध्रुव कंठ प्रेम जल रोक्यो मुख निसरत नाहिन कछु बात ॥ ३ ॥ ५ ॥

॥ राग बिलावल ॥

भोर मृदुल तल्प उपर बैठे उठि दोऊ रति विलास चिन्ह निरखि नैननि मुसिकाने। सुरँग पीक गंडनि पुनि अंजन पिय अधर थोर उरजनि फबि रहे अंक नवल नख निवाने ॥ भूषन पट शिथिल अंग निधुरे कच कछुक मग रही अरुण नैन बैन आरस रस साने। यद्यपि निशि इहि विहार सार सुख में बितई सब हित ध्रुव उर दंपति तऊ नाहिने अघाने ॥६॥

राजति कुँवरि परम सुकुँवारि। भोर कुंज तें निकसि खरी भई रुचिर बाहु पिय अंशनि डारि ॥ १ ॥ कबरी शिथल सकल अंग भूषण लटकि रही प्रीतम उर लागि। सुरत सरस रंग भरी लाड़िली आरस में राखी मनों पागि ॥२॥ मुद्रित होत नैन छिनहीं छिन रैन जगी तातें अधिक जँभाति। हित ध्रुव यह सुख निरखि मुदित मन सहचरि दै चुटकी बलि जाति ॥३॥ ७ ॥

भोर भरी आरस अरसानी। रसिक लाल के उर लपटानी ॥१॥ अरुझि अलक बेसरि सों मोहै। पिय किशोर नैननि छबि जोहै ॥२॥ अंग अंग सुरत रंग रस पागे। अरुन नैन घूमत निशि जागे ॥३॥ कचुकी दरकि रही मद टूट। गिरत कुसुम राजत कच छूटे ॥४॥ अधरनि अंजन पीक सुरंगा। लगी है कपोल सुकेलि अनंगा ॥५॥ छिन छिन मुरि मुरि लेत जँभाई। हित ध्रुव दै चुटकी बलि जाई ॥ ६ ॥ ८ ॥

आवत लाल प्रिया भुज जोरें। डगमगात आरस रस भीनें अति सुरंग नैननि की कोरें ॥ चितवनि मदन चाल अति चंचल

मुसिकनि मद मिथुन चित चोरें। हित ध्रुव निरखि रसिक ललितादिक डारति वारि प्रान त्रण तोरें ॥६॥

प्यारी लाल ठाढ़े हैं आरस भीने हँसत नैंननि निशि के चिन्ह देखें। परे हैं पलटि पट भूषण अंगनि राजत उर नख रेखें। गंडनि पीक सोहत कहुँ अंजन छूटे वार हार अरुझे रुचि बाढ़त पेखें। हित ध्रुव अवलोकत सहज सुख दोऊ लागत पल न निमेखें ॥१०॥

॥ राग चर्चरी ॥

विहरत बरजोर भोर नवल कुंज सघन खोरि, खिसत नील पीत छोर लसत अंगरी। पागे रस रंग मैंन जागे निशि अरुण नैंन, रही गंड पीक लीक अति सुरगरी॥ गहैं लाल मनु मृणाल प्रिया बाहु मृदु रसाल, चलत मंद मंद चाल ज्यौं मतंगरी। आरस अतिही जँभाति हित ध्रुव दुति दसन पाँति, निरखि निरखि हियो सिरात छवि तरंगरी ॥११॥

रूप राशि करत हासि समर सहज निशि विलास, नवल कुंज कुंज तरें विवि किशोर री। पागे रति अंग अग उठत अधिक छवि तरंग, अधर पीक भये सुरंग नैंन कोर री ॥ बिथुरी अलकें रसाल खंडित उर जलज माल, शिथिल नीवी तिलक भाल लसत थोर री। निरखि निरखि वदन झलकि लागत नहिं नैक पलक, मोहित ध्रुव सहचरि भई गति चकोर री ॥१२॥

॥ राग टोडी ॥

रँग मगे रग महल तें आवत भोरहीं रति विहार सुख किये। चलत डिगत घूमत पीतम दोऊ अति उन्मत्त महारस पिये ॥ कछु मुसिकात आरस भरे नैंनरि सुमिर समर अशनि भुज

दियें। यद्यपि सुख जामिनि जगि विलसे हित ध्रुव तृपिति नाहिं तऊ हियें ॥ १३ ॥

॥ राग रामकली ॥

रति के रंग तरंगनि में सखि भीजे लालबिहारी। मुख पानिप अवलोकि प्रियाकी गहि गहि चिबुक कहत हाहारी ॥१॥ चंचल नैन नासिका मोती सन अंग चंचलतारी। श्रम जलकन तन मानों रसकी प्रगट भई वरषारी ॥२॥ अंचल पवन करत अपने कर जानी कुँवरि श्रमित सुकुँवारी। हित ध्रुव तिहिं छिन की सोभा पर सहचरि प्रान करति वलिहारी ॥ ३ ॥ १४ ॥

॥ राग विभास ॥

अलक लड़े दोऊ नवल किशोर। अलक लड़ी गति आवत सखोरी सघन नवीन कुंज तें भोर ॥ १ ॥ बिथुरे बार हार उर अरुझे शिथिल पीत नीलाँचल छोर। सहजही रूप पुंज मन मोहन अति प्रवीन प्राननि के चोर ॥ २ ॥ रही लटकि मखी सुरँग पाग पर सुभग चंद्रिका मोर। झलकत सीसफूल नकवेसरि वदन मिथुन सोभा नहि थोर ॥३॥ छिन छिन रोम रोम छवि नौतन तृपित नैन चितवत चिवि ओर। हित ध्रुव नवल कुँवर रस रंगी अद्भुत गौर स्याम वर जोर ॥ ४ ॥ १५ ॥

॥ इति श्री मंगला समय ॥

॥ अथ शृंगार समय स्नान को पद ॥

॥ राग आसावरी ॥

कौन भाँति सुमिरात रँगीली दुगि प्रीतम निहिं छनिहि निहारत। निरखत रूप प्रकाश माधुरी रीझि प्रान तन मन

धन वारत ॥ १ ॥ चहुँ दिशि सखी सहचरी जे निज सादौ कछु सिंगार विचारत । प्रेम चाइके रंग रंगी सब एक हार अरुझै निरवारत ॥ २ ॥ इक सौंधो फुलेल लियें ठाढ़ीं एक फूनसों केश सँवारत । मजन करि पहिरे पट भूपण छिन छिन प्यार सों पियहि सँभारत ॥ ३ ॥ हिय कौ प्रेम समझि रस नागर चरननि चूंवत अँखियनि लावत । हित ध्रुव प्रीति परस्पर ऐसी ये उनकों वे इनहिं लड़ावत ॥ ४ ॥ १६ ॥

कुंज सदन में प्यारो प्रिया की वेनी गूंथत माई । फूले अधिक समात न तन मन टहल भाँवती पाई ॥ १ ॥ रचि रचि सुमन गहर सों बानत जेसें पहुँचन जाई । परम चतुर वर नवल रसिक पिय तिहिं रस रहे लुभाई ॥ २ ॥ सहचरि एक मुकर लै ठाढ़ी वाढ़ी झलकि सुहाई । हित ध्रुव यह सुख अखियाँ हीं जानत कैसे कहौं समझाई ॥ ३ ॥ १७ ॥

रंग महल में बैठे प्रीतम करत सिंगार प्रिया को माई। रचि रचि मग सुरग तिलक बिन्त्र वेंदी लाल अनूप बनाई ॥ १ ॥ रतन खचित ताटंक श्रवन युग नाशा पुट मृदु वेशरि वानी । चिबुक कपोल स्याम बिंदु दीनों तापर अलक भेद सों आनी ॥२॥ चंचल नैननि अंजन दै पिय अनी रेख रचि पचि कै कीनी । निरखि मुकर हँसि रीझि प्रिया तब नवल लाल मुख वीरी दीनी ॥ ३ ॥ नख सिख लों भूपन पहिराए चरन चित्र जावक के कीने । हित ध्रुव सीस परसि पद कमलनि निरखत रूप मुदित रस भीने ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ राग टोडी ॥

सुरंग कसूंभी सारी पहिरे रँगीली प्यारी आज की छबीली

छवि जात न वखानी है। सोंधे सगवगे वार वन्यों है सादो सिंगार जगमग रह्यौ वेंदी स्याम सखी वानी है। वेशरि को मोती सोहै चितवनि मन मोहै वरपत सोभा फल जन मुसिकानी है। हित ध्रुव प्रेम पगे तिनही के रँग रँगे ठाढे हैं विहारीलाल लियें पीक दानी है॥ १६॥

॥ राग सारग ॥

श्री राधा वल्लभ लाल की आरती। रतन जटित कचन की मणि मय हित सो सहचरि वारती॥ अग अग की आभा झलकत अद्भुत रूप निहारती। हित ध्रुव सखी प्रम की सींवा कैसेहूँ पलक न टारती॥ २०॥

आरती राधिकालाल पर वारों। सहज अति चारु प्रति अग भूपण झलकि माधुरी रूप नैननि निहारों॥ कोटि रति काम निनि रूप अभिराम पर कोटि रति इदु पग नखनि पर टारों। दिनहि सुख राशि मृदु हासि ध्रुव निरखि कै सहज ह्वै नैन मन वारि तन डारों॥ २१॥

॥ राग धनाश्री ॥

हँसि हँसि कुँवरि कुँवर मन मोहै। सहज सुदेश सुरग अधर छवि दसन स्याम चोका मित सोहै॥ १॥ झलकत कनक कन मुख प्यारी नव सत अगनि अग सँवारे। अति कोमल नासा पुट सोभित मुक्ता तरल नैन अनियारे॥ २॥ अलकि चिबुक साँवल विंदु उपर भय लटु पिय पट नैन विसार। नव नव छवि निरखत मनमोहन हित ध्रुव प्रान प्रिया करि हार॥ ३॥ २२॥

सीतल भये नैन छवि हेरें। हँसत कुँवर दोऊ रगभरे रंग निरखे आय निपट ही नेरें॥ गहन चपल कमल दल नैननि

कंचन नील कंज कर फेरें । सुनत श्रवन नूपुर ध्वनि जहाँ जहाँ मुदित मयूर हंश कल टेरें ॥ २ ॥ अङ्ग अङ्ग सोभा अवलोकत रही न तन मन कछु सुधि मेरें । नहिं सुहात सखि और निसि दिन यह हित ध्रुव अँखियनि माँहि रहे रें ॥ ३ ॥ २३ ॥

॥ राग काफी ॥

लाड़िली लाल रसाल रँगीले विहारहीं । अद्भुत रूप अनूप सखी जु निहारहीं ॥ १ ॥ निर्त्तत रास विलास मोहन सग मोहनी । रास्यौ रंग अपार छबीली सोंहनी ॥२॥ रीझि लाल रस भीजि महा सुख पावहीं । हित ध्रुव सर्वसु वारि पगनि सिर लावहीं ॥ ३ ॥ २४ ॥

॥ राग सुघराई ॥

आज वने नव रग विहारी । सकल अंग भूपन प्यारी के पहिर सुरँग तन सारी ॥१॥ श्रुति ताटक मांग मोतिन युत कुम् कुम् आड सँवारी । अंजन नैंन लसे नक वेशरि चिबुक विंदु छवि न्यारी ॥२॥ दुलरी जलज पीत उर अँगिया करनि वनी वलि यारी । हँसत मद अंचल मुख दीयें आरसी जवहिं निहारी॥३॥ निरखत अंग अंग की सोभा नैंन निमेप विसारी । हित ध्रुव भई अधिक छवि तन की करत वेश सुकुमारी ॥ ४ ॥ २५ ॥

॥ राग नट ॥

लालहि और न कछू सुहाई । निरख्यो चाहत दिनहि पियाकों सु दर मुख सुखदाई ॥१॥ जे पट भूपण कुमारि उतारत तेई पहिरे भावत । वीरी खड देत जव नागरि तवही पे सचु पावत ॥२॥ परिमल उवटि अंग जो वाचत सोई आप लगावत । जिहिं मग चलति लाड़िली राधे लोचन श्रवनि वनावत ॥३॥ इहि रस

मगन रहत सुनि सजनी और न मन उर आवत। हित ध्रुव विकट बात अति प्रेम की निज मोहन को जानत ॥ ४ ॥ २६ ॥

लाल के यह मन ललकि रहै। कबहूँ प्रिया प्रसन्न वदन है मोतन नेक चहै ॥१॥ अरु युग चरण चारु जावक के चित्र सुरग बनाऊँ। पुनि अनुराग कमल मुख तें जब बीरी खंडित पाऊँ ॥२॥ अपनें ही कर के नख सिख लों भूषन बसन बनाऊँ। हित ध्रुव अहर्निशि यहै विचारत कैसेहुँ पियहि रिझाऊँ ॥ ३ ॥ २७ ॥

देखि पिय नैन भरे आनंद। प्रिया वदन अम्बुज तें पीवत मनो मधुप मकरंद ॥१॥ रहित निमेष इकटक ह्वै चितवत इंदु सहस छवि ओर। करत पान रस सुधा माधुरी मानों उभय चकोर ॥२॥ इहि विधि मुदित प्रेम रस भीने छिन छिन रुचि उपजात। हित ध्रुव मनहु रूप स्वाँति जल चातिक चख न अघात ॥ ३ ॥ २८ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

अति विचित्र नवल कुँवर राजत हैं दोऊ री। सघन कुंज में खेलत ढिंग सहचरि नाहि कोऊ री ॥१॥ कहि कहि कछु बात हँसि जात मुदित रँग भीने री। झलकत बिबि बेशरि छबि भौंन चेरि लीनेरी ॥२॥ कुँवर उरज परसन हित जबहिं उर विचारें री। कुँवरि अति प्रवीन तबहि नील पट सँभारें री ॥३॥ इहि विधि घन लतनि रंध्र मगन सखी देखें री। हित ध्रुव तिहिं सुख में मगन नैन सफल लेखें री ॥ ४ ॥ २९ ॥

सोभित आज छबीली जोरी। सुन्दर नवल रसिक मन मोहन अलबेली नव वैस किशोरी ॥ बेशरि उभय हँसन में डोलत, सो

छवि लेत प्रान चित चोरी। हित ध्रुव फंदी मीन ये अखियाँ निरखत रूप प्रेम की डोरी ॥ ३० ॥

तें जु लाल कें बेंदी दीनी रचि रुचि सों रँग भीनी। मणि अनुराग भाग की मानों प्रगट भाल पर कीनी ॥ मुकर निहारि रीझि हँसि प्रीतम प्रिया अंक भरि लीनी। हित ध्रुव रस बस नागर दोऊ छिन छिन प्रीति नवीनी ॥ ३१ ॥

नवल चंद प्रिया वदन अनूप रूप सदन हँसन नवल मंद चपल चितवन सुखदाई। नवल अधर सरस लाल दसन झलकि छवि रसाल छिन छिन छवि होत नवल मनहि ठहराई। निरखत सोभा गभीर बिसरे पिय नैंन चीर मनहुँ कमल रहे फूलि तरणि उदय माई। नवल प्रिया नव किशोर नवल सखी चहूँ ओर नवल विमल प्रम ऊपर हित ध्रुव बलि जाई ॥ ३२ ॥

राजत वदनारविंद लसत चिबुक चारु बिंदु निरखि सरस हास मद हियो सिरांतरी। भूषण दुति अंग अंग मनहुँ रूप दधि तरंग अधरनि तें भये सुरंग दसन पांतरी ॥१॥ गूथित अति रुचिर केश लटकत बेंनी सुदेस सुंदर छवि सहज वेश कहि न जातिरी। चंचल लोचन बिशाल कुंडल मणि जटित लाल गंडनि पर बनी रसाल तरल कांतिरी ॥२॥ झलकत आनंद रूप नासा छवि जलज भूप डोलत अतिहीं अनूप रुचिर भाँतिरी। हित ध्रुव अलि लाल नैंन पायौ सुख कमल ऐंन बसत अहरु रैंन होत छिन न हांतरी ॥३॥३३॥

हौं निज सखियनि की बलिहारी। युगल प्रीति अरु रूप जिनहिं के जीवन यहे सुधारी ॥१॥ नैननि मग ह्वै पान करत दिन तिहिं रस में रहें लीन। सहि न सकत पल पलक न अंतर

जैसें जल तें मीन ॥ २ ॥ छिन छिन नवल प्रिया सुख चाहत श्रोर न मन कछु भावत । हित ध्रुव जिहिं विधि रुचि प्यारी मन तिहिं तिहिं भाँति लड़ावत ॥३॥३४॥

रसिक रँगीले मन हरयौ श्रीराधा वल्लभ लाल । सखीरी युगल यूथिका की वनी उर वैजन्ती माल ॥ १ ॥ भीनें रग सुरग में दोऊ नवल किशोर । खेलत नवल निकु ज में चोरत चित चख चोर ॥ २ ॥ सखी री नील पीत पट अति वने सोभित भूपण श्रंग ॥ लसत सीस पर चद्रिका दमकत मोतिनु मग ॥ ३ ॥ कु डल खुभी विराजहीं श्रवणनि श्रति छवि देत। झलकत श्रोप कपोल की सुन्दर श्रलक समेत ॥ ४ ॥ वेशरि उभय सुभग घनी झलकत जलज सुदेश । नैंन तृपिति नहिं मानहीं निरखत मोहन वेश ॥ ५ ॥ झनकत कटि तट किंकिनी मोहत मृदु गति चाल । हँसनि नद मन वसि रही चितवन चपल रसाल ॥ ६ ॥ मृदुल श्रग वर सु दरी गहें कुँवर भुज मूल । विहरत श्रति श्रनुराग सौं दिन मणि तनया कूल ॥७॥ मधुर चारु स्वर गावहीं सुन्दर वर सुकुँवार । म्रग कुरग सन मोहिय ढरत नैन जलधार ॥ ८ ॥ नवल सखीं सन सोहई प्रम मत्त रस लीन । मिथुन रूप रस सिंधु में रहत दिनहि ज्यौं मीन ॥ ९ ॥ श्रति श्रपार छवि श्रग की वरनत वनै न वैन । हित ध्रुव सुख मुख कजको जानत हैं श्रलि नैन ॥१०॥३५॥

॥ राग धनाश्री ॥

राजति राधा नागरी सु दरता की रासि । निरखत पिय मोद मखी सहज मंद मृदु हासि ॥ हो रसिक रँगीली सोहनी मेरी नयन छबीली मोहनी ॥टेर॥ श्रग श्रंग भूपण वने सु दर

नील निचोल। रतन कनक कुंडल खचे तरलित रुचिर कपोल ॥१॥ लटकत ललित सुहावनी वेंनी गूंथित केश। मृग मद तिलक जु अति लसे वेंदा मध्य सुदेश ॥ २ ॥ नेंन चपल अति सोहई उज्वल स्याम सुरग। चितवन पर वारों सखी खजन मीन कुरंग ॥ ३ ॥ अलक जलद छवि ऊनई दसन वीज चमकात। अधर स्वांति रस बरषई पिय चातिक न अघात ॥ ४ ॥ नासा पुट वेशरि वनी झलकत जलज सरूप। दसन वसन प्रतिविंव तें सोभित सुरंग अनूप ॥ ५ ॥ चिवुक स्याम विंदु सहजही निरखत अति सुख देत। मनों मधुप मन पीय को वदन कंज रस लेत ॥ ६ ॥ कंठ वृन्द मुक्तावली सोभित नग मणिलाल। कर वलया कटि किंकिनी अंगद वाहु मृनाल ॥ ७ ॥ त्रिवली उदर तरंगनी नाभि रूप रस ऐंन। नवल रसिक पिय लाड़िलो करत पान दिन रेंन ॥८॥ जेहर पायल अति वनी नूपुर युति अभिराम। चलत रुचिर सुनि राव पर वशी वारत स्याम ॥६॥ इंदु कोटि नख सम नहीं कहाँ लगि कहो वखान। सहज सुभगता अंग की वनत न उपमा आन ॥१०॥ चरण चारु विवि सोहने चित्रित जावक रग। हित ध्रुव नेंननि में वसो सो छवि दिनहि अभंग ॥११॥३६॥

॥ राग ईमन ॥

प्रीतम के प्रान प्यारी प्यारी जीके प्रान पिय प्रम रासि एक रस दोऊ छवि देखहीं। तृपित न होत क्यों हूँ वढत अधिक रुचि छिन छिन चोप नई लागे नेंनन निमेष ही। रीझि रीझि रँग भरे उमगि लोहन ढरें थक थक रहे भरि

बिवस विशेष हीं । हित ध्रुव यह गति हेरि कैं मगन भईं सखी सब ऐसें रहीं मानों चित्र रेख हीं ॥३७॥

राधिका वल्लभ प्यारी सोहै तन नील सारी सोंधे भीजी अँगिया सुदेश कसिकें तनी। अंग अग सुमिलि सुभूषण सुदेश अति नील मणि पदिक की सोभा कठ ते बनी ॥ नवल चपल अनियारे कजरारे नैंन महा मैन मन हरयौ नैकही की चितवनी । लटक्यौ मुकट और खसि परयौ पीत पट हित ध्रुव अक भरे गज गति गवनी ॥३८॥

राधिका वल्लभ प्यारी सहजहीं सुकुँवारी अग अंग गुण निधि रूप रासि रस की । सलज सुरंग सित असित दीरघ दृग चितवन सहजही सुखद सरस की ॥ सारी नील रही फबि भूषण झलकि छबि हरैं दुति दामिनी अरु भान कोटि दस की। प्रीतम किशोर जू के लोइन चकोर भए चितवन हित ध्रुव सोभा नख ससि की ॥४०॥

नवल चपल कजरारी अँखियनि चितै हँसी मुरिकै कछु पिय तन । सरस कनक अंबुज विकसत हीं निकसत अलि मुद्रित मनौ तिहि छन ॥ रहे चकित लाल बाल मुख चितवन पल पल प्रति उपजत सोभा गन । हित ध्रुव दिनहीं लाल रासि रस लोभी तिहिं बिन और सुहात न कछू मन ॥४१॥

तेरे नैंन देखत नैंन भूले उपमा कही न जाय । मोहि रहे बिसरी सुधि तनकी रूप तरंग रहे हिय छाय ॥ परम प्रवीन प्रेम रँग सींवा रुचि लिये चितवत मोहन भाय हित ध्रुव रीझि रसिक रँग भीने पाय पाय सुख चु बक पाय ॥४२॥

॥ राग केदारो ॥

नवल कुँवरि मुख कमल रूप रस करत पान नागर नैंना अलि। त्रिपित होत नहिं नव नव माइनु अटके सकत न इत उत कहूँ चलि॥ परत न पलक अलक छवि निरखत वेंदी भाल कठ मुक्तावलि। हित ध्रुव चाहत यहै रहै अब नाशा मूल कपोल चिबुक रलि॥४३॥

प्रिया मुख निरखत नवल किशोर। मनहुँ सहज राकेश अमी प्रति चितवत चकित चकोर॥ छिन छिन नई नई छवि उपजत पल पल में रुचि और। हित ध्रुव वसो कुँवर उर ऐसें परम रसिक सिर मोर॥४४॥

॥ राग मारू ॥

परी हों दपति र रँगी॥ प्यारो प्यारी के प्रेम रँग्यो रहै रूप लुभाई। विकच कनक कज वदन निरखत न अगाई॥१॥ अलक एक वेशरि सो अरुझी जव आई। अवलोकतहीं प्राण वारत नवल रसिक राई॥२॥ पिय किशोर ओर जबहिं चित वति मुसिकाई। विवस होइ रहत सीस चरणनि सों लाई॥३॥ अति अभूत दशा देखि भरे अंक धाई। मिथुन कुँवर नेह सखी कैसे हूँ कह्यो न जाई॥४॥ भई अधीर चितै सखी सुख समुद्र पाई। रह्यो प्रम नीर सवहिनु के नैननि झलकाई॥५॥ धरें धीर क्यों न चित्त निरखो छवि माई। हित ध्रुव भई मगन आप सखियनि समझाई॥६॥४५॥

जब चितई कजरारे नैननि॥ विवस भये मदमोहन घेरे चहूँ ओर तें प्रम के मेंननि। मुसिकनि मंद रहे चितवत ही

वस किये लाल मधुर मृदु बैननि ॥ हित ध्रुव रज वदत अति प्यार सो धरति चरण प्यारी जिहिं गैननि ॥२६॥

॥ राग विहागरो ॥

मनमोहन मनमोहनी ॥ चितवन मुसिकनि सहज रँगीली अतिही छबीली सोहनी । कहा कहौं रँग प्रेम की सींव। पिय तन प्यार की जोहनी ॥ हित ध्रुव मनहुँ सुधा रस ढारत आनद सो पति रोहनी ॥२७॥

॥ राग वसत ॥

राजत श्रीवृ दावन श्री नव निकु ज । तहाँ मधुप करत अनुराग गु ज ॥टेक॥ गोर श्याम छवि नवल रास । आई ऋतु वसत भयो हिय हुलास ॥ चदन वदन मथि सुवास ॥ दोऊ छिरकत हँसि हँसि करें विलास ॥१॥ नवल नवल सखी यूथ सग । कर एकनि वीना डफ मृदग ॥ लिये एक गुलाल सुरग रग । भए सुरंगित वसन सुदेश अग ॥२॥ निर्त्तत रसिक किशोर जोर । छवि निरखि थके चहुँ ओर मोर ॥ वंशी रव सुनि श्रवन घोर । खग कुरग बँधे प्रेम डोर ॥३॥ कुम कुम जलकन तन सुदेश । फवि रहे कुचित रुचिर केश ॥ हित ध्रुव निरख अनूप वेश । कछु कहि न सकत छवि छटा लेश ॥४ ।२८॥

॥ राग आसावरी ॥

देख सखी नव कु ज राधा लाल चनेरी । रंगमगे अगनि चीर प्रेम सुरंग सनेरी ॥१॥ मोर चन्द्रिका सीस बेनी ललित गुही री। वरन वरन वहूरग मेदिनी नप जुही री ॥२॥ कुम कुम तिलक सुचारु मृग मद आड करी री । बेंदी मध्य सुदेश मोतिनु माग

भरी री ॥३॥ कुंडल कल ताटक गंडनि झलकि सुहाई। बरषत मनो छबि रंग अधरनि की अरुनाई ॥४॥ नाशा जलज अनूप वेशरि सुभग बनी री। चचल नैंन विशाल अजन रेख ठनी री।५। करि षोडश सिंगार सखियनि अधिक बनाए। भाँति भाँति के लाड़ लाड़िली लाल लड़ाए ॥६॥ खेलत दोऊ जन फाग अति अनुराग भरे री। करत चारु कल गान मानस मृगनि हरे री ॥७॥ सोभित सखियनि वृंद मध्य किशोरी किशोरी। छिरकत कुंम कुंम नीर हसि हंसि पिय दिशि गोरी ॥८॥ बाजत मधुर मृदंग किंकिनि रुचिर सुनी री। ताल बीन मुहुचंग बंशी मधुर धुनी री ॥९॥ कंचन डफ लियें हाथ बोलत हो हो होरी। डोलत भरे आनद दोऊ जन बाहीं जोरी ॥१०॥ लटकत पहुँची चारु पटकत ज्यौं ज्यौं तारी। भीने रस अनुराग प्रीतम नवल पियारी ॥११॥ यह सुख अद्भुत देखि चित्त न नेक टरै री। हित ध्रुव आनद वारि नैंननि तें जु ढरै री ॥१२॥४९॥

॥ राग गौरी ॥

प्रथम नवल वृंदावन गाऊ अतिहीं रसाल। रंग भीने जहाँ खेलत राधा वल्लभलाल ॥१॥ नवल प्रिया मन उपज्यौ अतिहीं आनंद मोद। कछुक सखी न्यारी कै दीनी प्रीतम कोद ॥२॥ नवल विनोद रच्यौ है नवल तरणिजा कूल। जान फाग रितु बाढ़ी सबहिनु के मन फूल ॥३॥ मृगमद चदन कुंम कुंम वदन अतिहीं सुरंग। कनककलशियन भरि भरि लीने हैं बहु रंग ॥४॥ पियहि भरन हित नागर आए निकट ही धाय। सखियनि अंचल ओटि कै लीनी कुंवरि बचाय ॥५॥ चहुँदिशि तें तब सबहिनु दियो गुलाल उड़ाय। फिरि पाछें ह्वै जब गहे रहे कुँवर सिर

नाय ॥ ६ ॥ सखी एक पिचकारी आनि प्रिया कर दीन । भरे लाल बहु भाँतिनु मन भायौ सोइ कीन ॥ ७ ॥ वसन भींजि लपटाने सोभा बढ़ी सुभाय । मनहुँ रूप रस सिंधु तें निकसे हैं दोऊ न्हाय ॥८॥ तारी तार डफ किन्नरी स्वर मदर मुहुचग । एकही स्वर बाजें सबै बीना मधुर मृदग ॥ ६ ॥ नवल नवल गति निर्त्तत सहचरीं सरस सुधग । विच लटकत दोऊ लाडिली रग भरे अग अँग ॥ १० ॥ अति सुदेश पहुँचिनु के लटकनि रहे सखि सोहि । ऐसी को जु न माहै माननि यह छवि जोहि ॥११॥ अति अभृत रस बाढ्यो करत हाँसि परिहास । हित ध्रुव नवल रँगीले दंपति सुख की रासि ॥१२॥५०॥

खेलत लाडिली लाल होरी । मृगमद चदन बदन डारत अरु सुरग कुमकुम घोरी ॥१॥ डफ मृदग वीन मिलि बाजत सुदेश बंशी रव थोरी । चहुँ दिशि सखिपनि मडली करत बिच लटकत दोऊ बाहाँ जोरी ॥२॥ अलक हार छूटे पट भूषण छुटि रही कबरी की डोरी । अति अनुराग मगन नहिं जानत श्रमित भई कछु नवल किशोरी ॥३॥ भरि लई अंक रसिक मन मोहन करत पवन निज अचल छोरी । हित ध्रुव प्रेम सिंधु रस बाढ्यौ सहज ही मेंड़ नेम की तोरी ॥४॥५१॥

खेलत फाग अधिक छवि पावें । नवल किशोर किशोरी रग भरे सुरग सुगध गुलाल उड़ावें ॥१॥ ताल मृदंग हुड़क डफ बीना सुघर सखी चहुँ ओर बजावें । लटकनि भटकनि पटकन करननि बचननि होहो होरी गावें ॥२॥ चदन कुमकुम मृगमद सों मथि आपुन में छिरकें छिरकावें । हित ध्रुव ज्यों ज्यों प्यारी की रुचि त्यों त्यों हित सों लाड़ लड़ावें ॥३॥५२॥

॥ राग काफी ॥

लाल लड़ैती जू खेलहीं आज होरी कौ त्यौहार हो। फूली सग सखी सबै निरखत प्रेम विहार हो ॥१॥ प्यारी पहिरैं सारी केशरी दियें बेंदी लाल गुलाल हो। मोहे मोहन मोहनी चितवनि नैंन विशाल हो ॥२॥ अद्भुत उड़नि गुलाल की पिच कारी धारि निहारि हो। मानों घन अनुराग के वरपत आनंद वारि हो ॥३॥ सखीनि वृ द मधि राजहीं दोऊ सु दरसुघर उदार हो। विच विच वशी वाजहीं नूपुर की झनकार हो ॥४॥ लट कनि ललित सुहावनी पद पटकनि करनि सुदेश हो। झटकनि उर हारावली ध्रुव कहि न सकत छवि लेश हो ॥५। ५३॥

॥ राग विहागरौ ॥

रंग भरे राधालाल अति रस फूले। खेलत फिरत होरी रविजा के कूले ॥१॥ गोरी गोरी सखी जेती तिन मधि गोरी। साँवरी सहेली भई साँवरे की ओरी ॥२॥ चदन अगर सत कुम कुमा कौ नीरा। सुरंग सुगंध वहु भाँतिनु अवीरा ॥३॥ भाजन विनिधि रंग भरि भरि लीने। छिरकें घातनि तकि रस में प्रवीने ॥४॥ सुरगित भए सोहैं अगनि के चीरा। रगनि की बूदें वनी सुभग सरीरा ॥५॥ हुड़क गजद वीना मृदग स्वर साजें। किंकिनी नूपुर ध्वनि एक स्वर वाजें ॥६॥ निर्त्तत सुधग अंग निज न्यारी न्यारी। गोरी ओ साँवरी सखी वदि वदि वारी ॥७॥ सरस अलग लाग लेत निरधारी। जीती जे हैं प्यारी तन सखी स्याम हारी ॥८॥ उड़यौ है गुलाल वहु रह्यौ नभ छाई। चल मों चतुर सखी लालहिं गहि लाई ॥९॥ आगें आनि ठाढे कीन रद ग्रीवों नाई। देखत लड़ैती ऐसी भाँति मुसिकाई ॥१०॥

नशी पीत पट झीन चूनरी उढ़ाई। नैननि अजन दीनो नय पहिराई ॥११॥ हित ध्रुव अक भरि लीने हैं किशोरी । हित सों अधर रस देति मुख जोरी ॥१२॥५४॥

॥ राग सारङ्ग ॥

झूलत लाड़िली लाल झुलावत देखो सखी सुख आई। नवल कुँवर प्रान प्रियहि रिझावत हैं मधुरताननि गाई ॥१॥ झोटनि कें देत माल तरल होत भूषण छवि कहत कही न जाई। नागरि अनुराग मृदुल अमित जान वल्लभ तब लई कठ लाई ॥२॥ पुहुप वृष्टि करत लता मुदित हंस मोर नाचत आनद रस पाई। मुकुट मग झलकि निरखि नील पीत अचल ध्रुव नैन रहे लुभाई ॥३॥५५॥

॥ उत्थापन समय ॥

॥ छद चारि ॥ राग गौरी ॥

वृन्दावन सुखदाई लाल। अवनी कनक सुहाई लाल। अवनी कनक सुरग चित्र छवि कालिंदी मणि कूले। लतनि रहे वहुरंग फूल नव कचन द्रुम मूले॥ जलज थलज रहे विकस जहाँ तहाँ वरन वरन छवि छाई। सहज ऐन रुचि दैन विराजत वृन्दावन सुखदाई ॥१॥ राजत नवल निकुजें। निरखि होत सुख पुजें॥ निरखि होत सुख पुज कुज दल रची है सुदर मैन। वहत समीर त्रिविधि गुण लीय आकर्षण मन मैंन॥ नाचत केकी कीर पिक बोलत जित तित मधुपनि गुजें। रतन खचित फूलनि सों फूली राजत नवल निकुजें ॥२॥ करत निकुज विहारा। सखियनि प्रान अधारा॥ सखियनि प्रान अधार रसिक वर नवल किगार किशोरी। हँसि मुख चित चारनि प्यार सों

सब अँग नागरि गोरी ॥ रति बिलास नव नव रुचि उपजत वलय किंकिनि झुनकारा । अति प्रवीन रति कोक कलनि में करत निकुंज विहारा ॥३॥ निरखि निरखि बलि जाहीं । श्रम जलकन झलकाहीं ॥ श्रम जलकन रहे झलकि वदन विवि कहुँ कहुँ पीक जु सोहै । यह छवि निरखि अनूप माधुरी ऐसी को जु न मोहै ॥ चितै चिन्ह रजनी के सजनी नैननि में मुसिकाहीं । हित ध्रुव सखी सरस रस भीनी निरखि निरखि बलि जाहीं ॥ ४ ॥ ५६ ॥

॥ राग विहागरौ ॥

सघन कुंज के द्वारें सोभा बहु बाढ़ी । अति अलवेली भाँति अलवेली ठाढ़ी ॥१॥ सहज आपने उर अचल बिसारें । रूप पानिप देखें सखी प्राण वारें ॥२॥ तैसेई चंचल अलवेले दोऊ नैंना । वेशरि वेंदी की छवि कहत बनैंना ॥३॥ सखी अंश पर रही मृदु भुज दीने । सुरँग फूलनि की नौलासी कर लीने ॥४॥ हँसनि छवीली छटा कहाँ लौं विचारौं । मुख छवि पर कोटि चंद कंज वारौं ॥५॥ सनमुख चितै रहे लालनु विहारी । भूले पट भूषण सुधि देह की विसारी ॥६॥ अतिहीं विवस पिय जाने प्राण प्यारी । रहि न सकी भरि लीने अँकवारी ॥७॥ चाहि रही मुख ओर मन मृदु कीनौं । लाड़िले की दशा देखि हियौ भरि लीनौं ॥८॥ अधर सुधा प्याइ सावधान कीने । परम प्रवीन दोऊ केलि रंग भीने ॥९॥ ऐसी गति देखें सखी चित्रसी ह्वै रहीं । आनँद के रंग रँगी ठाढ़ीं जहाँ तहीं ॥१०॥ रस निधि गुन निधि नेह निधि गोरी । हित ध्रुव वस भए बँधे प्रेम डोरी ॥११॥५७॥

छवीली छवि सों रँगीले दोऊ राजत जमुना तीर। अंग अंग

भूषण प्रतिबिंबित स्यामल गौर सरीर ॥ गावत मोर मराल भँवर पिक संग सखिनु की भीर । हित ध्रुव रूप माधुरी निरखत ह्वै गये सबै अधीर ॥५८॥

नवल रँगीले लालहि लाड़िली सग सुहावनौ । और कछू नहिं भावई हो देखि रूप मन भावनौ ॥१॥ कुंज कुंज सुख पुंजनि डोलत अंश भुजा दियें । परिरंभन रस सों करत मोद विनोद बढ़ौ हियें ॥२॥ कहुँ कहुँ सेज बनाइकें मोहन चरण पलोटहीं । मंद मंद मुसिकानी हो नीलाम्बर दे ओटही ॥३॥ परयौ है लाल मन जाइ तिहिं छवि के सिंधु कलोलही । चंचल परम प्रवीन रुचि लै कचुकी खोलहीं ॥४॥ सुरति सारकौ सार तिहिं सुख माँहि थलोलहीं । नवल कुँवर बलि जाइ जबहि कुँवरि मृदु बोलहीं ॥५॥ सखी रही सब चाहि लै अंचल भक झोलहीं । हित ध्रुव चखन रजा कियें रूप दुहुँनि कौ तोलहीं ॥६॥५६॥

॥ राग सारग ॥

प्रेम की बात अटपटी माई । भुक आई प्यारे लालन सों मन में रह्यो न जाई ॥१॥ गहि रहे चरण और दश अगुलि मुखधर हाहा खाई । रहे मनाइ बहुत नहिं मानी अवनि परयो अकुलाई ॥२॥ तोसों कही सखी तू प्यारी याते नाहिं दुराई । उनकी सोच रहत मन मेरे दुख पै है अधिकाई ॥३॥ इतनी कहत आइ गए मोहन तब सहचरि तन मुरि मुसिकाई । हित ध्रुव लई अक भरि मानों रक महा निधि पाई ॥४॥६०॥

॥ राग नट ॥

देखो अद्भुत प्रीति की चालहि । सुनि सखि पियहि प्यार सों प्यारी राखति ज्यों उर मालहि ॥ ह्वै ह्वै जात विरस मन

मोहन निरखि नैन नव बालहि। हित ध्रुव सरस मधुर अधरामृत प्याइ जिवावति लालहि ॥६१॥

॥ राग विहागरो ॥

रस भरे लाल रस भरी राधे रस भरी सखी अवलोकत रंगहि। मदन हुलास बढ्यो प्रीतम मन अतिहि चावसों भरत उछंगहि ॥ अद्भुत कोक कलनि की उपजनि लज्जित करत अनंगहि। हित ध्रुव चतुर शिरोमणि दोऊ विलसत प्रेम तरंगहि ॥६२॥

॥ अथ वन विहार समय ॥

॥ विहागरो ॥

प्रेम की राशि साँवरो प्यारो। नेक चितै दृग कोर कुँवरि की भूले अगनि अग सँभारो ॥१॥ वृ दावन अद्भुत रजधानी सपति सहित अपुनपो हारो। जहाँ जहाँ चरण धरति सुकुमारी सो मग दृग अ जलनि सँवारो ॥२॥ भए दीन रस रसिक शिरोमणि रग मनोरथ करत विचारो। नेक प्रसन्न होइ रति नागरि विच विच मोलन करहि तिहारो॥३॥ रुचि लियें मोंहनि भाइ विलोकत एको पल रहि सकत न न्यारो। हित ध्रुव हार सिंगार वनावत याही तें वाँको व्रत धारो ॥४॥६३॥

खेलत नवल किशोर किशोरी नव निकु ज में सजनी। त्रिविध समीर वहै सुखदैनी सोहत राका रजनी ॥१॥ लालन ललित सुमनि मय भूषण रचि रचि प्रियहि बनावै। तिनही की रुचि लियें रँगीलो नव नव भाँति लडावै ॥२॥ रूप सिंधु गभीर गोर तन नाभि भँवर सुखदानी। रहत लाल दृग मीन भए तहाँ त्रिपित तऊ नहिं मानी ॥३॥ निरखि निरखि छवि वदन माधुरी नैन

अंचुकन झलकें। लटक्यो मौलि शिखंड प्रम वस परत तऊ नहिं पलकें।४। अतिहीं मृदुल मन स्यामा प्यारी कुँवर अंक भरि लीनों। जान अधीर विवस मन मोहन अधर सुधा रस दीनो ॥५॥ विलसत सुरत विहार अमित विधि निपुन दोऊ पिय प्यारी। यह सुख अवलोकत निज सहचरि दुरि दुरि सघन लतारी ॥६॥ सब सुखकों रस सार यहै है दिन आनद बढ़ावे। हित ध्रुव सुख सखियनि कों कैसे रसना पें कहि आवे ॥७॥६४॥

॥ राग गोरी ॥

देखरी नेंन भरि वेस किशोर वर राजत अनूप सरस रूप जोरी। सघन लतनि मोरी आवत गावत नवल रँगीलो लाल रँग भरी गोरी ॥ चकित मृगज खग विसरे गवन मग ढरत लोचन वन बँधे प्रेम डोरी। हँसि हँसि लेत तान हरें सखियनि प्राण हित ध्रुव जाइ वलि चितै छवि थोरी ॥६५॥

राधा दुलहिनि दूलहु लाल। तैसिये रूप माधुरी अँग अँग तैसेई दुहुँनि के नेंन विशाल ॥१॥ तैसिये लटकनि लपटनि अटकनि तैसिये हंस हंसिनी चाल। तैसिये चतुर सखी चहु ओरें गावत राग सुहाग रसाल ॥२॥ यह रस जो सुनि है अरु गावे मन लावे सब काल। हित ध्रुव धन्य धन्य तेई जन भजन दीपमणि दिपे जिहिं भाल ॥३॥६६॥

रसिक कुँवर दंपति छवि सींवाँ वंशीवट के तीर। खेलत कुसुम गेंद कर लीयें सग सगिनु की भीर ॥१॥ निर्त्तन करत सुधग कला सब अँग अँग गुणनि गमीर। भूपण रव सुनि रहे रटत तें हम केकि पिक कीर।।२।। भए श्रमित चन रहे स्वेद कन कोमल सुभग सरीर। इहि हित कमल तरनिजा परसें आवत मंद समीर।३।

रुचिर स्वेद सौरभ जल भीनें नील पीत तन चीर। हित ध्रुव निरखि मगन भई सहचरि रहे नैंन भरि नीर ॥४॥६७॥

॥ राग सारग ॥

वंशीवट मूल खरे दंपति अनुराग भरे गावत हैं सारंग पिय सारँग वर नैंनी। उमहि कुंवरि करति गान सिखवत पिय विकट तान सप्त स्वर सौं मधुर २ लेति कोकिल बैंनी ॥१॥ चित्रित चदन सुअंग भूषण फूलनि सुरंग दशन वसन सहज रंग वेसरि छबि दैंनी। लसत कंठ जलज माल झलनि स्वेद कन रसाल दीरघ वर लोचन मषि रेख वनी पैंनी ॥२॥ चहूँ दिशि सखियन भीर सकल प्रेम रस अधीर उभय रूप राग रंग सुख अभंग लैंनी। उमड्यौ जल प्रेम नैंन रहित भए रसन वैंन इहिं गति रहो मत्त चित्त हित ध्रुव दिन रैंनी ॥ ३ ॥ ६८ ॥

॥ राग मलार ॥

गरजनि घन अरु दमकनि दामिनी चातिक पिक शुक बोलत मोरनि। स्यामघटा काजर हूँ तें कारी उमड़ि उमड़ि आई चहुँ ओरनि॥ नान्हीं नान्हीं बूंदनि वरषनि लाग्यौ तेसिये रोचक पवन झकोरनि। हित ध्रुव प्यारी प्यार सौं झूलति पियहि झुलावति नैंननि कोरनि ॥६९॥

काम रस भीजे हैं दोऊ लाल। पानिप रूप बढ़ी कछु औरै घूमत नैंन विशाल॥ छूटी अलक टूटी हारावली श्रम जलकन बने भाल। सुरत समर सर तें नहिं निकसत हित ध्रुव उभय मराल ॥७०॥

आज छवि वरषत हैं अंग अंग। मनौ अलक राजत घन दामिनि दशन धनुष वरभंग ॥१॥ मोतिनुमाल बुलाक चद्रवधु

सोभित अधर सुरग श्रमजल फुहीं रहीं कछु मुखपर जीति समर पिय सग ॥२॥ भूषन रव कूजत खग मानों अति अनुराग अभग। प्रफुलित रोम रोम पिय तरु तन भीजे रति रस रग ॥३॥ हित ध्रुव निरख सहज छवि सींचौं भए सखिनु चख पग। ज्यों श्रुति सुनत गान रस मोहित चकित ह्वै रहत कुरग ॥४॥७१॥

आज सखी नाचत हैं वन मोर। निरखि निरखि सोभा घन दामिनि गोर स्याम तन ओर ॥१॥ वरषत रूप अमित वर वीथिनु विकसत सुमन सुरग। अति अनुराग मुदित वन वोलत द्रुम द्रुम लतनि विहंग ॥२॥ डोलत हंस हंसजा के तट वाढ़त आनंद मोद। हित ध्रुव रहीं भीज सुख में सखी चितै मिथुन मुद कोद ॥३॥७२॥

स्यामा जू के चरणनि की वलिहारी। जे हैं वसत किशोर लाल के प्राणनि मध्य सदारी ॥१॥ विहरत कुसुम पराग लगत जव पीत वसन लै झारत। लुठत मयूर चंद्रिका तिन तर अद्भुत छविहि निहारत ॥ २ ॥ जावक चित्र वनाइ सँवारत करनि सफल तव मानत। हित ध्रुव ते दुर्ल्लभ सवहिनु तें रसिक मरम पै जानत ॥ ३ ॥ ७३ ॥

ललित लतनि तरें नान्ही २ वूद परें भीजत रँगीले दोऊ प्रीतम प्यारी। हँसि २ वातें करें भुज मूल अंश धरें लाग्यो पीतपट तन सुरग कसूँभी सारी ॥ विवि वदननि छवि रही कछु फुहीं फवि उपमा न जात कछू मन में विचारी। रसिक उभय उदार गावत राग मलार हित ध्रुव सुनि तान देत प्राणवारी ॥ ७४ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

रस भरे सुभग हिंडोरें झूलत। अति सुकुमार रूपनिधि दोऊ

सो छवि देखि परस्पर फूलत ॥१॥ नवल तरुनता अँग अँग भूषण लसत सुभग उरजनि मणिमाल । उभय सिंधु मनों बढ़े रूप के विच बिच झलकत रंग रसाल ॥२॥ रुचिर नील पटपीत पवन बस उड़त उठत मनों लहरि उतंग । हित ध्रुव दिनहि मीन सखियनि दृग तृषित फिरत रस में तित संग ॥३॥७५॥

॥ राग कल्याण ॥

छबीली छवि सों लाल छबीली आवत गावत वेष एकही कीने । अरुन पीत सारी रसाल बनी कंचुकी हरित लाल कर नौलासी लीने ॥ सोभित भूषण अंग अंग लसत सीसनि मुक्ता मंग हँसत मुकर देखि देखि प्रेम रंग भीने । हित ध्रुव सुख सहज अनूप निरख नवल वानिक रूप प्राण न्योछावर दीने ॥७६॥

॥ राग केदारो ॥

खेलत रास प्रेम रस भीने । ललन वसन प्यारी के पहिरें प्रिया वेष प्रीतम कों कीने ॥१॥ मग सुरंग रही फबि सजनी झलकनि मुकुट कहत नहिं आवे । कुंडल खुमी अरुन सारी तन गौरांवर अतिहीं छवि पावे ॥२॥ अति आनंद विकच मन दोऊ लटकनि अंग ललित सुखदाई । काछनी सुदेस किंकिनी सोमित उर वनमाल रही बनिमाई ॥३॥ सहचरि एक लियें कर वीना एकनि सुभग मृदंग सज्योरी। एकही ताल उठत भूषण धुनि बाढ्यो रंग अनंग लज्योरी ॥४॥ नाचत अग सुधंग लियें दोऊ गावत राग मिले स्वर गौरी । अति नागर लावन्य सिंधु में भृकुटिनु भाव बढ़त छिन सौ री ॥५॥ थेई थेई कहत मद गति लीयें चलत सुलप प्रीतम पिय प्यारी । ललिताहि साखि दै दै पुनि बिच बिच

लागि लेत दोऊ वदि वदि वारी ॥६॥ सुन्दर मुख कमलनि पर सोभित श्रम जल कें अलकें झलकारी । या सुख को छवि निरखि निरखि कें हित ध्रुव सब सहचरी वलिहारी ॥७॥७७॥

जाचत रहत यहै दिन रैंन । वोलौ हँसौ लाड़िली मोपर करहु कुटिल कबहुँ जिनि नैंन ॥ १॥ परम रसिक सुन्दर मन मोहन चितवत छवि इतनी कह बात । अति आसक्त सनेह रग में भये जलज लोचन जलजात ॥ २ ॥ परम उदार मृदुल श्रीस्यामा रुचिर अक लीनें भरि स्याम । हित ध्रुव उभय उरज में राखे दयौ परम सुन्दर सुख धाम ॥३॥७८॥

॥ राग गौरी ॥

नवल लाल सग बाल निर्त्तत गति चंद चाल मोहित भए शिखि मराल छवि निहारि री । गावत स्वर एक ताल भूपण रव अति रसाल सुनत श्रवत मृगज पवन थकित वारि री ॥ लटकत सब अंग अग होत नैन मैंन पग श्रम जलकन वदन बने रुचिर चारु री । वाढ्यौ रस अति अपार नवल कुँवर विवि उदार निरखत ध्रुव सहचरी हित नित विहारु री ॥ ७६ ॥

॥ राग सारङ्ग ॥

यह छवि निरख जाऊँ वलिहारी । राजत रसिक रँगीलो मोहन सग रँगीली राधा प्यारी ॥१॥ लसत सीस शिखि पिच्छ मनोहर जनजनि युत सीमत सँवारी । वशी कनक कमल कर सोभित पिय पट पीत नील तन सारी ॥ २ ॥ अंग अग छवि सहज विराजत भूपण की दुति न्यारी । अमति झलकि वादृत नैननि पै हित ध्रुव नांहिन जात सँभारी ॥ ३ ॥ ८० ॥

॥ अथ ब्याहुलौ ॥

॥ राग बिलावल ॥

सखियनि के उर ऐसी आई । ब्याह बिनोद रचैं सुखदाई ॥ यहै बात सबके मन भाई । आनंद मोद बढ़यौ अधिकाई ॥ बढ़यौ आनंद मोद सबकैं महा प्रेम सुरंग रँगी । और कछु न सुहाइ तिनकौं जुगल सेवा सुख पगी ॥ निशि द्यौस जानत नाहिं सजनी एक रस भीजी रहैं । गोप गोपिनु आदि दुर्ल्लभ तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं ॥१॥ यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी । ये नव दूलहु लाल बिहारी ॥ रग भीने दोऊ प्राण पियारे । नवसत अंगनि अंग सिंगारे ॥ नवसत सिंगारे अंग अगनि झलकि तन की अति बढ़ी । मौर मौरी सीस सोहै मैन पानिप मुख चढ़ी । जलज सुमन सु सेहरे रचि रतन हीर जग मगैं । देखि अद्भुत रूप मनमथ कोटि रति पायनि लगैं ॥२॥ सोभा मंडफ कुंज द्वारें । हित की बाँधी बदन वारें ॥ कुम कुम सौं लै अजिर लिपायौ । अद्भुत मोतिनु चौक पुरायौ ॥ पुराय अद्भुत चौक मोतिनु चित्र रचना बहु करी । आय दोऊ ठाढ़ भये तहाँ सबनि की गति मति हरी ॥ सुरंग महदी रग राचे चरण कर अति राजहीं । बिबिधि रागनि किंकिनी अरु मधुर नूपुर बाजहीं ॥३॥ वेदी सेज सुदेश सुहाई । मन दृग अंचल ग्रन्थि जुराई ॥ रीति भाँति विधि उचित बनाई । नेह की देवी तहाँ पुजाई ॥ पूजि देवी नेह की दोऊ रति बिनोद विहारहीं । तिहि समैं सखी ललितादि हित सौं हेरि प्राणन वारहीं ॥ एक वैस सुभाव एकै सहज जोरी सोहनी । एक डोरी प्रेम की ध्रुव बँधे मोहन मोहनी ॥४॥८१॥

॥ राग विहागरो ॥

श्री वृन्दावन धाम रसिक मन मोहई। दूलह दुलहिनि ब्याह सहज तहाँ सोहई ॥१॥ नित्य सहाने पट अरु भूषण साजहीं। नित्य नवल सम वैस एक रस राजहीं ॥१॥ सोभा कौ सिर मौर चद्रिका मोर की। वरनो न जाइ कछू छवि नवल किशोर की ॥३॥ सुभग माँग रँग रेख मनो अनुराग की। झलकत मोरी सीस सुरग सुहाग की ॥४॥ मणिनु खचित नव कुंज रही जग मग जहाँ। छवि कौ वन्यो वितान सोई मडप तहाँ ॥५॥ वेदी सेज सुदेश रची अति वानिकै। भाँति भाँति के फूल सुरँग वहु आनिकै ॥६॥ गावत मोर मराल सुहाए गीति री। सहचरि भरी आनंद करति रस रीति री ॥७॥ अलवेले सुकुँवार फिरत तिहिं ठाँवरी। दृग अंचल परी ग्रन्थ लेत मन भाँवरी ॥८॥ कंगना प्रेम अनूप कवहुँ नहिं छूटही। पोयो डोरी रूप सहज सो न टूटही ॥६॥ रचि रहे कोमल कर अरु चरण सुरगरी। सहज छबीले कुँवर निपुन सव आगरी ॥१०॥ नूपुर कंकण किंकिणी वाज वाजहीं। निर्तंत कोटि अनग नारि सव लाजहीं ॥११॥ वाढ्यो है मन माहिं अधिक आनद री। फूले फिरत किशोर वृन्दावन चन्द री ॥१२॥ सखियनि किये वहु चार अनेक विनोद री। दूधा भाती देन वढ्यो मन मोद री ॥१३॥ ललित लाल की वात जवहि सखियनि कही। लाज सहित सुकुमारि ओट पट दे रही ॥१४॥ नमित ग्रीव छवि सींव कुँवरि नहिं वोलहीं। वुधि वल करत उपाय घू घट पट खोलही ॥१५॥ कनक कमल कर नील कलह अति कल वनी। हँसति सखी मुख हेरि सहज

सोभा घनी ॥१६॥ वाम चरण सों सीस लाल कों लावहीं। पानी वारि कुँवरि पर पियहि पिवावहीं ॥१७॥ मेलि सुगध उगार सों बीरी खवावहीं। समझि कुँवरि मुसकाइ अधिक सुख पावहीं ॥१८॥ और हँस परिहास रहसि रस रँग रह्यो। नित्य विहार विनोद यथा मति कछु कह्यो ॥१६॥ अचल ओट असीस सखी सब देहि री। पल पल बढ़यो सुहाग नैंन सुख लेहिं री ॥२०॥ जैसें नवल विलास नवल नवला करें। मन मन की रुचि जान नेह विधि अनुसरें ॥२१॥ बैठी है निज कुंज कुँवरि मनमोहनी। झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी ॥२२॥ चाहि चाहि सो रूप रसिक सिर मौर री। भरि आए दोऊ नैन भई गति और री ॥२३॥ अति आनद को मोद न उरहि समात री। रीझि रीझि रस भीजि आपु बलिजात री ॥२४॥ अरुझे मन अरु नैंन बढ्यो अनुराग री। एक प्राण द्वै देह नागर अरु नागरी ॥२५॥ यों राजत दोऊ प्रीतम हँसि मुसिकात री। निरख परस्पर रूप न क्यहूँ अघात री ॥२६॥ तिनही के सुख रग सखी दिन रँग मगीं। और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं ॥२७॥ उभय रूप रस सिंधु मगन जहाँ सब भए। दुर्ल्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नए ॥२८॥ हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावही। सर्वोपर सोई होइ प्रेम रस पावही ॥२६॥८१॥

॥ राग विहागरो ॥

राजत नव निकुंज पिय प्यारी। चहुँ दिश दीप मणिनु के सखियनि रचि रचि धरे निशि जान दिवारी ॥१॥ भूपण लाए परस्पर खेलत नवकिशोर नवला सुकुमारी। हारत लाल लगावत जो कछु त्यों त्यों चौंप बढ़ी अति भारी ॥२॥ अगद हार हारि

पहुँची पट तब कटि तें किंकिणी उतारी। सोऊ जीति लई मृग नैंनी नमित ग्रीव करि रहे विहारी ॥३॥ पुनि लिये दाव बदलि मनमोहन बहुरयों खेलि चन्द्रिका हारी। जब जान्यो नहिं दाव परत कछु तब मुसिकाइ सोरठी डारी ॥४॥ भूपण पट कैमें के धाए सकुचों जिनि बलि कहें ललितारी। फूली कुँवरि हँसति आनंद भरि हित ध्रुव तिहिं सुख की बलिहारी। ५॥८२॥

दुलहिनि मनमोहनी दूलहु रसिक लाल। रची है सेज सुहावनी दल लैं लै कंज गुलाल ॥ रँगीली भामिनी ॥टेक॥१॥ चचल नैननि चितवनी बिच मोहनि की भग। हुलसि हुलसि पिय को हियों भरयों रंग अनग ॥२॥ कबहुँ कबहु लपटि जात दशन बसन जोरि। पीवत रस माधुरी दोऊ नागर नवल किशोर ॥३॥ सुरत रग के तरग उपजत अग अग। हित ध्रुव बलि जात सखी निरखि सुख अभग ॥४॥८४॥

॥ राग राइसो ॥

सोहै कु ज सुहाग में सेज सुदेश सहानी ॥टेक॥ दुलहिनि दूलहु राजहीं कोक कला कल ठानी। लाल लड़ैती रग भरे सब सखि यनि सुखदानी ॥१॥ महदी को रँग अति बन्यों भूपन वसन सहाने। सु दर मुख पाननि भरे अँग अँग नव सत बाने ॥२॥ बाढ्यो रंग अनग को लोहनि रूप लुभान। मीन प्रम सुरग में रजनी द्योस न जाने ॥३॥ मोहै मोहन मोहनी चितवन नैन विशाल। सोई प्यारी उर सों लम हित ध्रुव रूप की माल ॥४॥८५॥

॥ राग सूजरी ॥

देखि सखी नवन निकु ज विहार। राजत रसिक सेज पर दोऊ रूप सींव सुकुँवार ॥१॥ परम चतुर वृ दावन रानी करति अक

पिय सैंन । निरखत सहज अंग छबि मोहन भए सजल पिय नैंन ॥२॥ यह गति जान प्रिया प्रीतम की परम मृदुल मन कीनौं । जिहिं बिधि रुचि प्यारे लालन की तिहिं तिहि विधि सुख दीनौं ॥३॥ मुदित सखी अवलोकन जिनकें यह सुख जीवन माई । इहि रस पगीं और कछु सपने हित ध्रुव मन न सुहाई ॥४॥८६॥

आज अति सोभित नवल निकुंज । लता मंजु नव कंज विविध रँग रची सहज सुख पुंज ॥१॥ त्रिविधि समीर बहै सुखदाई बोलत पिक मधु बैंन। अति सुरग कोमल दल कमलनि रची तहाँ सखि सैंन ॥२॥ तापर रसिक राधिका मोहन विलसत सहज विलास। करत विहार सुनत नानाविधि बिच बिच ईषद हास ॥३॥ सो सुख सार परम निज दासी वर विहार वदवति दुहुँ ओरी । हित ध्रुव रही एक टक जोहत ज्यौं अति चंद चकोरी ॥४॥८७॥

॥ राग आसावरी ॥

देखौ प्रेम की अधिकाई। निरखत रूप प्रिया कौ मोहन तऊ नाहिं कल माई ॥१॥ बैठे एक सेज पर दोऊ तृषिति हियें नहिं आई । चाहत होंन नैंन में नैना अगन अंग समाई ॥२॥ अति अनुराग रँगे मन मोहन पलक निमेष भुलाई । छिन छिन होत चोंप चौंगुनी अति निरखत अंग निकाई ॥३॥ यौं आधीन सनेह बिवस पिय और न कछु सुहाई। चरण जान सर्वस प्यारी के राखे उर मृदु लाई ॥४॥ और कहाँ लगि कहौं सखी री रुचत न रंच वड़ाई । मानत दीन दिनहि आपुन पौ हित ध्रुव वलि वलि जाई ॥५॥८८॥

॥ राग विहागरो ॥

मोहनता की राशि किशोरी । जे मोहन मोहत सब को मन बँधे वक चितवन की डोरी ॥ अगनि पट भूषण विसराए चिते रहे सुदर मुख ओरी। हित ध्रुव चैंन हियें तबहीं लों जब लगि देखत नैंननि गोरी ॥८८॥

मेरी लाड़िली राजति रंग भरी। अधिक प्यार सों मृदु भुज प्यारी हँसि पिय अंश धरी। चित्र से ह्वै रहे नागर नागरी कौंन भाग तें इहिं रस ढरी । हित ध्रुव अवधि प्यार की दोऊ लगीं अखियाँ शुभ घरी ॥८६॥

मेरी अखियाँ रूप के रग रंगी । युगल चद अरविंद वदन छवि तिहिं रस माहिं पगीं । नव नव भाइ विलास माधुरी रहि सुख स्वाद लगीं । हित ध्रुव और जहाँ लगि रुचि हीं तें सब छाँड़ि भगी ॥६०॥

आज सखी निरख रूप भरि नैन । लता ऐंन रचि सैंन मिथुन वर बोलत अति मृदु बैंन । हँसत जबहि दोऊ लसत दशन दुति सोभा कहत बनैंन । हित ध्रुव निरखि सहज छवि सींवाँ मैंन होत मन मैंन ॥६१॥

नवलु निकुज रँगीले दोऊ करत रँगीली बात । अति आनंद निकच मन सजनी हँसि हँसि उर लपटात ॥१॥ परसत कुँवर जबहि उरजनि कर कछु भृकुटी चढ़ि जात । गहें चिबुक तब रसिक लाडिलो मृदु मुख हा हा खात॥२॥ मन जु निवस प्रीतम नहिं बूझत प्यारी अधिक लजात । मन को हेत जान तब सहचरि उठी कछुक मुसिकात ॥३॥ अति प्रवीन रति रग

कलनि में उठत नवल नव घात। हित ध्रुव यह सुखसार निहारत अब क्यों और सुहात ॥४॥६२॥

रँगीली करत रँगीली बात। सुनि सुनि नवल रसिक मन मोहन फिरि फिरि फिरि ललचात। चितै चितै मुख मधुर माधुरी उरजनि सौं लपटात। हित ध्रुव रस को सिंधु उमहि चल्यौ पिय के हित न समात ॥६३॥

॥ राग भैरों ॥

श्री राधा वर भजि श्री राधा वर भजि। और सकल धर्मनि कौं तू तजि॥१॥ होइ अनन्य एक रस गाहो। रसिकनि संग जु सदा निबाहो॥२॥ आन धर्म व्रत नेम न कीजै। जुगल किशोर चरण चित दीजै ॥३॥ श्री वृंदावन घन कुंज निहारौ। हित ध्रुव तेहिं ठौं वास विचारौ ॥६४॥

॥ राग धनाश्री ॥

नित्य किशोरी नित्य किशोर। नित वृन्दावन नित निशि भोर ॥१॥ नित्य सहचरी नित्य विनोद। नित आनंद वरषत चहुँ कोद ॥२॥ नित्य मयूरी हंस चकोर। नित रस भीने नाचत मोर॥३॥ शुक सारौ पिक रँगे अनुराग। गावत लाड़िली लाल सुहाग ॥४॥ नित्य हंसजा निर्मल नीर। सीतल मंद सुगंध समीर ॥५॥ नित राजत राजिव बहु रंग। मधुप मते गुंजत नित संग॥६॥ कोमल लतनि बहुत रंग फूल। झूम रहीं यमुना के कूल ॥७॥ कंचन मणि मय अवनि सुढार। झलमलात छवि झलक अपार ॥८॥ जहाँ भ्रम की अतिहीं भीर। खेलत साँवल गौर शरीर ॥९॥ नित्य चितवनी मृदु मुसिकानि। नितहीं अद्भुत उर लपटानि ॥१०॥ नित्य विहार नितहिं सिंगार। पल

पल पावत सुख को सार ॥११॥ नित्य सखिनु के यहै अहार। नित्य सुरत रस करत विहार ॥१२॥ कुंज कुंज नित केलि अनंत। करत फिरत कामिनि वर कंत ॥१३॥ अतिहीं रसिक छवीली जोर। कहा कहौं कछु सुखहि न ओर ॥१४॥ यह रस अद्भुत जो उर आयौ। श्रीहरिवंश कृपा तें गायौ ॥१५॥ हित ध्रुव हित सों सुनै सुनावै। प्रेम माधुरी सहजहीं पावै ॥१६॥६६॥

॥ राग कान्हरो ॥

सुन सखी दशा होत जब प्रेम की। ज्ञान कर्म विधि वैभवता सब नहिं ठहरात व्रत नेम की ॥१॥ रहत अधीर ढरत नैननि जल मिटत सकल चंचलता मनकी। परत चित्त आनद सिंधु में लजि तजि जात लाज गुरजन की ॥२॥ निद्रा आदि लगत सब नीरस घटत विषय तृष्ना सब घटकी। रहत मगन औरें रस सजनी जब एही दोऊ अखियाँ अटकी ॥३॥ रुचत न रसन स्वाद षट रस के अरु कछु होत छीन गति तन की। हित ध्रुव रहत एक सुख नैननि छिन छिन चौंप जुगल दरसन की ॥४॥६७॥

ऐसो और सनेही कौन। रँगे एकही रंग रँगीली तजि कैं विभौ चतुर दस भौन ॥१॥ छिन छिन चरण कमल सहरावत कबहुँ करत पट पीत सों पौंन। ऐसो प्रेम कहा कोऊ बरनै जहाँ सकल सुख गौन ॥२॥ अद्भुत रूप माधुरी निरखत भरि भरि लोइनि दौंन। हित ध्रुव तजि मर्याद बड़ाई ह्वै रहे सब बात में मौन ॥३॥६८॥

प्राण दियें यह प्रेम न पैये। ऐसो महगो आहि सखीरी कहधों सो कैसें कै लैये। लाल लाड़िली को यह सर्वसु तिहिं

रस कौं ललचैयें । अद्भुत विवि छवि रस की धारा ध्रुव मन तहाँ न्हवैयें ॥९९॥

॥ विहागरौ ॥

सनेही एक विहारी विहारनि । एक प्रेम रुचि रचे परस्पर अद्भुत भाँति निहारनि ॥ तन सौं तन मन सौं मन अरुझ्यौ अरुझनि वार निहारनि । यह छवि देखत हीं ध्रुव चित कौं भूली देह सँभारनि ॥१००॥

आराधहि मन राधा दुलहिनि जिहिं आराधत लाल विहारी । कुंज कुंज डोलत सँग लागे कृपा कटाच्छ करे सुकुमारी ॥ रुचि लै नैननि भौंहनि जोवत छिन छिन नखसत करत सँभारी । हित ध्रुव अद्भुत प्रीति निहारत देत सखी सब प्राणनि वारी ॥१०१॥

अवधि प्रेम की दोऊ प्यारे । तन मन नैन रहे एकै ह्वै कबहुँ होत न न्यारे ॥ रुचि रुचि सौं रचि रहे दोऊ जन ज्यौं नैननि के तारे । हित ध्रुव रीझि परस्पर छवि पर तन मन देत हैं वारे ॥१०२॥

खेलत चौपर मैन की माई । हाँस सिंगार भाव अनुराग की सारें बनी सुखदाई ॥१॥ रूप बिसात प्रेम के पासे नैन युगनि की चलनि सुहाई । चाह चाह की सखी सखी मन रुचि कौ रंग कह्यौ नहिं जाई ॥२॥ पिय प्रवीन प्यारी रस भोरी अधर पान की बाजी लाई । हित ध्रुव जीतें हारे कौतुक दुहूँ भाँति पिय की बनि आई ॥३॥१०३॥

॥ इति श्री हित ध्रुवदास जी की कृत पद्यावली सम्पूर्ण ॥

— ❀❀❀ —

प्राप्ति स्थान—ब्रजवासी पुस्तकालय,
मु० पुराना शहर पो० वृन्दावन (मथुरा) ।